लाल किताब

(तीसरा हिस्सा)

1941

मूल लेखक:

पंडित रूपचंद जोशी

गाँव फरवाला, तहसील नूरमहल,

ज़िला जालन्धर

हिन्दी रूपांतरण:

योगराज प्रभाकर

लोकार्पण

लाल किताब (तीसरा हिस्सा) 1941 के इस डिजिटल प्रारूप का लोकार्पित करते हुये आज मुझे बेहद खुशी हो रही है। यह बात सब जानते हैं कि लाल किताब के पाँचों उर्दू संस्करणों को **ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप** ने काफी साल पहले ही लाल किताब के हरेक चाहने वाले के लिये इंटरनैट पर उपलब्ध करवा दिये थे। बाद में इन सब संस्करणों को देवनागरी लिपि में रूपांतरण करने का काम भी मुकम्मिल हो चुका है। यह दो मरहले कामयाबी से पार करने के बाद अब **ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप** का तीसरा और सब से अहम काम है पंडित रूप चंद जोशी द्वारा रचित सभी पांच महाग्रंथों को इसके हज़ारों प्रेमियों के लिये बिना कोई पैसा ख़र्च किये मुफ्त में मुहय्या करवाना। इस सिलसिलें के शुरुआत की हिमाक़त यह नाचीज़, लाल किताब (तीसरा हिस्सा) - 1941 को इंटरनैट पर डाल कर करने जा रहा है।

हिंदुस्तान और हिंदुस्तान के बाहर बैठे हमारे बहुत से साथी जी जान से इस ग्रंथ की ग्रंथियों को सुलझाने में लगे हुये हैं, वो यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि लाल किताब में जो कुछ भी लिखा है वो आख़िर "**क्यों**" लिखा है, इसलिये यह निहायत ज़रूरी हो गया था कि सब से पहले लोगों को सही तौर पर यह मालूम हो कि लाल किताब में दरअसल लिखा "**क्या**" है। मेरे विचार में "**क्यों**" तक पहुंचने की मंज़िल को "**क्या**" वाली पगडंडी पर चले बिना हासिल कर पाना शायद मुमकिन नहीं। ये ही वजह थी कि **ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप** ने लाल किताब के सभी संस्करणों के शुद्धतम देवनागरी लिप्यांतरण के डिजिटल प्रारूप को इंटरनैट द्वारा जन मानस तक पहुंचने का निर्णय लिया है।

लाल किताब के फ़रमान 1939 व लाल किताब के अरमान 1940 की इलैक्ट्रॉनिक कॉपियाँ भी हमारे पास तैयार पड़ी हैं जिनकी टाइपिंग वग़ैरह का काम मेरे सुपुत्रों चि० ऋषि प्रभाकर व चि० राहुल प्रभाकर द्वारा वर्ष 2004 के दौरान ही संपूर्ण कर लिया गया था। लाल किताब 1942 व लाल किताब 1952 का काम भी तक़रीबन पूरा हो चुका है। अगर पंडित जी ने चाहा तो इन सभी ग्रंथों को भी बहुत जल्द लोकार्पित कर दिया जायेगा। हमारा असल मक़सद तो दरअसल उस दिन ही पूरा होगा जिस दिन लाल किताब के सभी पांच बेशक़ीमती मोती प्रत्येक लाल किताब भक्त को बा-आसानी और बिना कोई पैसा ख़र्च किये हासिल हो जायेंगे। शायद ये ही महान पं० रूप चंद जोशी जी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी।

बहरहाल, इस मौक़े पर मैं सर्वश्री निर्मल कुमार भारद्वाज जी, रबिंदर नाथ भंडारी जी, प्रदीप शर्मा जी, डॉ० सुरेश चंद्र उपाध्याय जी, विपिन शुक्ला जी, कुलबीर बैंस जी, राजेश कुमार जी तथा सुनील ऐलावादी का तह-ए-दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्होंने समय समय पर विभिन्न इंटरनैट ग्रुपों के माध्यम से इस पुस्तक में मौजूद ग़लतियों की ओर ध्यान दिलवाया और इसको बेहतर बनाने में मेरी बहुत मदद की। मैं इन सब महानुभावों का ता-उम्र शुक्रगुज़ार रहूंगा।

सादर

योगराज प्रभाकर।

प्रथम संस्करण : 2007

द्वितीय संस्करण : 2007

तृतीय संस्करण : 2008

चतुर्थ संस्करण : 2008

पंचम संस्करण : 2009

प्रकाशक : रवि प्रभाकर, राहुल कंप्यूटर्ज़, फ़र्स्ट फ्लोर,
मास्टर प्रैस बिल्डिंग, शेराँवाला गेट, पटियाला।
फोन : 098769-30229, 0175-5008675

आवृत्ति : प्रथम (501 प्रतियाँ) सितंबर 2007

मूल्य : 400/- रु०

मुद्रक : वोल्वो प्रिंटर्ज़, पुराना लाल बाग़, पटियाला (पंजाब)
फ़ोनः 0175-2303092

सादर समर्पित

लाल किताब के हरेक सच्चे प्रेमी को

"सपुर्दम बतो माये ख़्वेशरा,
तू दानी हिसाबे कमो बेशरा।"

خود انسان کی پیش نہ جائے، جنم بدھاتا ہوتا ہے
سکھ دولت اور سانس آخری عمر کا فیصلہ ہوتا ہے

ہتھیلی کی لکیروں سے ٹیوا ٹیڑھا جنم کنڈلی
کے
بنانے اور زندگی کے پورے حالات دیکھنے کیلئے

سامدرک کی

لال کتاب

تیسرا حصہ

۱۹۴۱

پرنٹر و پبلشر شرما گردھاری لال ساکن بھروالہ ڈاک خانہ
نور محل۔ ضلع جالندھر

ملنے کا پتہ:- کلکتہ فوٹو ہاؤس ہال بازار امرت سر
کلکتہ فوٹو ہاؤس کوتوالی بازار دھرم سالہ

فی جلد قیمت :- ایک روپیہ دس آنہ تعداد :- ۱۰۰۰

حجازی پریس لاہور میں باہتمام حافظ محمد اسمٰعیل پرنٹر چھپی اور شرما گردھاری لال پبلشر نے شائع کی



लाल किताब के जन्मदाता

पंडित रूपचंद जोशी जी



लाल किताब के मूल प्रकाशक

शर्मा गिरधारी लाल,

निवासी फरवाला

अपील

आज से कुछ साल पहले ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप ने एक ख़्वाब देखा था–हर एक लाल किताब प्रेमी तक इस किताब को शुद्धतम रूप में पहुँचाने का, काम बहुत मुश्किल था लेकिन सौभाग्य से हमें कुछ ऐसे साथी मिलते गये जिनकी सोच हमारी सोच से मेल खाती थी। इसी सिलसिले में 'लाल किताब के फ़रमान (1939)' और 'लाल किताब के अरमान (1940)' के लिप्यंतरण के कठिन कार्य का बीड़ा पंडित वेणी माधव गोस्वामी ने उठाया और सफलतापूर्वक उसे पूरा भी किया। अब 'लाल किताब तीसरा हिस्सा (1941)' का ज़िम्मा हमारे सपुर्द किया गया है। हमने अपनी तरफ़ से पूरी निष्ठा और ईमानदारी से इस पर काम किया है, हम इसमें कितने सफल हुये, इसका निर्णय तो समय ही करेगा लेकिन यहाँ मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि इस किताब के प्रकाशन का कार्य हमने किसी आर्थिक लाभ की नीयत से नहीं किया, हमारा मक़सद जहाँ जनमानस तक इस ग्रंथ को शुद्धतम रूप में पहुँचाना है।

हमारा दूसरा मक़सद इस ग्रंथ के ज़रिये लाल किताब के हर उस प्रेमी तक पहुँचने का है जो कि किसी भी रूप में और कहीं भी इस पर काम कर रहा है। बहुत से लोग अपने-अपने तौर पर इस कार्य में जुटे हुये हैं, हम उस बिखरी हुई शक्ति को एक जगह इकट्ठी करना चाहते हैं, ताकि इस महान् ग्रंथ का प्रचार-प्रसार सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध तरीक़े से हो

सके, और हम चाहते हैं कि ऐसे सभी लोग एक ही प्लेटफार्म पर इकट्ठे होकर इस महान् काम को अंजाम दें। हम उन सब महानुभावों को जो कि हमसे जुड़ना चाहेंगे, उन्हें हर प्रकार की सहायता का आश्वासन देते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'लाल किताब तीसरा हिस्सा (1941)' के अन्त में हमने उर्दू, फारसी एवं पंजाबी भाषा के कठिन शब्दों की जो एक Glossary दी है, उसके अतिरिक्त ग्रुप ने इसी पुस्तक में प्रयुक्त लगभग 50 पंजाबी, उर्दू और फारसी भाषा से लिये मुहावरों और लोकोक्तियों के विस्तारपूर्वक विवरण सहित एक बुकलैट भी अलग से तैयार की है क्योंकि स्थान अभाव के कारण इसे पुस्तक में सम्मिलित करना संभव नहीं था, अतः जिस भी सज्जन को इसकी ज़रूरत हो, वह पत्राचार द्वारा इसे हमसे निःशुल्क प्राप्त कर सकता है।

ग़लती इन्सानी फ़ितरत का एक हिस्सा है, इसलिये इस पुस्तक में भी हमारे द्वारा कुछ ग़लतियाँ अवश्य हुई होंगी, जिनसे हमें अवगत करवाना लाल किताब के हर प्रेमी का फ़र्ज़ है। हम ऐसी सभी इंगित ग़लतियों को इस किताब के अगले संस्करण में दूर करने की कोशिश करेंगे, तथा उन सब सज्जनों का धन्यवाद सहित नाम भी उस अंक में प्रकाशित करेंगे, जिन्होंने इन ग़लतियों से हमे वाकिफ़ करवाया हो।

इसी सिलसिले में हमारी उन महानुभावों से प्रार्थना है कि जिनके पास पंडित जी के हाथों विश्लेषण की हुई कोई कुण्डली या पंडित जी के सम्बन्ध में कोई और जानकारी हो, तो वे हमें अपने पूरे पते और टेलीफोन नम्बर सहित हमें सम्पर्क करें ताकि इस जानकारी का लोक कल्याण के लिये समुचित प्रयोग किया जा सके। ऐसा योगदान करने वाले हर सज्जन को ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप सम्मानित करेगा।

पंडित जी के तीसरे ख़्वाब 'लाल किताब तीसरा हिस्सा (1941)' को लोकार्पित करते हुये मुझे बेहद ख़ुशी हो रही है। मैं इस मौके पर श्री योगराज प्रभाकर और इस किताब के प्रकाशन से जुड़े हुये हर महानुभाव को उनके इस प्रयास के लिये ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप की तरफ़ से बहुत बहुत मुबारकबाद देता हूँ। यहाँ मैं श्री राजेन्द्र भाटिया जी का भी तह-ए-दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रम से बेशक़ीमती समय निकाल कर इस किताब में पंडित जी के बारे में वो बातें हम तक पहुँचाई हैं, जिन्हें जान पाना शायद हमारे लिये कभी संभव न होता। लाल किताब और पंडित जी के बारे में भाटिया जी का यह आर्टिकल एक ऐतिहासिक महत्व की रचना है, जो कि लाल किताब के बारे में फैली भ्रांतियों और किंवदंतियों को दूर करने में एक मील का पत्थर साबित होगी। आने वाले समय में लाल किताब के असंख्य प्रेमी इसके द्वारा रोशनी हासिल करते रहेंगे। मेरा दृढ़ मत है कि भविष्य में लाल किताब के शोधकर्ता इसे एक Historical reference document की तरह इस्तेमाल करके पण्डित जी द्वारा बताये गये लोक कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ेंगे।

निर्मल कुमार भारद्वाज,
2615/2, सैक्टर 47-सी,
चण्डीगढ़ - 160047
दूरभाषः 98884 - 44789
e-mail: nkbhardwaj@gmail.com

आशीर्वाद

भारतीय मनीषा ने ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा है। जिस प्रकार नाक, कान, मुख, हाथ, पैर आदि होते हुए भी नेत्रहीन शरीर से सांसारिक कार्यों का संपादन करना कठिन हो जाता है उसी प्रकार ज्योतिष ज्ञान के बिना वेद विहित कार्यों का संपादन लगभग असंभव हो जाता है। इस शास्त्र की विशेषता यह कि इसमें तर्क-वितर्क और लंबी-चौड़ी व्याख्याओं के स्थान पर सिद्धांतों का प्रत्यक्ष रूप से दैनिक जीवन में उतारा जाता है। शायद यही कारण है कि भारत में समय-समय पर ज्योतिष अथवा ज्योतिर्विज्ञान की विभिन्न विधाएं विकसित होती रहीं हैं।

आधुनिक युग में ज्योतिषकी नवीनतम पद्धति "लाल किताब" का खूब प्रचार-प्रसार हुआ है। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इस पद्धति के रचयिता पं० रूप चंद जोशी जी ने ज्योतिष के गूढ़ रहस्यों को तत्कालीन लोक भाषा उर्दू के ज़रिए आम आदमी तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। पंडित जी ने ज्योतिष के इस महाशास्त्र को 5 पुष्पों के रूप में प्रस्तुत किया 'लाल किताब के फ़रमान', 'लाल किताब के अरमान', 'लाल किताब (तीसरा हिस्सा)', 'लाल किताब (तरमीमशुदा)', 'ज्योतिष की लाल किताब'। इन पाँच पुष्पों में तीसरे पुष्प को पंडित जी ने कविता के रूप में लिखा। इसके छोटे आकारके कारण स्नेहवश पंडित जी इसे 'गुटका' कहते थे। ज्योतिष के रहस्यों को समझने के लिए पंडित जी ने 'फ़रमान' और

'अरमान' को एक साथ पढ़ने काआदेश दिया। अपने इस तीसरे ग्रंथ में पंडित जी ने एक प्रकार से 'फ़रमान' और 'अरमान' के रहस्यों को खोलने का सफल प्रयास किया है। अपनी सरल भाषा, उपायों के सटीक एवं सरल प्रयोगों के कारण कुछ अधकचरे ज्योतिषियों ने लाल किताब को उपायों की पुस्तक मात्र बना कर रख दिया है जबकि लाल किताब ने अपने मूल रूप में मनुष्य के चरित्र निर्माण पर ज़ोर दिया है। यदि देखा जाए तो हमारे दुष्कर्म, चित्त और चरित्र की अशुद्धता ही हमारे दुखों का मूल कारण है।

किसी विद्या के रहस्य को जानने के लिए उसे मूलरूप में पढ़ना आवश्यक है। 'लाल किताब' नामक इस ग्रन्थ के सभी पाँच भाग मूलरूप से उर्दू भाषा में लिखे गए हैं। आज जबकि उर्दू भाषा के जानकार और पढ़ने वाले निरंतर घटते जा रहे हैं इन पांचों भागों के हिन्दी में लिप्यंतरण की कमी सब जगह महसूस की जा रही थी। इसलिए संकल्प यह बना कि इस ग्रंथ के पांचों भागों का हिन्दी लिप्यांतरण किया जाए। वैसे तो यह काम किसी भी तरह से सरल न था लेकिन ग्रंथ की मूल पांडुलिपियों/प्रतियों को जुटाने का काम सबसे कठिन था। लगभग 15 वर्ष के सतत प्रयासों से तीन चार वर्ष पहले इनकी प्रतिलिपियों की व्यवस्था की जा सकी और लिप्यंतरणका काम शुरु हुआ। प्रभु कृपा से पं० रूप चंद जोशी कृत लाल किताब के पांच में से प्रथम दो ग्रंथों 'लाल किताब के फ़रमान-1939' और 'लाल किताब के अरमान-1940' का उर्दू से हिन्दी में लिप्यंतरण में सुधी पाठकों को अर्पित कर चुका हूं।

मेरे लिए यह परम हर्ष का विषय है कि इस महाशास्त्र के तीसरे पुष्प 'गुटका' का हिंदी लिप्यंतरण श्री योगराज प्रभाकर प्रस्तुत करने जा रहे हैं। मेरा यह मानना है कि प्रभाकर जी के सहयोग के बिना शायद 'फ़रमान'

और 'अरमान' के हिन्दी लिप्यंतरण पाठकों तक अपने शुद्ध रूप में न पहुंच पाते। 'लाल किताब' के विषय के साथ-साथ उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, फारसी आदि भाषाओं पर उनकी पकड़ अनूठी है। ऐसे योग्य व्यक्ति के हाथ से होकर निकला कोई भी निर्माण एकदम सही व परफैक्ट होगा।

प्रस्तुत पुस्तक के लिए अमेरीका स्थित 'लाल किताब' आचार्य श्री राजेन्द्र भाटिया जी द्वारा प्रस्तुत पं० रूप चंद जोशी जी के अन्तरंग संस्मरण, उनके जीवन को पहली बार पढ़ने के लिए मिलेगी। श्री राजेन्द्र भाटिया जी पंडित जी के अत्यंत निकट रहे हैं इसलिए उनका हर संस्मरण प्रामाणिक एवं आधिकारिक है।

श्री योगराज प्रभाकर द्वारा प्रस्तुत ग्रंथ वैसे तो हर तरह से अनूठा और विशेषताओं से भरपूर है लेकिन पुस्तक के अंत में दिया गया लगभग 650 शब्दों का शब्दकोष पुस्तक को और उपयोगी बना गया है।

अधिक क्या? श्री योगराज प्रभाकर जी द्वारा प्रस्तुत इस 'लाल किताब' माला के अब तीन पुष्पों का प्रामाणिक हिन्दी लिप्यंतरण पाठकों तक पहुंच जाएगा इसके लिए श्री योगराज जी को हमारा स्नेहपूर्ण आशीर्वाद।

दैवज्ञ पं० वेणी माधव गोस्वामी

भूमिका

लाल किताब है ज्योतिष निराली,
जो क़िस्मत सोई को जगा देती है,
फ़रमान पक्का दे के आख़री,
दो लफ़्ज़ी से ज़हमत हटा देती है।

यह पंक्तियां, जो ज्योतिष की लाल किताब से ली गईं हैं, ज्योतिष की इस नई पद्धति के बारे में सब कुछ कह देतीं हैं। लाल किताब, ज्योतिष शास्त्र की एक आधुनिक नई शाखा है जो बीसवीं सदी के तीसरे दशक से शुरु हुई। इस पद्धति के जन्मदाता थे पंडित रूप चंद जोशी। पंडित रूप चंद जी जालंधर (पंजाब) के फ़रवाला गांव में जन्मे व भारत सरकार से डिफ़ैन्स एकाउन्ट्स में एक गज़ेटिड आफ़िसर की हैसियत से रिटायर हुए। इस अनूठे ज्योतिष, लाल किताब का ज्ञान उन्हें दैविक शक्ति द्वारा मिला। उसी ज्ञान को आगे बढ़ाते हुए पंडित जी ने अपने जीवन के अन्तिम दिन तक, कभी बिना कोई फ़ीस लिए, हज़ारों लोगों की कठिन समस्याओं को लाल किताब ज्योतिष की मदद से हल किया।

जैसा कि ऊपर लिखा है, लाल किताब एक बिल्कुल अनूठी तरह की ज्योतिष है। भारत में प्रचलित ज्योतिष को वैदिक ज्योतिष के नाम से जाना जाता है। सदियों से चलते आ रहे इस ज्योतिष को आम आदमी के

लिए सीखना व समझना आसान नहीं। कितनी प्रकार की तो कुंडलियां (नवांश, द्वदांश वग़ैरह), कई तरह की गणनाएं, दशाएं इत्यादि जाननी पड़ती हैं तब जा कर कुछ समझ में आना शुरु होता है। एक बड़ी समस्या यह है कि कष्ट निवारण के जो उपाय बताए जाते हैं, वो आम तौर पर कठिन व महंगे होते हैं। रत्न धारण, या यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि जो लगभग एक जाति विशेष द्वारा ही किए जा सकते हैं (आम तौर पर ऐसा कहा जाता है) इत्यादि – यानि निवारण का मार्ग कठिन है। कौन जानता है कि जो रत्न आप को हज़ारों रुपए में बेचा गया है, वो असली है भी या नहीं, इत्यादि। तो अब एक साधारण व्यक्ति समस्या निवारण के लिए क्या करे? इसी सवाल को पं० रूप चन्द जी ने, लाल किताब ज्योतिष पद्धति के ज़रिये हल किया।

लाल किताब के तरीक़े को संक्षिप्त में देखने से पता चलेगा कि लाल किताब में सिर्फ़ जन्म कुंडली ही बनाई जाती है जो प्रचलित ज्योतिष के अनुसार बनती है। बस एक ही अंतर है कि लग्न में जो भी राषि हो, वहां मेष लिख दिया जाता है पहले घर में हमेशा मेष राशि ही क्यों होती है, इसके पीछे क्या तर्क है, इसका जवाब लाल किताब की व्याक्रण पढ़ने से पता चल जायेगा। व क्रम से सभी घरों मे आगे के अंक लिख दिए जाते हैं पर ग्रहों की स्थिति नहीं बदली जाती। कुंडली के हर घर व ग्रह के लिए कारक वस्तुएं निश्चित कर दी गई हैं जिन का असर जातक व उस के परिवार पर होता है। यही नहीं, जातक के घर, व उस में रखे मवेशी, पालतू जानवर, पेड़ पौधे व घर का अन्य सामान इत्यादि सभी का असर जातक पर होता है। हर ग्रह का प्रत्येक घर में नेक (शुभ) या बद (अशुभ) असर हो सकता है। सभी ग्रहों की अच्छी या बुरी अवस्था में होने वाली निशानियां भी लिखी गई हैं या उन की ओर इशारा कर दिया गया है। जिस

से यह फ़ैसला दो लफ़्ज़ी में यानि केवल दो शब्दों में हो जाता है कि क्या ग्रह शुभ असर का है या अशुभ असर का। उदाहरण के तौर पर यदि किसी का सूर्य एक विशेष घर में नीच हुआ बैठा हो तो यदि ऐसा व्यक्ति मांस मदिरा का सेवन करता है तो उस का लड़का बीमार ही रहेगा। ऐसा होने से केवल दो शब्दों से ही आप को सूर्य की हालत का इशारा मिल गया। उस के निवारण के लिए दिया गया उपाय कर लेने से लगभग फ़ौरन लाभ मिलता है।

लाल किताब के उपाय के उदाहरण देखिए – बारिश का पानी एक बोतल में भर कर घर में रख लें या भूरी चींटियों को दलिया डालें इत्यादि। यह उपाय महज़ टोटके नहीं हैं। पर कुछ अक़्ल के पीछे लाठी ले कर घूमने वालों ने इन्हें टोटके कह डाला व लाल किताब के टोटके नाम की किताबें तक लिख डालीं। लाल किताब के उपाय बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से ग्रहों के कारक व उन घरों, जिन में यह ग्रह बैठे हैं, व दूसरे असूलों के अनुसार बनाए गए हैं। अक्सर यह उपाय जादू जैसा असर दिखाते हुए पाए गए हैं। पंडित रूप चन्द जी ने केवल वे उपाय लिखे हैं जिस से बचाव ही किया जा सकता है पर किसी का बुरा नहीं। लाल किताब में बहुत प्रकार के ग्रह प्रकोपों से बचने के उपाय दिए गए हैं, लेकिन इस का यह मतलब न लिया जाए कि इस में हर समस्या का समाधान दिया गया है।

लाल किताब में शुरु में ही कहा गया है कि बीमारी का इलाज तो बग़ैर दवा के भी है मगर मौत का कोई इलाज नहीं, यह दुनियावी हिसाब किताब है, कोई दावा–ए–ख़ुदाई नहीं। क्योंकि आप को अपने संचित करम फल, अच्छे या बुरे, तो भोगने ही हैं। उपाय के ज़रिए आप अपना

किसी हद तक बचाव कर सकते हैं। बुरे ग्रह के असर को कम किया जा सकता है, पर पूर्ण रूप से हटाया नहीं जा सकता। और जो ग्रह ग्रह फल के हैं उन का तो कुछ भी नहीं किया जा सकता, यदि हम अपने पूर्वजों द्वारा संचित धन व सम्पत्ति भोगने के अधिकारी हैं तो उन के द्वारा संचित पापों को भी तो भुगतने की जिम्मेवारी हमारी ही है। वह कर्म फल भी हमें भोगना ही है।

यहां यह कहना बहुत ज़रूरी है कि कई ज्योतिषी अंधा–धुंध लाल किताब के व्याकरण को समझे बिना सभी ग्रहों के उपाय करवा देते हैं जिस से अनजाने में शुभ फल देने वाला ग्रह अशुभ फल शुरु कर सकता है या अपना अच्छा असर देना बंद कर सकता है। मान लीजिए यदि कोई डाक्टर किसी मरीज़ को सभी बीमारियों की दवाएं या एंटिबायटिक पिला दे तो क्या होगा, जो बिमारी न भी हो, उस के बैक्टीरिया जिस्म में पैदा हो जाएंगे या जिन बैक्टीरिया की इन्सानी जिस्म में ज़रूरत है, उन की दवाई पीने से समाप्ति हो सकती हैं जिस से कोई और नई बीमारी शुरु हो जाने की संभावना है। इस लिए इस पद्धति को समझे बिना टोटका बाज़ी जातक के लिए नई उलझन पैदा कर सकती है। यह नियम तो प्रचलित ज्योतिष में भी पूरी तरह से लागू होता है, यदि आप बिना मतलब नीलम, मूंगा, हीरा, पुखराज इत्यादि पहन लेंगे तो आप को नुक़्सान पहुंचना निश्चित है।

यही नहीं एक और महानुभाव इन्टरनैट के ज़रिए अपनी लाल किताब ज्योतिष की दुकानदारी चला रहे हैं व उर्दू की लाल किताब को एनशिएन्ट उर्दू यानि पुरातन उर्दू की किताब बता रहे हैं। लाल किताब में से बृहस्पति का पृष्ठ दिखाते हैं व यह दावा करते हैं कि उन के पास आर्केओलाजिकल सर्वे आफ़ इंडिया का प्रमाण पत्र है कि उन के वाली

लाल किताब कई सौ वर्ष पुरानी है। लगता है उन के लिए उर्दू भाषा रूपी मिठाई कई सौ साल पहले ही बांट दी गई थी, बाकी की आम जनता को उर्दू कुछ एक सदियों के बाद में रिलीज़ की गई। उन्हें इस तरह लिखने से पहले कम से कम उर्दू भाषा का इतिहास जान लेना चाहिए था कि यह भाषा है कितनी पुरानी। इन्टरनैट पर ही एक और सज्जन अरबी भाषा मे ज्योमैट्री की किताब से पैथागोरस की मशहूर थ्योरम को लाल किताब का पन्ना बताते हैं यह दिखाने के लिए कि लाल किताब अरब से आई है। इन लोगों की अल्प बुद्धि पर तरस आता है। क्यों कह रहे हैं यह लोग इस तरह की बातें? सिर्फ़ इसलिये ताकि किसी तरीक़े से इन की दुकानदारी चलती रहे। इसी प्रकार लाल किताब सूरज के सारथी के हाथों सीधी चंडीगढ़ के एक प्रकाशक के पास आ पहुंची लगती है, उन्हों ने लाल किताब का हिंदी भाषा में ऐसा घटिया अनुवाद किया कि आम आदमी चाहते हुए भी किसी किताब की ऐसी दुर्गति नहीं कर पाएगा।

प्रस्तुत पुस्तक लाल किताब – तीसरा हिस्सा मूल रूप में सन 1941 में प्रकाशित की गई। पहली दो पुस्तकें लाल किताब के फ़रमान 1939 में व दूसरी किताब लाल किताब के अरमान 1940 में छपी थीं। फ़रमान में लाल किताब की नींव अर्थात सामुद्रिक शास्त्र व हाथ की रेखाओं का अधिक वर्णन किया गया। अरमान में जन्म कुंडली का विवरण किया गया व फ़रमान की किताब का संदर्भ देते हुए सामुद्रिक, हस्त रेखा व जन्म कुंडली को मिला दिया गया। साथ ही फ़रमान में हुई छपाई व प्रूफ़ रीडिंग की त्रुटियों को सुधारा गया। इसी कड़ी की तीसरी किताब, आप के हाथों में है, पं० जी स्नेह से इसे गुटका कहते थे व यह किताब गुटके के नाम से ही प्रसिद्ध हुई।

इस गुटका संस्करण की केवल 1000 प्रतियां छपी थीं। इस का मुद्रण हजाज़ी प्रैस लाहौर में श्री हाफ़िज़ मोहम्मद की देख रेख में हुआ। इस की उस समय कीमत थी एक रुपया छः आना और यह कलकत्ता फ़ोटो हाऊस अमृतसर व धर्मशाला (कांगड़ा) से ख़रीदा जा सकता था। लेखक की बजाए प्रकाशक, पंडित गिरधारी लाल शर्मा जी का नाम लिखा गया व उन की फ़ोटो भी दी गई थी। कुछ प्रतियां बेचने के लिए दी गईं व अन्य पंडित रूप चंद जी ने अपने निकट मित्रों के लिए व जिस किसी को इस के काबिल समझा, उन्हें मुफ़्त देने के लिए रखीं।

इस में केवल जन्म कुंडली पर ही ज़ोर दिया गया है। कुंडली के बारह घर, उन की विशेषताएं, नौ ग्रह व उन का प्रत्येक घर में प्रभाव, एक ही घर में एक से अधिक ग्रहों के विवरण इत्यादि दिए गए हैं। इसी किताब में पहली बार लाल किताब के अनुसार वर्षफल बनाने की बहुत आसान विधि दी गई। इस पुस्तक में एक और पहल की गई है, कई घरों व ग्रहों का वर्णन कविता के रूप में किया गया है। पंडित रूप चंद जी ने सोचा कि कविताएं याद करनी आसान होती हैं इस लिए उन्हों ने लगभग हर विषय के लिए कविता का माध्यम चुना, ताकि लाल किताब के पाठकों को फलादेश इत्यादि याद रखने मे आसानी हो। गुटका एक Portable ready reference के रूप में अपने साथ रखने वाली पुस्तक बनाई गई है। इन पद्यांशों में लाल किताब का अनमोल ख़ज़ाना भरा हुआ है हालांकि इन्हें समझने के लिए थोड़े प्रयास की आवश्यक्ता है। इस पुस्तक में लाल किताब ज्योतिष का सार दिया गया है व यह पुस्तक गागर में सागर है।

लाल किताब के पद्यांशों व गद्यांशों में छुपे खज़ानों व अर्थों को समझने व ढूंढने के लिए चंडीगढ में कुछ युवा लोगों ने गत वर्षों से एक

जुट हो कर श्री निर्मल भारद्वाज व पटियाला के श्री योगराज प्रभाकर की रहनुमाई में एक लाल किताब ज्योतिष अध्ययन ग्रुप बनाई है जिस का नाम है ऐस्ट्रोस्टूडैन्ट्स ग्रुप(AstroStudents), इस के इलावा इन्टरनैट पर एक फ़ोरम भी बनाया है जिस के द्वारा विश्व भर के लाल किताब प्रेमी अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

लाल किताब के प्रति AstroStudents ग्रुप की श्रद्धा अगाढ़ व अध्ययन बेमिसाल है। इन का सब से पहला ध्येय था लाल किताब की पांचों पुस्तकों की प्राप्ति। अनथक परिश्रम व कुछ सौभाग्य द्वारा इन्हों ने पांचों पुस्तकें मूल रूप में ढूंढ निकालीं। बहुतेरे ऐसे लोग भी हैं जिन के पास मूल पुस्तकें हैं व वे स्वयं इन्हें पढ़ते भी नहीं या उर्दू न जानने की वजह से पढ़ नहीं पाते। इन में से अधिकांश लोगों ने मूल पुस्तकें दिखाने तक से भी इन्कार कर दिया। कुछ को लगा कि उन की दुकानदारी में कहीं प्रतिस्पर्धा न पैदा हो जाए तो कुछ ने सोचा कि ज्ञान को दबाए रखने में ही शायद उन का भला है।

लेकिन कहीं न कहीं आप को ऐसे लोग भी मिल जाएंगे जो सदैव दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं। इसी तरह के हैं मेरे अनुज, अम्बाला छावनी निवासी श्री अशोक भाटिया। किसी समय ख़ुद मेरे पास केवल 1952 की पुस्तक ही थी व मैं बाकी के संस्करण भी पढ़ना चाहता था। आवश्यक्ता अविष्कार की जननी है – वर्षों से मेरे अनुज,अशोक जी ने कई रद्दी किताबें बेचने वालों से सम्पर्क बना रखा है व उन से कह रखा था कि उर्दू भाषा की ज्योतिष या हस्त रेखा पर कभी भी कोई पुरानी पुस्तक हो, वे उन से ख़रीद लेंगे व अच्छी कीमत देंगे। वर्षों के इन्तज़ार

व हज़ारों किताबें देखने के बाद उन की मेहनत रंग लाई। किसी दिवंगत ज्योतिषी के परिवार ने उन की मृत्यु के पश्चात उन की सभी किताबों को रद्दी में बेच डाला जिन में लाल किताब की मूल प्रतियां या उन की बहुत बढ़िया फ़ोटो कापी थीं। अशोक जी ने यह पुस्तकें श्री प्रभाकर को उन की आवश्यक्तानुसार उपलब्ध करवाईं। यही नहीं, और भी कितने ही लाल किताब सीखने वालों को उन्होने यह पुस्तकें पढ़ने के लिए दीं। इस से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि जिन्हों ने आज ज्ञान को छुपा कर रखा है, कल उन्हीं की वही किताबें रद्दी के भाव बिकेंगी।

ऐस्ट्रोस्टूडेंट्स ग्रुप का ध्येय था यह किताबें सर्व–साधारण को मूल रूप में उपलब्ध करवाने का, इस के लिए इंटरनैट व कम्प्यूटर का माध्यम इस्तेमाल किया गया। इस पुनीत कार्य में पहल का श्रेय श्री योगराज प्रभाकर ने की। उन्होंने अपने दो मेधावी पुत्रों, ऋषि व राहुल की अनथक मेहनत से सभी किताबों की स्कैनिंग की। किताबें बहुत पुरानी थीं व कुछ पृष्ठ तो बहुत जर्जर हालत में थे। योगराज जी ने ख़ुद प्रत्येक पृष्ठ को एक फ़ोटो की भांति अडोबी फ़ोटोशाप (Adobe Photoshop) साफ़्ट्वेयर में ले जा कर साफ़ किया गया, धब्बे हटाए व टूटे हुए शब्दों को उर्दू साफ़्ट्वेयर की मदद से जोड़ा व मूल पृष्ठों को इस हालत में कर दिया कि पढ़ने में कोई दिक्क़त न हो। इस तरह पांचों संस्करणों के हज़ारों पृष्ठों को एक एक कर के ठीक किया गया। यह काम पिछले कई सालों से चल रहा है। ज्यूं ज्यूं यह संस्करण तैयार होते गए, इन्हें निर्मल भारद्वाज जी इंटरनैट पर सर्व साधारण के लिए डालते गए, कई लोगों ने सिर्फ़ इन किताबों को मूल रूप में पढ़ने के लिए ही उर्दू भाषा सीखी है व और भी कई सीख रहे हैं।

ऐस्ट्रोस्टूडेंट्स का अगला क़दम है इन किताबों का यथाशक्ति त्रुटिहीन हिंदी लिपि–अन्तरण ताकि जो लोग उर्दू नहीं पढ़ सकते, उन्हें मूल ग्रंथ पढ़ने की सुविधा हो जाए। अब तक की मिलने वाली हिंदी में अनूदित लाल किताबों की दुर्दशा तो हम देख ही चुके हैं। यह सोचा गया कि मूल पुस्तक, जिस तरह पहले छपी थी बिल्कुल बिना किसी भी फेर बदल के, उसी तरह हिंदी लिपि में तैयार की जाए। देहली के दैवज्ञ पंडित वेणी माधव गोस्वामी जी ने लाल किताब के फ़रमान दिसम्बर 2006 में प्रकाशित करवाई। इस कार्य के लिए भी उन्हें ऐस्ट्रोस्टूडेंट्स व श्री योगराज प्रभाकर का पूर्ण सहयोग मिला। पंडित वेणी माधव गोस्वामी जी द्वारा लिप्यांतरित लाल किताब अरमान भी छप कर आ चुकी है । ऐस्ट्रोस्टूडेंट्स का यह प्राजैक्ट लाल किताब तीसरा हिस्सा आप के सामने है।

लाल किताब (तीसरा हिस्सा) १९४१ के रूपांतरण व प्रकाशन के सिलसिले में मैं एक प्रतिभाशाली तरुण का ज़िक्र विशेष तौर पर करना चाहूंगा, और वह है श्री योगराज प्रभाकर का होनहार सुपुत्र, राहुल प्रभाकर। राहुल ने लगभग छह वर्ष की आयु में ही कम्प्यूटर के बारे में सीखना शुरु कर दिया व दस वर्ष की आयु में एक व्यवसायिक वैब साइट भी तैयार की जिस के लिए उसे ग्यारह हज़ार रुपए का पारिश्रमिक भी मिला एवम ट्रिब्यून, इंडियन एक्सप्रैस इत्यादि में उस की तस्वीरें छपीं। उन्हीं दिनों उसने उर्दू भी सीख ली व कम्प्यूटर के ज़रिए उर्दू की टाइपिंग भी। प्रस्तुत पुस्तक, लाल किताब तीसरा हिस्सा को राहुल ने लगभग अकेले ही उर्दू से हिंदी में लिप्यान्तरण व टाईप किया है। बाद में इसकी प्रूफ़रीडिंग श्री प्रभाकर व श्री भारद्वाज ने की। इस किताब को निकालने की मुख्य प्रेरणा स्तोत्र हैं श्री निर्मल भारद्वाज एवम चंडीगढ़ के ऐडवोकेट श्री कुलबीर सिंह बैंस व एस्ट्रोस्टूडैंट्स के अन्य सदस्य।

हिंदी जानने वाले जो लोग उर्दू सीख रहे हैं, वे इन्टर्नैट से उर्दू की किताब पढ़ सकते हैं वे हिन्दी की इस किताब को सामने रख कर उर्दू भाषा सीखने के काम को आसान बना सकते हैं। इस हिंदी लिप्यांतरण में पृष्ठ संख्या व पंक्ति संख्या बिल्कुल उसी तरह लिखी गई है जैसे कि मूल पुस्तक में थी। यही नहीं हरेक पंक्ति में अक्षर भी उतने हि हैं जितने कि मूल ग्रन्थ में|

आज गुरु पूर्णिमा के दिन मेरा व सभी लाल किताब प्रेमियों की तरफ़ से उन महापुरुष को शत शत प्रणाम व एस्ट्रोस्टुडैन्ट्स को इस ऐतिहासिक कार्य पूर्ण करने के लिए हार्दिक बधाई।

राजिंदर भाटिया
10529 Democracy Boulevard
Potomac Maryland USA
Phone: 301.983.8022
Email: Rajinderbhatia@Gmail.com

पण्डित रूप चंद जोशी जी
का तीसरा ख़्वाब

न जाने क्यों मैं जब भी लाल किताब के बारे में कुछ लिखने की हिमाकत करता हूँ, तो शब्द मेरा साथ छोड़ने लगते हैं और अक़्ल काम करना बंद कर देती है। मेरी समझ में यह नहीं आता कि मैं इस महाग्रंथ के किस पहलू पर कलम आज़माई करूँ? इसकी सरलता का ज़िक्र करूँ या इसके शैली का, इसके साहित्यिक पहलू की बात करूँ या आध्यात्मिक पक्ष की, इसकी सुन्दर शब्दावली के बारे में कुछ लिखूँ या इसकी ख़ूबसूरत कविता के बारे में, इसके दुनियावी पक्ष के बारे में कुछ लिखूँ या इसके ग़ैबी पहलू के बारे में, कुछ समझ नहीं आता। अमूमन किसी भी ग्रंथ में कुछ सीमित ख़ूबियाँ होती हैं, लेकिन जिस महाग्रंथ का एक-एक शब्द किसी बहुमूल्य रत्न के समान हो, और जिसकी एक-एक पंक्ति पर एक पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता हो, उसके बारे में किसी साधारण मनुष्य की कमज़ोर कलम आख़िर कह ही क्या सकती है? आख़िर में मेरे कवि हृदय से अनायास ही महान् लाल किताब की शान में यह शब्द निकल पड़ते हैं:

"इसे हमराह धड़कन-ओ-लहू के देखा है,
सिम्त इसको तो किसी ने गुरू के देखा है।
बाइस-ए-नाज़ है मेरे लिये फ़क़त ये ही,
कि इस किताब को मैंने भी छू के देखा है।"

बुज़ुर्ग लोग बताते हैं कि लाल किताब फरमान 1939 व लाल किताब के अरमान 1940 पढ़ने बाद लोगों ने पंडित जी से शिकायत कि एक तो ये दोनों पुस्तकें हद से ज़्यादा टैकनिकल होने की वजह से बड़ी मुश्किल से समझ आती हैं, दूसरा इनमें उपायों का ज़िक्र बहुत कम किया गया है। ग़ालिबन तभी पंडित जी ने यह लाल किताब (तीसरा हिस्सा) 1941 समाज को देने का निर्णय लिया। और इसी ग्रंथ के प्रकाशन के बाद ही लाल किताब ज्योतिष का परचम दुनिया में लहराना शुरु हुआ। लगभग 3 इंच चौड़ी व 7 इंच लम्बी यह पुस्तक पंडित जी को इतनी प्रिय थी कि आप इसे इसके नन्हे आकार की वजह से, बड़े प्यार से गुटका कहा करते थे, और भी इसे सभी लोग गुटके के नाम से ही जानते हैं, पंजाब में कहीं-कहीं इसे छोटी किताब के नाम से भी याद किया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक लाल किताब तीसरा हिस्सा(1941) को पंडित जी द्वारा लिखित पाँचों पुस्तकों में एक ख़ास मुकाम हासिल है, जहाँ फ़रमान और अरमान एक दूसरे के पूरक हैं तथा 1942 व 1952 के संस्करण थोड़े टैक्निकल स्वभाव के हैं, वहीं यह संस्करण अपने आप में हर तरह से मुकम्मिल है। कविता का प्रयोग सबसे पहले इसी ग्रंथ में हुआ है, जिससे इसकी कविताओं को कंठस्थ करने का चलन शुरु हुआ और इसी चलन की वजह से ही लाल किताब का संदेश जन-जन तक पहुँचा और इस विद्या को सर्वत्र प्रसिद्धी मिलनी शुरु हुई। सादगी के लिहाज़ से यह पुस्तक बाक़ी चारों किताबों में से सबसे अव्वल है, इतने कम शब्दों में इतने महान् विषय को अपने आप में समो लेना गागर में सागर से कम नहीं है। ऐसा नहीं कि ज्योतिष के किसी पक्ष का ज़िक्र छोड़ दिया गया हो, बात केवल संक्षेप में मगर पूरी निष्ठा से की गई है। वर्षफल की सारणी का चलन भी इसी ग्रंथ के साथ ही शुरु हुआ, जोकि बाद में लाल किताब ज्योतिष का एक

अभिन्न अंग बना। हर भाव में किसी एक या एक से ज़्यादा ग्रह होने की स्थिति में क्या उपाय किया जाये पहली बार इसका ज़िक्र बड़े विस्तार से किया गया है। हर ग्रह से संबंधित देवी-देवताओं के चित्र सबसे पहले इसी किताब में पंडित जी ने दिये हैं, यही नहीं हर ग्रह से संबंधित नेक और बद कारक वस्तुओं के चित्र भी पहले इसी पुस्तक में प्रकाशित किये गये। मंगल बद के कारक देवता के बारे में सर्वप्रथम ज़िक्र यहीं से शुरु हुआ, और मंगल बद के कारक देवता का चित्र केवल इसी ग्रंथ में ही पाया जाता है।

कहते हैं कि सरलता और सादगी दो महान् गुण हैं, लेकिन साथ ही यह भी कहा गया है कि इन्हें हासिल करना उतना ही कठिन भी है। ख़ुशक़िस्मती से यही सरलता और सादगी लाल किताब की आत्मा है। इतनी सादी भाषा में पाँच-पाँच महाग्रंथों का निर्माण कोई मामूली घटना नहीं है। दरअसल लाल किताब दुनिया का एक मात्र ऐसा ग्रंथ है जिसकी रचना साहित्यिक भाषा और शैली में की गई है। इसमें एक-एक लफ़्ज़ का चुनाव पंडित जी ने बड़ी सावधानी और ख़ूबसूरती से किया है, पूरे ग्रंथ में एक भी लफ़्ज़ फालतू दिखाई नहीं पड़ता। मुहावरों, लोकोक्तियों और सुंदर व सटीक उपमाओं का जो इस्तेमाल पंडित जी ने इन ग्रंथों में किया है, वह बेजोड़ है। इन सब के बग़ैर शायद वो बात न बन पाती जो कि आज हमारे सामने है। वैसे तो बहुत से उदाहरण इस सिलसिले में दिये जा सकते हैं लेकिन मैं यहाँ मुहावरे और उपमा के दो उदाहरण पेश करना चाहूंगा। सफ़ा नम्बर 252 में पंडित जी धन के निरंतर प्रवाह की बात करते हैं, अगर वे चाहते तो केवल यही कहकर काम चल जाता कि उस जातक के पास धन-दौलत निरन्तर आती रहेगी। लेकिन उनकी प्रबुद्ध साहित्यिक सोच देखें कि धन की निरंतरता बयान करने के लिये उन्होंने पंजाबी भाषा की एक प्रसिद्ध

लोकोक्ति*आर ढाँगा, ... चल्लीआँ* (पूरी लोकोक्ति इस प्रकार है आर ढाँगा, पार ढाँगा, बिच्च टल्लम टल्लीआँ, आण कूँजाँ, देण बच्चे, नदी न्हावण चल्लीआँ) को प्रयोग किया। इस लोकोक्ति में चलते हुए रहट का ज़िक्र है जो कि कुएँ से निरंतर पानी निकाल निकाल कर खेतों को देता है, यह निरंतरता की एक अद्बितीय उदाहरण है। इसी तरह ही बृहस्पत ख़ाना नम्बर 10 (सफ़ा नम्बर 50 पर) के मंदे असर के बारे में पंडित जी लिखते हैं

'उसकी ज़िन्दगी में बच्चे ने ख़्वाब में महल देखे, मगर जागने उपर उसी टूटी हुई चारपाई और तवेला ख़राँ में लेटे पाया।'

फ़ारसी भाषा में *तवेला ख़राँ* का अर्थ है 'गधों का अस्तबल'। यह उपमा के सुन्दर इस्तेमाल की एक ख़ूबसूरत मिसाल है, कि कहाँ तो महल और कहाँ *तवेला ख़राँ*, हालांकि महल की जगह टूटी हुई चारपाई भी पूरी कहानी बयान कर देती है लेकिन *तवेला ख़राँ* के इस्तेमाल ने इस पूरे उदाहरण को एक बिल्कुल ही नया और सटीक रूप दे दिया। इनके इलावा भी ऐसे अनेकों उदाहरण इस किताब में मौजूद हैं जो कि पंडित जी की प्रौढ़ और परिपक्व साहित्यिक सोच की तरफ़ इशारा करती है।

जहां धर्म-निरपेक्षता की चाशनी से सराबोर *वसुधैव कुटुम्बकम्* का पवित्र संदेश इस महाग्रंथ की आत्मा है, वहीं दीन-दुखियों की मदद और जीवों पर दया भाव रखना इस ग्रंथ की मूल शिक्षाओं में से एक है। पूर्वजन्मों के संचित कर्मों के सिद्धांत से भी ऊपर उठ कर पंडित जी ने आज के संदर्भ में उन ग़लतियों को दोबारा न दोहराने की शिक्षा दी है जो कि मानव मात्र के लिये दु:ख और मुसीबत का कारण बन सकती हैं। इस संदर्भ में पितृ ऋण का चैप्टर अति महत्वपूर्ण हो जाता है जहाँ ये बताया गया है कि कुत्तों को मारने या सताने, जीव हत्या, मित्रों या भाइयों से धोखा, स्त्री पर

अत्याचार, भ्रूण हत्या, असत्य कहना, चरित्रहीनता, धोखाधड़ी और श्राप या बददुआ की वजह से इन्सान पर किसी न किसी प्रकार का ऋण चढ़ जाता है, जिसके परिणाम अक्सर बहुत भयंकर हुआ करते हैं। ग़ौर से देखने वाली बात है कि यह चैप्टर केवल इन ऋणों का ज़िक्र मात्र नहीं है, बल्कि इसके ज़रिये एक ऐसा संदेश दिया गया है जिस पर अमल करके और इन बुराइयों से बच कर कोई भी मनुष्य अपने जीवन में गुणात्मक परिवर्तन ला सकता है।

इस ग्रंथ की लिप्यांतरण के पीछे भी कई कारण हैं, सबसे पहले तो यह कि किसी भी ग्रथ को यदि उसकी मूल ज़ुबान में ही पढ़ा जाए तो उसकी आत्मा तक पहुँचने का रास्ता आसान हो जाता है; दूसरा सबसे बड़ा कारण यह था कि इस ग्रंथ में जो उर्दू, फारसी एवं पंजाबी के शब्द, मुहावरे, और लोकोक्तियाँ इस्तेमाल हुई हैं, उनमें से अधिकतर का टूटा फूटा सरलार्थ तो शायद किया जा सके, मगर उन्हें अनुवाद करने से अर्थ का अनर्थ हो जाने की संभावना बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है। पूर्व में लाल किताब के कुछ संस्करणों के तथाकथित अनुवादों से जो अपूरणीय क्षति हुई उससे कौन परिचित नहीं। उदाहरणत: इस संस्करण में एक जगह एक पंजाबी की प्रसिद्ध लोकोक्ति है:

आर ढाँगा, पार ढाँगा, बिच्च टल्लम-टल्लीआँ,
आण कूँजाँ, देण बच्चे, नदी न्हावण चल्लीआँ।

क्या इसका अनुवाद किया जा सकता है? जी नहीं, सिर्फ सरलार्थ करने की कोशिश की जा सकती है। इसी पुस्तक में शब्द सुथरा व सुथरे शाह का कई जगह पर प्रयोग हुआ है। सुथरा वास्तव में एक जन-जाति का नाम है तथा इन्हें सुथरा क्यों कहा जाता है अगर इसका उल्लेख करने बैठें तो बहुत लम्बी चौड़ी व्याख्या की ज़रूरत पड़ती है। अत: लिप्यांतरण का मार्ग ही हमें सर्वोत्तम प्रतीत हुआ। ये कोई एकमात्र उदाहरण नहीं हैं ऐसे बहुत

से उदाहरण इस ग्रंथ में आपको मिलेंगे, इसीलिए हमने अनुवाद नहीं लिप्याँतरण का निर्णय लिया।

हम लोक कल्याण हेतु इस लिखित ग्रंथ के मूल स्वरूप से किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ के हक में नही, और न ही हम यह चाहते हैं कि किसी भी शब्द के गलत अर्थ ही समाज तक पहुँचे, क्योंकि एक ग़लत अर्थ बहुत सी भ्राँतियों को पैदा करने के लिए काफी होता है, अतः हम किसी भी भ्रांति को फैलाने के महापाप से हर समय बचना चाहते हैं। क्योंकि हमारा मकसद तो इस ग्रंथ के बारे में फैली गलतफहमियों व भ्रांतियों को दूर करना है।

मैं पहले भी अर्ज़ कर चुका हूँ कि हम लोग इस ग्रंथ के मूल स्वरूप से किसी प्रकार की भी छेड़छाड़ के निहायत खिलाफ़ हैं, अतः हमने इसके लिप्याँतरण के दौरान अपनी तरफ़ से एक भी शब्द यहाँ तक कि एक मात्रा तक का हेरफेर नहीं किया। मेरे बहुत से मित्रों की राय थी कि हरेक पृष्ठ के नीचे उसमें इस्तेमाल हुए मुश्किल शब्दों के अर्थ दिए जाएँ ताकि पढ़ने वाले को आसानी हो, लेकिन हमारी नज़र में यह भी किताब के मूल रूप से खिलवाड़ था, अतः हमने इस सुझाव को नहीं माना। लेकिन मेरे परम मित्र दिल्ली निवासी श्री अनिल भारद्वाज जी ने एक बेशक़ीमती मशविरा दिया जिसे खारिज करने कि हिमाक़त मैं न कर सका। उनका मत था कि उर्दू, फारसी, व पंजाबी के मुश्किल शब्दों के यदि अर्थ न दिए गए तो भ्रांतियाँ फैलने का व अर्थ का अनर्थ होने की संभावना और ज़्यादा बढ़ सकती हैं। क्योंकि क्या जाने कोई पढ़ने वाला किसी शब्द को क्या समझ बैठे, यदि ऐसा होता है तो इस महान् ग्रंथ के प्रचार प्रसार के कार्य को बहुत बड़ा धक्का लगने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता, और इसका सीधा सीधा अर्थ हमारे मक़सद का नाकामयाब होना होगा। इसी वजह से मेरे परम

मित्र श्री अनिल भारद्वाज जी के लफ़्ज़ों को फूल चढ़ाते हुए हमने इस ग्रंथ के अंत में उर्दू, फारसी, पंजाबी में लगभग 650 मुश्किल शब्दों के अर्थ दिए हैं, अतः ग्रंथ का यह हिस्सा सप्रेम व सादर मैं उन्हें ही समर्पित करता हूँ।

कुछ अहमक लोग अक्सर पंडित जी की भाषा और punctuation पर सवालिया निशान लगाने की हिमाकत करते हैं, तथा उनके लिखे ग्रंथों की भाषा को "alien" तथा शैली को "ill punctuated" कहते हैं। हालांकि इस ग्रंथ में बार-बार कहा गया है कि ***"दुनियावी हिसाब किताब है .... कोई दावा-ए-ख़ुदाई नहीं"***, इसलिए मैं कोई दावा तो नहीं करूंगा मगर उन सब लोगों को बड़े अदब व ख़लूस से यह संदेश पहुँचाना चाहूंगा कि पंडित जी की भाषा व शैली पर उंगली उठाने वाले महानुभाव अगर उर्दू ज़ुबान से वाकिफ़ होते तो शायद ऐसी बेहूदा बातें न करते क्योंकि ऐसी उम्दा punctuation और लफ़्ज़ों का सटीक चुनाव शायद ही किसी और पुस्तक में देखने को मिलेगा। धोका, झूट, झूटा, अस्थान, उपाओ, सुभाओ, अस्थापन, नूँह, धी, दोहता, दोहती, ब्योपार, ब्योपारी, डेला और स्राप आदि शब्द (जिन्हें कुछ अनाड़ी लोग आम बोलचाल या अपभ्रंश शब्द समझने की अक्सर भूल कर बैठते हैं) दरअसल शुद्ध फारसी भाषा के प्रामाणिक साहित्यिक शब्द हैं जो कि पंडित जी के उच्च दर्जे के भाषा ज्ञान को दर्शाते हैं, अब रही पंजाबी भाषा के शब्दों, मुहावरों, व लोकोक्तियों की बात, तो किसी भी लेखक की कलम न तो आज तक आंचलिकता से ग़ाफ़िल रही है और न ही शायद आगे कभी रहेगी।

त्याग और बलिदान हमारे देश की परंपरा रही है। भारतीय मूल्यों में इन्हें बहुत ऊँचा दर्जा हासिल है, हमारे पंडित जी भी इसी त्याग और बलिदान की साक्षात मूर्ति हैं। ज्योतिष के पाँच-पाँच महाग्रंथ रचने के बाद भी उनके अंदर कभी प्रसिद्धि या नाम पाने की कोई झलक दिखाई नहीं

पड़ती। यहाँ तक कि इन ग्रंथों पर बतौर रचयिता अपना नाम तक देने से भी उन्हें गुरेज़ रहा, और नाम दिया भी तो अपने चचेरे भाई पंडित गिरधारी लाल शर्मा का जिनका कि ग़ालिबन इल्म ज्योतिष से कोई लेना देना भी नहीं था। यही नहीं वह सज्जन जिन्होंने इस किताब की कातिबकारी (Calligraphy) अपना मेहनताना लेकर की उन्हें भी आशीर्वाद देना और उनका नाम अपने ग्रंथ में शामिल करना पंडित जी नहीं भूले। वे सदैव यही कहते रहे कि जो कुछ भी उन्होंने लिखा है, वो किसी अदृश्य शक्ति की देन है वे तो इस महान् कार्य को पूरा करने के एक निमित्त मात्र हैं। सारी ज़िंदगी बिना किसी निहित स्वार्थ के केवल मानव कल्याण की भावना का पालन करते हुये और अपने नाम व प्रसिद्धी का बलिदान करने की हिम्मत किसी सिद्ध पुरुष के पास ही हो सकती है।

जो इंसान अपनी भूल का अहसास कर लें, और समय रहते उन्हें सुधारने की कोशिश करे, मेरे ख़्याल में ऐसा व्यक्ति आम आदमी के स्तर से बहुत ऊपर का होता है। लाल किताब के फ़रमान 1939 जब प्रकाशित हुई तो पंडित जी ने देखा कि कातिबकारी और छपाई की वजह से कई ग़लतियाँ अभी रह गईं हैं, आप उस महान् आत्मा की भावना और लगन का अंदाज़ा लगायें कि उन्होंने तुरन्त ही अपने अगले ग्रंथ लाल किताब के अरमान 1940 के अंत में अलग से एक चैप्टर दे दिया जिसमें कि विस्तारपूर्वक हर उस ग़लती का ज़िक्र किया गया जो कि लाल किताब के फ़रमान 1939 में रह गई थी। उन्होंने न केवल उन ग़लतियों का ज़िक्र ही किया, बल्कि उन गलत शब्दों की जगह कौन सा सही शब्द होना चाहिये सफ़ा नम्बर और पंक्ति नम्बर सहित लोगों तक पहुँचाया। इसी मक़सद से उन्होंने एक 'दुरुस्तीनामा' (Correction Slip) भी साथ में छपवा दी ताकि ग़लती लगने की गुंजायश ही ख़त्म हो जाये।

हमने अपने प्राचीन ऋषियों को तो नहीं देखा लेकिन यह सब बातें जान लेने के बाद कुछ कुछ अहसास ज़रूर हो रहा है कि हमारे ऋषि-मुनि भी पंडित जी जैसे ही रहे होंगे।

लाल किताब के पहले तीन संस्करण 'लाल किताब के फ़रमान (1939)', 'लाल किताब के अरमान (1940)' और 'लाल किताब तीसरा हिस्सा (1941)' का लिप्यंतरण मैंने तक़रीबन तीन साल पहले ही कर लिया था, लेकिन लाल किताब के प्रकाशन के प्रति फैली भ्राँतियाँ, आत्मविश्वास की कमी और असफलता के डर की वजह से मैं इन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित न करा सका। दैवज्ञ पंडित वेणीमाधव गोस्वामी जी द्वारा लाल किताब के पहले दो लिप्यांतरित संस्करण प्रकाशित होने के बाद उन्होंने 'लाल किताब तीसरा हिस्सा (1941)' के प्रकाशन के लिये मुझे प्रोत्साहित किया, हालांकि वह ख़ुद भी इसका लिप्यांतरण कर चुके थे और यह पुस्तक लगभग पूरी तरह से प्रकाशन के लिये तैयार भी थी, लेकिन उनकी हार्दिक इच्छा थी कि इस पुस्तक का प्रकाशन कार्य मेरे द्वारा ही संपन्न हो। सिर्फ़ यही नहीं उन्होंने मुझे इस पुनीत कार्य के लिये हर प्रकार की सहायता का आश्वासन भी दिया और समय समय पर उनकी बहुमूल्य राय बतौर आशीर्वाद भी मुझे मिलती रही जिसके लिये मैं सदैव उनका ऋणी रहूंगा।

वैसे तो मेरे बहुत से साथी इस महान् ग्रंथ के लिप्यांतरण करने में मेरे प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं, लेकिन इसका मुख्य श्रेय केवल दो व्यक्तियों को ही जाता है। एक है मेरे बड़े भाई और ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स के संयोजक श्री निर्मल कुमार भारद्वाज जी तथा दूसरे मेरे छोटे बेटे चिं० राहुल प्रभाकर। इन दो आत्माओं की लगन और अथक मेहनत का नतीजा है कि आज यह ग्रंथ संभवत: शुद्धतम रूप में आपके मुबारिक हाथों में पहुँचा है। जहाँ राहुल ने

बड़े जी जान से इसे उर्दू से हिन्दी में लिप्यांतरित करने में मेरी सहायता की, तथा बाद में इसको कंप्यूटर पर बड़ी मेहनत से टाईप किया वहीं आदरणीय निर्मल जी ने दिन रात एक करके इसकी प्रूफ़रीडिंग की, वह भी एक बार नहीं, कई बार। यदि निर्मल जी का साथ न मिला होता तो शायद इस ग्रंथ में बहुत सी ग़लतियाँ रह गई होती। मैं हर बार अपनी तरफ़ से इसे शुद्धतम रूप में तैयार करता था लेकिन निर्मल जी की कुशाग्र बुद्धि और पैनी नज़र हर बार कोई न कोई गलती ढूँढ ही लेती और यदि संयोगवश कोई ग़लती रह भी जाती तो उसे राहुल ढूँढ लेता। क्योंकि श्री निर्मल कुमार भारद्वाज जी ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप के प्रमुख हैं, अतः उनकी अनुमति के बिना इस ग्रंथ को प्रकाशन के लिए प्रैस में देने मेरे लिए मुमकिन नहीं था, अतः जब वे संतुष्ट हुए तभी मैंने ग्रंथ को प्रकाशित करवाने की हिम्मत की। मेरी भूमिका तो मात्र एक Non Playing Captain की ही रही, वर्ना सारा काम तो इन दोनों के द्वारा ही संपन्न हुआ है। अतः सारा श्रेय आदरणीय श्री निर्मल कुमार भारद्वाज जी तथा चिं० राहुल प्रभाकर ही को दिया जाना चाहिए।

इस किताब के बारे में फैली भ्रांतियाँ और किंवदंतियों को दूर करना हमारा मक़सद रहा है, इसमें हम कितने सफल रहे, इसका फ़ैसला तो वक़्त ही करेगा लेकिन लाल किताब के एक सपूत का ज़िक्र मैं ख़ास तौर पर करना चाहूंगा जो कि लगभग 37-38 साल से भारत भूमि से बहुत दूर संयुक्त राज्य अमेरीका में रहते हुए भी इस मक़सद को पूरा करने के लिये जी-जान से लगे हुये हैं, आज अगर इस महान् ग्रंथ के बारे में फैली भ्रांतियां कुछ कम हुईं हैं, तो वह केवल इस पुण्य आत्मा की वजह से-मेरी मुराद श्री राजेन्द्र भाटिया जी से है। मूल रूप से अम्बाला छावनी निवासी श्री भाटिया जी के पूरे परिवार ने लाल किताब के प्रचार-प्रसार जो सराहनीय कार्य किया है, वह बेमिसाल है। उत्तर भारत के लाल किताब अनुयाइयों के पास मूल

ग्रंथों की प्रतिलिपियों इन्हीं के परिवार से आईं हैं। आज अगर लाल किताब के रचयिता के तौर पर पंडित रूपचंद जोशी का नाम लोग जानते हैं तो वे सिर्फ़ श्री राजेन्द्र भाटिया जी की बदौलत, वर्ना आज भी लोग इस पवित्र ग्रंथ को अरब देश से आया हुआ या सूरज के सारथी द्वारा लिखा हुआ ही समझ रहे होते। लाल किताब 1939 व लाल किताब 1940 के संस्करण मुझे भी श्री राजेन्द्र भाटिया के अनुज श्री अशोक कुमार भाटिया जी के मुबारिक हाथों से ही प्राप्त हुये थे। यहां मैं एक और बात ख़ास तौर पर लिखना चाहूंगा कि पंडित रूप चंद जोशी की दुर्लभ तस्वीरों में से एक तस्वीर जो कि इंटरनैट पर भी कई जगह उपलब्ध है, (तथा पंडित वेणीमाधव जी द्वारा लिप्यांतरित लाल किताब के पहले दो संस्करणों में भी सम्मिलित है) को अपने कैमरे से ख़ींचने का शर्फ़ भी श्री अशोक कुमार भाटिया जी को ही हासिल है। उल्लेखनीय है कि यह तस्वीर खींचने का अनुरोध स्वयं पंडित जी ने किया था। पंडित जी के साथ भाटिया परिवार की घनिष्ठता का सबूत इस पुस्तक में श्री राजेन्द्र भाटिया जी द्वारा लिखी गई भूमिका है। जिस तरह भाटिया जी को यह नाज़ है कि उन्हें और उनके परिवार को पंडित रूपचंद जोशी जी का आशीर्वाद प्राप्त है, बिल्कुल उसी तरह मेरे लिये भी यह बाइस-ए-गर्व है कि मुझे भी श्री राजेन्द्र भाटिया जी का स्नेह प्राप्त है, और मैं लोगों को बड़े गर्व से बताता हूँ कि मैं उन्हें जानता हूँ।

यहाँ मैं एक अन्य महान् आत्मा का ज़िक्र और धन्यवाद करना अपना फ़र्ज़-ए-अज़ीम समझता हूँ, जिनके ज़िक्र के बग़ैर शायद यह सब कवायद अधूरी रहती, वह हैं मेरे बड़े भाई और लाल किताब महाग्रंथ के सच्चे अनुयाइयों के अगुआ पंडित प्रदीप कुमार शर्मा जी। लाल किताब के आध्यात्मिक पहलू से हमें अगर किसी ने रूबरू करवाया तो वह पंडित प्रदीप कुमार शर्मा जी ही हैं। लाल किताब के आध्यात्मिक पहलू को जानने के

बाद तो मानो हमारी आँखों से ज़हालत के कई चश्मे उतर गये, और सोच के नुक्ता-ए-नज़र से ग़ालिबन हमारा पुर्नजन्म हुआ, वर्ना हम आज तक अंधेरे में ही भटक रहे होते। ज्योतिष को वेद की आँख क्योंकर कहा जाता है- यह बात हमें लाल किताब का एक आध्यात्मिक ग्रंथ की तरह मनन करते हुए ज्ञात हुई, और इसका सारा श्रेय भाई प्रदीप कुमार शर्मा जी को जाता है, मैं और मेरे ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स के सब साथी पंडित प्रदीप कुमार शर्मा जी के सदैव आभारी रहेंगे।

पिछले लगभग एक दशक में लाल किताब का परचम न केवल पूरे भारत में बल्कि दुनिया के कोने-कोने में बड़ी शानो शौक़त से लहराया है। आज इस ग्रंथ की धूम उन देशों में भी मची है जहाँ कि इल्म-ए-ज्योतिष को संभवत: ग़ैर-इस्लामी और हराम तक माना जाता है। मेरे लिये यह बड़े गर्व की बात है कि पाकिस्तान जैसे इस्लामी देश में भी आज लाल किताब के सच्चे अनुयाई उभर रहे हैं, और लाल किताब की शिक्षाओं को अक्षरश: अमल में ला रहे हैं। मूल ग्रंथ के अभाव में वहाँ भी इस विद्या के बारे में अनेकों ग़लतफ़हमियाँ लोगों के दिमाग़ में थीं, लेकिन ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप ने जब से मूल उर्दू ग्रंथ इंटरनैट पर उपलब्ध करवाये हैं, तब से न सिर्फ़ पाकिस्तान में इसके अक़ीदतमंदों की तादाद में इजाफ़ा हुआ बल्कि बहुत से लोगों ने मांसाहार सहित अन्य बुराइयों से भी तौबा कर ली है। आप यक़ीन माने कि हमारे कहने पर मांसाहार जैसी आदत छोड़ने वालों की संख्या भारत की बजाय पाकिस्तान में ज़्यादा है।

मैं यहाँ लाल किताब ज्योतिष में त्रिमूर्ति के नाम से प्रसिद्ध उन तीन नौजवानों चंडीगढ़ निवासी एडवोकेट कुलबीर सिंह बैंस, जालंधर निवासी श्री मनेश्वर सिंह कौंडल, दिल्ली निवासी श्री राजीव के. खट्टर का ज़िक्र करना

अपना परम कर्त्तव्य समझता हूँ, इन सब ने उम्र में मुझसे बहुत छोटे होने के बावजूद भी मेरा हर समय मार्गदर्शन किया और अपने बेशक़ीमती सुझावों से मुझे रोशनी दिखवाते रहे। मैं इन्हें K3(Kulbir, Kondal, Khattar) के नाम से याद करता हूँ, ये तीनों नौजवान मेरे बाज़ू और मेरे दिल की धड़कन का हिस्सा हैं। इन्हें देखकर मुझे पूरा भरोसा है महान् लाल किताब अब सुरक्षित हाथों में है, और मुझे इस बात पर कतई शक नहीं कि भविष्य में लाल किताब का परचम इन्हीं नौजवानों के हाथ में होगा।

आज से चन्द साल पहले ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप ने एक ख़्वाब देखा था-हरेक लाल किताब प्रेमी तक इस किताब को शुद्धतम रूप में पहुँचाने का, काम बहुत मुश्किल था लेकिन सौभाग्य से हमें कुछ ऐसे साथी मिलते गये जिनकी सोच हमारी सोच से मेल खाती थी। इसी सिलसिले में 'लाल किताब के फ़रमान (1939)' और 'लाल किताब के अरमान (1940)' के लिप्यंतरण के कठिन कार्य का बीड़ा पंडित वेणी माधव गोस्वामी ने उठाया और सफलतापूर्वक उसे पूरा भी किया। अब 'लाल किताब तीसरा हिस्सा (1941)' का ज़िम्मा हमारे सपुर्द किया गया है। हम इसमें कितने सफल हुये, इसका निर्णय तो समय ही करेगा लेकिन यहाँ मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि इस किताब के प्रकाशन का कार्य हमने किसी आर्थिक लाभ की नीयत से नहीं किया, हमारा मक़सद जहाँ जनमानस तक इस ग्रंथ को शुद्धतम रूप में पहुँचाना है, वहीं इस ग्रंथ के ज़रिये लाल किताब के हर उस प्रेमी तक पहुँचना चाहते हैं जो कि किसी भी रूप में और कहीं भी इस पर काम कर रहा है। अगर इस कोशिश के द्वारा हम लोग अपने ग्रुप का दायरा बढ़ाने में सफ़ल रहते हैं तो हम समझेंगे कि हमारा मक़सद कामयाब हुआ।

कहते हैं कि इन्सान ग़लतियों का पुतला है, न चाहते हुये भी हमसे जाने अनजाने इस पुस्तक में कुछ ग़लतियाँ ज़रूर रह गई होंगी और हम हर उस शख़्स के तह-ए-दिल से शुक्रगुज़ार होंगे जो कि इस किताब की कमी-बेशियों के बारे में हमें बतायेगा इसलिये हर उस आदमी से जिसके मन में लाल किताब के प्रति श्रद्धा और सम्मान है, हाथ जोड़ कर यह ग़ुज़ारिश करते हैं कि वे हमें हमारी त्रुटियों के बारे में ज़रूर अवगत करायें ताकि भविष्य में इन ग़लतियों से बचा जा सके।

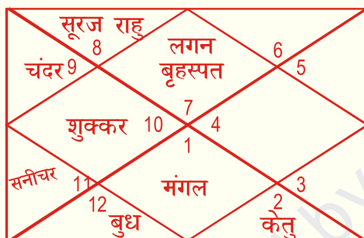
स्वतंत्रता दिवस 2007,
पटियाला नगर।

सप्रेम व सादर
योगराज प्रभाकर
58, अर्बन एस्टेट-1,
पटियाला-147 002
दूरभाषः 98725-68228,
92168-98998
Email: yrprabhakar@gmail.com,
yr_prabhakar@yahoo.com.

अर्ज़

क्या हुआ था क्या भी होगा, शौक़ दिल में आ गया।
इल्म जोतिष हस्त रेखा, हाल सब फरमा गया।
जनम कुण्डली या कि चंदर, हिस्से दो बतला गया।
हाथ दायाँ ले के बायाँ, भेद है समझा गया।
जनम राशी घर में पहले, लगन के लिखवा गया।
लगन पहला हिन्दसा गिन कर, 12 घर चलवा गया।
इस तरह पर कुण्डली पूरी करके, जब बनवा गया।
हाल सब ग्रह ख़्वानावारी, कापी ये लिखवा गया।
भेद बाक़ी इतना रखा, उम्र को छिपवा गया।
लड़का लड़की गो न बोला, बच्चा ये बतला गया।
जनम कुण्डली मर्द दायाँ, पहले है रखवा गया।
औरत कुण्डली चंदर बायाँ, पीछे है लगवा गया।
इशारतन ही बात कर के हाल, सब पढ़वा गया।
दो छपे थे हिस्से पहले, एक ये बनवा गया।

फ़र्ज़ीन जनम कुण्डली बमूजब तुला लगन हस्ब ज़ैल है।



ऊपर की कुण्डली में लगन को एक का हिन्दसा देकर हस्ब ज़ैल होगी।



(i) हालात देखने के लिये बृहस्पत ख़ाना नम्बर 1, सूरज नम्बर 2 वग़ैरह मुलाहिज़ा करें। इसी तरह ही बर्षफल पढ़ लें।

(ii) हर ग्रह के ख़ानावार असर के शुरु में जो चीज़ें लिखी हैं जब वो पैदा होंगी, इस ख़ाना नम्बर में दिया हुआ असर शुरु होगा। मसलन शुक्कर नम्बर 1-9 में सफ़ेद गाय है या शादी 25वें साल मंदा फल शुरु होगा।

क्या टेवा दुरुस्त भी है सफ़ा नम्बर 425 सबसे पहले देखें।

 तमहीद

लाल किताब (तीसरा हिस्सा)

लाल किताब है जोतिष निराली, जो क़िस्मत सोई को जगा देती है।

फ़रमान पक्का देके बात आख़िरी, दो लफ़्ज़ी से ज़ेहमत हटा देती है।

शर्त राहु केतु की 7वें भी तोड़ी, जनम राशी भी वो मिटा देती है।

लगन एक का हिन्दसा लेकर जो चलती, ख़त्म 12 पर ही वो कर देती है।

है बुनियाद रेखा क़्याफ़ा से चलती, फलादेश जोतिष बता देती है।

हवाई ख़्यालों को यकतरफ़ करती, खड़ा घोड़ा चंदर को कर देती है।

न 27 नच्छत्तर न पंचाँग गिनती, भुला राशी 12 को वो देती है।

सिर्फ़ पक्के घर 12 आख़ीर लेती, ग्रह 9 से क़िस्मत बता देती है।

जनम वक़्त दिन माह उम्र साल सब कुछ, इस्म नाम को भी उड़ा देती है।

फ़क़्त रेखा, फोटो या कोठे से कुण्डली, जनम मय चंदर बना देती है।

लिखत जब बिधाता किसी को हो शक्की, उपाओ मामूली बता देती हैं।

ग्रहफल राशी के टुकड़े दो करती।

या रेखा में मेखा लगा देती है।

1 हुक्म बिधाता जनम मिले तो, लेख जोतिष बतलाता है।
2 लाल किताब बच्चा ग्रह चाली, क़िस्मत साथ ले आता है।
3 इस बच्चे की नन्ही मुट्ठी में, पकड़ा **देव** आकाश का है।
4 भरा ख़ज़ाना जिस के अन्दर, निधि सिद्धी की माला है।
5 नौ निधि को ग्रह 9 माना, सिद्धी 12 राशी है।
6 9 ज़रब जब 12 गिनते, होती माला पूरी है।
7 राहु केतु जो **पाप** गिने हैं, ग्रह सब ही को घुमाते हैं।
8 गुरु अकेला दो को चलावे, घूमते पर वो बुध में हैं।
9 सात हो नौ या माला चौरासी, पाप फ़र्क 2 ही का है।
10 ऊपर नीचे जगत के अन्दर, झगड़ा इन दो ही का है।
11 पाप अगर सब दुनिया छोड़े, सात ग्रह बच जाता है।
12 राशी 12 और सात ग्रह से, नरक चौरासी कटता है।
13 नन्ही मुट्ठी जब खुली बच्चे की, आकाश, हवा, भरपूर हुआ।
14 हरकत, गर्मी, पानी से मिट्टी, ब्रह्मण्ड सारा जाग पड़ा।
15 हाथ दायाँ और कुंडली जनम को,**तदबीर** मर्द का नाम हुआ।

 आग़ाज़

बायाँ हाथ और चंदर कुण्डली, **तक़दीर** बशर का काम हुआ।
उलट हाथों से औरत माना, ग्रहफल राशी आम हुआ।
इल्म क़्याफ़ा जोतिष मिलते, लाल किताब का नाम हुआ।
9 ग्रह राशी 12 घूमे, क़िस्मत का आग़ाज़ हुआ।
नेक हवा जब चलने लगी तो, जहान दोनों आकार हुआ।
तरफ़ 12 त्रैलोकी होते, गुरु जगत में जनम हुआ।
माया हवा जब मिलने लगी तो, पिछला जनम अब ख़त्म हुआ।
राजा रवि बच्चा ग्रह चाली, घर अपने प्रवेश हुआ।
अक़्ल लेख का झगड़ा चला तो, गृहस्ती गुरु उपेदश हुआ।

राशी व ग्रह!

मेख[1], बिरख[2] जब मिले मिथुन[3] से, तर्जनी उंगली गिनते हैं।
कर्क[4], सिंह[5] और कन्या[6] राशी, अनामिका उंगली लेते हैं।
तुला[7], बृस्चक[8], धन[9] तीनों की, छोटी कनिष्का होती है।
मकर[10], कुम्भ[11] और मीन[12] इकट्ठी, मद्धमा उंगली बनती हैं।

मेख[1], बृस्चक[8] मालिक मंगल, तुला[7], बृख[2] शुक्कर की है।
कन्या[6] मिथुन[3] का बुध है मालिक, कुम्भ[11], मकर[10] दो शनि की है।
गुरु मालिक है धन[9], मीन[12] का, कर्क[4] चंदर की होती है।
सिंह[5] अकेला दुनिया गरजे, राशी जो सूरज की है।
केतु बैठता कन्या[6] में तो, राहु निवासी मीन[12] का है।
पाप चढ़ा आसमान[12] के ऊपर, जड़ जिस की पाताल[6] में है।

ख़ुलासा

सिद्ध 12, ब्रह्म[बृहस्पत], 9 निधि, मोह[शुक्कर], माई[चंदर], आकाश[बुध]।
राई[राहु] घटे, न तिल[केतु] बढ़े, मच्छ [सनीचर], भाई [मंगल], प्रकाश [सूरज]।
गुरु रवि और मंगल तीनों, नर ग्रह भी कहलाते हैं।
शनि, राहु और केतु तीनों, पापी ग्रह बन जाते हैं।
शुक्कर – लक्ष्मी, चंदर माता, दोनों स्त्री होते हैं।
बुध अकेला चक्कर सभी का, जिसमें सब ये घूमते हैं।
नेकी बदी दो मंगल भाई, शहद ज़हर दो मिलते हैं।
बद लालच गर मारे दुनिया, नेक दान को गिनते हैं।

घर पहला है तख़्त हज़ारी, ग्रहफल राजा कुण्डली का। 1
जोतिष में इसे लगन भी कहते, झगड़ा मनुष है माया का। 2
पूरब तरफ – पक्का घर सूरज, पर – उपकार चवन्नी का....। 3
वजूद, मकान, रूह, नमक भी गिनते, ज़माना हाल कमाई का। 4
चारदीवारी, तै के गोशे, सींग मवेशी खड़े हों जो कि। 5
राज ता’ल्लुक़, रंग हो गुड़ के, रसम पुरानी, साज़ सफ़र के। 6
झिल्ली – जेर जो पैदा होंगे, नाम हैसियत दुनिया लेंगे। 7
पहला घर सारा तख़्त गिना तो, 7वां टिकने की धरती हो। 8
7वाँ ही गर ख़ाली होवे, उल्टा तख़्त वो 24 हो। 9
साल 24 से जितने आगे, दुश्मन ग्रह उस आता हो। 10
टक्कर ऐसी उस ग्रह होगी, आगे न वो चलता हो। 11
लगन अगर ख़ुद ख़ाली होवे, क़िस्मत साथ न आई हो। 12
क़िस्मत उसकी सातवें बैठी, या घर चौथे 10वें हो। 13
मुट्ठी के घर चारों ख़ाली, 5 – 11 – 3 – 9वें हो। 14
ये घर भी गर ख़ाली होवें, 8 – 12 – 2 – 6वें हो। 15

घर 12 ही घूम के देखे, ऊंच, क़ायम, या घर का जो।
क़िस्मत का वो मालिक होगा, बैठा तख़्त पर इसके हो।
घर पहला जब राज हकूमत, सात वज़ीरी होता है।
हर दो से कोई दुश्मन होवे, साथ फ़क़ीरी होता है।
ऊँच, नीच, घर के जो गिने हैं, वो नहीं इन घरों लड़ते हैं।
बाक़ी ग्रह सब झगड़ा करते, उम्र से भी वो मरते है।
तख़्त पे बैठा नर ग्रह राजा, दूसरों से वो स्त्री है।
7वें इसकी औरत, बेटी, बुध, शुक्कर, दो बैठती है।
ज़्यादा एक से घर पहले में, नर ग्रह स्त्री होती है।
दो से ज़्यादा घर 7वें में, स्त्री ग्रह – नर होती है।
गिनती मगर हो राजा अलैहदा, राय कमेटी होती है।
ज़ाहिरा बेशक तीन हों बैठे, गिनती चार की होती है।
अकेला पहले बहुत हों 7वें, ग्रहफल राशी होती है।
उल्ट अगर हों टेवे बैठे, जड़ 7वें की कटती है।
गुरु शनि और मंगल टेवे, कहीं भी इसके बैठे हों।

फल वैसे ही घर पहले के, उस टेवे में होते हों।

1 घर पक्का दूजा गुरु, ब्रह्म गाय अस्थान है।
2 मिलता जहां पर है इकट्ठा, मान – ओ – ज़र, ससुराल है।
3 ज्ञान समंदर घर 9वें का, या फल उम्र हो पहली का।
4 सफ़ेद झण्डा कोहसार पे झूले, उम्र बुढ़ापा घर 2 का।
5 तरफ़ शुमाली – मग़रिब है तो, अर्क़, हवा – मिट्टी का है।
6 घर 8वां ओर 6वां मिलते, दरवाज़ा ये दो का है।
7 ग्रह शत्रु, पापी सभी, हिरदै सफ़ा सब कलेश।
8 मौत, पाताल के देखन कारण गुरु सुनें उपदेश।
9 घर चल कर जो आवे दूजे ग्रह क़िस्मत बन जाता है।
10 घर 10वाँ गर ख़ाली होवे, सोया हुआ कहलाता है।
11 कमाई, क़िस्मत, बचत ज़ाती, स्त्री धन भी गिनते हैं।
12 माता, भूआ और फूफी, मासी, जगह तिलक की लेते हैं।
13 क़द, सीधापन उंगली उसकी, भूक, सुभाओ नेकी है।
14 ज़ायका में वो खटमीठा तो, मोह माया भी होती है।
15 गैस रतूबत, शाख़ दबा कर दरख़्त भी पैदा होता है।

सिफ़ात इकट्ठी, राज – रय्यत, बैल पे साधु चढ़ता है। 1
घर दूजा मैदान है 8 का, बैठक राहु केतु है। 2
सर – पाँव के दोनों मालिक, माथा कुर्राह – हवाई है। 3
पीपल, पीतल, मिट्टी पीली, केसर, पीला रंग भी है। 4
असर सभी का इस घर आकर, मंदे का भी उम्दा है। 5
ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के ख़ानों में। 6
फल 2, 11 अपनों अपना, धर्म मन्दिर गुरुद्वारा में। 7
स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर, बैठे 2 या कहीं भी हों। 8
ग्रह दृष्टि से जो कोई देखे, आल – औलाद से मरते हों। 9
पाप की बैठक घर है गुरु के, गृहस्त शुक्कर बन जाता है। 10
क़िस्मत सबकी जो माथे पे चलती, केतु गुरु बुध मिलता है। 11
चंदर, मंगल बद, शनि बैठे, मौत, जनम, 2 मिलता है। 12
आठ ग्रह इस घर में आते, जुदा रवि पर रहता है। 13
केतु गुरु करें मस्तक लम्बा, कर्म – धर्म, दया बढ़ता है। 14
बुध क़लम जब लिखे बिधाता, माथा खुला हो जाता है। 15

दुनिया की क़िस्मत है आकाश बुध में, फ़र्क़ लम्बा चौड़ा गुरु केतु है।
गुरु लम्बा गिनते तो केतु है चोड़ा, मिले दोनों बैठे गुरु दाता है।
गुरु, शुक्कर उस टेवे में जैसे, कहीं भी उस के बैठे हों।
फल वैसे ही घर दूजे के, उस टेवे में होते हों।

घर तीजा है पक्का मंगल, धन दौलत के जाने का। 1
ख़वैश – ओ – अक़ारिब भाई अपना या चोरी, अय्यारी का। 2
असर नज़र और जंग – ओ – जदल सब,महल भी उनके लेते हैं। 3
बढ़न – बढ़ाना, फ़र्ज़ मंसबी, इन्साफ़ मीठा भी गिनते हैं। 4
उठती जवानी या ख़ून जिगर का, तना दरख़्त आकाश भी है। 5
ख़ुशी ग़मी ओर साले भनोइये, सामान आरायश मकान भी है। 6
शेर दरिन्दे इस घर रहते, त्रैलोकी भी होता है। 7
ताक़त बच्चा पैदा करने, ससुराल अहवाल अकेला है। 8
इस घर का जो रंग है ख़ूनी, असर होता भी ख़ूनी है। 9
ग्रह जो उस घर बदी पे होवे, कहलाता वो कष्टी है। 10
स्त्री ग्रह जब तीजे आवें, औरत भी वाँ मर्द कहलावें। 11
शुक्कर बैल और चंदर साधु, मर्द बढ़ेंगे, बढ़ेगी आयु। 12
मंगल बद – मंगलीक न होगा, शिवजी हो के दया करेगा। 13
स्त्रियों की भी पूजा होगी, तीन काल वहाँ उन्नति होगी। 14
होगी तो कुल उम्दा होगी, गर न होगी, चोरी न होगी। 15

बुध शनि और मंगल टेवे, कहीं भी इसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर तीजे के, उस टेवे में होते हों।

पक्का घर नं॰ 4

घर चौथे पेट माता चंदर, ठण्डी रोशनी माना है।
चार तरफ़ का पानी दुनिया, दूध, समंदर दरिया है।
दिल, सफ़र, माता, धरती, घोड़ा, तरफ़ शुमाली – मशरिक़ है।
चरिन्दे, चावल, दूध पिलाते, बज़ाज़ी, मुर्ग़े – आबी है।
धन दौलत या वक़्त जवानी, रंग गिना है चाँदी का।
अनबिध मोती, घर माता का, रस होता है शांति का।
झुकाओ तबीयत, फ़र्श मकानाँ, ता'ल्लुक़ गिनते है मर्दों का।
चक्कर, संख, सिदफ़ हो पोरी, निशान भी लेते है जौ का।
राहु – केतु घर चौथे में, पाप से हरदम डरते हैं।
तारें ख़्वाह न तारें मर्ज़ी, क़सम पाप की करते हैं।
ग्रह चौथे के रात को जागें, या जागे वो मुसीबत में।
मदद कोई न हो जब करता, आ तारें वो बुढ़ापे में।
एक अकेला ग्रह ख़्वाह कोई, घर चौथे जब बैठा हो।
फल बुरा न वो कभी देवे, ख़्वाह चंदर का दुश्मन हो।
घर चौथा जब ख़ुद हो ख़ाली, आख़ीर उम्र तक उत्तम हो।

चंदर का फल घर ही देवें, ख़्वाह चंदर ख़ुद नष्टी हो।
घर चौथे में ग्रह जो आवे, तासीर चंदर वो होता है।
असर मगर उस घर में जावे, शनि जहां कि बैठा है।
गुरु, रवि और चंदर टेवे, कहीं भी इसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर चौथे के, उस टेवे में होते हों।

घर 5वां है ज्ञान गुरु का, तेज तपस्या होता है।
हवा, रोशनी, लड़के, पोते, वक़्त आइन्दा होता है।
औलाद जनम ता उम्र बुढ़ापा, महल बचत औलाद के हैं।
पाँचों ही इन्द्री, हाज़्मा उसका, गर्मी, शोहरत, नेकी हैं।
लिखत, ग़ुफ़्त, रफ़्तार हो साया इल्म, सब्र – ईमान भी है।
पैवंदी जो पौधे गिने तो, ख़ाली जगह दर उंगली है।
रोशनी पक्की घर पहले की, हवा अच्छी घर 5वें है।
दोनों पक्की, इस जा इकट्ठी, दीवार मशरिक़ी कुण्डली है।
उम्र औलाद, तो सेहत अपनी, घर 5वें से लेते हैं।
घर 3, 9 या 4 हों मंदे, असर बुरा 5 गिनते हैं।
रवि, गुरु, दोनों से कोई, घर 10वें जा बैठा हो।
5वें घर ख़्वाह दोस्त इसका, ज़हरी दुश्मन होता हो।
गुरु, रवि और राहु केतु, कहीं भी इसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर 5वें के, उस टेवे में होते हों।

1 घर 6वें पाताल में बैठे, केतु, बुध इकट्ठे हैं।
2 दुश्मन गो वो बाहम होते, इस जा वो नहीं लड़ते हैं।
3 केतु लड़का तो बुध है लड़की, दुम[बुध] कुत्ते[केतु] की साथी है।
4 रिश्तेदार हों मात पिता के, अक़्ल, सफ़र ख़ुद ख़ाकी है।
5 बुध सेवा नहीं शुक्कर करता, केतु भी धोका देता है।
6 अकेले अकेले ही दोनों उम्दा, मिल कर चेहरा बनता है।
7 आकार चेहरे का गर बुध से हो, ख़ूबसूरत हो केतु से।
8 नौ ही ग्रह पाताल में होते, देखते तरफ़ हों सब ही के ।
9 फूलना फलना, क़द क़दामत, तनासुब हथेली उंगली की ।
10 खटाई व गोबर या हो सच्ची नेकी, ये ख़ुद ख़ासियत है केतु की।
11 नाना, नानी या मामूँ उसके, हमदर्दी फोकी बुध की है।
12 इर्द गिर्द मकान का होवे, ज़ायका, पट्ठे, सब्ज़ी है।
13 बरताओ होवे या हो साहूकारा, पेशानी चेहरा होती है।
14 तरफ़ शुमाल या हो फोका पानी, फूल सुगंध्या होती है।
15 आकार, परिन्दे, हाथ के नाख़ुन, सुख औलाद का होता है।

पक्का घर नं० 6

भाख्या भाओ अपार हो दुनिया, नक़्क़ारा ख़लक़ भी होता है।
केतु की चीज़ों पे केतु हो मंदा, पर मंदा न हो दूसरों पर।
बुध भी वाँ गर साथी होवे, ख़ुद मंदा, बुरा दूसरों पर।
उम्र मंदी इस ग्रह की होवे, घर 6वें आ बैठे जो।
लाख उपाओ करें न टलदा, ग्रहफल* लिखा जिस को हो।
फल औलाद का शुक्कर रद्दी, पर रद्दी न दौलत हो।
गुरु, सूरज से कोई दूजे, शुक्कर का फल 12 हो।
बुध, केतु और शुक्कर टेवे, कहीं भी इस के बैठे हों।
फल वैसे ही घर 6वें के, इस टेवे में होते हों।

* (इस घर में सिर्फ़ सूरज या बृहस्पत राशीफल के हैं।)

1 घर 7वां है पक्का शुक्कर, घूमता बुध ऊपर का है।

2 दोनों इकट्ठे चक्की चलती, निचला शुक्कर माना है।

3 बुध 7वें का चक्क घुमाराँ, मिट्टी शुक्कर होती है।

4 दोनों घुमावे कीली लोहे की, घर 8वें जो होती है।

5 शुक्कर, बुध जब दो हों इकट्ठे, शनि भी उम्दा होता है।

6 अन्न दौलत की कमी न कोई, घी मिट्टी से निकलता है।

7 तरफ़ जनूबी – मग़रिब, गाय, औरत, शान बैरूनी है।

8 अहवाल हथेली, ज़र्रे मिट्टी के, तराज़ू, शादी, उन्नति है।

9 फल, सफ़ेदी, तुख़्म, पलस्तर, घर लड़कियों के लेते है।

10 जैसा शुक्कर हो वैसे ही सब फल, निचले पत्थर से होते हैं।

11 बना फूल बुध तो हों पिस्तान लड़की,ज़ुबान नेक होवे,तो गोआई शुभ की।

12 पैदायश हो अण्डों से, क़ुव्वत हो बाह की......!

13 मुसाम – ओ – अक़्ल अपने, दौलत सुभा की!

14 घर पहले के ख़ाली होते, 7वां फौरन सोया।

15 दिन उसी ही सूरज निकले, 8 जब दूजे होया।

शुक्कर, बुध उस टेवे जैसे, कहीं भी उसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर 7वें के, उस टेवे में होते हों।

घर 8 वें है मौत निमाणी, मंगल बद ही लेते हैं।
ग्रह नर में से कोई हो 8वें, मौत टली ही गिनते हैं।
अगला हिस्सा घर पहला तो, 8वां पीठ भी होती है।
बद शुतर की पीठ*[A] ही अपनी, नीची-ऊँची होती है।
तरफ़ जनूबी, कच्चा कोयला, ज़नमुरीदी होती है।
कच्ची चर्बी, ख़ून हो मंदा, पित्त मेदे की होती है।
शनि-मंगल का झगड़ा होता, केतु चीज़ें मंदी हों।
छत मकान से नीचे उतरे, चारपाई भी गन्दी हों।
घर 8वां जब बदी पे आवे, 2,6 भी आ मिलते हैं।
12 ख़्वाह हो दूर ही बैठा, फ़ैसला इस का लेते हैं।
मंगल बद है सबसे मंदा, मंदा जादू मंतर है।
एक अकेला हर दम अच्छा, शनि, मंगल या चंदर है।
घर 11 है दुनिया का अन्दर, 8 को बाहर गिनते है।

---

* [A] रीढ़ की हड्डी है ख़ालिस केतु, बाक़ी पीठ है मंगल बद।

घर 11 की चीज़*[C] जो आवे, छत गिरी ही लेते हैं।
मींह का पानी या दूध हो छत पर, बुध चाँदी से बांधते हैं।
आतिशी शीशा*[B] जब कभी चमके, ख़त्म कहानी गिनते हैं।
शनि, मंगल और चंदर टेवे, कहीं भी इसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर 8वें के, उस टेवे में होते हों।

*[C] मसलन सनीचर नं० 11 हो तो जब सनीचर की मुत'ल्लका चीज़ इसके घर नई आवे।

*[B] बुध का मंगल बद या लड़की के लाल चमकीले कपड़े।

1 घर 9वां है गुरु बुज़ुर्गी, जड़ बुनियाद ग्रह नौ की।
2 मकान जद्दी जो होवे अपना, पर-उपकार बुज़ुर्गों की।
3 उम्र दादा या बाप हो अपनी, ज़माना है खेल खिलाड़ी का।
4 घर कच्चा ख़्वाह पक्का होवे, हाल है दुनिया ग़ैबी का।
5 मात पिता की हालत अपनी, आराम-हराम की रोज़ी है।
6 कर्म-धर्म या पिछला जनम हो, मेंडक, ख़ुश्की पानी है।
7 दरियाओं से गंगा हो तो, पेट माता का होता है।
8 ख़्वत उंगली पर लेटे खड़े हों, मनी बीरज भी होता है।
9 सर इन्सान का धड़ चौपाया, हवा, परों से उड़ता है।
10 एक जहां से दूजे चलता, कर्म-धर्म से फलता है।
11 जड़ नथनों की सांस दोरंगी, क़िस्मत का आग़ाज़ भी है।
12 घर दूजे पे बारिश करता, समंदर घिरा ब्रह्मण्ड भी है।
13 तीजे घर का असर हो पहले, बाद गिना घर 5 का है।
14 पानी मिट्टी के ऊपर उड़ता, असर पक्का घर 9 का है।
15 9 वें घर के ग्रह कुल ही का, असर ख़्वाहिश सब मंदा है।

रूह बुत के झगड़े में लेते, असल पैमाइश अन्दर हैं।
मंगल बद या शुक्कर बुध हो, मंदे इस घर होते हैं।
शनि केतु या नर ग्रह उम्दा, चंदर 9 गुणा लेते हैं।
घर 9वां मरकज़ है कुण्डली, धरती का जो महवर है।
जिस्म में रूह की हरकत गिनते, हाकिम सब ही ग्रह का है।
गुरु अकेला उस टेवे में, कहीं भी उसके बैठा हो।
फल वैसा ही घर 9 वें का, उस टेवे में होता हो।

1 घर 10वां है शनि का अपना, ख़ुद विरासत लाता है।
2 सुख पिता को या उसे होवे, बरस मकान 3 रहता है।
3 चार तरफ़ की चीज़ें दुनिया, चालाकी, मक्कारी हो।
4 रिश्तेदार हों ग़ैर हक़ीक़ी, दुख, ज़ेहमत, बीमारी हो।
5 सामान ख़ुराक या वक़्त हो शादी, तरफ़ ग़रब की होती है।
6 ईंट पत्थर और काठी इसकी, कांटे, बाड़ भी होती है।
7 काली खांसी, उम्र पिता की, ज़हर दरिंदे होती है।
8 तिकोण बड़ी चौकोर हो लम्बी, नमक स्याह और तेल भी है।
9 आम सलाह बरताओ दुनिया, नज़र ग्रह की होती है।
10 लोहा लक्कड़ या कीड़े मगरमच्छ, ताक़त बिजली होती है।
11 नज़र उम्र या झपट कौए की, दहशत साँप की होती है।
12 बाल जिस्म के काले भूरे, ख़ुशी ग़मी भी होती है।
13 साँप का घर और आँख की पुतली, रंग स्याह भी होते हैं।
14 गाय, भैंस हो लोहे रंगी, दुम ज़हरीले होते हैं।
15 अंधेरा या ख़त्म रोशनी, आर – द्वार इकट्ठा हो।

सिफ़र जमा कुल एक की दुनिया, क़िस्मत सब की 10वें हो।
घर 10वें में तीन ग्रह तो, चलते शनि से हैं।
राहु केतु और बुध तीसरा, तीनों ही शक्की हैं।
ग्रह पापी उस टेवे में जैसे, कहीं भी इसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर 10 वें के, उस टेवे में होते हों।

घर 11 का शनि है मालिक, पर दरबार गुरु का है।
घड़ा भरा पानी है बेशक, बरतावा तो गुरु ही है।
फ़क़ीर की झोली की क़िस्मत गिनते,जनम-वक़्त, ख़ुद आमद है।
शनि गुरु का हलफ़ उठावे, फ़ैसला करता बाद में है।
ऊर्ध, श्रेष्ट, धन रेखा, तो, क़िस्मत का मैदान भी है।
लालच दुनिया, मकान ख़रीदे, उम्र तादाद औलाद भी है।
छिलका पोस्त, शान-ओ-शौक़त,हाथ की क़िस्में, पालना है।
दो मुँह के ये साँप का घर तो, ख़ुद-रौ बूटा बेल भी है।
दीवार मग़रिबी, पहला हाकिम, मिसलें राहु केतु है।
दूध माता का याद है कर के, फ़ैसला करता शनि भी है।
अहवाल है नाख़ुन रंग भी उनके, एक अकेला दो भी हैं।
ख़ुद बेड़ी को पापी चलावें, डूब डोबाते वो नहीं हैं।
धन दौलत है 11 आता, घर तीजे से जाता है।
मंगल कुण्डली कहीं हो बैठा, फ़ैसला इसका होता है।
बुध गुरु नहीं इस घर अच्छे, या कि चंदर बैठा हो।

उम्र पहली हैं शक्की गिनते, जब घर तीजा मंदा हो।
क़िस्मत का ग्रह घर उस तीजे, मदद न 5 से होती है।
घर 3 ख़ाली 11 सोवे, क़िस्मत शनि पे होती है।
ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के ख़ानों में।
फल 2,11 अपनों अपना, धर्म मंदिर गुरुद्वारा में।
घर 11 में ग्रह जो आवे, तासीर शनि में वो होता हो।
असर मगर उस घर में जावे, गुरु जहाँ टेवे बैठा हो।
शनि, गुरु उस टेवे में जैसे, कहीं भी उसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर 11 के, उस टेवे में होते हों।

1 घर 12 है सुख गृहस्ती, गुरु, राहु दो बैठे हैं।
2 मछली ढूंढे पानी अब्र का, बचन, स्त्राप इकट्ठे हैं।
3 धन की थैली 7वें होवे, मर्द बोलते 6वें हैं।
4 घर 8वें से उम्र मिले तो, बने महल घर दूसरे हैं।
5 गज साधु हों मवेशी पाले, आबाद वीराना मिलते हैं।
6 शोहरत दुनिया, हड्डी उसकी, ख़ून नस्ल का गिनते हैं।
7 निशान पेशानी, अहवाल उंगलियां, महल पड़ोसी होता है।
8 ख़र्चा ज़ाती, दिमाग़ की हरकत, ससुराल का क़र्ज़ा होता है।
9 मर्द औरत का उम्र ता'ल्लुक़, हाथ झुकाओ, दोस्त है।
10 पाँव के उसके नाख़ुन लेते, ख़तूत हथेली बृहस्पत है।
11 तरफ़ जनूबी – मशरिक़ हो तो, पालना बेवा होता है।
12 एक ख़त्म से दूजा शुरु हो, 12 जहां 2 होता है।
13 ग्रह 12 न गर कोई बोले, घर 2 में वो बोलता है।
14 फल घर 2 – 12 का इकट्ठा, साधु समाधी होता है।
15 ख़ुद इन्सान की पेश न जावे, हुक्म बिधाता होता है।

सुख दौलत और साँस आख़ीरी, उम्र का फ़ैसला होता है।
शनि गुरु और राहु टेवे, कहीं भी उसके बैठे हों।
फल वैसे ही घर 12 के, उस टेवे में होते हों।

1 एक अकेले का दुश्मन न कोई, न ही दोस्ती होती है।
2 रियाया बिना न राजा कोई, न ही वज़ीरी होती है।
3 एक से 6 तक तरफ़ जो पहली, हिस्सा दायाँ कहलाती है।
4 बाद के घर 7वें से 12, तरफ़ बाईं हो जाती है।
5 तरफ़ पहली न ग्रह हो कोई, बाद के ग्रह सोये होते हैं।
6 घर जब बाद का ख़ाली होवे, तरफ़ सोई पहली गिनते हैं।
7 जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा, जागता घर वो लेते हैं।
8 जागे घर न ही असर ग्रह का, जब तलक ख़ाली होते हैं।
9 ऊँच दृष्टि कितना ही होवे, निर्बल-प्रबल किसी भी घर।
10 घर दृष्टि का जब तक ख़ाली, असर जावे न दूजे घर।
11 घर 9-11 गुरु से जागे, चंदर से 2, 4, 8 घर।
12 रवि जगाता घर 5वां तो, शुक्कर जगावे 7वां घर।
13 शनि से 10वां राहु 6 को, बुध जगाता है तीसरा घर।
14 मंगल से घर पहला जागे, केतु जगावे 12वां घर।
15 ग्रह दोस्त नहीं बाहम लड़ते, झगड़ा कराते दूसरे हैं।

शनि रवि दो इकट्ठे बैठे, फटते ग्रह स्त्री से है। 1
ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते, बन्द मुट्ठी के ख़ानों में। 2
फल 2-11 अपना अपना, धर्म मन्दिर गुरुद्वारा में। 3
स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर, बैठे 2 या कहीं भी हों। 4
ग्रह दृष्टि से जो कोई देखे, मरते आल-औलाद से हों। 5
इस ज़हर को घर 9वें से, राहु केत हटाते हैं। 6
अगर मदद न उन की लेवें, मंगल केतु मरते हैं। 7
एक दीवार के घर 2 साथी, ग्रह मुश्तरका होते हैं। 8
शत्रु ग्रह तो कभी न मिलते, दोस्त मिले ही गिनते हैं। 9
वजह किसी दीवार फटे गर, दुगनी ज़हर हो जाती है। 10
अक़्ल बुरी क़िस्मत हो मन्दी, मौत खड़ी हो जाती है। 11
घर 10वें में लड़ते दुश्मन, ग्रह 9 टेवा अंधा हो। 12
सूरज 4, शनि हो 7वें, न्होराता आधा अंधा हो। 13
राहु केतु घर चौथे 10वें, या चंदर भी साथी हो। 14
शनि 8 या गुरु साथी, टेवा वो कुल धर्मी हो। 15

1 घर अपने से 5वें दोस्त, 7वें उल्टे होते हैं।
2 8वें घर पर टक्कर खाते, बुनियाद 9वें पर होते हैं।
3 तीसरे घर के जुदा जुदा तो, बुध से वो आ मिलते हैं।
4 घर 10 पर बाहम दुश्मन, घूमते फिरते चक्कर हैं।
5 नर ग्रह बोलते जुफ़्त के घर में, स्त्री बोलते ताक़ में हैं।
6 बुध है बोलता 3, 6 में तो, पापी नहीं बोलते 2 में हैं।
7 ग्रह शत्रु में गुरु जो आवे, वैर ख़त्म हो जाता है।
8 माता चंदर जब साथी होवे, दोस्ती पैदा करता है।
9 घर 5वां औलाद का गिनते, 11 होता घर धर्मी है।
10 घर 8वें जो मौत निमाणी, साथ लगी 9 बुज़ुर्गी है।
11 घर पहले की उम्र सौ साला, नव्वे तीन, दस, बारह है।
12 85 उम्र 7 चौथे की लेते, 80 होती घर 6 की है।
13 पौन सदी या साल 75, गुरु मन्दिर घर 2 की है।
14 घर और ग्रह की उम्र जुदा पर, गुज़रती दो की इकट्ठी है।
15 गुरु जगत की उम्र 75, बुध, केतु 80 होती है।

शुक्कर, चंदर की उम्र 85, शनि, मंगल, राहु 90 है।
स्त्री ग्रह जब मिले नरों से, उम्र 96 होती है।
साथ मिले जब बुध पापी का, वही 85 होती है।
रवि मालिक है पूरी सदी का, उम्र लम्बी उस होती है।
ग्रहण लगे जब रवि चंदर को, साल तीन कम होती है।

पापी ग्रह या बुध ता'ल्लुक़, पिघला सोना गुरु होता है।
उपाओ ग्रह साथी का होवे, गुरु राशीफल होता है।
पापी मंदे या केतु मंदा, गुरु भी मंदा होता है।
ग्रहण के वक़्त हवा बर्फ़ानी, असर मंदा हो जाता है।
नष्ट मंगल आकाश बेल तो बुरा शुक्कर मंदा करता है।
शत्रु ग्रह के जब वो अन्दर, वैर नष्ट कर देता है।
हाथ रूहानी, क़द, पेशानी, सांस चोटी गुरु गिनते हैं।
नाक बजुज़ सिरा अगला इसका, फ़ैसलाकुन हुआ करते हैं।
1 ता 5 या 12 बैठा, मदद शनि रवि करता है।
घर 6 ता 11 में बैठा, सिर्फ़ शनि को तारता है।
गुरु अकेला सब को तारे, मदद न जब कोई करता हो।
पर केतु को वो मरवावे, ख़ुद ही जब वो मरता हो।

कीमियागर, पेशानी, पीले रंग, शेर-ए-नर, चलता साधु। 1

घर पहला है तख़्त हज़ारी, ग्रहफल राजा कुण्डली का। 2
गुरु मगर न इस को चाहवे, झगड़ा मनुष है माया का। 3
गुरु अगर घर पहले ही आवे, इल्म, सोना ले आता है। 4
लिखना पढ़ना अगर न जाने, भेस फ़क़ीरी पाता है। 5
सोना भी जो सबसे उम्दा, दया धर्म भी उत्तम हो। 6
सेहत दौलत रिश्तेदाराँ, नाग वली का साया हो। 7
उम्र 16 से घर को तारे, कुल संसार बुढ़ापे में। 8
गुरु, हवा, दोनों हैं चलते फिरते कुल ज़माना में। 9
उम्र 27 पिता से बिखड़े, ख़ुद कमाई करता हो। 10
शनि चक्कर से 7वें आवे, पिता न उस का बैठा हो। 11
उम्र मामूँ की छोटी होवे, पर छोटी न अपनी हो। 12
घर 7वां गर खाली होवें, टाँग तख़्त की टूटी हो। 13
माता इसकी शिव जी होवे, पर औरत से डरती हो। 14
बेटे को तो तारती जावे, ख़ुद इकावन[A] मरती हो। 15

A टेवे वाले की 50 साला उम्र पर

केतु लड़का आसन उम्दा, बुध[B] निकम्मा लेते हैं।
घर 5वें गर शनि हो बैठा, कोठे भी उसे मंदे हैं।
चक्कर दूजा हो जब उसका, उम्र निनावन[49] गिनते हैं।
गुरु जगत् में प्रगट होगा, सुख दुनिया का लेते है।

शादी के दिन से बुलन्द इक़बाल होगा, मगर वालिद के साया का सिर पर साथ न होगा,अगर होगा इस के साथ मददगार और नेक न होगा, फिर भी होगा तो जुदा घर पर पड़ता होगा। बहरहाल उम्र का हर आठवां साल तरक़्क़ी का न होगा, अगर होगा तो बचन या आशीर्बाद पूरा होगा। मगर सराप या बददुआ से ख़ुद अपना आप ही तबाह होगा।

B सिर्फ़ धन के लिए।

गाय अस्थान, मेहमान नवाज़ी, पूजा, धन
माया, चने की दाल

गुरु दूजे अस्थान गऊ का, ग्रहमंड माला माना है।
जनम क़साई का ख़्वाह होवे, आसन ब्रह्मा, माया है।
दुश्मन ग्रह[A] घर 6 ता 11, राजा, वली ख़्वाह कोई हो।
बृहस्पत तब भी गुरु ही होगा, ख़्वाह वो औरत ही का हो।
अगर गुरु न होवे ऐसा, वही गोबर का पुतला हो।
ज़हर बिच्छू से मर्द व औरत, कुल अपनी को मारता हो।

सुलहकुल और बख़्शीश करे तो नेकों से वो नेकी में बढ़े, वर्नाः-

हर जा के रूद क़दम शरीफ़ा, न फ़ज़ल रबीहशुद न ख़रीफ़ा

कर भला तो होगा भला। सोने की तार की तरह वो बढ़ता होगा, वर्नाः-

हाथ पुराने खौंसड़े मिट्टीमल जी आये।

साधु अपनी धूनी पर होगा, मगर गृहस्त व कुटिया की शर्त न्होगी।

A शुक्कर, बुध

इस का मामूली ताँबे का पैसा उसे सोने का काम देगा। सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को गई। गुरु घंटाल होगा। ब्रह्मा जी और लक्ष्मी जी अपने सिंघासन पर की तरह क़िस्मत का उम्दा हाल होगा। अपनी मौत का उसे मरने से पहले पता लग जायेगा। मिट्टी के कामों से सोना, मगर सोने के कामों से मंदी ख़ाक़ नसीब होगी।

दुर्गा पूजा, तालीम

त्रैलोकी का मालिक होगा, गुरु जो तीजे बैठा हो।
पग हो तो 18 से 19, वर्ना 3 ही काना हो।
दुर्गा पूजन भेद गिना है, 3–18 होने का।
नेक होवे तो सब से उम्दा, वर्ना बुध हो 3–9 का।

आदिल, मुनसिफ़ मिज़ाज, दुर्गा जी शेर की सवारी का साथ होगा, जिसे तारे शेर की तरह मारी हुई मार (शिकार) दे जावे, मगर जिसे बिगाड़ने पर आये उसका बिस्तरा तक भी जला देवे।

तारीफ़ और ख़ुशामद से इसकी सत्तया (ताक़त) नष्ट और बर्बाद होगी।

बारिश, सोना

बृहस्पत चौथे घर हुआ — समंदर दूध भरा।
ग्रह चारों ही नेक हों, — पानी (चंदर), मिट्टी (शुक्कर), आग (मंगल), हवा (बृहस्पत)।
ऊँच बृहस्पत जब हुआ, — बढ़ता चंदर हो।
बुध अकेला छोड़ के, — फल सब का उम्दा हो।
10वें बुध गर आ हुआ, — खोटी हवा चलने लगी।
दुनिया को क्या तारे जब ख़ुद, — बेड़ी अपनी डूबती।

पानी के दरिया में सीधा तैरने वाला शेर होगा। सिंहासन बत्तीसी (32 परियां) और राजा बिक्रमाजीत के साया का मालिक होगा। उस के साया में लाटरी, दफ़निया, सोने की कानों की चमक और धन दौलत का दरिया बहता होगा। *माँ पर धी पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा ज़रूर होगा।*

नाक, केसर, असर है ग्रहफल का।

गुरु है 5वें लीद में माणिक, पत्थर में वो मोती है।
छोटी नैय्या ख़्वाह बेशक होवे, नरक कुटुंभी धोती है।
दुश्मन 2-9-11 बैठे, डूबती बेड़ी होती है।
दिन गुरु कोई लड़का जनमे, शेरों की जोड़ी होती है।
जब तलक न हो कोई ऐसा, नींद भरी शेर होती है।
लड़के पोते बेशक बैठे, क़िस्मत सोई होती है।

बर्षफल के हिसाब या किसी तरह भी अब अगर सनीचर ख़ाना नं० 9 में आ जावे, तो बृहस्पत की मीठी हवा में सनीचर का साँप सो जायेगा, मगर वो मुर्दा नहीं हो जायेगा, और सनीचर के दिन की औलाद के जनम पर जाग कर बुनियादी उम्दा 60 साला और उत्तम फल देगा।

बृहस्पत की मुत'ल्लक़ा चीज़ों से फ़ायदा न होगा।

मुर्ग़, गरुड़ (परिंदा)। मंदे वक़्त केतु का उपाओ मदद करे

6वां घर पाताल का, गुरु छिपावे मुंह।
मदद करे न बाप की, बेटा, बेटी न नूह।
हवा भली उस शख़्स की, मान सरोवर हो।
कुल माता, बुध भी बढ़े, केतु उम्दा हो।
चूहे से केतु बने, बुध गरुड़ ही हो।
रोटी खाये वो मुफ़्त की, ऐशी पट्ठा हो।

साधु अपनी कुटिया में होगा, समाधी और धूनी की शर्त न होगी, या पिता छोटी उम्र में चल बसने वाला होगा। अगर होगा, सख़ी होगा तो मान सरोवर भी होगा, मगर टर्राने वाला मेंडक न होगा। फिर भी अगर होगा धन की बारिश का मालिक या सोने की कानों में रहने वाला होगा। आख़िर होगा तो ख़ुशहाल होगा पर कभी कंगाल न होगा।

किताबें, दमा, मेंडक, आवारा साधु,
मसनूई बृहस्पत (सूरज शुक्कर) ख़ाली हवाई
बृहस्पत। मंदे असर के वक़्त चंदर का उपाओ
मददगार होगा।

7वें बृहस्पत सब को तारे, ख़ुद तकड़ी की बोदी हो।
धर्म ईमान में अपने पक्का, पर भाईयों से दुखिया हो।
सबका ही वो देवन हारा, चने का छिलका ख़ुद हो गुज़ारा।
ख़ुद क़िस्मत का अपनी मारा, चंदर पूजन हो निस्तारा।
बुध शनि घर 2-6-11, या कि 12 बैठा हो।
ऊर्ध रेखा का डाकू राहज़न, लड़के को वो तरसता हो।
40-5[45] जब उम्र हुई तो, लड़का भी आ बैठा हो।
पिछले धोने सब कुछ धो कर, सुख सागर का मालिक हो।
लोग गये जो मेला बैसाखी, लालाजी जकड़े है घर की राखी।

भाईयों से तंग होकर कई दफ़ा कहता होगा,
कि *"भाई जी, तुसाँ जम्मदे क्यों न मर गये ....*

थान फाड़ने पये।” स्त्री धन से बरकत होगी, अगर अपनी कमाई होगी तो सब मिट्टी के बराबर होगी। रमते साधु (आवारा) का साथ मुबारिक न होगा, अगर होगा, ज़ेहमत व ख़र्चा खड़ा होगा। *ब्राह्मण की बोदी मींह मंगदी* (चंदर पूजन मुबारिक होगी)

बृहस्पत नंबर 7 की मंदी हालत का सबूत घर में रत्तक (सोना तोलने वाली) होगा, जिनको ज़र्द कपड़े में रखना वास्ते धन दौलत मुबारिक होगा।

अफ़वाह, नक्कारा ख़ल्क, फ़क़ीर का यग्ग दान।

घर 8वां जो खोपरी सबकी, साधु का वो प्याला है।
शनि मंगल सब को ही जलावें, गुरु का फल पान निराला है।
गुरु के घर जब उत्तम होवे, सोने का भण्डारा है।
शनि मंगल गर चौथे बैठे, दुखिया भस्म ग़ुज़ारा है।

लम्बी उम्र का बुज़ुर्गों ने ही पट्टा लिखवाया हुआ होगा । हर दम बढ़े परिवार और जागती हुई क़िस्मत का हाल होगा। सिर की खोपरी उड़ जाने तक वो ज़िन्दा रहेगा, या खोपड़ी को सर से उतार कर हाथ में ले कर चलने की हिम्मत का वो मालिक होगा। सब कुछ जला कर जंगल में एक पेत्थर पर भी बिठा देवें, तो भी उस वीराना में सोने की कानें वो ढूँढ लेगा और जले जंगल में मीठा मंगल और हरियावल कर लेगा, मगर फ़क़ीरी का साथ न देगा।

घर का और ग्रहफल का, क़िस्मत को जगाने वाला।

जद्दी मकान, मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चलता

व उड़ता वजूद, गैस।

बृहस्पत हो जब 9-12 में, घर उस के गंगा[A] आती है।

क़िस्मत उम्दा सबका पत्तण, नाव हवा में चलती है।

जूं जूं पानी इसके बरते, होता ब्रह्म ज्ञानी है।

9 निधि का मालिक गिनते, होती 12 सिद्धी है।

प्राण जाये पर बचन न जाये, बचन से अपना

धर्म भी पाये और धर्म से उसके धन में

हार न आवे, वर्ना मंदे वक़्त से वो

पहले ही चल जाये। सर्राफ़ या जौहरी बाकमाल होवे।

A:- गंग-आ= धन व औलाद।

सूखा पीपल, नुक़्सान ज़र, तालीम ख़त्म। मंदे असर
के वक़्त दरिया नदी में ताम्बे के पैसा का उपाओ मददगार

गुरुद्वारा 10वें हुआ, स्वर्ग लोक के काम।
लालच में दोनों गये, माया मिली न राम।
घर शनि के आन कर, गुरु चढ़ावे स्वास।
ग्रह न कोई चल सके, सिर्फ़ शनि की आस।
कीड़ा गन्दा अब हुआ, भरे भस्म भण्डार।
लाज गुरु की है शनि, ख़्वाह मंदा कुल संसार।
9, चौथे, घर 5वें, शनि, रवि, या बुध।
शुक्कर, राहु हों मरे, केतु पाये न सुध।
10वें घर का नीच बृहस्पत, 4 रवि से चलता है।
ख़ाक से है वो सोना बनता, 4 शनि से गलता है।
गुरु रवि दोनों से कोई, घर 10वें जब बैठा हो।
5वें घर ख़्वाह दोस्त उनका, ज़हरी दुश्मन होता हो।*A
निर्धन पिता यतीम बच्चे को निर्धन ही छोड़

जावे। उसकी ज़िन्दगी में बच्चे ने ख़्वाब में महल देखे, मगर जागने पर उसी टूटी हुई चारपाई और तवेला ख़राँ में लेटे पाया। न शुरु देखा न आख़िर देखा, जो ख़ूब देखा तो अफ़सोस देखा, और लिपटी हुई आरज़ू को क़फ़न में ही ले जाते देखा। 27 साला उम्र से 36 तक बहुत मंदा, मगर 28 के बाद (जबकि भाई की मदद या उसका साथ हो) गणेश जी या सब के पूजने की जगह बनते देखा। बहरहाल *मर मर कर बुढ़िया राग गावे लोग कहें उसे ब्याह।* उस ने ग़रीब का तरस खाकर रोटी दी तो पोलीस के डंडे की मार इसका एवज़ मिला। किसी का तो पेशाब भी तेल की तरह रोशनी देवे, मगर उसका तो ख़ालिस तेल भी पेशाब से कम क़ीमत होवे।

*A वास्ते ख़ुद अपनी व उम्र शुक्कर की, जब नर ग्रह का साथ न हो, वर्ना लम्बी उम्र होगी।

गिल्ट, मुलम्मा, ग्रहफल का, क़िस्मत को जगाने वाला

गुरु शनि की 11 राशी, बुध से दोनों चलते हैं।
बुध दबाया या हो मंदा, दोनों निष्फल जाते है।

उम्दा शनि मंगल

मक्खी थी तो शहद भी था, मक्खी उड़ी तो शहद न पाया, न ही मुर्ग़[बृहस्पत] के बाद मुर्ग़ी के सोने के अंडे का पता चला, और आख़ीर पर अपने हाथों से ही अपने मुंह के लिए रोटी बनानी पड़ी। पिता की हाज़िरी में साँप ने भी सजदा किया, और सबका ही साया बढ़ा, मगर ज्यों ही कि बृहस्पत का सांस या हवा पीछे हटा, मर्द की माया, साधु, गुरु, राजा या दरख़्त का साया उसके साथ ही उठ गया मालूम हुआ और फिर वही मच्छर सताने लगा।

पीपल का हरा दरख़्त, हवा, आम दुनिया, साँस, पीतल (धात)

बृहस्पत घर हो 12 बैठा, फल 9 का भी लेते हैं।
पापी उसके घर हों बैठे, बुध, शुक्कर भी मरते हैं।
माया को वो मूत्र समझे, होता ब्रह्मज्ञानी है।
राज छोड़ वैरागी होवे, होता साधु त्यागी है।

नाक का पानी ख़ुश्क होने के दिन बृहस्पत क़ायम हुआ होगा। या नाक का पानी ख़ुश्क रखने से मदद होगी। ज़र्द तिलक कारआमद होगा, माला गले में डाले रखना बृहस्पत नष्ट का सबूत होगा। चोटी या बोदी का क़ायम रहना या रखना हरदम मुबारिक होगा। साधु अपनी समाधी में होगा, जिसके सताने से स्त्राप और सेवा से आशीर्बाद होगी। राहु की हर दो हालत ऊंच राहु=बृहस्पत दो जहान का मालिक। नीच राहु= बृहस्पत (सिर्फ़ दुनियावी) गुरु की हालत का फ़ैसला करेगी।

रवि गुरु घर दो का इकट्ठा, असर मिला दो जुदा ही है। 1
गुरु पिता गर रवि का होवे, रवि पिता ख़ुद शनि का है। 2
रूह संसार का गुरु जो मालिक, बुत दुनिया सब रवि का है। 3
साँस प्राणी गुरु का होवे, ढांचा पर ख़ुद रवि का है। 4
गुरु अगर आसमान गिना तो, रस्ता रवि आसमान का है। 5
हवा रोशनी मिले जो रहते, आकाश बना बुध दो का है। 6
प्रगट दुनिया बुध जो होवे, ब्रह्मंड बढ़ा आकाश का है। 7
फटे रोशनी हवा से दुनिया, जुदा जुदा घर दो का है। 8
बच्चा हुआ घर रवि है चमका, गुरु शरण में आता है। 9
रवि हुआ जब राजा दुनिया, गुरु शरण उस होता है। 10
रवि बैठा जब 1–5–11, ग्रह बालिग़ सब होता है। 11
घर 1–5 जब रवि हो बैठा, तलवारधारी वो होता है। 12
ख़ुद कभी न राशीफल का, ग्रह सब ही को दबाता है। 13
1–5 बैठे हो राशीफल के, शत्रु भी दोस्त बनता है। 14
रवि नीच न ख़ुद कभी होवे, असर साथी मंदा होता है। 15

ग्रह दोस्त अपना मरवावे, ख़ुद ही जब वो मरता है।
शत्रु ग्रह गर साथी होवें, घर बैठक उड़ जाता है।
कुण्डली मगर घर पहले होवें, असर रवि ख़ुद मंदा है।
अंग जिस्म या आँख हो दाँई, हाथ सपाट भी होता है।
बुध मंगल या पाप की हालत, फ़ैसलाकुन रवि होता है।
सूरज रोशनी मंगल किरणें, ग्रहण राहु – केतु होता है।
बुध आकार तो तेज गुरु का, चमक चंदर रवि देता है।
रवि, शनि दो इकट्ठे बैठे, झगड़ा नहीं कभी करते हैं।
वजह किसी गर दोनों झगड़ें, हत्या शुक्कर की करते हैं।

दिन का वक़्त, दायाँ हिस्सा या आँख

बैसाख का सूरज घर पहले में, राज, जिस्म, रूह, उम्दा हो।
तेज देवे हर निर्धन को वो, पर–उपकार चवन्नी हो।
मात, पिता, ख़ुद उम्र हो लम्बी, पर औलाद हो गिनती की।
आँखों पर वो निस्चा करेगा, परवाह न हो सुनने की।
सतजुग का वो आदमी होगा, क़िस्मत ख़ुद बनाई हो।
चोटों से वो हरदम बढ़ता, बेशक बहन[बुध] न भाई[मंगल] हो।

सनीचर का ¼ हिस्सा बुरा असर शामिल होगा। बाक़ी एक बचने वाले मकान की हैसियत का राजा होगा। लक्ष्मी को वो ख़ुद पैदा करेगा, मगर ख़ुद लक्ष्मी का दिलदादा न होगा। आफ़ताब चमका तो क्या चमका,अगर वो ख़ुद अपनी रूह पर भी न चमका। यानि पर–उपकार और सेवा साधन के बग़ैर अब सूरज निष्फल होगा और कुछ न देगा, अगर देगा तो आग देगा, मगर ख़्वाक़ तो फिर भी न देगा। बहरहाल गन्दे इश्क और मंदे कामदेव से ज़रूर दूर होगा।

गंदुम

जेठ महीने सूरज दूजे, माया शेर सवारी हो।
त्रैलोकी का सुख सागर तो, उम्र का इच्छयाधारी हो।
ख़ुद चमके, सब को दमकावे, घर 6वाँ भी बढ़ता हो।
सख़ी होवे तो बढ़ता जावे, *भिच्छया* से वो गलता हो।
झगड़े औरत ज़र ज़मीनाँ, बादल का अंधेरा हो।
मंगल पहले, चंदर 12, आलसी, निर्धन, दुखिया हो।

जिस क़दर इस की तै में पानी बढ़े, सूरज का रथ और भी ऊँचा हो कर चले। लेकिन जिस क़दर इस की तरफ़ पानी बढ़े, वो काग़ज़ की तरह गलता जावे। या अगर वो शुक्कर के झगड़ों से दूर रहे तो हरदम बढ़े, वर्ना आंधी के बादलों से ख़ुद अपने लिये ही अंधेरा कर ले। मगर सवारी और चौपाया का सुख ज़रूर साथ रहे।

दिन की औलाद, भतीजे

असाढ़ महीने सूरज तीजे, मंगल बुध बलकारी हो।
चंदर से गर धरती घूमे, फिर भी तख़्त हज़ारी हो।
बुध मंदा तो मामूँ मंदे, मंदा राहु केतु हो।
पर मंदा न इल्म जोतिष, या कि इल्म रियाज़ी हो।
मंगल भी गर मंदा होवे, मंदा शुक्कर कभी न हो।
मंगल बद, मंगलीक भी होवे, फिर भी डरके चलता हो।
ज़मीन जुंबद बजुंबद, पर न जुंबद मेहरो मंगल।
गर बजुंबद, माह बजुबंद, पर न जुंबद बुध का जंगल।

अब चंदर का फल रद्दी न होगा,माता की उम्र लम्बी होगी ख़्वाह चंदर नष्ट हो। बाप दादा ग़रीब हों तो बेशक, पड़ौसी में तो मुमकिन, मगर वो ख़ुद अपनी आख़िरी उम्र और आख़री वक़्त में निर्धन न होगा, और अगर होगा तो ख़ुद अपनी बदचलनी या मंदे कामों से बर्बाद होगा, मगर फिर भी गर्दिश ज़माना या अक़्ल के धोके और फ़रेब से वो कभी आज़ुर्दा हाल न होगा।

दाईं आँख का डेला, भूआ का लड़का भाई।

सावन सूरज चौथे गिनते, मींह पानी चंदर का घर।
पानी बरसे पर्बत, जंगल, बुध, शनि दोनों के घर।
10वें घर का नीच बृहस्पत, रवि से सोना करता है।
शनि का गर वहाँ पहरा होवे, हर दो चूल्हे धरता है।
रवि मगर ख़ुद जला जलाया, मदद चंदर की पाता है।
शनि ने हों जो पत्थर फूंके, ला'ल रवि कर देता है।
मंगल राजा घर 10वें का, शनि नज़र का मालिक है।
मंगल ख़ुद अब आँख दे अपनी, रवि गो प्रबल करता है।
शनि अगर हो 7वें बैठा, हिजड़ा, बुज़दिल होता है।
नहोराता या आधा अंधा, टेवा ऐसा होता है।

ईजाद का मूजब और फ़ायदा बस्यार का मालिक होगा। समुंदर की सीप में मोती पैदा करेगा, और अगर सीप में कीड़ा भी पड़ जाये तो भी क़ीमत दे कर जायेगा। रेशम का कीड़ा अगर ख़ुद तबाह भी हो

जावे, तो फिर भी बाक़ी रेशम ही छोड़ कर जायेगा, यानि अगर ख़ुद बुलन्द इक़बाल न हो तो, अपने पैरोकार या पीछे रह जाने वालों को तो ज़रूर बुलन्द ही करके जायेगा।

क़िस्मत को जगाने वाला, इकलौता लड़का, लाल मुंह का बन्दर, पोता।

भादों सूरज 5वें घर का, तेज तपिश का पक्का हो।
राजा पर-उपकारी होवे, साधु अल्प न आयु हो।
भेड़िया-बकरी, अग्नि-पानी, सब को इक जा रखता हो।
लड़के इसके शेर हों अपने, और बुढ़ापा उम्दा हो।
गुरु अगर हो 10वें बैठा, औरत इसकी मरती हो।
शनि अगर घर तीजे होवे, औलादों भी दुखिया हो।
ग्रह पाँचों से अपने घर का, या पापी ग्रह 9वें जो।
सूरज की वो होंगे प्रजा, हंस, हुमा भी तारता हो।

सूरज का ख़ुद ज़ाती फल अब कभी मंदा न होगा। शेर की गाड़ी में शेर-बबर जुता हुआ होगा। अगर राजा न तारे तो साधु ही तार देगा, मगर क़फ़न में लिपटी हुई किसी आरज़ू का साथ न होगा। अगर राजा न हो, तो साधु भी छोटी उम्र का न होगा। जब होगा,

बकरी (बुज़ = बकरी, गुर्ग = भेड़िया) और भेड़िये को इकट्ठा रखने की हिम्मत वाला बुज़ुर्ग होगा, या बकरी की हैसियत से बढ़कर भेड़िया तो ज़रूर होगा। सफ़ा दिल होवे तो बुढ़ापा उम्दा और औलाद का सुख पूरा होगा, वर्ना कान से पकड़ कर भेड़िये की तरह भगाई हुई बकरी की तरह क़िस्मत का हाल होगा।

गन्दुमी रंग, पाँव की ख़राबियां, बुध का उपाओ मददगार होगा, मामूँ की मदद के लिये बन्दर को गुड़ देने का उपाओ मददगार होगा। दोहता।

असूज सूरज 6वें घर का, अग्निबाण ले चलता है।
घर 12 में शनि पे मारे, शुक्कर उससे मरता है।
मंगल घर 10वें पर मारे, लड़के भस्म बनाता है।
घर दूजे से कोई न देखे, पिता को भी वो खाता है।
अग्निबाण से वही बचेगा, चंदर पूजन जिसकी हो।
घर अपने में जिसने रखी, घोड़ी, पानी, चाँदी हो।

पैदायश नानके घर होगी।

पहले बनी प्रालभ्त, पीछे बना सरीर, केतु राजा हो बना, राहु बने वज़ीर।

यानि जनम अस्थान उम्दा और वाल्दैन मुबारिक हालत बल्कि राजस्तान होगा। मगर पापी ग्रहों के वक़्त से ग्रहण का मंदा ज़माना ज़रूर होगा, या एक दफ़ा तो ज़वाल ज़रूर होगा। मगर औलाद होने

के दिन तक फिर वही रोशन व सूरज का शानदार ज़माना बहाल होगा। मगर राज ता'ल्लुक़ और राजा के दरवाज़े से कई बार वापिस आकर फिर सवाली ज़रूर होता रहेगा।

लाल गाय (सूरज रंग की), रूहानी नुक़्स, सफ़ेद गाय ग़ैर मुबारिक होगी मगर स्याह गाय मददगार होगी। चंदर (दूध) नष्ट करने से मदद होगी। बुध या भोडी गाय भी मुबारिक होगी।

कत्तक सूरज 7वें आया, सोने से घर मिट्टी पाया।
जनम वक़्त थे लाख हज़ारी, बोलते बोलते हूँझ-बुहारी।
गुरु मंगल उस घर से भागे, शुक्कर रहे न चंदर जागे।
पापी ग्रह भी गिने अभागे, मिली मदद बुध सब है जागे।
न धन रहे धनाढ़ हो। न ग़ुल रहे ग़ुलज़ार हो।
सब मालो जान बर्बाद हो, गर बुध का न वां साथ हो।
घर पहले के ख़ाली होते, सूरज 7 में सोया। } वर्ना
दिन उस ही सूरज निकले, 8 जब दूजे होया।

ज़मीन में तांबे के चौकोर टुकड़े दबाना मददगार होगा। पराई ममता ज़रूर साथ रहे। अगर औरत भी

है तो लाजवन्ती ही रहे, वर्ना वो न रहे। अगर औरत हो और फिर भी रहे, तो शुक्कर का घर (ससुराल तरफ़) ही न रहे। फिर भी रहे, तो धन की जगह मिट्टी रहे या बद लक्ष्मी रहे, अगर फिर भी रहे तो कोई न रहे। अगर बुध ख़ाना नम्बर 7 में न हो या बुध निकम्मा ही हो – गो काग़ज़ पर फैलने वाली स्याही की तरह क़िस्मत का हाल होगा, या वो सिर्फ़ बुध की मदद से ही ख़ुशहाल व फ़ारिग़–उल–बाल होगा।

रथ गाड़ी, पक्की और सच्ची आग।

मग्घर महीने रवि है 8वें, बटी है गर्मी सर्दी से।
मारग घर अब मौत न होगा, ज़िन्दे होवेंगे मुर्दों से।
बड़ा भाई और गाय सेवा, लम्बी उम्र निशानी हो।
कुत्ता गर ससुराल का होवे, हर जा इस की हानि हो।

ऐसे टेवे में शुक्कर का पतंग (शुक्कर नं॰ 1 होता) है जो काग़ रेखा का फल देगा, इस लिये सफ़ेद गाय मन्दी हालत देगी। उजड़े मकानों को बसाने वाला और पानी भरे बादलों को बरसा लेने वाला होगा। पत्थर से आग और आग से पानी से मिट्टी या सारा ब्रह्मंड पैदा कर लेने वाला होगा। मारग अस्थान के बिच्छू से मुर्दे ज़िन्दा करवा लेगा और इस की ज़हर से जलाये हुये पत्थरों से संखिया और संखिये से हिजड़ों और नामर्दों को तपस्वी राजा और मर्दों में गिनवा लेगा बशर्ते कि सग दुनिया (3 कुत्ते) या चोरी का दिलदादा न हो।

भूरा रीछ। सुरज ग्रहण के बाद का सूरज।

पोह महीने सूरज 9वें, उम्र लम्बी का मालिक हो।
पर-उपकारी कुनबा परवर, कुल 7 अपनी तारता हो।
ख़ाली बर्तन मोटे पीतल, बुध की ज़हर हटाते हैं।
राज से ख़्वाह न ता'ल्लुक़ होवे,हकीमी शिफ़ा तो पाते हैं।

किसी का कुछ बने या न बने मगर ख़ानदानी ख़ून के लिये अपना सब कुछ बहा देगा मगर एवज़ न मांगेगा। उस का ख़ानदान लम्बी उम्र का ठेकेदार होगा। अगर ज़्यादा नहीं तो सात पुश्त (3 उसके ऊपर और 3 उससे नीचे, और ख़ुद अपना सूरज जिस्म दरमियान में) का ज़रूर निगहबान और मददगार होगा। हद से ज़्यादा गर्म या नर्म होने पर तबाह होगा। चाँदी का दान देना इसके बढ़ने का सबब होगा और चाँदी का दान लेना बाइस-ए-तबाही होगा।

भूरा नेवला, भूरी भैंस।

माघ महीने सूरज 10वें, राहु कच्चा धुआँ हो।
अल्प आयु या क़िस्मत मंदी, जब तक इन का साथी हो।
शुक्कर चौथे पिता को मारे, चंदर मारता 5वें है।
मच्छर से भरपूर हो क़िस्मत, छटे अगर वाँ सनीचर है।
रवि, गुरु दोनों से कोई, घर 10वें जब बैठा हो।
5वें घर ख़्वाह दोस्त उसका, ज़हरी दुश्मन होता हो।*A

राज दरबार में स्याही से सिफ़ारिशी काग़ज़ स्याह कर के कई बार देखा, आर देखा न कभी उसे पार देखा, बल्कि नर ग्रह की मदद साथ/साथी होने के बग़ैर न उसे दर जहान देखा। फिर भी देखा तो सूरज के ग़ुस्सा की गर्मी की आग से ज़ोर से रू-ओ-रंग स्याह देखा। औलाद तबाह देखा। क़िस्मत अपनी के लेखे में भी उसे न कभी शाह देखा। और शाही फ़ेहरिस्त में भी न उसे दरपनाह देखा। अगर देखा तो सफ़ेद

पगड़ी या दस्तार से ही उसे गुरु के दरबार में
देखा, तो आख़ीर पर उसे शाहों का शाह देखा।

पर बुध की उम्र से पहले न कभी ये हाल देखा,
फिर भी देखा तो उसे न कभी योगी आलंकार देखा।

*[A] वास्ते उम्र ख़ुद जब नर ग्रह की मदद साथ या साथी न हो, वर्ना लम्बी उम्र हो।

सुर्ख़ ताँबा।

फागुन सूरज 11 होवे, शनि स्याही करता है।
चंदर हो जब पाँचवें बैठा, साल 12 में मरता है।
बुध गिना है तीजे मंदा, सूरज पर न असर करे।
चमके ख़ुद न चमकने देवे, उम्र की पर वो रक्षा करें।

जूठ मारे या झूट, शराब गाले या पत्थर।

सनीचर की चीज़ों का ता'ल्लुक़ सूरज की चमक पर स्याही फेर देगा। बृहस्पत के दरबार जहाँ कि सनीचर हलफ़ उठाये – क़िस्मत का फ़ैसला कर रहा है, उसी क़लम से सूरज पर क़त्ल का हुक्म लिख देगा, यानि सनीचर की ख़ुराक या मंदी चीज़ों के इस्तेमाल से औलाद की तबाही का हुक्म सादिर कर देगा। जिसे राहु – केतु की मियाद तक मनसूख़ कराना इन्सानी ताक़त से बाहर होगा। ग़ल्ती की दुरुस्ती

अपने हमवज़न दूध के बराबर दूध देने वाली बकरियों की तादाद के बराबर तादाद के बकरे छोड़ने पर ठीक होगी, और 40 या 43 दिन तक रेत का बिस्तरा मुबारिक होगा।

भूरी च्यूँटी, दिमाग़ी ख़राबी, मसनूई सूरज (शुक्कर - बुध)।

चेतर सूरज 12वें होवे, ब्रह्मगुरु ही होता है।
ला'ल चमकता गर न होवे, लालड़ी न कभी होता है।
सुख गृहस्ती पक्का होवे, धर्मी गर वो पूरा हो।
धन परिवार की कमी न कोई, राहु से गर बचता हो।

दस्ती कमाई, हुनरमंदी, मिस्त्रीपन Mechanic में सूरज ग्रहण होगा। अगर मकान का सेहन न हो, तो सूरज का नेक फल तबाह होगा। बहरहाल अंधेरा मुबारिक न होगा। और न ही किसी हालत में वो लावल्द होगा। ख़ासकर घर से बाहर वीराना में वो कभी साधु न होगा। अगर होगा तो जागीरदार, आज़ाद ज़िन्दगी, बड़े बड़े गाँव और बा-आमदन जायदादों का मालिक होगा।

चंदर पक्का घर चौथा गिनते, ग्रह सब का पेट माता है।
हर घर में ये राशीफल का, घर उस का धरती माता है।
ख़ाली पड़ा जो घर चंदर का चौथा, असर उम्दा और नेक दे देता है।
चंदर घर से बाहर हो बेशक ही रद्दी, घर ख़ाली ही दूध पिला देता है।
जहाँ चंदर पानी, वहाँ असर सूरज भी आ जाता है।
ग्रह लड़ते बाहम में आ बैठे चंदर, तो दोस्त वो उन को बना जाता है।
बैठा चंदर पहले या दुश्मन को देखे, असर नेक बंद अपना कर देता है।
मगर दुश्मन पापी जब बैठे होपहले , असर चंदर मंदा ही हो जाता है।
शत्रु हों साथी तो दोनों ही मंदे, खड़ा पाप दुनिया में हो जाता है।
पड़ा पाप[A] ख़ुद अपने चंदर के घर जब, शनि बुध भी नेकी पे हो जाता है।
अंग फड़कना या आँख हो दाईं, मुतफ़र्क़ा हाथ भी हो जाता है।
तहरीर लिखवाई हो शान्ति अपनी, फ़ैसलाकुन चंदर हो जाता है।

दिल, बाग़, बायाँ हिस्सा, बांयाँ डेला आँख का।

दूध चंदर का पहले घर में, ज़हर शनि से होता है।
शुक्कर, बुध भी दुश्मन इसके, केतु राहु मंदा है।
24 साल 27 होते, माता सिर पर मौत चले।
इन सालों गर हो न सफ़र में, तब माता की उम्र बढ़े।
दिन 28 का औरत पानी, 28 साल ही रक्षा है।
चंदर – मंगल दोनों मिलते, दूध बरेती चलता है।

28 साल उम्र से पहले शादी का ता'ल्लुक़ चंदर की उम्र बर्बाद और औलाद का फल मंदा कर देगा। यही बुरी हालत 24 साला उम्र से पहले नये मकान बनाने पर खड़ी होगी। चाँदी के बर्तन मे दूध का इस्तेमाल बढ़े परिवार और शीशे या बुध का ता'ल्लुक़ ख़ाक़ दर ख़ाक़ उड़ा देगा। धन की कल्पना सुर्ख़ (ख़ूनी) रंग मंगल की चीज़ों के साथ से और परिवार की ख़्वाहिश चाँदी के थाल से पूरी होगी। चारपाई के चार पाये ताँबे

से नेक होंगे, गर ये भी शर्त न हो तो पानी के चंद घूंट बड़ के दरख़्त को डालने से मुबारिक होंगे। औलाद को दरिया पार ले जाते वक़्त पैसा (ताँबे का) दरिया में गिराकर ले जावे, वर्ना मल्लाह अपनी मल्लाही के एवज़ में औलाद पर ही हमला कर देगा।

क़िस्मत को जगाने वाला। माता, दूध, चावल, रूहानी हिस्सा, सफ़ेद घोड़ा।

चंद चढ़्या कुल आलम देखे, गर बहन न देखे भाई तो देखे।
मात पिता तो ज़रूरी देखे, हो अपनी या औरत लेखे।
सब को ही वो तब तक देखे, जब तक चीज़ें चंदर देखे।
गर न देखे वो न देखे, चंदर होगा 12वें लेखे।

ऐसे शख़्स की अमूमन बहन नहीं होती मगर भाई ज़रुर होते हैं। जनम चानण पक्ष का होगा, वर्ना चंदर आख़िरी उम्र में नेक फल देगा। 24 क़दम तक बल्कि मकान के अन्दर ही कुएँ का सबूत होगा, या वक़्त पैदायश चुबारा पर होगा, जिस के नीचे कुआँ या पानी भी (चंदर का) ज़रूर होगा, वर्ना बुढ़ापा मंदा होगा। माता की उम्र का साथ चंदर के दो चक्कर (48 साला उम्र) तक होगा। कम अज़ कम लम्बी उम्र के लिये मकान की तै में चांदी की चीज़ें दबाना मददगार होगा, या चंदर के पानी का साथ

मुबारिक होगा। माता की उम्र के बाद घर में चावल को पुराने करते जाना माता की आखिरी आशीर्बाद को बढ़ाना होगा। दुनिया से जुदा ही रहने वाला या छोड़ने वाला होगा।

घोड़ा, शिवजी भोले नाथ।

इतना तो फल ज़रूरी, कर देगा तीजे चंदर।
मौतों से बच रहेगा, सब माल – ओ – जान, मन्दिर।
गर मर्द न बचें तो, औरत तबाह न होंगी।
ख़्वाह पापी नष्ट करते हों चंदर ही का पानी।
चंदर घर जब तीजे आवे, माता भी वाँ पिता कहावे।
शुक्कर बैल तो चंदर साधु, मर्द बढ़ेंगे बढ़ेगी आयु।
मंगल बद मंगलीक न होगा, शिवजी हो कर दया करेगा।
स्त्रियों की भी पूजा होगी, तीन काल वहाँ उन्नति होगी।
होगी तो कुल उम्दा होगी, गर न होगी चोरी न होगी।
नहीं है कमी तेरे ख़ज़ाने में, शिव शम्भु भोले नाथ।
मज़लूमों पे दया है करता, मदद यतीमां लम्बे हाथ।

बुध के साथ (लड़की की पैदायश) पर चंदर की चीज़ों का दान मुबारिक होगा। (वास्ते धन दौलत) राहु (ससुराल के वक़्त) या ता'ल्लुक़ पर कन्यादान मुबारिक

(वास्ते नागहानी बला-ए-बद से बचने के लिये) केतु(लड़के के जनम पर) सूरज की अशिया का दान।

(वास्ते तादाद मैंबरान व हवा-ए-बद से बचाओ) शुक्कर (औरत, शादी पर, गाय आने पर) मसनूई सूरज की चीज़ों का दान (वास्ते चोरी व मौत व ज़ेहमत) मुबारिक होगा, यानि वो चीज़ें जो गुड़ के रंग की तो हों मगर चमकदार न हों।

चंदर ख़ाना नं० 4 (पक्का घर व घर का)

ग्रहफल का, क़िस्मत को जगाने वाला, तालाब,
कुआँ, चश्मा, शांति।

सोना नहीं तो चाँदी, दूधा नहीं तो पानी।
पानी भी न सही तो, गुरु देव ही की बाणी।
घर चौथे चंदर होने पे, होगा जाविदानी (हमेशा)।
पिता को तारे, माता तारे, तारता वो सब घर को है।
माया से तारे, दया से तारे, तारता वो कुल अपनी है।
गर न मारे, घर न मारे, मारता मौत निमाणी है।
नाभि देखी, आँख भी देखी, देखी तो पुड़पुड़ी भी है।
जो न देखा, राहु न देखा, न ही देखा केतु है।
पाप नहीं वो इस घर करते, मदद तो उनकी होती है।
तारें ख़्वाह न तारें मर्ज़ी, क़सम पाप की होती है।

जद्दी कारोबार मुबारिक फल का होगा।

जनम शुक्ला पक्ष (शुरु चंदर) हो तो बुढ़ापा
उम्दा, वर्ना बचपन उम्दा और राहु केतु का साथी होना

गिना जायेगा। कपड़ा बज़ाज़ी के काम में माता का साथ मुबारिक, वर्ना बाइस-ए-नुक़्सान होगा। औलाद 12 साल होती रहे।

चकोर (परिन्दा)।

आठों ग्रह ख़्वाह इस के, दुश्मन घरों रहेंगे।
गर चंदर पाँचवें हो, सब पानी हो बहेंगे।
दुश्मन ख़्वाह इसके कितने ही, मलिक-उल-मलूक़ हों।
एक सर्द आह के खिचते ही, सब ख़ाक़-ओ-भस्म हों।
दुश्मन ग्रह 9-11 बैठे, नेक नतीजे देते हैं।
गर वो घर 2-3 में आवें, यम बिजली के होते हैं।
हाल ऊपर का उल्टा होवे, दोस्त ग्रह जब आते हैं।
2-3 घर 9-11 होवें, पानी तक भी फूंकते हैं।
चंदर बैठा पाँचवें होवे, चलता वो घर 4 ही है।
आगे पीछे दोनों चलता, जलता घर 10-12 है।
धर्मात्मा होवे, राज दरबार में इज़्ज़त हो।

गो जंगल पहाड़ का सैलानी होगा, मगर क़ामयाब मुसाफ़िर न होगा। गर होगा, वक़्त मुसीबत चिड़ियों से बाज़ लड़ाने की हिम्मत वाला होगा। माता व नर औलाद पर बुरा असर न होगा ख़्वाह पापी ग्रहों का साथ हो। नर औलाद 5 से कम न होगी। राहु ठंडा होगा

ख़रगोश, सफ़र (केतु का पूरा चाँद ग्रहण होगा)।

जैसी करनी वैसी भरनी, *नहीं कीती तो करके देख।*
छटे हो चंदर, 12 देख, 8वें दूजे, चौथे देख।
गर हों ये घर रद्दी सब, चंदर होगा मिट्टी तब।
कुआँ लगे, माता मरे, मरेगी आल औलाद भी।
घर अपने के काम न आवे, माया उस इंसान की।
घर अपने ख़ुद के लिये, कोई न मंदा जवाब।
खूह बरते जो खेती दुनिया, मिट्टी – मौत ख़राब।

साहिबे तदबीर व अक़्लमंद होवे। 60 साला उम्र या चंदर के ख़ास वक़्त (24 साला उम्र) में कुएँ खोदना ख़ुदवाना अपनी माता और चंदर की ताक़त के लिये मन्दी क़ब्र खोदना ख़ुदवाना होगा, ख़ासकर जब कुँआ आम लोगों के काम आवे या बाहर खेती की ज़मीन में लगे।

खेती की ज़मीन (अपनी या जद्दी) मगर आबादी की न हो।

सनीचर तीजे, बृहस्पत 7वें, कितना ही कंगाल हो।
ख़ुद अकेला चंदर 7वें, लक्ष्मी अवतार हो।
औरत आये, माता गई, पर न जावे लक्ष्मी।
गर हो घर में चंदर चीजें, दूध पानी हर घड़ी।

जायदाद जद्दी तो इतनी बारौनक़ न होगी मगर नक़द नामा बहुत होगा। चंदर के वक़्त 24/25 शुक्कर 6-12 साला उम्र में शादी होना ग़ैर मुबारिक होगा। चंदर व शुक्कर दोनों ग्रहों का बाहमी झगड़ा खड़ा होगा, जिस पर केतु के नागहानी हमले और इसके मासूम बच्चों पर बला-ए-बद के अचानक धक्के और नतीजे मंदे ज़ाहिर होंगे। शायरी और इल्मे जोतिष का माहिर भी हो सकता है, वर्ना चाल चलन शक से बरी न होगा, अगर होगा तो तिलिस्मी भूत ही होगा।

क़िस्मत को जगाने वाला। उम्र के लिए लम्बा समंदर व ख़ुद समंदर, बालाई आमदन, जिस्मानी (बजुज़ उम्र) व दुनियावी (धन) ¼ मंदा असर होगा। मिर्गी या मुर्दा दिल भी हो सकता है।

सूरज मंदा, पापी बुरे, ख़्वाह मंगल बद भी हो।
राहु केतु बुध मिले, गुरु, शुक्कर नीच भी हो।
ख़्वेशो अक़ारिब, मालो दौलत, अपने और बेगाने को।
चंदर 8वें सब ख़्वाह हारे, पर न हारे उम्र को।
ससुराल तारे, दामाद तारे, तारेगा मामूँ को भी।
उल्टी गंगा होके तारे, उम्र के आख़ीर भी।

ख़ुद चंदर का चंदर की ज़ाती चीज़ों पर मंदा फल कभी न होगा। ज़ाहिरा धुलापन व मानसरोवर मगर अन्दर से कपट की कान और गंदी नाली के पानी की क़िस्मत का मालिक होगा, ये गन्दा पानी या उसकी जायदाद जद्दी

खेती के काम या शुक्कर (औरत) के घर उड़ कर जाती मालूम होगी। बहरहाल वो ख़ुद उसके अपने काम की न होगी। अगर होगी तो गर्दिश-ए-पहाड़ होगी, और 6 साल तकलीफ़ भी होगी। अगर जौहरी (सर्राफ़) या जुआरिया (जुयेबाज़) ही हो तो बदबख़्ती ही होगी। चंदर या कुएँ का नज़दीकी साथ न होगा।

जायदाद जद्दी, दुनिया का ग़ैबी समंदर। अमूमन राहु के ग्रहण से मारा हुआ निस्फ़ चंदर होगा।

चंदर 9वें कभी ही होगा, घड़े बराबर मोती होगा।
शुतर-मुर्ग़ का अण्डा होगा, मात पिता अमोलक होगा।
बुध शुक्कर और मंगल बद, चंदर होते भागें सब।
गर वो इस घर आते हों, सर झुकाये तारते हों।

ऐसा शख़्स चंदर की नेक ताक़त में मुस्तस्ना होगा। कर्म, धर्म, तीर्थ यात्रा का शुभ नाम यात्रू, नेक अर्थ व काम का आदमी। भला लोग, भले काम और नेक तबीयत होगा। पापियों के पाप काटने वाला और दुखियों को आराम देने के नसीबा वाला होगा।

रात का वक़्त, तै ज़मीन, आम पानी मगर कड़वा।

ख़ाना नं॰ 2 के ग्रहों की चीज़ों से रक्षा व पालना होगी। अगर वो ख़ाली हो तो बृहस्पत बैठा होने वाले घर की मुत’ल्लक़ा चीजों से मदद होगी।

चंदर 10वें साँप की माता, बच्चे क्या वो छोड़ेगी।
उम्र-ए-रवाँ की उल्टी कश्ती, कोई न पीछे छोड़ेगी।

गोया कि

जिस की ख़बर को वो गये, बीमार मुर्दा हो गया।
मीठा शरबत देते देते, ज़हर क़ातिल हो गया।
पहाड़ से दरिया था चलना, चल पड़ा कोहसार ही।
मकान मन्द, ससुराल मन्द, और मन्द हुआ है चाँद भी।

ग़र्ज़े कि

चंदर 10 वें - दुश्मन दूजे / या कि तीजे होती है आज़ार ही।

ऐसे आदमी का पेशा हिकमत बेमायनी होगी।

अगर होगा, तो वो क़ब्रिस्तान का ठेकेदार होगा, बेशक वो इल्म हिकमत का साहिब – ए – कमाल होगा। जो होगा, तो जराह नायाब होगा। ख़ुद चोर डाकू का ता'ल्लुक़ भी उसे आम होगा।

चाँदी, मोती सफ़ेद, ख़ूनी कुँआ, उड़ते बादल।

अकेला चंदर ग्यारहवें होवे, होगा माखन माझा।
दुश्मन साथी या कि तीजे, चंदर नष्ट ही होगा।
शुक्कर बुध या पापी भाई, चोट लगे न दें दरियाई।
घर गाँव सब तेरे भाई, कोठी हाथ न लाईं।
इस घर के चंदर का कोई ऐतबार नहीं।
पल में वो तूफ़ान पे होता, पल में होता वाँ निशान नहीं।
माखन में तो घी भी है होतापर चंदर में तो इस घर में जान नहीं।

न बूढ़ी मरे न चारपाई छूटे, या दादी पोते को तरसती रहे। लेकिन अगर घर में गड़ा हुआ पत्थर होवे या वो दूध से पत्थर को धोती रहे, तो चंदर का माखन और परिवार बढ़ता रहे। दादी पोते का झगड़ा होवे। कुण्डली वाले की 12 साला उम्र तक दोनों से एक ही होवे, या सनीचर के वक़्त तक दोनों ही न होवें।

ख़ुशामद, सफ़ेद बिल्ली। मींह का पानी मददगार होगा।

चंदर दूजे पेट गिना है, रेत हुआ घर बाराँ।
खेती भी जो पानी से उजड़े, वसदे घर उजाड़ाँ।
नीम[मंगल] बूढ़ी से पानी टपकता रहा, माता[चंदर] बूढ़ी का पोता भटकता रहा।

गोया

पानी पे पानी बरसता रहा, बीकानेर[वो घर जहाँ बुध हो] बेचारा तरसता रहा।

मुख़्तसरन

जायदाद जद्दी का वो ग़नीम होगा, नौ मन लौहा हर घड़ी अफ़ीम होगा।

वक़्त गुज़रे मर्द पछताये - आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना .... (2) कभी हम भी बा-इक़बाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो .... (3) *पिदरम सुलतान बूद ....* मगर अब तू कहाँ है का जवाब वो सिर्फ़ आँसुओं से ही देगा। अपनी और अपने ससुराल की जायदाद बाइस-ए-ख़राबी होगा, बल्कि कमनसीब, स्याहबख़्त या आज़ुर्दा हाल ही होगा।

शुक्कर आँख है शनि की पाई, तरफ़ चार जो देखता है।
शनि अगर कहीं जावे मारा, बली वो अपनी देता है।
साथ मंगल के चंदर बनता, बुध केतु जिस में न हो।
शुक्कर अकेला बुरा न करता, बैठा घर ख़्वाह किसी ही हो।
घर 7वें जब अपने बैठा, असर–नज़र, रूह अपनी को।
दे देता ग्रह उसी को है ये, बैठा जो घर 7वें हो।
चंदर भला या बुध हो अच्छा, बुरा शुक्कर नहीं होता है।
घर तीजे में जब आ बैठा, शुक्कर मर्द हो जाता है।
9वें मंगल बद है ये होता, छटे में ख़ुद ही मंदा है।
काग़ रेखा है तख़्त पे होता, चौथे औरत दो होता है।
12 दूसरे सब से उत्तम, 10वें शनि ख़ुद बनता है।
घर 5वें में पक्की मिट्टी, 11 लट्टू बन घूमता है।
घर 8वें ग्रह सब ही मंदे, शुक्कर भी मंदा होता है।
भवसागर से पार है करता।
शुक्कर गऊ जब होता है।

रुख़्सारा, पराई औरत की मुहब्बत।

शुक्कर पहले काना गिनते, शनि नज़र का मालिक है।
(सनीचर नं॰ 1)
फल दोनों का यकसाँ मंदा, प्रबल होता शनि का है।
दौलत मिट्टी हो गई, औरत, मद्ध, अभिमान।
जैसी *कीली चक दी*, वैसा जिस्म ईमान (ख़ाना नं॰ 7)।
शत्रु* ग्रह जब 7वें आवें, खांसी खूनी तपदिक़ लावें।
गिना अच्छा तो साधु होवे, पर्बत – जंगल रहता होवे।
ज्वार
गऊ – मूत्र, जौ, सरसों दान, सत – अनाजा, चरी कल्याण।
जब तक न वो शादी करे, तुरत पीड़ जिस्मानी हरे।
गर शादी के बाद हो दुखिया, *A कन्यादान / गऊदान से होवे सुखिया।
शुक्कर का फल बेशक मंदा, पर मंदा न सूरज है।
कुटुम्भ कबीला सब सुख लेवे, ख़ुद फटा ख़रबूजा है।
रथ सवारी आराम चौपाया, इश्क़ ज़ुबानी होता है।

---

* सूरज – चंदर – राहु

*A औरत गऊदान करे, मर्द कन्या दान करे।

धर्म से क़द्रे हीन हो बेशक, पतंग शुक्कर का होता है।
हमअसरों की नम्बरदारी, या मुखिया वो होता है।
घर का जब हो ख़ुद ही मोहरी, ख़ुश्क तालाब डुबोता है।
ज्वार
औरत की जब सेहत हो मन्दी, दान चरी का होता है।
माता पर कोई असर न होवे, औरत जब वां अलैहदा है।
औरत रिज़्क़ से पहले आवे, शुक्कर बैठा जब पहले घर।
शादी अगर उस 25 होवे, औरत रहे न दौलत घर।

आलू, गाय अस्थान, घी, अबरक़ सफ़ेद, काफ़ूर, भोडी गाय, राग।

शुक्कर जिसके दूजे आवे, 60 साल धन दौलत पावे।
बाल बच्चों की बरकत आवे, सुलह का झंडा ख़ूब लहरावे।
मिन्नतकश ग़ैर हरगिज़ न होगा, ख़ुदा का हीमम्नून एहसान होगा।
जूती चोर साधु वो हरगिज़ न होगा, गृहस्ती न होकर गुरु जगत होगा।

मवेशियों गूजरों के कामों से मिसल राजा होगा।

शुक्कर का ख़ुद ज़ाती फल मंदा न होगा, यानि औरत, गाय, लक्ष्मी वग़ैरह सब नेक फल के होंगे। माता के बचड़े (भाई) और गाय के बछड़े (लड़के) बहुत होंगे। घर उसका गऊघाट होगा, या बाक़ी 5 बचने वाला मकान होगा। वर्ना वही भटूर की मिट्टी (ख़ुश्क, जली हुई) की तरह क़िस्मत का हाल होगा।

बहरहाल जानों व जानदारों का हर तरह से उम्दा हाल होगा। पर बीमारी के झगड़ों का न कोई हिसाब होगा, गर न होगा – तो रिज़्क़ न कभी खराब होगा।

शादी, सती या सत्यवान औरत।

शुक्कर घर जब तीजे आवे, औरत भी वाँ मर्द कहावे।
शुक्कर बैल तो चंदर साधु, मर्द बढ़ेंगे तो बढ़ेगी आयु।
मंगल बद – मंगलीक न होगा, शिवजी हो के दया करेगा।
स्त्रियों की भी पूजा होगी। गर न होगी, चोरी न होगी।

अब शुक्कर का ख़ाना नं० 9 पर कोई बुरअसर न होगा बल्कि पितृ रेखा का उत्तम और नेक फल साथ होगा, पर लड़कियों के हाथों और ता'ल्लुक़ं मे इसका धन बर्बाद होगा और न ही अपने बनाये मकान का आराम होगा। अगर होगा तो खाऊ मर्दों से वो घर वीरान होगा, और एक दफ़ा उजड़ा हुआ न फिर कभी आबाद होगा। गर न इस घर में चंदर का साथ होगा, क़िस्मत भली तो वहाँ रहने का मकान ही न होगा। ये सब कुछ बुध की 34 साला उम्र तक का हाल होगा।

आख़िरन जगत गुरु बृहस्पत के दूसरे दौरे पर प्रगट होते ही ख़ुशहाल व फ़ारिग़–उल–बाल होगा। पर बुध के ता'ल्लुक़ से न कभी वहां बारौनक़ गुलज़ार होगा।

दही, चौपाया, चरिन्द। बृहस्पत का उपाओ मददगार होगा।

शुक्कर चौथे जब पानी आया, औरत हुआ वैराग।
एक से दो भी हुई, पर बुझी न उनकी आग।
दरिया की है वो दलदल, तालाब की वो *चिकड़ी*।
औलाद मामूँ दो घर, बिखरी हुई हो खिचड़ी।
पत्थर भी रेत बुध A हो गर, तो रेत उड़ता होगा।
औरत की हो आज़ारी, बुध (बहन), केतु (लड़का) मंदा होगा।
कुआँ चलता उम्दा होवे, देता मिट्टी जो रहे।
गर कुआँ ही बंद होवे, लक्ष्मी वाँ न रहे।

औरतें दो ज़िन्दा होती हुईं भी क़िल्लत औलाद होगी जो बुध की 34 साला उम्र के बाद मंगल, सनीचर या केतु के दौरा के वक़्त (जब वो तख़्त या ख़ाना नं॰ 1 में आवें) दूर होगी। अगर शुक्कर ख़ुद किसी और ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो तो आड़ू की *गिटक* में सुरमा स्याह भर कर बाहर मिट्टी में दबाने से मंदा असर दूर

होगा। (चंदर के उपाओ से – जब मामूँ घर बर्बाद होगा हो) ऊपर का लिखा हुआ न बुरा हाल होगा, जब तक कि घर के पहले दरवाज़े की दहलीज़ पुरानी, उम्दा, साफ़ और बदस्तूर हो। अगर ख़ुद शुक्कर (औरत) की ही सेहत बर्बाद हो, तो छत पर तालाब की मिट्टी (चिकड़ी) से उम्दा हाल हो, या छत पर शहद का भरा बर्तन दबाने से औलाद का दुख दूर हो और सब कुछ बहाल हो। बहर हालत वो शख़्स न कभी लावल्द और न ही आज़ुर्दा हाल हो, और जब कभी भी हो उम्दा और ख़ुशहाल होगा। औरत की ज़ाती क़िस्मत का न उससे साथ हो, फिर भी हो, तो बिधाता की क़लम उसके बृहस्पत के हाथ हो, बशर्ते कि शनि न उसके साथ हो।

*A ऐसे टेवे में सनीचर और बुध दोनों ही रद्दी होंगे, यानि सनीचर (मकान वग़ैरह), बुध (बहन – भूआ वग़ैरह) का फल रद्दी होगा।

फल, आवा घुमार या भट्ठा ईंट।

शुक्कर घर 5वें हुआ, मिट्टी आग पड़ी।
कच्ची थी उड़ती फिरी, अब इक जा टिक गई।
आग जली न मिट्टी उड़े, उड़ेगी जिस दम वो।
जो ग्रह पहले, घर नौवें, अंधा काना हो।
पापी ग्रह या बुध वाँ आवे, शुक्कर उनको सोना दिलावे।
गर न देवें दुख न देवें, देवें तो वो उन्नति देवे।

वतन व क़बीला की मुहब्बत का दिलदादा और मुबारिक फल का हो। अगर आशिक़ दुनिया हुआ तो दरख़्त में फंसे हुये पतंग की तरह क़िस्मत का हाल हो। लेकिन अगर सूफ़ी हुआ तो भव सागर से पार हो। वर्ना, एक को क्या रोते, यहाँ तो *आवा ही ऊत गया।*

चिड़िया, लड़की। सफ़ेद गाय मंदा फल देगी।

शुक्कर 6वें घर ख़स्सी होवे, अक़्ल से मंदा हो।
आशिक़ दुनिया न हुआ, पर त्यागी पूरा हो।
आप ते डुब्बी डूमणी, नाल प्रभ भी गाले।
गधा गिरा पाताल में, कुम्हार छट सब नाले।
लल्लू करे कवल्लियाँ, रब्ब सिद्धिआँ पावे।
लड़के उस घर से डरें, कुड़ियाँ पल्ले पावे।

बृहस्पत अगर ख़ाना 2 से मिलेगा, तो तादाद बच्चों की 6 तक करेगा।
मगर जब बृहस्पत हो 12 में बैठा, शुक्कर मिट्टी उड़ती ख़्वाह केतु हो बैठा।
अगर केतु भी घर छटे में मिलेगा, तो शुक्कर का सुख सबसे गंदा करेगा।

धन दौलत या गाय, बैल, पशु, जानवर की चोरी या गुम हो जाना आम सबूत होगा। अब ये ग्रह आख़िरी उम्र में ही क़ाबिल-ए-आराम होगा, और चंदर का उपाओ मददगार होगा। अगर सिर्फ़ एक ही लड़की तो 12 साल तक ही लड़के की आमद का दरवाज़ा बन्द होगा जो दुबारा हर 7वें साल

से पहले न खुल सकेगा। अगर खुलेगा, तो कन्या को ही आने की इजाज़त देगा। बृहस्पत, सूरज, चंदर तीनों का ही मंदा हाल होगा या उनका साथ ही न होगा। बहरहाल बृहस्पत या सूरज के साथ या ता'ल्लुक़ से शुक्कर अब एक क़ीमती चीज़ होगा, हालाँकि पाताल का शुक्कर उनका दोस्त भी नहीं है। मगर वो ख़ुद दोनों या कोई एक गुरुद्वारा में बैठे पाँव पड़ी शुक्कर मिट्टी, अबला को नीच नहीं देख सकते, क्योंकि गुरुद्वारा भी तो ख़ुद शुक्कर का अपना ही घर है। शुक्कर नं॰ 6 में होते वक़्त इसकी औरत को ज़मीन पर अपना नंगे पाँव चलना ग़ैर मुबारिक होगा, बेहतर तो ये है कि हरदम जुराब वग़ैरह डाल कर रहे ताकि ज़मीन से पाँव का चमड़ा न लगे।

चरी (ज्वार), सफ़ेद गाय, काँसी के आम बर्तन, हर दो मुहब्बत। ग्रहफल का, क़िस्मत को जगाने वाला।

शुक्कर 7वें फसल हुआ, पर खेती उम्दा हो।
शायर, उम्दा ज़िन्दगी और सुख सवारी हो।
ख़रबूजा देख ख़रबूजा पक्के 1-9 या 7-11।
चोरां टोली - एको बोली, बुध - शनि और शुक्कर यारॉं।
दुश्मन ग्रह गर इन घरों आवें, जूता पत्थर ख़ूब चलावें।
पर शुक्कर न हिम्मत हारे, हरे न ख़ुद वो सबको मारे।

अपने फल की बजाय साथी या मुश्तरका ग्रह का फल देगा, मगर ख़ुद शुक्कर (औरत - लक्ष्मी) का कभी मंदा फल न होगा। *कीले बाँधी गाँ - न हूँ न हाँ* की तरह औरत का हाल होगा जब तक कि ख़ुद शुक्कर (गाय, औरत) सफ़ेद रंग न होगा। अगर होगा तो दरजहाँ न होगा, तो अहद शुक्कर या 25 साला उम्र तक ख़राब होगा।

फिर भी अगर होगा, तो रूस्याह या रंग काला (सनीचर) ही होगा। बहरहाल लक्ष्मी से दूर न होगा, गर होगा तो ख़ुदग़र्ज़ी से ख़राब होगा। आख़ीर होगा, तो शुक्कर यक आँख ही होगा जिसे झुक झुक कर सबका सलाम होगा, वर्ना जायदाद जद्दी से बेबहरा और बेआराम होगा।

बिल्ली की जेर (झिल्ली) हर तरह से ग़ैर मुबारिक होगी। अगर फिर भी रखनी होगी, तो कम्बल के टुकड़े में मुबारिक होगी। मगर चमड़े के बटुये में रखी हुई निहायत ही ग़ैर मुबारिक होगी। फिर भी होगी, तो लक्ष्मी व औरत बर्बाद होगी।

ज़िमीक़ंद, गाजर, क़ब्र, भोडी या सफ़ेद गाय मंदी (बग़ैर सींग)।

शुक्कर 8वें क़ब्र है, मन्द शगुन ही हो।
गऊ सेवा या दान से, सब कुछ उम्दा हो।
हम भी डूबे, तुम भी डूबो, डूबेंगे मिल कर सभी।
ससुराल डूबे, औरत डूबी, डूबेगी औलाद भी।
उम्र सारी गंदी नहीं है, सिर्फ़ पहली 25 तक।
कमी सारी पूरी होगी, दूसरी पच्चीस तक।

चंदर के शक्की होने पर शुक्कर का बुरा फल न होगा। गर चंदर भी मंदा हो तो बुध ही मदद देगा, अगर वो भी रद्दी हो तो मंगल से मदद पा लेगा, आगे वो भी मंदा हुआ, तो राहु के गन्दे नाले से ही मदद पायेगा, जिस में ताँबे (सूरज) या फूल (बुध) का डालना मुबारिक होगा। सफ़ेद गाय मन्द भाग, मगर स्याह या सुर्ख़ गाय मुसीबत में मदद देगी। शुक्कर ख़ुद की मदद के लिये चरी (ज्वार) मिट्टी में दबाना उसे आफ़तों से बचा देगा।

सफ़ेद रंग (दही के) और सफ़ेद गाय ग़ैर मुबारिक। नीम के दरख़्त में चाँदी का चौरस टुकड़ा दबाना मुबारिक।

बुध, पापी, नर, स्त्री, ख़्वाह सब ही अच्छे हों।
शुक्कर 9वें जब हुआ, कुल मंगल बद ही हों।
घर से भूली लक्ष्मी, ढूँडे आल पताल।
शनि अकेला तारेगा, जब गुज़रें सत्रह[17] साल।

i मकान बनने के 17 साल गुज़रने के बाद।

ii शुक्कर ख़ाना नम्बर 9 में 23 साला उम्र में आता है। बमूजब बर्ष फल, 25 साल गुज़रने तक यानि 48 साला उम्र तक अपना फल देगा। इस 48 साला उम्र के बाद 17 साल गुज़रने यानि 65 साला उम्र गुज़रने पर।

तीर्थ यात्रा तो उम्दा मगर वास्ते रिज़क़ रोज़ी मुत’ल्लक़ा औलाद मंदा होगा। धन तो हो पर मर्द न होंगे। शुक्कर के अहद की शादी (25 साला उम्र) या सफ़ेद रंग

गाय की आमद से पूरी बर्बादी होगी। मंगल बद खड़ा होगा। चाँदी की ईंटों की जगह सफ़ेद मिट्टी होगी, लेकिन अगर बुनियाद मकान में ख़ालिस चाँदी या ख़ालिस मंगल (शहद) हो तो शुक्कर की जगह अब चंदर होगा। फिर भी बुध व केतु मंदा होगा।

मिट्टी, कपास, सनीचर की जानशीनी।

दीवार कच्ची, मिट्टी कच्ची तह ही कच्ची, गर वाँ हो।
जिस्म मोटा, सेहत उम्दा, शुक्कर घर 10वें से हो।
बाग़ बाग़ीचे, उम्दा कोठे, ऐश करेगा वो सदा।
शनि हो उस के दायें बायें, देखे न कभी हादसा।
चंदर हो उसका 7वें चौथे, या कि घर दूजे में हो।
मिट्टी से भी खाँड है बनती, मोटर लारी उम्दा हो।
पहले पाँचवें रश्क़ करेंगे, बुरा नहीं कर सकते हैं।
मदद तो उनकी बेशक होवे, हसद कभी नहीं करते हैं।

ये ग्रह अब बुढ़ापे में आराम देगा।

सनीचर की हाज़िरी में बवक़्त जवानी इश्क़ का घर होगा, जिससे केतु का फल मंदा होगा, बल्कि मंगल भी चिल्लाता होगा और चंदर पछताता होगा।

रुई, मोती दही रंग सफ़ेद।

शुक्कर 11 घूमता लट्टू, दौलत का भण्डारी हो।
गर ऐसा न होवे कोई, बुज़दिल, बुद्धू, हिजड़ा हो।
माता बेशक चल बसे, गऊ – औरत का साथ।
कन्या बढ़ें, दौलत बढ़े, बढ़ेंगे हर दो साथ।
शुक्कर जब ग्यारह हुआ, और बुध भी मिलता हो।
धन दौलत की न कमी, पर पापी मंदा हो।
औरत तारती अपनों को, और बनी हो घर की मेहरन।
ज़ाहिरदारी हो भोली भाली, हिरदे भरी हो ज़हरन।

औरत गो क़िस्मत की मालिक मालूम होती होगी मगर वो ख़ुद ही बाइस – ए – तबाही होगी।

पापी ग्रहों के मंदे असर के वक़्त तेल दान कल्याण होगा। इस की आमदन शुरु होने से पहले शादी/शुक्कर की अशिया*A का होना ज़रूरी होगा। अगर शुक्कर सोया हुआ होवे, तो नर औलाद शुक्कर की पूरी मियाद

(20 साल महादशा) के बाद क़ायम होगी, जिसका उपाओ बुध की पालना होगा। अगर ऐसा न हो, तो औरत के कम-अज़-कम 3 भाई होंगे, जो अब शुक्कर को हर तरह से बचाव जगा देंगे।

*[A] बवक़्त शादी सफ़ेद गाय का दान ग़ैर मुबारिक होगा।

कामधेन गाय, लक्ष्मी, चौपाया व अपनी गृहस्ती।

औरत का सुख सागर (37 साला सुख)।

शुक्कर 12, राशी - 12, पग भी उस के 12 हो।
पत्थर सूखा भी बेशक होवे, घी का मौसम बाराँ हो।
अकेला शुक्कर ही इस को तारे, मदद न कोई करता हो।
दुख शत्रु सब मिट्टी कर के, दया से अपनी तारता हो।

तारने वाली कामधेन गाय होगी अब शुक्कर ख़ाना नम्बर 2 का नेक फल भी साथ होगा, और क़िस्मत का सब कुछ इस की अपनी औरत के हाथ होगा, जो मामूली नीले फूल से ही राहु व बुध दोनों को ही दबा सकेगी जबकि वो दोनों ही मंदे हों। औरत का सुख 37 साला होगा।

मंगल नेक जंगल में मंगल, ख़ून चढ़ा ख़ूनी होता है। 1
अकेला बैठा जब शेर है जंगल, घर चिड़िया क़ैदी होता है। 2
सिर रेखा या बुध दुरुस्ती, मंगल बद नहीं होता है। 3
अदल का राजा क़ातिल ख़ूनी, तलवार धनी वो होता है। 4
जग चारों में चंदर चलता, तरफ़ चार शनि चलता है। 5
बद मंगलीक जो चौथे बनता, बदला ख़ून से लेता है। 6
पहले तीनों घर बड़ा है भाई, चौथे मंगल बद होता है। 7
घर 5 ता 9 मुनसिफ़ होवे, 12 भाई नहीं रहता है। 8
तख़्त सूरज या किरणें उसकी, पवन पुत्र भी होता है। 9
शनि के घर ये राजा चीता, मर्द मगर नहीं मारता है। 10
होंट बाज़ू या मुँह का दहाना, हाथ मुरब्बा होता है। 11
पेट छाती जो प्रबल होवे, मंगल का फ़ैसला होता है। 12
चंदर दूध में शहद से मिलता, शुक्कर मिट्टी पानी होता है। 13
बुध मगर इसे चक्कर देता, मंदा मंगल हो जाता है। 14
राहु बना है हाथी इसका, केतु से हरदम लड़ता है। 15

नेक रहे तो दया हो शिवजी, टुकड़े बदी दो करता है।

मंगल बद–मंगलीक (हिरण, ऊँट, चीता)

मंगल बद – मंगलीक दो भाई, ख़ून इकट्ठा होते हैं।
बद लड़का है शनि का होता, मंगलीक को भाई लेते हैं।
मंगलीक मारे गर मर्द व औरत, बद उड़ाता है जान ओ ज़र।
भाई शनि घर एक ही मारे, लड़का शनि का दोनों ही घर।
मंगल बद मंगलीक शनि की, माता एको कहते हैं।
नुत्फ़े पिता तीनों के अलैहदा, उम्र बराबर गिनते हैं।
असर में तीनों जुदा – जुदा हों, आयु गिने तीनों लम्बे हैं।
एक तरफ़ मंगलीक ने पकड़ी, बद ने दो, शनि चारों हैं।
शुक्कर,सुख दौलत और मिट्टी, ग्रह न कोई नीच करे।
ख़ून शनि का मंगल ऐसा, शुक्कर पर भी ज़ुल्म करे।
गुरु पिता है दोनों जहाँ का, रवि पिता है सनीचर का।
शनि का ऐसा चौथा दर्जा, बद मंगलीक है परलै[A] का।

*[A] परलै या परलो –यानि क़यामत दुनिया का आख़ीर जब पानी ही पानी बाक़ी चंदर होगा।

शनि तरफ़ चारों ही चलता, घर चौथा चंदर[B] का है।
उम्र का मालिक 3-8 चंदर, मारता बद मंगलीक को है।

मंगल-बद मंगलीक का उपाओ- जब ये ज़ाहिर हो जावे, कि बद या बद तुख़्म का असर आ रहा है, तो फ़ौरन चंदर का उपाओ करना चाहिये, यानि बड़ के दरख़्त को दूध डाल कर गीली होई हुई मिट्टी का तिलक लगाना मंगल बद (पेट की ख़राबियाँ) को दूर करेगा। अगर वो आग से जलाकर तबाह ही कर जावे, तो उसके बुरे असर के ज़ख़्मों को दूर करने के लिये खाँड (फोड़े के मुँह में देसी खाँड) की बोरियों का बोझ छत पर क़ायम करें, मगर अब छत पर तनूर न रहे। अगर लावल्दी या औरत की हत्या करता जावे, तो शहद से मिट्टी का बर्तन भर कर बाहर मैदान में दबाया जावे। अगरमौत

---

*[B] चारों जुग (सत्जुग, त्रेता, द्वापर, कलजुग) ख़त्म होंगे।

तो न देवे मगर बसने भी न दे, तो मृगशाला से उसकी ज़हर हटा दें। अगर फिर भी बाज़ न आवे तो चाँदी की मदद लेवें, या जनूबी दरवाज़ा में ही लोहे से उसे कील देवें, और मंगल बद की मुत'ल्लक़ा अशिया काला, काना, लावल्द वग़ैरह डेक के दरख़्त से दूरी पकड़ें, या बंदर (सूरज) को आबाद करें बहरहाल इस लानत से बेख़बर न होवें। ख़ानदानी उपाओ में चिड़े चिड़ियों को मीठा देवें, वर्ना बद का नुत्फ़ा बदतुख़्म फिर क़ाबू न होगा।

32 दाँत, क़िस्मत को जगाने वाला।

मंगल पहले तेग़ अदल की, सच का हरदम हामी है।
बदों से भी वो नेकी करता, भला पुरुष वो प्राणी है।
बद कभी न बदी को छोड़े, नेक कभी न नेकी तोड़े।
नेकी छोड़ कलंकी होवे, भाई मरे, ससुराल भी रोवे।
पापी ग्रह सब मंदा होवे, सूरज चंदर मद्धम होवे।
न ही साथ बृहस्पत होवे, गर होवे वो घर न होवे।

ख़ुद बड़ा भाई हो, वर्ना बड़ा बनना पड़े यानि उस के बड़े भाई उससे पहले ही मर जावें। मंगल के दायें बायें अगर चंदर सूरज पड़े हों तो माता पिता के लिये वो शख़्स म्यान में मानिन्द तलवार होगा। जिस दिन मंगल का ज़माना 14 – 28 – या – 13 – 15 होगा, माता पिता का साया ख़त्म होगा। मगर वो ख़ुद तलवार का धनी होगा। दाँत तादाद में 32 होंगे (31 भी मंगल नेक होता है)। बहन न होगी, अगर होगी

तो पूरी मानिन्द राजा होगी। गर न होगी मंगल बद न होगी। अगर बद ही होगी, तो बस ख़ुद (अकेला ही दम) अकेली होगी, और बाक़ी सब तरफ़ मेहर ख़ुदा (परमात्मा की मर्ज़ी मंदे मायनों में) होगी। साधु के साथ से दर-ब-दर होगा, लेकिन जब अपने घर होगा और साधु का भी साथ होगा, तो भाई उसका दुखिया और मरीज़ होगा। लेकिन अगर क़िस्मत भली हो तो साधु ही न होगा, और न ही ससुराल के कुत्ते का साथ होगा, गर होगा, तो सब का ही बुरा हाल होगा। मगर ये नज़ारा न हर घड़ी होगा। फिर भी होगा, तो सनीचर की उम्र के बाद (39 साला उम्र) न ये अहवाल होगा।

चीता, हिरण।

मंगल दूजे मुखिया गिनते, लोह लंगर का मालिक हो।
लाख करोड़ों को वो पाले, गाँठ न अपनी बाँधता हो।
शहद मक्खी का काम, उसके है नहीं आता।
अगर आता तो रात है आता, रात दूजी है नहीं आता।
पानी कुएँ ससुराल में, मीठा ही बढ़ता होगा।
गर वाँ कुआँ न होवे, तो कम नसीब होगा।

अगर ख़ुद बड़ा भाई न होवे तो अपने बड़े भाइयों से पहले गुज़र जावे। अगर रहे, तो बाक़ी सब भाई न रहें। ससुराल को क़िस्मत में बुलन्द करके ख़ुद उनसे मीठे शहद का सुख लेगा, मगर वो लावल्द न होंगे और उसे ज़रूर जायदाद और ज़र दौलत ही देंगे। अगर वो दूसरों को पाले, तो बढ़ता ही जावे वर्ना वही एक दूनी दूनी का चक्कर इसके गले पड़ा रहे। अगर मंगल बद हो तो जंग - ओ - जदल में ही मारा जावे।

पेट, होंट, छाती। हाथी दाँत मुबारिक।

दोस्त 9वें हों 11, या कि हों वो सातवें।
मंगल तीजे सबसे बरते, बरतेगा वो शहद में।
बुध, गुरु अच्छे नहीं है, 11-9- या सातवें।
मंगल उन से मिल न बरते, बरतेगा वो ज़हर में।

अगर हिरण हो तो बुज़दिल, लेकिन अगर चीता हो तो शेर से भी ख़ूँख़ार होगा। बहरहाल दोनों रंग का साथ होगा। शहद में बराबर का घी या ज़हर होगा। पेट बड़ा तो ख़ून भी बर्बाद होगा। बहरहाल ये ग्रह न अब क़ाबिल-ए-ऐतबार होगा, गर होगा तो तेज़ आँधी के मुक़ाबला पर नर्म और आजिज़ घास ही होगा। आज़ार, बरी और आबाद होगा, अगर बुलन्द दरख़्त की तरह तबीयत का सख़्त हो तो ख़्वार बल्कि ज़ेरबार ही होगा। फिर भी होगा, तो आजिज़, आज़ुर्दों का मददगार होगा, या बाक़ी 3 बचने वाले मकान की क़िस्मत का मालिक (बहक़ मर्दां) मानिन्द शेर ख़ूँख़ार होगा, वर्ना *खाना पीना लाह, सुथरे दम का क्या बसाह* का एतक़ाद वाला अय्याश व ठन ठन गोपाल होगा।

राशीफल का। चंदर का उपाओ मददगार होगा, या मृग शाला होवे। तलवार, डेक का दरख़्त, घंडी व धुन्नी के दरमियान बिमारियाँ।

चौथे मंगल मंगलीक होगा, जला देवे वो समंदर को।
ठण्डा उस दम ही वो होगा, 8 तीजे जब चंदर हो।
दुश्मन इसके चौथे तीजे, या घर 8वें ही आवें।
आग से जलता चौथे मंगल, तेल मिट्टी का ही पावें।
रवि, गुरु जो 3, 8, चौथे, या कि 9 वें बैठा हो।
ज़हर के बदले दूध पिलाता, मंगल बद मंगलीक ही हो।

मंगल की चीज़ों (खाँड, शहद वग़ैरह) से कोयले हो जायेगा। *ख़ुद मियाँ फ़सीहत मगर औरों को नसीहत* करने वाला लैक्चरार होगा। गले में कटे हुये सिरों का हार डालने में आँख का मालिक शिवजी, अजल का फ़रिश्ता ए नाम नामी, हाथ पर शमशान या क़ब्रिस्तान को भी जलाने वाली आग

उठाये फिरता होगा और अपनी क़िस्मत के असर में भी तंगदस्त (सूखी छड़ी) होगा। मंगल बद व मंगलीक के दोनों हिस्सों के फ़र्क़ की बजाय दोनों ही का बुरा असर साथ होगा।

माँ, नानी, सास, ज़नानी (औरत) पर मौत तक का सबब होता है।

मंगल बद या मंगलीक सिर्फ़ उसके टेवे में होगा जिसके ख़ानदान में उस से पहले बुज़ुर्गों में एक दो पुश्त कोई शख़्स पूरा बृहस्पत ब्रह्मगुरु ख़ालिस सोना या शाहाना हालत हो चुका हो, यानि उम्दा तख़्त और गुलज़ार बन चुका हो जिसे ये बुरा ग्रह बर्बाद कर सके।

भाई, नीम का दरख़्त।

मंगल 5वें 5 गुणा हो, नेकी और बदनामी में।
पवन पुत्र की तरह, उछले वो अग्नि पानी में।
माया आती 11वें से, जाती वो तीजे से है।
मंगल 5वें घर में बैठे, पूँछ से/के ही चलती है।

मंगल अब सामने बैठे ख़ाना नम्बर 9 के दुश्मनों पर भी मेहरबान होगा, और ख़ाना नं. 3 का ग्रह भी (अगर कोई हो) हनुमान की दुम की तरह मंगल का साथी व मददगार निगहबान होगा, और धन दौलत का मालिक देवता दुनियावी लक्ष्मी (शुक्कर या चंदर) इसके पीछे चलने वाला होगा, या वो शख़्स राजों रईसों का बाप दादा होगा, मगर रात ही नींद से क़दरे बेआराम होगा, जिसका उपाओ – वक़्त नींद सिरहाने पानी का साथ रखना मुबारिक व मददगार होगा। साहिब-ए-इल्म व साहिब-ए-औलाद होगा।

नाभि, राशीफल का। सनीचर का उपाओ मददगार होगा।

मंगल 6वें घर हुआ, हों केतु, शुक्कर मन्द।
रवि मगर उस ऊँच हो, बैठा किसी हो अंग।
उस कुल बुध न होगा चौथे, चंदर 2 न गुरु ही पहले।
न सिर्फ़ पहला ही लड़का, मामूँ घर कुल ही चटका।
छटे मंगल हो भाइयों की हानि, राजा जनक ख़्वाह लाख हों दानी।
जिस दम वो ख़ुद ऊँचा होगा, साया सब पर उम्दा होगा।
वर्ना वही हो शिव शम्भु, *ढा कोठे तूँ, ला तम्बू।*

इसके भाई रुपये 499 – आने 15 (जब वो रुपये 500 तक चल सकते हैं, लेकिन इसके भाई 500/1 रुपये पर होंगे, मकड़ी की तरह छत से गिर कर फिर वही ऊपर को चलना सीखेंगे। वो ख़ेमा के दरमियानी बाँस की तरह अपने ख़ून की किस्मत का निगहबान होगा, जो पाताल में भी आग जलाने या शहद से ज़ुबान मीठी कर देने की हिम्मत

का मालिक होगा। जिस तरह मंगल ख़ाना नम्बर 12 में होने से राहु गुम हो जाता है, उसी तरह ही मंगल के इस घर होने से केतु (लड़का) अदम पता होगा, या अब क़िल्लत-ए-औलाद होगी जिसका उपाओ बुध की पालना बज़रिया चंदर मुबारिक होगी। बच्चों के जिस्म पर जब तक सोना (बृहस्पत) न होगा, वो सोना कमायेंगे, लेकिन जब इन के जिस्म पर सोना होगा, वो दुनिया में ख़ाक उड़ायेंग, या औलाद का मंगल मुबारिक न होगा। अगर होगा, तो ज़ेहमत या दुख ही खड़ा होगा, या उनकी ख़ुशी करने से मामला संगीन या दीगर-गूँ ही होगा। बहरहाल वो ख़ुद साहिब-ए-इकबाल और हुक्मरान ज़रूर होगा। और सिर्फ़ मंगलवार के दिन की पैदाशुदा औलाद (नर) का साथ होगा, और सिर्फ़ शुक्कर या सनीचर के दिन की पैदाशुदा लड़की की उम्र का एतबार होगा। हर दो हालत में वो बुध की उम्र (34 साला) से पहले न साहिब-ए-औलाद होगा, फिर भी होगा, तो उनकी मौतों से दुखिया आज़ार होगा।

बेलें (फली वाले पौदे), दाल मसूर, पहला लड़का।

मंगल 7वें सब कुछ उम्दा, धन दौलत परिवार ही सब।
सबका सब ही रद्दी होगा, बुध (बहन) मिले मंगल (भाई) से जब।

ऐसे शख़्स से इसकी बहन के पास आना या रहना मंदा असर देगा दोनों को, जिसके लिए बहन को मंगल की चीज़ें देना मुबारिक होगा। सनीचर का बज़रिया नया मकान या मामूली सी दीवार भी जगाना मुबारिक होगा।

मुतसद्दी, छोटा वज़ीर और धर्मात्मा होगा, रोते को हँसाने वाला, नेक नाम और इल्म हिसाब जानने वाला होगा। बहालत मन्दी, चंदर की ठोस चीज़ का उपाओ मददगार होगा।

ग्रहफल का, जब मंगल बद हो। बाजुओं के बग़ैर बाक़ी जिस्म।

मंगल 8वें आठ बरस तक, फ़र्क़ भाई छोटा गिनते हैं।
लाख मुसीबत खड़ी है करता, अन्त बुरा नहीं गिनते हैं।
माता पिता सब का, साया भी होवे।
जिस्म उम्दा, ज़र सीम पाया भी होवे।
तनूर शुक्कर[मिट्टी] जब, तपाया वाँ होवे (मंगल शुक्कर)।
न हो वो, न है ये, तबाही ही होवे।
निकोई[नेकी] का नाम, नेकोई ही होवे।
मंगल बद हो 8वें, तो कोई न होवे।

ख़ुद मंगल का मंगल की चीज़ों पर कभी मंदा फल न होगा। लेकिन जिस क़दर बुध का फल उम्दा (बुध प्रबल) होता जावे, उसी क़दर ही मंगल का फल मंदा पड़ता जावे, जब बुध का साथ या ता'ल्लुक़ होता

होवे। बेहतर तो है यही कि न बुध का फल बढ़े, पर क्या करें जो काम न बिन बुध के बन सके, यानि मंदी हालत में बुध से बचना होगा, या बुध की फोकी ख़ाली चीज़ों और बातों से नुक़्सान होगा। तनूर से तबाही के वक़्त तनूर में मीठा या मीठी रोटी लगा कर कुत्ते को देवें।

सुर्ख़ रंग।

मंगल जब घर 9वें आवे, 9 ही ग्रहों का मंगल गावे।
भरे ख़ज़ाने दौलत अंदर, हर तरफ़ हो जंगल मंगल।
न तीजा न 5 बिगाड़े, गर देखें मंदा, मंगल मारे।
दमदमे में दम न हो ख़्वाह, ख़ैर होगी जान की।
बुध अकेला छोड़ के सब, उम्दा हो ग्रहचाल ही।

मंगल की उम्र (13 साला या निस्फ़ अरसा) तक वाल्दैन को राजा बनावे, फिर अपनी 28 साला उम्र में ख़ुद भी राजा हो। लाल रंग से दुनिया का ला'ल होगा। कुण्डली में सूरज अब कहीं भी बैठा हो, ऊँच फल का होगा।

शहद, मीठा भोजन।

अकेला मंगल 10 वें बैठा, राजा होता है वली।
दूजे पापी, शुक्कर चंदर, सोने में होंगे क़लई।
तीजे ता 6वें में बैठे, दोस्त[A] इसके अपने हों।
जंगल जलता, लड़का मरता, ज़र है घटता, ऊँच ख़्वाह कितने ही हों।
(बुध का मंदा, केतु बर्बाद, बृहस्पत नीच)
मंगल राजा घर दसवें का, शनि नज़र का मालिक हो।
मंगल पर तब काना होगा, घर चौथे जब सूरज हो।

सनीचर के घरों (ख़ाना नं. 10-11) में मंगल बहैसियत चीता होगा, जो आदमियों का हमला नहीं करेगा। इसकी मामूली सी बैठने की चौकी एक तख़्त का काम देगी। लेकिन अगर शुक्कर या किसी भी और ग्रह का साथ हो जावे या सूरज ही नं॰ 6 में होवे तो औलाद के लिये लम्बीउम्र (45 साला) तक तरसता रहे ,मगर लावल्द न होगा। दौलतमन्द ज़रूर होगा। मुलाज़मत 28, मौतें 22, बीमारी 15 साल तक होगी।

A सूरज, चंदर, बृहस्पत।

सिंधूर, ला'ल।

ग्यारहवें मंगल है रखता, शहद के बर्तन भरे।
शहद उम्दा उसका होगा, फूल[बुध] हो जिस के खरे।
फूल छोड़े मक्खी[सनीचर] ही, जब नेक और उम्दा मिले।
दम में ही ले आएँगी वो, शहद के बर्तन भरे।

मंगल गो अब चीता होगा, मगर अपने गुरु[बृहस्पत] के हाथ में हवाई ज़ंजीर में जकड़ा हुआ होगा। भाई बंदों का कोई ख़ास फ़ायदा न होगा, और न ही वो उनको कोई सुखिया देख रहा होगा। ये सब राहु के ज़माना तक (42 हद 45) ही होगा। इस मंदे अहद में गो इसका अपना केतु (लड़का) न होगा, मगर दुनियावी केतु (कुत्ता वग़ैरह) मददगार होगा।

बुलन्द आवाज़, हाथी का महावत।

मंगल 12 सुख का राजा, घर गुरु प्रवेश हो।
जनम कुटिया या कि जंगल, ख़्वाह ही वो दरवेश हो।
शेर गरजे, हाथी ढरके, बिजली कड़के, चमकती तलवार हो।
ख़ून खालिस, धन शाहना सिक्का माना, दमकता परिवार हो।
मंगल 12 गुरु हो दूजे, आसमान से पातालाँ।
दो शेरों से गूजें गुंबद, हाथी छिपे हों जा ग़ाराँ।
केतु तीजे, मंगल 12, मच्छ मुआविन दोनों तारां।
साल 24 में उत्तम हो, या लड़का जब पहला हो।

कुण्डली में अब राहु बिल्कुल ही चुप होगा और न ही वो कोई बुरा फल देता होगा, बेशक किसी भी घर में बैठ रहा हो, क्योंकि महावत अब हाथी के ऊपर या हाथियों के तवेला में ख़ुद हाज़िर होगा।

बुध अकेला आकाश का चक्कर, निर्पक्ष निर्लेप होता है।
घर 2–4 या 6 में बैठा, राज योगी हो जाता है।
घर तीजे ता 8वें होवे, मदद रवि को देता है।
9 ता 12 या दूसरे पहले, शनि को प्रबल करता है।
घर पक्का जिस ग्रह का होवे, बैठा वहाँ वही बनता है।
7वें घर में पारस होवे, ग्रह साथी को तारता है।
3–8–12–9 में बैठा, कोढ़ी थूकता होता है।
घर पहले होवे घूमता राजा, *परिवार* रवि 5 करता है।
सिर का ढाँचा या दाँत हो उसके, अगला सिरा नाक होता है।
रफ़्तार, आवाज़, हों नाड़ें या गर्दन, मंतक़ी हाथ भी होता है।
शर्म, हया तंज़ीम जो ख़ाली, अक़्ल सुराख़ भी चलता है।
हिसाब सुभाओ जो ज़ाती है उसका, फ़ैसला बुध का होता है।
शनि बृहस्पत 11 राशी, बुध से दोनों चलते हैं।
बुध दबाया हो या मंदा,
दोनों निष्फल जाते हैं।

आम सधारण हालत माँ – धी। ज़ुबान, सिर का ढाँचा, आकाश का चक्कर। औरत के टेवे में अब बुध मानिन्द सूरज उत्तम होगा, और पैदायश भी वक़्त दिन (सूरज के बाद मगर सुबह की तरफ़ की) होगी।

पहले घर का बुध है राजा, घूमे फिरता दर – ब – दर।
चश्म तोता, अक़्ल खोटा, मंदा हो शाम[बुढ़ापा] व सनीचर[बचपन]।
तबला उम्दा, राग मंदा, हमचू मा न दीगरे।
रंग काला गर हो उसका, पानी में पत्थर तरे।

बहैसियत तख़्त – ए – शाही बुध में पाप (राहु ससुराल, केतु औलाद) की मन्दी हालत का साथ होगा, और सनीचर भी अब बुध के इशारे पर काम करता होगा, जिसका सबूत – वो शख़्स खाने पीने वाला, शराबी कबाबी और अपने कर्म धर्म से क़दरे लापरवाह होगा।

खड़ा अण्डा, लड़कों की सिफ़्त की लड़की, मूँग
सालम, क़लम की निब, चोंच, साली।

बुध से जब लड़की बनी, घर दूजा है ससुराल का।
इज़्ज़त जहाँ दो की इकट्ठी, जान-ओ-ज़र और माल का।
मौत गूँजे 8वें घर, पाताल ख़ाना 6 ही है।
9 में तारे, 12 गाले, तारता बुध 2 ही है।
शान राजा, राग उम्दा, जब अकेला घर में हो।
नज़र इसकी आगे आवे, सोना[गुरु], लोहा[शनि] भस्म हो।
पीछे उसके हो न कोई, न ही आगे ठहरता।*A
बुध को माना ख़ाली ग्रह है, फाँस है वो ग़ज़ब का।
घर 8 वें गर शत्रु आवे, फाँस बुध का मंदा हो।
धन दौलत सब को ही गाले, हीरा जल कर क़लई हो।
पिता मरे औलाद न आवे, कन्या से भरपूर हो वो।
कुटुंभ कबीला सारा पाले, थोड़ा सा मग़रूर भी हो।

---

*A ख़ाना नम्बर 1-8 होगा, पीछा नम्बर 2
" " 3-6 होंगे नम्बर 2 के सामने आने वाले।

घर 8वां अगर ख़ाली होवे, राजयोग कहलाता है।
बुध गिना लड़की है सब ने, अब राजा हो जाता है।
रंग सुनहरी क़ीमत गहरी, खड़ा अण्डा दरबार।
काफ़िर करे बुध आस्तिक, शाहाँ दे परिवार।

हर लम्हा अपनी तबीयत को बदलने वाला होगा। राग व ज़ुबान दानी का मालिक अपनी माता के घर ख़ुद अपने ही तान पर चलता होगा, जिसका बुध ग्रहचाली तबीयत के असूल पर बुरा हो, वो ख़ुद तो किसी तरह से भी सब्ज़क़दमा (हर तरह से मनहूस) न होगा, मगर उसकी अपनी आँखों के सामने बुध का सब्ज़-ज़ार धन दौलत और अपना ही ख़ानदानी परिवार बहुत कुछ जलता और बर्बाद होता होगा। वो ख़ुद तो नहीं मरा होगा, मगर लड़कियों की ज़्यादती और साथियों की आहज़ारी व मौतों से दुखिया और मुर्दे से कम भी न होगा, मगर हजूम की मौत में भी जश्न ही रखता होगा। बहरहाल धन दौलत के लिये उम्दा मगर ख़ुद पिता की उम्र के लिये मंदा होगा या अगर पिता होगा तो पिता के हाथों से धन दौलत का असर मंदा ही होगा, मगर वो ख़ुद किसी हालत में भी दिमाग़ी ख़राबियों का शिकार न होगा। फिर भी अगर होगा तो लड़कियों की सेवा से इसका कल्याण होगा।

भतीजी, चमगादड़, चौड़े पत्तों का दरख़्त, तिलिस्मी भूत, शक्ति जिसका साया न होवे, ख़ुद अपने असर में क़िस्मत को जगाने वाला, बाण(दीमक), चंदर का उपाओ।

बुध बैठा घर तीसरे, 9वें घर उजाड़ाँ।
ख़ुद अंधेरा जंगल होवे, राख पड़े घर ग्यारां।
बुध घर तीजे जब हुआ, जली अनोखी आँच।
9 उजड़े 11 मरे, ग़रक़े 4 और पाँच।
बुध गिना जो तीजे मंदा, 11 रवि से डरता है।
बोले ख़ुद न बोलने देवे, उम्र की रक्षा करता है।
पापी ग्रह 7 वें हुये, बुध का पक्का घर।
पिता की मिट्टी न रहे, ख़ालू, मामूँ घर।

हर रोज़ फिटकरी से दाँत सफ़ा करना आदमियों की बरकत देगा। अगर हकीम होवे तो दमा के मरीज़ों के लिए नायाब हकीम होगा। अँगूठे की तरफ़ की सिर रेखा की दो शाख़ी ख़ुद टेवे वाले के लिये मंदभाग होगी, और ख़ानानं० 8

की तरफ़ कर दो शाख़्वी दूसरों को तबाह करेगी। दुरुस्त हालत (सिर रेखा) की सिर्फ़ सेहत रेखा की हद तक की लम्बाई होगी। गर ऐसा न हो तो मंदा और खड़कता बुध होगा, जिसका इलाज फ़र्शी ज़मीन में पत्थर गाड़ना होगा जिसका रंग ख़ाना नं॰ 9 या 11 के ग्रह के बरख़िलाफ़ न होवे। इस पत्थर के नीचे पहले दूध से भिगोये हुये पलाह के पत्ते देने मुबारिक होंगे। या मकान के मरकज़ या मग़रबी दीवार में लाल (सूरज) अशिया मुबारिक होंगी।

अगर मंगल नेक हो तो उस घर में ख़ुद बुध का अपना ज़ाती फल यानि लड़की, बहन, भूआ वग़ैरह बुध की मुत'ल्लक़ा चीज़ें व ख़ानदान वग़ैरह सब बारौनक होंगे। दूसरे घरों पर बेशक बुध का बुरा ही असर होगा।

तोता, क़लई, खड़ा अण्ड़ा, भूआ, मासी।

बुध चौथे कच्चा घड़ा, कोरा, उम्दा, साफ़।
अरब करोड़ी लखपती, मारे अपना आप[ख़ुदकशी]।
धन का तो दरिया है चलता, जो ख़त्म होता नहीं।
लड़की बैठी राज करती, दिल मगर होता नहीं।
बुध चौथे हो सूरज 5, गुरु हो बैठा 9वें अंग।
राजयोग वो मर्द कहावे, बकरा जंगली साँप जो खावे।
तोता सब्ज़ मैना का साथ, ठण्डा रेता[रेत] पानी बेहाथ।
हीरा क़ीमती कुल जो तारे, धन दौलत परिवार हों सारे।
चंदर सूरज हो 3-11, गुरु 9 में बैठा बुध चहाराँ।
धन आयु, परिवार भी हो, फल चारों का उम्दा हो।

बिल्ली से तोते का दिल मुर्दा होगा, या राहु के ता'ल्लुक़ से बुध ख़ुद मुर्दा होगा। ज़रा सी ठोकर से कच्चा घड़ा ख़ुद-ब-ख़ुद टुकड़े होगा, जिसके लिये सूरज की अशिया का उपाओ होगा। दौलत के लिये बृहस्पत

का उपाओ मदद देगा। कई बार सफ़र बिला मतलब और लाहासिल होगा। केतु के ता'ल्लुक़ से बर्बाद ही होगा। धन दौलत तो उम्दा, मगर माता की उम्र के लिए मंदा होगा। अगर माता ज़िन्दा हो, तो माता के हाथों से धन दौलत मंदा होगा।

बाँस, फ़क़ीर की आवाज़, आशीर्बाद, दूध वाला बकरा, पोती।

लड़का [सूरज] बिला तड़ागी मंदा [बुध], गुरु[बृहस्पत] मंदा बिन ज्ञान [सूरज]।
बुध घर 5 वें जब हुआ, सब कुछ उम्दा जान।
बुध घर पहले, पाँचवें, सूरज को *परिवार*[दायरा]।[B]
बारिश धन की हो रही, दिन न गुज़रें चार।
चंदर हो या नर ग्रह, बैठे 9, 3, ग्याराँ।
बुध[A] आ निकले पाँचवे, बाबे पोते ताराँ।

अपनी औरत और ख़ुद अपने लिये निहायत मुबारिक मगर पिता के लिये मन्दभाग होगा, पर किसी हालत में भी औलाद पर कोई बुरा असर न होगा, बल्कि बाक़ी 5 बचने वाले मकान की क़िस्मत का साथ होगा, या इसका घर गऊघाट होगा। बहरहाल वो इन्सानी ख़स्लत का मालिक ज़रूर होगा।

---

*A 5 लड़कियाँ या पाँचवें नम्बर पर लड़की पैदा हो जावे।

*B सूरज के घरों नम्बर 1–5 में।

फूल, लड़की, मैना, खड़ा अण्डा, सुख
औरत 37 साल, दोहती।

बुध 6वें सिर श्रेष्ट रेखा तो, तो राजयोग भी कहते हैं।
उस टेवे के ग्रह जो क़ायम, उत्तम फल वो देते हैं।
घर 6 वें पाताल में, बुध शुक्कर नहीं मिलते हैं।
लड़की होवे जो उत्तर ब्याही, फल मंदा ही लेते हैं।
उम्र छोटी अब बुध की होवे, घर 6वें जब बैठता है।
लाख उपाओ करो न टलता, ग्रहफल लिखा इसको है।

ख़ुद बुध का ज़ाती फल बुध की ज़ाती चीज़ों पर कभी मंदा न होगा। ख़रबूज़ा देख ख़रबूज़ा पके, यानि तमाम कुण्डली में जब भी कोई ग्रह उम्दा फल देने वाला होने लगे, बुध भी फ़ौरन उसी ग्रह के नेक फल का हो जायेगा, मगर ख़ुद ख़ाना नं० 6 की चीज़ों के लिये बुध का वही असर होगा जो कि शुक्कर का उस टेवे में हो, या जैसे ग्रह ख़ाना नं० 2 के होंगे। बुध अब वैसा

ही फल देगा (सिर्फ़ नेक मायनों के लिए)। छापा ख़ाना, दौलत अज़ पब्लिक, ईमानदारी का धन उम्दा ओर नेक नतीजे देवे, अगर हकीम मगर लालची होवे तो बर्बाद होगा। पहली औलाद लड़की होगी। साहिब-ए-तसानीफ़ होगा, झगड़े में हमेशा फ़तेहमन्द और कामयाब होगा। चंदर की जानदार चीज़ों का बेशक कोई फायदा और आराम न होगा, मगर चंदर की बाक़ी सब चीज़ों का पूरा फ़ायदा और मदद होगी।

लड़की की उम्र की मदद के लिये दूध से भरा बर्तन (मिट्टी का) खुले मैदान में दबाना मुबारिक होगा- जबकि शुक्कर मंदा हो, और गंगाजल (दरिया, बारिश का पानी) खेती की ज़मीन एक बोतल में बंद करके (जिसका ढकना भी शीशे का हो) दबावें -जबकि चंदर भी मंदा हो। अगर केतु भी बुध (लड़की) की बरख़िलाफ़ी पर हो, तो इसके बदन पर (दाँए हिस्से में चाँदी की चीज़ (बुध की शक्ल में अँगूठी वग़ैरह क़ायम करें। बहरहाल बुध ख़ुद अपने लिये (पेशा हुनर) कभी मंदा फल न देगा।

हरी घास, भोडी गाय, बकरी, आम
माँ-धी की हालत, दूसरी चीज़ों
का ठप्पा या ढाँचा।

बुध को 7वें सब ने माना, भरे आये ख़ाली है जाना।
पर जो साथी इसका हो, डूबता पत्थर तैरता हो।
7वें बुध को रेत भी माना, शुरु बुरा, आख़िर शाहाना।
पहले 10वें जो ग्रह आवें, बुध 7वें से नेक हो जावें।
नेकी गो वो अपनी देवें, बुध फिटकरी रंगत लेवें।
बुध 7 वें हीरा हुआ, तारे सब को जो।
पर ख़ुद अपने असर में, जंगल रेता हो।

गो इस घर में बुध सब साथी ग्रहों को तारता है लेकिन मंगल का ता'ल्लुक़ हो जाने से मंगल बद खड़ा होगा, बेशक मंगल और बुध दोनों अकेले अकेले इस घर में नायाब ग्रह हैं। किसी दूसरे ग्रह की मदद करते वक़्त बुध का ख़ुद ज़ाती फल बेशक मंदा हो जावे मगर दूसरों के असर को तो

वो ज़रूर ही नेक कर देगा – सिवाय चंदर ख़ाना नं॰7 के जिसका फल दूध में बकरी की मींगनें होगा, और ख़ुद बुध ज़ाती हालत में कल्लर की ज़मीन और रेगिस्तान हो सकता है जिसमें कि चिकनी मिट्टी (शुक्कर) का नेक असर न होगा, या गृहस्त रूखी और इसका जंगल चरिंदों से ख़ाली होगा, या इसका ख़ानदानी हाल कोई शानदार न होगा, बल्कि वहाँ अक़्ल की बारीकी दूर होगी। ये सब बुध की उम्र (34 साला) तक की गुज़रान होगी। मजमुआ तमाम हाज़िर माल का ब्योपार उम्दा होगा, और दस्ती व हुनरमन्दी का काम मुबारिक होगा। बहरहाल क़लम में तलवार से उम्दा ताक़त होगी। गर न होगी तो फ़ौजदारी न होगी, अगर वो होगी तो फिटकरी से लिखे काग़ज़ की तरह वो इक आन में सफ़ेद और नेक होगी। फिर भी होगी तो ज़ुबान की थूक से ही दुश्मन की गर्दन सर क़लम होगी।

लेटा हुआ अण्डा, मुर्दा या मुर्दे का फूल, दीमक, बहन।

बुध 8वें जब आ हुआ, भट्ठी रेत तपा।
लड़की, बहन ससुराल से, बेवा हो के आ।
रेत जली है जंगल की, जलता मंगल बद।
लड़का मामूँ और माता भी, सफ़ाचट हों सब।
भेड़ चाल सब ग्रह करें, मंदा बुध जो हो।
बंद साँस सब ही करें, बुध नागबल हो।

उम्र के हर 8वें साल फोकी ख़ुशी का शानदार बाजा बजता होगा, मगर पौदे से टूटा हुआ मुर्दा फूल या मुर्दे पर चढ़ाया जाने वाला मंदा फूल होगा जिसमें राहु (ससुराल), केतु (औलाद), शुक्कर (स्त्री तादाद) और ख़ुद बुध (बहन, लड़की, भूआ, फूफी) व ख़ाना नम्बर 6 की चीज़ें (मात पिता के रिश्तेदार - मामूँ, मामूँ ख़ानदान) सबका मंदा हाल शमिल होगा, मगर मंगल से अब मंगल बद न होगा बल्कि भाईयों को बुलन्द करे और मौत का दरवाज़ा बन्द हो। मगर

वाल्दैन बर्बाद, मौतें 14 साल हों। बुध नं॰ 8 बेवा बनाता है अपने ख़ून के मुत'ल्लक़ा में – जब तक नम्बर 2 ख़ाली हो। लेकिन अगर नं॰ 2 में कोई ग्रह हो तो ससुराल खानदान में भी यही लानत देगा, जिसका सबूत मकान में सिर्फ़ पौड़ियाँ सारी की सारी गिराकर दुबारा बनाना होगा, कुछ सालों के बाद वो मकान भी दुबारा बनेगा। लानत से बचने का उपाओ – बुध के अस्थान की पूजा मुबारिक होगी, वर्ना ख़ाली घड़ा बजता रहे (औलाद व मर्दों का मंदा हाल)। बुध जब कुण्डली (जनम, सालाना, माहवारी वग़ैरह) के ख़ाना नम्बर 8 में आवे, मिट्टी का कोरा बर्तन (गोल) मंगल[A] की चीज़ों से भर कर शमशान या क़ब्रिस्तान या किसी उजाड़ व वीराने में दबाना मुबारिक होगा।

A शहद, खाण्ड।

तिलिस्मी भूत जिसका साया मालूम न होवे, चमगादड़,
सब्ज़ रंग, थथलाना। जंगल सब्ज़े व दरख़्तों का।

जब तलक बुध 9 वें बैठा, ग्रह न कोई बोलता।
भूले से गर कोई बोले, बुध न उसका छोड़ता।
साया तो है नज़र आता, बुध नज़र आता नहीं।
मार पड़ती सब ग्रहों को, कोई छुड़वाता नहीं।
आसमाँ ऊँचा तो, बहर-ए-फ़ना हुआ गहरा।
बुध बढ़ा इतना, कि दोनों में ही न ठहरा।।
अगर ठहरा* तो 13[तेरह] साल या, 13 महीने ही वो है ठहरा।
साल 16, माह 16, दिन भी 16, है नहीं ठहरा।
फिर भी ठहरा न ही ठहरा, ठहरा ठंडे दिल से है।
बहन, मासी, भूआ, फूफी, मारता सब ही को है।
बुध घर[A] 9 सब पर प्रबल, चंदर से वो डरता है।
जो रेत को तै में कर के, बुध को चलता करता है।

---

* बलिहाज़ उम्र

A चंदर 3-8-5-9

चंदर बैठा घर पहले में, बुध भी 9वें बैठा हो।
पानी वाले बादल चंदर, बुध कभी वाँ न मंदा हो।

अब बुध बेबुनियाद और ला – इन्तहा गहराई का ख़ाली कुएँ का महल होगा। ऐसे शख़्स की पैदायश में भेद होगा, जिसके ज़ाहिर करने में उसकी अपनी ज़ुबान में भी थथलेपन का सबूत होगा। मंगल या सूरज या दोनों के साथ से लसूड़े की गिटक की तरह क़िस्मत का हाल होगा। (मंदे मायनों में) और उम्र का मंगल बद या ख़ुद (बुध का ज़माना 13 – 15 – 17 – 28 – 34वाँ साल महीना का दिन) न कभी नेक और ख़ुशहाल होगा। *चमगादड़ के मेहमान आये, जहाँ हम लटके वहाँ तुम लटको* – की तरह साथियों का हाल होगा, जिसका उपाओ नाक छेदने के इलावा न कोई और होगा। गर फिर भी होगा, तो चंदर की चलती चीज़ें या बृहस्पत[ज़र्द] के रंग

में रंगी हुई अशिया[A] से वो एक चलता दरिया होगा (सब्ज़ रंग मंदा होगा) जिसकी तूफ़ानी हालत का न कोई इन्तेहा होगा, या वो ज़ालिमों को फाँसी दे कर गिराने के नियेे तिलिस्मी कुआँ होगा, जिसकी तै देखने के लिये सीढ़ी का न कभी इन्तज़ाम होगा। अगर ये सब कुछ न हुआ तो वो न दरजहाँ होगा। बहरहाल बुध नम्बर 9 या 3 या किसी और घर का मंदा असर उस साल या वक़्त ही नेक होगा, जिसमें कि वो अपने ज़ाती सुभाओ के असूल पर नेक हो जावे मगर जनम के पहले साल या पहले महीने में उसका मुंह ज़हर से ख़ाली न होगा, अगर होगा तो जनम मरण का झगड़ा ही दूर होगा।

[A] दरिया के पानी से धोया या दरिया के पानी के छींटें देकर पहला कपड़ा डालना, बवक़्त दिन या दोपहर मगर रात न होवे।

दाँत, ख़ुश्क घास, शराब–कबाब, नास्तिक या भूत की ख़ुराक, लेटा हुआ अण्डा, सनीचर का उपाओ मददगार होगा। सीढ़ियाँ (मकान)।

बुध का 10वें हुआ बसेरा, शनि करेगा फ़ैसला तेरा।
किसी तरह से अगर मिलेगा, चंदर अपनी दया करेगा।
ख़ुश्क घड़े सबमें पानी भरेगा, सिदफ़ में वो मोती पैदा करेगा।
शनि बिना कुछ भी न मिलेगा, अगर कुछ मिला, सख़्त धोका मिलेगा।

लाख का महल, बारूद का पटाख़ा, साँप के ज़हरीले दाँत, हड़काये कुत्ते की दुम, सनीचर के इशारे पर काम करेंगे। जैसा कि सनीचर होगा वैसा ही बुध का काम कर दिखायेगा। पिता की मर्ज़ी हो सुख देवे कि न देवे। वालिद का साया कोई यक़ीनी न होगा, न ही ख़ुद नज़र का कोई भरोसा होगा, गर होगा ज़ुबान का चस्का शराब कबाब का मंदा मज़ा बाइस–ए–तबाही होगा पर उम्र लम्बी का साथ भी होगा।

कच्चा घड़ा, कण्ठी वाला तोता, गुरु (बृहस्पत) का उपदेश देवे, चौड़े पत्तों का दरख़्त, सीप, हीरा, फिटकरी।

उल्टा घड़ा या जनम वक़्त जबकि इन्सान इस दुनिया में आते वक़्त सर नीचे मगर सब को प्रणाम करता आवे।

कुंभ घड़ा उल्टा है बेशक, बुध 11 में हुआ।
हर तरह से हो जो डूबा, उसको ज़िन्दा कर गया।
ग्रह जभी सब ख़त्म हों तो, बुध अकेला रह गया।
तारने ही वो लगा जब, घर ही सारा बह गया।
बुध न किसी को तारे, तारता जब वो आख़िर है।
शनि, बृहस्पत, चंदर मारा, तारता आख़िर बुध ही है।

बज़ात ख़ुद बुध बदकिरदार खोटे काम व मन्दी हालत का होगा, जिसका असर उसकी पूरी उम्र (लड़की की 17 मगर टेवे वाले की अपनी 34) तक साये की तरह साथ होगा, सब तरफ़ से बर्बाद और निराश हो जाने के बाद ख़ासकर सनीचर, बृहस्पत या चंदर मंदे वाले को या इन तीनों से तबाहशुदा को आबाद व ख़ुशहाल कर देगा।

राशीफल का, केतु का उपाओ मददगार होगा। अण्डे खिलौने, भेड़, गन्दा अण्डा, हड़काया कुत्ता (आम टेवे में) मगर 12 में बैठा ख़ाना नं० 6 का फल देने वाला (ऊँच बुध) सिर्फ़ ज़ाती ख़ून के लिये और सिर्फ़ जिस टेवे में सनीचर बृहस्पत मुश्तरका हों (केतु का उपाओ ख़ुद ब ख़ुद हो जाता है) बाक़ी तरफ़ वही मंदा असर। शनि 12 में बैठे बुध का कभी बुरा असर न होगा।

बुध जब बैठा 12 में तो, रेत बरसाने लगा।
12 – 6 से सब ही भागे, कुत्ता हड़काने लगा।
आसमाँ से कुत्ता हड़का, भागता पाताल को।
12 गाले, 6 भी मारे, साड़े ख़ाना 4 को।
गर न मारे धन न मारे, मारता है जान को।
बच सके न इससे कोई, नाक जब तक साफ़ हो।
दमदमे में दम नहीं अब, ख़ैर माँगो जान की।
बस ख़त्म अब हो चुकी, रफ़्तार सब ग्रहचाल की।
12 कुत्ता बुध, जो हड़का तारता केतु ही है।

गर न घर में कुत्ता रखे, झपटता बुध राहु[बाज़] है।

सिवाय सनीचर के जो अब साथ या साथी ग्रह बन रहा हो, बुध नं० 12 सब बाक़ी ग्रहों (जो साथ साथी नम्बर 12 या 6 में हों) को अपने बुरे असर की ज़हर देगा, मगर सूरज (बन्दर) इसकी ज़हर को पहचान लेगा ,और बचता जायेगा। हड़काया कुत्ता – भाइयों का दुश्मन, दौलत का राखा, दूसरों के लिये जोड़ेगा। लोगों में बेएतबारी की ज़िन्दगी ओर तबीयत का हर लम्हा घूमने वाला होगा। ब्योपार-सट्टा (बुध की हवाई ताक़तों व चीज़ों का ता'ल्लुक़) भी मंदा होगा। नाक छेदना या गले में ज़र्द धागा हर वक़्त क़ायम रखना मुबारिक भले असर के लिये ज़रूरी होगा, वर्ना हर तीसरी बोली (3 दिन, 3 महीने, 3 साल और हर तीसरी गिनती अपनी उम्र की या अपने ता'ल्लुक़दारों की) पर नीलाम की बोली ख़त्मकर देगा। ख़्वाह सेठ का माल बाक़ी बचे या न बचे या क़ीमत के बदले

ख़्वाह ज़ेहमत ही देवे, मगर दलाल को किसी भी नमक हलाली का ख़्याल न होगा। सिर्फ़ होगा, तो अपने मालिक (पिता) को आख़ीर पर छोड़ देने का ज़रूर लिहाज़ होगा, या वो ख़ुद उस घर से बाहर होगा बशर्ते कि शुक्कर (शादी) की ज़ंजीर में जकड़ा हुआ न होगा। अगर होगा तो सिर पागल होने की वजह से सब पर हमलावर होगा। क़िस्सा कोताह शुक्कर की उम्र (25 साला) से पहले शादी करना न भला होगा। चस्का ज़ुबान (पापी ग्रहों की मुत'ल्लक़ा चीज़ों की ख़ुराक) से परहेज़ मुबारिक होगा।

औरत का ख़ाना नं० 12 का बुध कोई बुरा नहीं गिनते राशी फल का होगा।

शनि साँप का साँस गो मंदा, इच्छ्याधारी पर होते हैं।
मदद पे जिसकी हों वो बैठे, तारते इक दम दोनों हैं।
शत्रु ग्रह जब बढ़ते जावें, ज़हर रंग शनि बढ़ते हैं।
शुक्कर बच्चा वो कभी न मारे, साँप दो*A बच्चे मारते हैं।
गुरु के घर कभी बुरा न करता, न ही पाप ख़ुद करता है।
पाप किया जो राहु-केतु, फ़ैसला धर्म से करता है।
नर ग्रह हो जब साथ अकेला, ज़हर शनि नहीं होता है।
नर ग्रह होवें दो या ज़्यादा, क़ाबू शनि हो जाता है।
तीन गुना घर पहले मंदा, 2 गुना मंदा तीसरे है।
एक गुना घर छटे में मंदा, पर मंदा नहीं सदा ही है।
अबरू, छींक और बाल जिस्म के, हाथ दिखावा होता है।
टक-टक करते बोलना उसका, फ़ैसलाकुन शनि होता है।

A शनि ख़ुद और मसनूई सनीचर इकट्ठे

* शुक्कर बृहस्पत (केतु सुभाओ, मंगल-बुध) राहु या मंदा सुभाओ

9-7वें- घर 12 बैठा, क़लम बिधाता होता है।
ख़ाली कागज़ हो घर 10वें का, छटे स्याही होता है।
घर 11 में लिखे बिधाता, जनम बच्चे का होता है।
क़िस्मत का हो हरदम राखा, स्याही पाप की धोता है।

सनीचर का मंदा फल दिये हुये ख़ानों का उस वक़्त ही नेक होगा जब वो राहु केतु के अपने दायें बायें होने के असूल पर नेक सुभाओ हो जावे बमूजब बर्षफल।

हलक़ का कौआ, गन्दा कीड़ा, आग से जलना।

शनि, शुक्कर घर पहले बैठे, काग़ रेखा कहलाती है।
मालिक ख़्वाह हो तख़्त हज़ारी, मिट्टी कर दिखलाती है।
धन दौलत सब चूल्हे धरके, उम्र को लम्बा करती है।
9 ही ग्रहों पर प्रबल होके, सब को निर्बल करती है।
सूखी लकड़ी आग का कीड़ा, दोनों झगड़ा करते हैं।
गर हों राहु केतु मन्दे, भस्म भंडारा भरते हैं।
घर पहले में तेल-मिट्टी का, आग चौथे[A] से लाते हैं।
घर 7वां 10 ख़ाली[B] होवे, मच्छ रेखा[D] बन जाते हैं।
वर्ना वही चूल्हे पड़ी लक्ष्मी, भट्टी में भगवान।

कामयाब डाक्टर होगा (सामान सनीचर में)।

बवजह ग़रीबी सब काम अधूरा। तालीम तो ख़ासकर अधूरी

A – सनीचर के दुश्मन ग्रह यानि चंदर या सूरज या मंगल

B – बुध या सनीचर नम्बर 7 में और राहु या केतु नम्बर 4 में

D – सिर्फ़ वास्ते धन दौलत।

होगी। काग़ रेखा के असर में बद-दयानती, झूट, फ़र्ज़ी बेबुनियाद ख़्यालात बाइस-ए-मौत होंगे। मच्छ रेखा व काग़ रेखा दोनों इकट्ठी ही होंगी। सनीचर की मियाद (36 साला उम्र) तक सब कुछ उड़ता जावे और हर काम में रू-स्याही हो। जिस्म पर ज़्यादा बाल हों, तो तंगहाल होवे। बुध की मच्छ रेखा के वक़्त (बुध नं. 7) बहन की जगह नर बच्चा बदलता जावे। सनीचर दूसरे किसी ग्रह के साथ हो तो सनीचर से मुराद उसका बाप होगी, मगर बृहस्पत या सूरज के साथ सनीचर से मुराद उसका बाप न होगी। हर एक मंदा ग्रह उस टेवे में ही होगा, जिसके ख़ानदान में पहले उम्दा ग्रह का पूरा सबूत हो चुका हो जिसे वो बुरा ग्रह बर्बाद कर सके। काग़ रेखा वहाँ ही होगी, जहाँ मच्छ रेखा हो चुकी हो। अच्छे ग्रहों की ये शर्त नहीं।

माश सालम (जो बवक़्त शादी त्यौहार पकते हों।)

शनि होवे जब दूजे बैठा, गुरु का हो दरबार।
वक़्त नसीबा अपना अच्छा, अज़/ता वक़्त मुख़्तार।
धर्म मन्दिर का साँप ही होगा, ज़ाहिरा बुद्धू पर आक़िल होगा।
गर न होगा ज़ालिम न होगा, अदल रहम इंसाफ़ ही होगा।
ख़ुद कभी न दुखिया होगा, होगा जब तक सुखिया होगा।
ख़ुद मरे न किसी को मारे, गर मारे ससुराल ही मारे।
दूध पिलावें सब को तारे, दुश्मन इनके सब ही मारे।

बृहस्पत और सनीचर दोनों का असर बराबर होगा। गुरु उम्दा, सनीचर ख़राब। मजमूआ हर दो हालत का जवाब होगा। ख़ुदा परस्त होगा। हस्ब-हैसियत गुज़रान होती रहे। भूरी भैंस मुबारिक मगर दो रंगी स्याह या अकेली स्याह ग़ैर मुबारिक होगी।

कीकर, बेरी। नक़द रुपये की कमी के लिये राशी फल जिसके लिये केतु का उपाओ मददगार, जायदाद के लिये ग्रह फल का।

शनि कुण्डली घर तीसरे पाया, पर बैठे नहीं चैन कर।
ज़हर छोड़ी, फूँक छोड़ी, छोड़ता है माल–ओ–ज़र।
जो न वाक़िफ़ इसके होंगे, उन से वो बचता रहे।
ख़ून उसका भाई बंदे, सब ख़राबी दें उसे।
गो न दौलत उस ने रखी, बढ़ती जाये जायदाद।
जितना–जितना वो उजाड़ें, होगा वो हरदम आबाद।
शनि हो तीजे चंदर 10वें, गर हों बैठे वहाँ कभी।
ऊर्ध रेखा डाकू होवे, कुएँ हो मन्दे सभी।
ज़हर जो साँपों में थी, अपने लिये ही ज़हर हो।
भय जो लोगों के लिये था, अपना ही वो क़हर हो।

बीनाई (नज़र) के मरीज़ों का हातिम (नायाब हकीम) होगा। जनूबी दरवाज़ा का मकान या उसके आगे पत्थर

का होना सनीचर के ख़ूनी साँप का असर देने का सबूत होगा, **वर्ना** नक़द माया के इलावा बाक़ी हर तरह से सनीचर का उत्तम असर होगा। घर में केतु (कुत्ता) नक़द दौलत के लिये मुबारिक होगा, लेकिन घर में पानी (चंदर) मिले ख़ुद अपनी मौत होवे। चोर डाकू भी बने तो भी दौलत के लिये मुफ़लिस, बेहुनर और मन्द हाल होवे। शनि नं० 9 को नं० 3 से दुश्मन ग्रह देखता हो और उधर मकान अंधेरे की पिछली दीवार तोड़ कर रोशनी हो जावे – तो खुलने के पहले साल पिछली तरफ़ के मकान में से नये निकाले दरवाज़े या ताकी की तरफ़ से तीसरा मकान बर्बाद और तबाह होगा। फिर तीसरे साल नये दरवाज़े निकालने वाला घर बेआबाद होगा। ऐसे शख़्स को बग़ैर तख़्तों के सिर्फ़ ख़ाली चोकाठ घर में ख़ासकर छत पर रखना स्त्री व लक्ष्मी के लिये मन्दभाग होगा।

मकान काले कीड़े, दूध का छींटा मददगार होगा।

शनि हो चौथे, घर माता के, नस्ल मामूँ नहीं छोड़ेगा।
कुल अपनी को डोबता जावे, ख़ुद भी ग़ोता खावेगा।
चंदर दूजे या कि तीजे, शनि भी चौथे बैठा हो।
पितृ रेखा अब उत्तम होगी, सुख सागर सब लम्बा हो।
चंदर, सनीचर साथी होवें, दूध ज़हर मिल जावें दो।
धन ख़ज़ाना मंदा होवे, शुक्कर फल भी गन्दा हो।
शनि 4 में, गुरु हो तीजे, ऊर्ध रेखा कहलायेगी।
सब को लूट खसूटे इतना, जायदाद बन जायेगी।

पानी के किनारा या कुएँ वग़ैरह पर का साँप और ख़ूनी मल्लाह होगा, और ख़ुद अपनी जायदाद जद्दी के कोयले ही करके छोड़ेगा। साँप को दूध पिलाना मुबारिक होगा, जिससे चंदर का असर प्रबल हो जायेगा, कुएँ में दूध गिराने से चंदर का असर उत्तम होगा। औरत की कबूतरबाज़ी से सनीचर का असर मंदाहोगा। छाती पर कम बाल हों तो बे-ऐतबारा ही होगा।

सुरमा स्याह, बुद्धू लड़का।

शनि है पाँचवें लड़के खाता, या दुश्मन वो मकानों का।
बाक़ी सब फल उत्तम होवे, शनि, बृहस्पत दोनों का।
केतु मालिक लड़कों का तो, राहु वली मकानों का।
12 – 24 जो प्रगट हो, दूजा शुरु निनावन का।

शादियाँ 7 तक होंगी, औलाद बहुत होगी मगर आख़ीरी न होगी। भोला बादशाह, अक़्ल का ख़्वाह अंधा मगर गाँठ पूरा होगा। औलाद बर्बाद होगी। अगर किसी तरह अपने ही अण्डे खाने वाली साँपनी से कोई लड़का बच भी रहे, तो 48 साला उम्र तक मकान या औलाद (वो भी सिर्फ़ एक लड़का) में से सिर्फ़ एक चीज़ क़ायम होगी। औलाद को तो सोने को लोहा कर देने की तरह स्याह और बर्बाद कर देगा। अगर जिस्म पर बाल ज़्यादा हों तो बेशक चोर फ़रेबी भी बने, फिर भी बदनसीब और मंदा हाल ख़ुद अपना व औलाद का होवे। बुध का उपाओ मददगार होगा।

कौआ। राहु (काला कुत्ता) का उपाओ मददगार होगा वास्ते ज़ेहमत बीमारी। बुध का उपाओ वास्ते कारोबार मदद करे या मवेशियों की मदद के लिये बकरी मुबारिक होगी।

शनि दूजे में नेक था, छठे हुआ बदनाम।
शुक्कर केतु भी मरे, सब मन्दे उसके काम।
पापी मन्दे पाप तक, उम्र 42 हो।
क़सम पावे वो पाप की, ख़्वाह रवि भी 12 हो।

24 साल लड़के पैदा हों, जबकि शादी 28 के बाद हो। हुनरमन्द, अक़्लमन्द। *माँ पर धी... थोड़ा थोड़ा।* माड़ा पुत्त व खोटा पैसा फिर भी कभी न कभी काम आ ही जायेगा और ज़माने की सब स्याही धो देगा, जबकि राहु बर्षफल में ऊँच घर(3, 6) आ जावे। अगर शादी 28 से पहले ही हो तो सनीचर बुध

की मियाद तक माता व औलाद सब सफ़ाचट कर देगा, मगर लावल्दी का हुक्म नहीं लगा देगा। केतु (औलाद) की बर्बादी को रोकने के लिए पूरा स्याह कुत्ता मददगार होगा। ख़ाना नं॰ 2 में अगर शुक्कर या चंदर हो, तो सनीचर गाय, स्त्री और माता धन पर भी बुरा हमला कर देगा।

चरिन्दे, स्याह गाय, सुरमा सफ़ेद, बीनाई। लाल या सफ़ेद–ओ–लाल गाय से शुक्कर का असर मंदा, मगर स्याह या सफ़ेद–ओ–स्याह दो रंगी गाय बुरा असर न देगी।

शनि हो 7वें 7 गुणा, धनी हो दौलतमन्द।
ज़र पाये वो राज से, हो ख़र्चा लड़की 5
परिवार बढ़े दौलत बढ़े, बढ़ेंगे शुक्कर साथ।
शुक्कर[औरत] जिस दिन ख़त्म हो, शनि होगा चुपचाप।
शत्रु ग्रह 3–5वें आवें, सेहत मंदी और पिता जलावें।
साथी या मुश्तरका होवें, शनि हो मंदा ख़ुद भी रोवें।
सूरज अगर हो चौथे बैठा, हिजड़ा बुज़दिल होता है।
न्होराता ख़्वाह आधा अंधा, टेवा ऐसा होता है।

जायदाद जद्दी (विरासत) तो बेशक इतनी न होगी, मगर माहवारी आमदन हज़ारों रुपयों की होगी। हुक्मरान, दौलतमन्द, अक़्लमन्द (आँख की होशियारी)।

दौलत 24 साल, हथियार का डर 27 साल उम्र तक होगा। क़तरे-क़तरे से शरबत का कड़ाहा और अम्बार कर लेगा। पर-उपकारी तो धन कारआमद वर्ना दुष्ट भागवान होगा। स्याह ख़्वाल से ऊँचा पहाड़ और कीड़े से मगरमच्छ होगा, मगर धन का दूसरा दर्जा होगा, या आख़ीर बिन बर्ते ही चल जायेगा। न्यासरी माया होगी- जब शराबख़ोरी का दिलदादा हो। मकान की दहलीज़ पुरानी लकड़ी की होवे और जनम से पहले की जो लगी थी वही क़ायम रहे तो सनीचर नं॰ 7 का नेक फल क़ायम रहेगा, वर्ना सनीचर नं॰ 1 का फल देगा।

धनवान डाक्टर व हकीम होगा, बेशक पेशा हिकमत से बेबहरा हो। इंजीनियर भी हो सकता है (बाकमाल)। अगर सनीचर सोया हुआ होवे, और अपना तमाम ही दौरा सोया रहे तो पोते के जनमदिन से सब कुछ ही काल माया या वीरान होवे, जिसका उपाओ बज़रिया मंगल शहद सनीचर को जगाना होगा।

बिच्छु, मौत का घर, कनपटी, पुड़पुड़ी।

शनि है 8वें हैडक्वार्टर, घर तो मंगल ही का है।
जैसा मंगल हो शनि भी, असर मुसावी दो का है।
एक अकेला 8वें होवे, ख़ुद कभी न मंदा हो।
मंदा होगा मंगल से, या चंदर भी वाँ बैठा हो।

अकेले सनीचर का अब सनीचर की चीज़ों पर कभी मंदा फल न होगा। चंदर का उपाओ करने से पता चलेगा कि सनीचर जो अपने हैडक्वार्टर में बैठा है किस नीयत और तबीयत का है। कनपटी और पुड़पुड़ी भी बात का फ़ैसला कर देगी। छाती पर ज़्यादा बाल हों तो उम्र भर ग़ुलामी में रहे।

टाहली, फलाही। स्याह व पुरानी क़िस्म की लकड़ी।

बृहस्पत का उपाओ मददगार होगा–बहैसियत त्यागी गुरु।

9वें शनि सबसे वली है, सिर्फ़ बुध से डरता है।
बुरा यहाँ वो कभी न करता, तीन पुश्त तक चलता है।
60 साल तो उम्दा होगा, बल्कि उम्र हो सारी ही।
शर्त बृहस्पत[A] इतनी करता, होवे पर–उपकारी भी।
मंगल गर हो चौथे बैठा, शनि जलावे 9वें को।
फूँक–फूँक कर दुनिया सारी, ख़ुद प्लेगी चूहा हो।

मकानों व मुसाफ़िरों के सामान की तालीम देने में कामयाब मर्द होगा। हमदर्द व सख़ी होगा। घर में खड़ा हुआ पत्थर उम्दा उत्तम और नायाब क़िस्मत का सबूत होगा। अब चंदर की ख़ाना नम्बर 3 की दृष्टि का न कोई बुरा असर होगा। मगर राज दरबार की पहाड़ पर कछुए की चाल चढ़ने वाला होगा। अगर पेशानी या पुश्त–ए–पा पर ज़्यादा बाल हों,तो

A ख़ाना नम्बर 9 का मालिक।

मन्दभाग होगा। अगर ख़ुद बदला लेना,वर्ना औलाद को बदला लेने की नसीहत करके मरने वाला हो तो माड़ा शाह व मन की दलीलें होंगी। घूमता पत्थर (Rolling Stone) होगा, जबकि सनीचर बहैसियत पापी ग्रह बैठा होवे, जिसका सबूत राहु केतु का किसी न किसी तरह से आ मिलने का होगा। बहरहाल भारी क़बीला व जायदादों का मालिक होगा। स्त्री भाग(शुक्कर) में हर तरह से उत्तम मगर चंदर(माता) भाग में मंदा असर देगा, जिसके लिये भी बृहस्पत का उपाओ मददगार होगा, या माता पिता के बैठे (जो अमूमन लम्बी उम्र के होते हैं) न कभी मंदा हाल होगा। मगर बादअज़ाँ गड़े पत्थर का सहारा ज़रूर कारआमद होगा, वर्ना साँप की तरह उसे हर एक लकड़ी से मार देने को तैयार होगा। गो आख़ीर पर न किसी के ज़ेरबार होगा। नीज़ शनि ख़ाना नं० 3 भी देखें।

शनि ख़ाना नं० 10 (पक्का घर, घर का)

ग्रह फल का, क़िस्मत को जगाने वाला। मगरमच्छ, साँप। सनीचर के ज़ाती असर का घर।

10वें शनि हो जब आ बैठा, शेषनाग सिंघासन हो।
नज़र ग्रह सबकी का मालिक, उम्र बढ़ाता पिता की हो।
बृहस्पत की करवाये सेवा, दुनिया गुरु को पूजेगी।
राजसभा सब शादी अन्दर, पहले गणपति मानेगी।
ख़ुद सनीचर उत्तम होगा, धन दौलत शाहाना हों।
हथियारों से हत्या करनी, बरस 27 मन्दे हों।

जनम कुण्डली में ख़ाना नम्बर दस का सनीचर मन्दर्जा ज़ैल सालों में चारों तरफ़ मार करता है, और सनीचर बृहस्पत मुश्तरका फ़क़ीर की झोली का असर देगा, जिसका फ़ैसला ख़ाना नं० 11 के ग्रह करेंगे, और कुण्डली में ख़ास ही होगी।

3 – 9 – 15 – 21 – 27 – 33 – 39 – 45 – 51
57 – 63 – 69 – 75 – 81 – 87 – 93 – 99 –
105 – 111 – 117 (दूसरे सफ़े पर)।

शनि ख़ाना नं० 10 (पक्का घर, घर का)

एक जमा सिफ़र = 10 या दसवाँ द्वार आख़िरी मैदान-सब की क़िस्मत गणेश जी की तरह उत्तम फल देगा। पिता का कम-अज़-कम 24-48 साल। उम्र तक साथ होगा। चारों तरफ को मुड़ जावे, सब ग्रहों की नज़र का मालिक होगा।

ग्रह फल का। लोहा। बहैसियत हलफ़ उठाये हुये
सिर्फ़ राहु(ससुराल), केतु(औलाद) के कामों
या क़िस्मत के नतीजे की क़िस्मत का मालिक।

11 शनि है बैठता, बृहस्पत के दरबार।
हलफ़ गुरु से पहले लेवे, फ़ैसला हो दर-बाद।
ख़ुद शनि अब याद करके, दूध अपनी माता का।
ख़ुद तरे सब को वो तारे, ज़हर है नहीं उगलता।
राहु केतु जैसे होवें, फ़ैसला इन पर करे।
तारें ख़्वाह वो मारें मर्ज़ी, नाग रक्षा ही करे।
मियाद ऐसी इनकी होगी, साल 48 ही तक।
ख़ुद शनि फिर मदद देगा, साल 84 ही तक।
ग्रह उत्तम को वो बढ़ा कर, जल्दी जल्दी ख़ुद बढ़े।
सिर्फ़ बुध से है वो डरता, ता न हो घर तीसरे।
शनि 11 ख़ुद घड़ा है, बुध मगर उल्टा घड़ा।
सिर्फ़ इतना ही नहीं बुध, घूमता कच्चा घड़ा।

शनि बृहस्पत 11 राशी, बुध से दोनों चलते है।
बुध दबाया हो या मंदा, दोनों निष्फल जाते हैं।

अगर मूँछ डाढ़ी के बाल कम हों तो ख़ुद पैदाकर्दा जायदाद न होगी, तो केतु (औलाद) की आमदन बर्बाद होगी। दृष्टि ख़ाना नं० 3 अगर ख़ाली हो तो सनीचर सोया हुआ होगा। भरा हुआ पानी का घड़ा तो क़िस्मत का बेशक होवे, मगर बरतावा तो गुरु बृहस्पत ही होगा, यानि इसकी क़िस्मत का फ़ैसला बृहस्पत के हाथ होगा। अगर बृहस्पत भी निकम्मा हो या बाप, बुज़ुर्ग, गुरु या पीराना साल बूढ़ा कोई साथी न हो तो बृहस्पत का उपाओ मददगार होगा। ख़ाना नं० 3 का ग्रह क़िस्मत को जगाने वाला होगा, जिसके ज़रिये वो होशियार आँख और फ़रेब से धन कमावे। ज़नाह, अय्याश, शराबख़ोरी से सनीचर का नेक असर ज़ाया होगा। चंदर की मदद या पूजना से (चाँदी की ईंट) आली मर्तबा धनाड होगा।

शनि ख़ाना नं॰ 12 (गृहस्ती परिवार)

मसनूई ताँबा, मछली, तख़्तपोश, बादाम, सिर पर टटरी। ज़मीन में लाल फूल दबाना (जब सूरज नं॰ 6 हो) मुबारिक होगा।

शनि बैठा जब घर आ 12, राहु केतु नहीं बोलते हैं।
काग़ज़ उन्हों के हुये हैं फ़र्ज़ी, मदद बुध की ढूँढते हैं।
बुध ख़ुद अब कहीं हो बैठा, बैठता चुप चुपाती है।
शेषनाग प्रबल है बैठा, खेलता वो परिवार में है।
खेल तमाशा उम्दा होवे, अँधेरा जब तक न घटे।
सूरज बैठे न आ 6वें, न पिछली दीवार फटे।
मच्छ – मुआविन दोनों रेखा, पद्म छुपा भी पाया हो।
झूट, शराबी गर वो होवे, असर शनि का ज़ाया हो।

गृहस्ती साथी कीड़ों के भौण की तरह बे हद क़बीला बन जायेंगे, और अपनी अपनी ख़ुराक साथ लायेंगे। सिर पर टटरी हो तो दौलतमन्द ज़रूर होगा। जब तक सूरज नं॰ 6 में न हो, कोई उपाओ ज़रूरी न होगा।

अगर अँधेरा हटा कर (पिछली अँधेरी कोठड़ी जो मकान में दाख़िल होते वक़्त दायें हाथ की तरफ़ की स्याह पोरी होती है आख़ीर पर) रोशन हो चुकी हो, तो उस मकान के जनूब-मशरिक़ी गोशा में (मकान कुण्डली ख़ाना नं० 12) बादाम तै ज़मीन में दबाना सनीचर को क़ायम रहने में मदद देगा। सबसे बेहतर तो है यही कि पिछली दाँईं कोठड़ी को पूरी अंधेरी स्याह ही रखा जावे।

राहु मालिक है लहर दिमाग़ी, बिजली कड़क भी होता है।
रंग शाम या नीला उसका, काम चमक के करता है।
शनि मंगल का हाथी होवे, पद्म, शर्म भी बनता है।
चंदर को ये मद्धम करे तो, ग्रहण सूरज का होता है।
गुरु के साथ धूआँ हो तकिया, बुध को उड़ता करता है।
रहे शुक्कर का शत्रु हरदम, सरदार केतु हो चलता है।
भोंचाल आतिशी जिस दम होवे, ख़ून अचानक करता है।
गर्मी सूरज से और भी बढ़ता, ठण्डा चंदर से होता है।
हड्डियाँ पुश्त या सीना मर्द की, हाथ के नाख़ुन होता है।
आँख, चश्म, आवाज़ हो हाथी, फ़ैसलाकुन राहु होता है।
शमशान नं॰ 8 बैठे आसमान नं॰ 12 है उड़ता, ऊँच पाताल नं॰ 6 में होता है।
मंगल कुण्डली बैठे 12, ख़त्म राहु हो जाता है।
अस्ल बैठक गुरु-मन्दिर नं॰ 2 होवे, 11 गुरु को मारता है।
सूरज को घर 5वें तारे,
क़सम पाप चौथे करता है।

सूरज बुध मुश्तरका नम्बर 3 हों तो राहु का कुण्डली में मंदा फल न होगा।

ठोडी, नाना–नानी। सूरज का उपाओ मददगार होगा। ग्रहण दो साल, महादशा 18 साल।

राहु पहले तख़्त पर तो, तख़्त थर्राने लगा।
सूरज बैठा जिस हो घर में, ग्रहण वाँ आने लगा।
बिगड़ा ख़्याल उसका धन क़र्ज़ा कर दिया, राहु चढ़ा दिमाग़ पर चर्ख़ा उल्ट गया।
साल मन्दे 18–20, शर्त ये राहु की है।
दान रक्षा सबने माना, रवि की चीज़ों से है।

सामने घर का हाल (राहु की चीज़ों में) मंदा होगा। तबदीली होगी, मगर तरक़्क़ी की शर्त नहीं।

शुक्कर, बुध या दोनों में से कोई एक भी उम्दा होवे तो राहु के ग्रहण या तबाही के नुक़्सान से बचाओ रहेगा, मगर फ़र्ज़ी अंधेरा फिर भी होगा।

ख़ुद अपने दिमाग़ की शरारत बाइस–ए– ख़राबी हो। मालिख़ूलिआ भी हो सकता है। बिल्ली की जेर (झिल्ली) गन्दुमी कपड़े में मुबारिक होगी।

हाथी के पाँव की मिट्टी, सरसों, ससुराल, कच्चा धुआँ। जब शुक्कर के ख़िलाफ़ चले चाँदी की गोली मददगार होगी।

राहु केतु (दूजे - 8वें)/(8वें - दूजे) घूमती ग्रहचाल हो।
(सोना - मिट्टी)/(मिट्टी - सोना) दोनों ढंग का हाल हो।
झूलता पंघूड़ा क़िस्मत, ठहरता वो है नहीं।
रोके गर, तो चंदर रोके, रुकता घर वो है नहीं।

राजा हुक्मरान होवे पर न मन्दी गुज़रान होवे, बल्कि उम्र लम्बी का ज़रूर साथ होवे। अगर धर्म मन्दिर भी हो तो हाथियों का अस्थान और हाथियों की ख़ुराक देने की क़िस्मत व हिम्मत का साथ होगा।

तेन्दुआ जुबान, जौ (अनाज), रिश्तेदार (स्याह रंग)। हाथी दाँत ग़ैर मुबारिक।

राहु तीजे त्रैलोकी के, शत्रु दुश्मन नाश करे।
धन दौलत हो औरत सुखिया, रवि आयु प्रकाश करे।

तरक़्क़ी की शर्त है, तबदीली की शर्त नहीं।

रईस, जायदाद वाला होगा। दुश्मनों पर तलवार होगा। अगर कोई भी ग्रह साथ या साथी हो तो केतु(औलाद) का हाल मंदा होगा, जिसका बुरा असर 34 साला उम्र तक रहेगा। अगर सूरज बुध मुश्तरका भी राहु के साथ ही नं॰ 3 में हों तो राहु का सूरज (राजदरबार, ख़ुद इसका जिस्म) पर तो बुरा असर न होगा। मगर इसकी बहन का सूरज (ख़ाविन्द, राजदरबार वग़ैरह) मंदा व बर्बाद होगा, जिसके लिए चंदर का उपाओ बहन को मददगार होगा। नीले आसमान व नीले समंदर की दरमियानी

जगह के सब दुश्मनों को क़ैंची की दो शाख़ी की तरह दबा कर एक ही दम में काट देगा। गहरी हथेली का मालिक या जायदाद व रुपये जमा छोड़ कर मरने वाला होगा, मगर लावल्द न होगा।

ख़्वाब या ख़्वाब का ज़माना, धनिया, सोया दिमाग़।

राहु केतु घर चौथे, माता चंदर से डरते हैं।
तारें उसे न तारें मर्ज़ी, क़सम पाप की करते हैं।
ग्रहण हुआ जब माता घर में, माता ख़ुद शर्माती है।
निस्फ़ उम्र तक पानी डूबे, धन दौलत भी डरती है।
पहली उम्र गर मन्दे होवें, दूजे चक्कर वो अच्छे हैं।
ग्रहण गुज़रते* दोनों भाई, लेखा पूरा करते हैं।

इल्म-ओ-अक़्ल का तो ज़रूर साथ होगा और फ़ायदा लेगा मगर जद्दी जायदाद (चंदर का असर, ज़मीन खेती वग़ैरह) कम ही होगी। राहु का बुरा अर्सा फ़िक्र-ओ-ग़म में ग़र्क़ होगा, जिसके दूर होते ही सब कुछ बहाल होगा, मंदा ज़माना मानिन्द ख़्वाब होगा।

---

* केतु ग्रहण एक साल, राहु ग्रहण दो साल } दोनों मुश्तरका 3 साल या 3 साला उम्र

छत, औलाद का सुख व तादाद उम्र।

राहु गिना गर धुआँ है भट्टी, घर 5वें हो दिया न बत्ती।
21 साला जो लड़का होवे, बाबा रहे तो न पोता होवे।
उम्र 42 एको होवे, गर न होवे ससुराल न होवे।
सूरज गर वाँ पहले होवे, फल राहु का उम्दा होवे।
चंदर ही गर साथी होवे, भोंचाल राहु का ठण्डा होवे।
गर न होवे माता न होवे, गर होवे मच्छ रेखा होवे।*

ब्रह्मशनास व आबिद होगा, या लक्ष्मी पर हाथी का साया होगा। चंदर के इलावा अगर मंगल सनीचर का साथ हो जावे या सूरज ही मुश्तरका दीवार के साथ के घर होवे तो तादाद औलाद पर बुरा असर न होगा। बड़ा भाई मच्छ रेखा का मालिक, उससे छोटा मगर ख़ुद से बड़ा औलाद में सिफ़र होगा, और ख़ुद वो 5 लड़कों का बाप होगा। सबके सब बड़े भाई से लेकर नीचे औलाद तक शाहाना हालत और राजयोग

---

* वास्ते सिर्फ़ तादाद औलाद

होंगे, बशर्ते कि राहु (दहलीज़) उम्दा बल्कि चाँदी की (सारी दहलीज़ के नीचे चाँदी की पत्तरी जो किसी तरफ़ से भी गोलाई पर न हो) मौजूद हो, और दकन के दरवाज़ा (बड़ा दरवाज़ा) का साथ न हो, वर्ना राहु का वही कच्चा धुँआ होगा, जो इसका ज़रूर धुँआ निकाल देगा, या ज़ेरबार करके तबाही का धक्का लगाता जायेगा।

बर्षफल में राहु नं० 5 का मंदा असर अगर उसकी औलाद पर न हो, तो पोते पर ज़रूर मंदा होगा।

अगर सूरज या चंदर या मंगल ख़ाना नं० 4-6 12 में हो, तो तादाद औलाद नर 5 से कम न होगी।

काला कुत्ता (पूरा काला व स्याह) क़िस्मत को जगाने वाला।

राहु 6वें ऊँच है, केतु ऊँच है 12।
फल दोनों का है वही, जो शनि घर 12।
पापी ग्रहों का मेल है, कुत्ता पूरा काला।
पाताल नीचे से वो पर्बत होवे, 9 ग्रह राशी 12।

तरक़्क़ी की शर्त है तबदीली की शर्त नहीं।

ख़ुद अपनी व ससुराल की क़िस्मत मानिन्द कौस – ओ – क़ज़ाह होगी। दुश्मनों के मुक़ाबला में वो निहायत ही गहरी पाताल की तै को फौरन एक निहायत ऊँचा पहाड़ कर दिखावे। दिमाग़ी ता'ल्लुक़ में राहु का फल उम्दा होवे मगर इसके घर में चचा उठे भतीजा बैठे। दीवान ख़ाना क़ायम रहे की तरह बीमारी का साथ ज़रूर रहे, जब तक कि वो मंगल से दूर रहे। स्याह शीशे या सिक्के की गोली (गोल चीज़) मुबारिक होगी।

सट्टे का ब्योपार। सनीचर का उपाओ मददगार (नारियल)।

बुध, शुक्कर का तराज़ू।

राहु 7वें तुला भी उल्टे, औरत मन्द परिवारां।
दौलत का वो राखा होवे, खावें दोस्त यारां।
शनि देव ही रक्षा करेंगे, शत्रु मरें दरबारां।
मच्छ रेखा फल उत्तम देवे, बुध शुक्कर 2-11।

ख़ुद अपना ख़ून मात-पिता और औरत वग़ैरह गृहस्ती साथियों (जानदारों) का मंदा असर होगा। जिसके ज़ेर-ए-साया रहे, वही दरख़्त बर्बाद हो, या लावल्द होवे। केतु (कुत्ते) का ता'ल्लुक़ बाइस-ए-तबाही होगा, वर्ना गिनती का मालदार होगा। लेकिन अगर पेशा भी राहु का होवे, तो दरजहाँ ही न होगा। (36 साला उम्र तक)

मर्ज़ झोला, मालिख़ूलिआ, दीवार की अंगीठी का धुआँ।

राहु घर 8वें में होवे, घोड़ा चढ़े घर छत्तँ।
क़िस्मत की दो पलटी होवे, दीवारें खड़ी बिन छत्तँ।
28 साला गर मंगल आवे, या शनि ख़ुद फेरा पावे।
सोया नसीबा पकड़ जगावे, घर उजड़े आबाद करावे।

ख़ुद ज़ाती ख़्याल के मन्दे नतीजे व खोटे काम हों। मौतें 5 साल साथ रहें। घूमती ग्रह चाल हो। चाँदी के चौकोर टुकड़े के उपाओ से हाथी (राहु) अपने तवेला (हैडक्वार्टर) से बाहर आकर अपनी नेक-ओ-बद तबीयत व नीयत का सबूत देगा। दकन का दरवाज़ा या दकन की दीवार में चूल्हा (धुँआ मंदा सबूत देगा) लेकिन अगर इसमें सबसे बड़ा या कारकुन स्याह रंग होवे तो नेक फल होगा।

दहलीज़, नीला रंग। सूरज ग्रहण (राज दरबार) पूरा और मंदा, और चंदर के लिये निस्फ़ ग्रहण होगा।

घंडी से ऊपर की बीमारियाँ।

राहु 9वें जब हुआ, चुप बृहस्पत हो।
धर्म छोड़ ख़र्चा करे, औलाद में देरी हो।
उम्र 21 लड़का मिले, हो बाद 42 दो।
पोता जब 21 करे, बृहस्पत वाँ न हो।
भाई बहन से गर लड़े, मन्द नसीबा हो।
चूल्हे अग्नि उस बुझे, कच्चा धूँआ हो।

पागलों को दम में शिफ़ा देगा, सरसाम को फूँक से ही हटा देगा।

हक़ीक़ी भाई बहनों से इत्तफ़ाक़ पर बरकत होगी, वर्ना लावल्दी का पूरा सबूत होगा। कर्म धर्म से दूर हो, तो औलाद निकम्मी, नालायक़, या न ही हो मगर सनीचर के मुत'ल्लक़ा कारोबार से मंदा असर न हो।

गन्दी नाली, ग़र्क़ी (गन्दे पानी का गढ़ा तालाब)।

घर 10वें में तीन ग्रह ही, चलते शनि से हैं।
राहु, केतु और बुध तीसरा, तीनों शक्की हैं।
घर 10वें में राहु बैठा, चंदर होवे चार।
सिर उसका फट जायेगा, मन्दी सोच विचार।
गर टेवा कोई अन्धा होवे, हाथी अन्धा हो।
ग़ैरों से वो डर कर भागे, मारता कुल ख़ुद अपनी हो।
शनि अगर वाँ उत्तम होवे, हाथी शेर शिकारां।
दुश्मन उससे कोसों भागें, उम्दा हो गुलज़ारां।

कम नज़र या कम उम्र होगा, अगर मंगल का साथ न हो। नंगा सिर स्याह लिये फिरना राहु की मन्दी हालत का पूरा सबूत होगा। मन्दे वक़्त मंगल का उपाओ मददगार होगा।

नीलम।

हलफ़ से जो बात करते, है यक़ीन होता नहीं।
राहु 11 आ जो बैठे, बृहस्पत वाँ होता नहीं।
बृहस्पत भागे पापी भागें, भागता संसार है।
शनि गर हो तीजे 5वें, योगी आलंकार है।
एक से ग्यारह हुये तो, पापी होंगे आप से।
धन न चाहें माँ से अपनी, न ही लेंगे बाप से।
6 ग्रह ही मुर्दा होवें, पापी यहाँ मरते नहीं।
जिस को तारें पूरा तारें, धोका वो करते नहीं।

बृहस्पत क़ायम रखना ज़रूरी होगा, जो अमूमन होता ही नहीं वर्ना क़र्ज़ा खड़ा और धन दौलत बर्बाद होंगे, और केतु (औलाद भी) मन्दे दरवेश की तरह मंदा और कम क़ीमत होगा, या 36 साला उम्र तक वो सिफ़र होगा।

पक्का घर व ग्रह फल का (मंदा)। कोयले, हाथी, समंदर का तेन्दुआ, खोपरी।

6 में राहु क़ौस-ओ-कज़ाह था, 12 में वो धुँआ है।
लकड़ी[सनीचर] मीठी पवन[बृहस्पत] भी मीठी, असर मगर अब बुरा ही है।

राहु बैठा बारहवें जब, शुक्कर हो घर ग्यारह।
कन्या उस घर बहुत हों, और धन भी उसी रफ़्ताराँ।
मंगल भी घर 12 होवे, राहु ख़त्म हो जाता है।
हाथी महावत दोनों मिलते, सामान शाही हो जाता है।

कच्चा धुआँ मगर क़िस्मत के असर में कोई काम की आग न होगी, अगर होगी तो न सिर्फ़ ख़र्चा हाथी का होगा बल्कि गृहस्ती सुख में हाथी की मन्दी लीद पड़ती होगी। मुक़द्दमात फ़ौजदारी व ग़बन, हसद व झगड़े आम होंगे। लड़कियों की ज़्यादती और बाइस ख़र्चा ज़रूर होंगी।

केतु छलावा है चलो चली का, पापी बुरा ही होता है। 1
मरे न ख़ुद वो मरने देवे, चारपाई नहीं छोड़ता है। 2
ग्रह जब तक कोई एक हो चलता, केतु चला ही चलता है। 3
रवि को गर वो मद्धम करे तो, ग्रहण चंदर को करता है। 4
केतु मिला जब शनि मंगल से, ऐसा बुरा नहीं होता है। 5
साथी मगर जब तीसरा होवे, फल तीनों ही का मंदा है। 6
गुरु मिले तो सबसे उत्तम, माता मिले ख़ुद मंदा है। 7
बुध मिले ख़ुद दुष्ट कहावे, मदद शुक्कर की करता है। 8
पाताल पक्का घर 6वां होवे, नीच वहां ये होता है। 9
घर 12 आसमान पे चढ़ के, दुनिया से ऊँचा होता है। 10
पहले घरों में केतु जो होवे, गुरु मंदा हो जाता है। 11
उल्ट अगर हों टेवे बैठे, भला चंदर नहीं होता है। 12
चंदर अगर बद-मंगल रोके, केतु मंगल बद करता है। 13
बुध केतु दो बाहम लड़ते, बद मंगल भी डरता है। 14
कुत्ता बने केतु दुनिया के कुत्ते लड़का, आसन गुरु होता है। 15

शत्रु ग्रह, घर जब ये झगड़े, नष्ट सभी का होता है।
राहु पाप गर ख़ुफिया होवे, केतु ज़ाहिरा ही चलता है।
शारह – आम में दोनों मिलते, मार दो तरफ़ी करता है।
मकान गली का आख़िरी होवे, औरत ज़ात पर पड़ता है।
हवा चलेगी भूत – प्रेती, बच्चों पे हमले करता है।
शनि की माता बच्चे खावे, कुतिया कोई बच्चे खाती है।
बच्चा अगर कभी एक ही होवे, नस्ल क़ायम हो जाती है।
चाल राहु की टेढ़ी गिनते, सीधी केतु नहीं होती है।
बुध ने पकड़ा पाप है दुनिया, मदद चंदर से होती है।
कान, पीठ, गर्दन या पाँव, नाख़ुन भी उनके होता है।
रफ़्तार गोलाई या बल गर्दन पर,
फ़ैसलाकुन केतु होता है।

टाँग, नानका घर, हवा-ए-बद, धुन्नी से नीचे
के हिस्सा में बीमारियाँ।

केतु जब घर पहले आवे, जनम मुसाफिर-ख़ाने[A] पावे।
जिधर जिधर वो क़दम धरेगा, मिट्टी उड़ती साथ।
बाओ-बगूला तूफ़ानी बने वो, मारेगा घर छह सात।
पापी ग्रह तीनों गिने, केतु भी बदनाम।
जो मारे न जान से, मिट्टी, गर्द-ओ-आम।
न इधर मारा, न उधर मारा।
हो अगर मारा, जनम अस्थान ही मारा।

A: - जद्दी मकान के इलावा, नानके-दादके सफ़र, मुसाफ़िरी वग़ैरह।
जिस घर में जनम लिया वो मकान न होगा। जिस
रिश्तेदारों के यहाँ पैदा हुआ वो ख़ानदान न रहा,
फिर भी रहा तो मामूँ ख़ानदान ही न बाक़ी रहा,
अगर रहा तो स्त्री सुख व औलाद ता'ल्लुक़ भी हल्का
रहा। मगर सूरज बैठा होने वाले घर का असर

और ख़ुद सूरज का ता'ल्लुक़ हर तरह से नेक रहा, बेशक सूरज किसी भी घर और किसी भी हालत में हो बैठ रहा। जब बाप की क़िस्मत मंदी हो, तो ऐसा लड़का क़िस्मत में ज़रूर मदद देगा, और बाप को ज़रूर तार देगा, हालांकि सूरज केतु बाहम दुश्मन हैं। केतु कुत्ता अगर हड़काया भी होवे, तो भी अपने मालिक, बाप, वली या सरपरस्त को ज़रूर ही छोड़ देगा।

इमली, तिल।

केतु दूजे गोबर गाय, ब्रह्म गुरु अस्थान हो।
माता को बेशक न तारे, औरत का अभिमान हो।
घूमती क़िस्मत सही, पर नेक और बहबूदा हो।
सफ़र इसको बहुत लिखा, हुक्मरान आसूदा हो।

हर नया सफ़र तरफ़ की तबदीली पर होगा, यानि पहले अगर जनूब को जावे, तो फिर वापिस मगर मग़रिब में ठहरे, फिर मशरिक़ में आवे। बहरहाल तबदीली की शर्त ज़रूर होगी, मगर तरक़्क़ी की शर्त नहीं।

सख़ी - सरवर, सफ़र और तबदीली मुक़ाम का मालिक होगा, (नेक मायनों और नेक असर में)। बृहस्पत गुरु या सोने की नक़ल करेगा, या नक़ली सोने की तरह की क़िस्मत होगी। (उम्दा हालत में)

रीढ़ की हड्डी, केला (फल), फोड़े-फिन्सी।
चलते पानी में चंदर सूरज मुश्तरका की चीज़ें डालना
मुबारिक होगा जबकि सफ़र में धकेले, या बृहस्पत की
चीज़ें जब फोड़े गुमटे पैदा करे।

केतु घर जब तीजे आवे, भाइयों से वो तंग करावे।
औरत घर ससुराल हों मंदे, सालियां बेवा पड़ेंगी पल्ले।
केतु तीजे मंगल 12, मच्छ, मुआविन दोनों ताराँ।
24 साला में उत्तम होवे, या जब लड़का पहला होवे।

कानों में सोना (नन्तियाँ) मुबारिक होगा।

नेकी को याद रखने और बदी को भुला देने वाला ख़ुद-ब-ख़ुद
बिन बुलाये मदद के लिये आ हाज़िर होने वाला शख़्स होगा।
बुध (लड़की ज़ात) का बुरा फल होगा। उलझन में
जकड़ा हुआ दरवेश होगा, या बिला वजह औरत से जुदाई
का सबब भी होगा। भाईयों से दूर परदेस की ज़िन्दगी
या भाई इससे दूर परदेस में होंगे।

सुनना (कानों का ता'ल्लुक़) बृहस्पत का उपाओ मददगार होगा। चाँद ग्रहण होगा (एक साल मियाद)।

केतु चौथे जब हुआ, कुत्ता कुएँ में हो।
न चंदर ख़ुद अच्छा रहा, न केतु उम्दा हो।
गुरु उपाओ गर करे, दोनों दुख हों दूर।
कुल उसकी चलती रहे, माया मिले ज़रूर।

लड़कियाँ ज़्यादा मगर इस्तक़लाल का आदमी होगा। नर औलाद का मंदा ही हाल होगा, पर ख़ुद न कभी वो तंग हाल होगा। ये सब केतु की उम्र का हाल होगा।

पेशाबगाह।

केतु घर है पाँचवें, रवि गुरु के घर।
जैसा हाल बृहस्पत होवे, वैसा ही केतु घर।
गर शर्तें न पूरी होवें, 24 बाद[*A] ज़रूर।
दुख दलिद्दर सब कुछ बदले, बदले हाल ज़रूर।
वज़ह फ़र्क़ घर 9 में होगी, नज़र न भूले जो।
फल[औलाद] कड़वा तब ही हुआ, जड़ में आक[सनीचर] जो हो।

अगर बृहस्पत मंदा हो तो 45 साल उम्र तक घर में नर औलाद की जगह कुत्ते के रोने की आवाज़ आयेगी या औलाद को दम (दमा) की तकलीफ़ होगी। अगर सनीचर का भी ता'ल्लुक़ हो जाये तो जड़ (3 नर औलाद) नष्ट होगी, जो सनीचर की उम्र (36 साला) में बहाल होगी। बृहस्पत ऊँच क़ायम या उम्दा हो, तो केतु का फल उम्दा मगर, ख़ुद बृहस्पत का मंदा होगा। बृहस्पत, सूरज या चंदर 4,6,12 में हो तो नर औलाद 5 से कम न होगी।

केतु ख़ाना नं० 6 (पक्का घर, नीच)

ग्रहफल का, घर का, पूरा चंदर ग्रहण। ख़रगोश, चिड़ा (चिड़िया का नर), परदेस, पूजा अस्थान।

केतु 6वें नीच है, दुश्मन ज़ेर ही हो।
माता, मामूँ हो मन्दे, पर ख़ुद न मंदा हो।
गर मन्दे ग्रह हों सभी, केतु[लड़का] मदद करे।
बुध[लड़की, बहन] से न झगड़े कभी, न शुक्कर[औरत] मदद करे।
केतु की चीज़ों पे केतु[लड़का] मंदा, पर मंदा न दूसरो पर।
ग्रह दूजा कोई साथ ही होवे, ख़ुद मंदा बुरा दूसरों पर।

सोने की अँगूठी बाएँ हाथ में मुबारिक होगी।

वक़्त मुसीबत शेर का जाल काट कर छुड़ाने वाला *मामा मूसा* होगा। अगर बृहस्पत उत्तम हो तो नर औलाद व धन दौलत की आमद पर आमद होवे, वर्ना काट खाने वाला कुत्ता होगा। इस घर में ये शुक्कर की भी मदद नहीं करता और न ही मामूँ ख़ानदान पर मेहरबान होगा, मगर बुध बहन से कोई झगड़ा नहीं करता। *A लड़के की उम्र मगर सनीचर से पहले।

दूसरा लड़का, सूअर, गधा।

केतु जब घर 7वें आवे, दुश्मन वो सब मार हटावे।
कुत्ता राज बैठाल्या, मुड़ चक्की चट्टण जावे।
24 साल ही गुज़रते, धन 40 साला आवे।

सामने घर का हाल मंदा(केतु की चीजों में) होगा।

$\frac{\text{लड़के की उम्र}}{\text{48 अर्सा केतु}}$ ज़रब 80 कुल उम्र केतु $\frac{\text{साल की आमदन}}{\text{के बराबर का धन}}$ होगा।

अगर बुध (क़लम) का साथ होवे तो 24 साला उम्र तक दुश्मन ज़रूर गले लगे रहें, लेकिन बाद में वो सब को ही कुत्ते की तरह मार भगावे। धन जब आवे 40 साल बरकत व गुज़ारा साथ ही ले आवेगा।

कान (सुनने की ताक़त), छलावा, धोकाबाज़।

केतु जब 8वें हुआ, पत्थर हों पिस्तान।
कुत्ता सोया छत पर, लड़का हो क़ब्रिस्तान।
मींह बरसे औलाद का, जब चंदर दूजे हो।
जब चंदर भी हो बुरा, चंदर पालन हो।

ख़ुद अपनी उम्र लम्बी होगी, मगर केतु की उम्र (48 साला) तक औलाद से दुखिया या महरूम ही होवे। बहर हाल केतु का असर मंदा होगा, या शेर की नींद वाला सोया हुआ कुत्ता होगा। दो रंगे कम्बल (स्याह सफ़ेद) का टुकड़ा शमशान भूमि में दबा देना मुबारिक (वास्ते औलाद) होगा, अगर कोई और ग्रह भी नं० 8 में मुश्तरका हो तो उस ग्रह की मुत'ल्लक़ा चीज़ को भी कम्बल में बाँध कर साथ ही दबाना होगा।

दो रंगा कुत्ता। घर में सूई हुई कुतिया
मय उसके बच्चे मुबारिक होंगे।

केतु 9वें पिता को तारे, तारता नहीं वो मामूँ को।
औलाद तो होगी गिनती ही की, पर सुखिया व उम्दा हो।
मात-पिता घर दोनों तारे चंदर जब गुरु उम्दा हो।
जो ग्रह दोनों से रद्दी होवे, तरफ़ वही ही मंदा हो।
घर तीजे जब दुश्मन होवे, लड़का भी हो मंदा।
साल*A गुज़रे ग्रह 7वें के, होगा फिर वो उम्दा।

तरक़्क़ी की शर्त है तबदीली की शर्त नहीं।

सूअर की बहादुरी और नेक कुत्ते की वफ़ादारी दोनों सिफ़्तों का मालिक होगा। औलाद नर ज़्यादा से ज़्यादा 3 क़ायम होगी, मगर हर तरह से मुकम्मिल और बा-आराम जिंदगी वाली होगी। गुज़रान परदेस में ज़्यादा अर्सा होगी, मगर नेक हालत में।

*A सातवें घर के ग्रह की उम्र की मियाद।

दौलतमंद होगा, मगर ख़ुद दस्ती काम व अपनी ही हिम्मत से रौनक़ लेगा। लावल्दों को औलाद और नामर्दों को मर्द करने में इसकी आशीर्बाद हुक्म बिधाता होगी। घर में सोने की चौकोर ईंट क़ायम रखना निहायत ही मुबारिक होगा, वर्ना कानों में सोना भी मददगार होगा।

चूहा। फ़ैसला सनीचर से होगा। मंगल का उपाओ मदद देगा।

केतु घर 10वें का शक्की, कुत्ता, लड़का मंदे।
मंगल ख़्वाह घर 10वें होवे, फिर भी दोनों मंदे।
शनि अगर घर अच्छे होवे, मिट्टी-सोना होवे।
बुरी जगह जब नाग जा बैठे, सोना-मिट्टी होवे।
अब उपाओ केतु होगा, या चंदर का पानी।
महल मकानाँ नीचे देवे, दूध शहद वो प्राणी।
अकेला हो केतु जब घर 10वें, मदद मंगल से होगी।
पर जब हों दो इकट्ठे बैठे, दया चंदर की होगी।

दौलतमंद तो ज़रूर होगा मगर अय्याश व बदफ़े'ल भी होवे। सनीचर का फ़ैसला बता देगा, कि पग 12 (मिट्टी से सोना बनता) और 3 काने (सोने को हाथ डाला तो मिट्टी हो गई) कब और कहाँ होंगे। 45 साला उम्र में केतु का संभालना

एक क़ीमती चीज़ होगी, यानि ख़ालिस चाँदी का
बर्तन शहद से भर कर पहले ही रख लेवे।
48 के बाद केतु का साथ (कुत्ता) मददगार होगा।
केतु नं॰ 10 और सनीचर नं॰ 4 में हो तो 3 नर औलाद
बेमायनी होगी, जिसका इलाज वही है, जो
केतु नं॰ 8 का है।

क़ीमती दो रंगा (स्याह व सफ़ेद) पत्थर। स्याह कुत्ते का ता'ल्लुक़ सबसे नेक होगा, केतु क़ायम रखना मुबारिक।

केतु 11[A]- ग्यारह गुणा हो, धन दौलत हो उम्दा,
पर ख़ुद केतु[B] शनि दोनों का, फल होगा ही मंदा।
जायदाद न उतनी होगी, जितनी ख़ुद बनावे।
बुध अगर न तीजे बैठे, केतु राज करावे।
गर बुध उसके तीजे आवे, केतु मारे चीख़ाँ।
क़िस्मत की दोरंगी होवे, रोवे अपने लेखाँ।

ऐसे टेवे में चंदरमाँ रद्दी होगा या माता न होगी।

जद्दी जायदाद की निस्बत ख़ुद पैदाकर्दा जायदाद ज़्यादा होगी। ख़ूब आमदन का मालिक होगा, मगर सनीचर (मकान) व ख़ुद केतु (लड़का) का अपना अपना फल मंदा होगा, जिसके ता'ल्लुक़ में दलिद्दर और परेशानी होगी। मगर औरत के टेवे में ये सब उल्ट या हर हाल नेक व मुबारिक होगा।

A-मर्द के टेवे में ख़ुद अपना लड़का B- औरत के टेवे में दोहता

छिपकली, मुतबन्ना। क़िस्मत को जगाने वाला।

केतु बैठा जब घर आ 12, सुख गृहस्ती होता है।
शुक्कर, केतु, शनि, बृहस्पत, फल चारों का उम्दा है।
ख़ुद बढ़े साथी बढ़ें, बढ़ेगा कुल परिवार।
मर्द माया की कमी न होवे, बढ़ेगें रिश्तेदार।
मंगल, राहु हसद करेंगे, लड़के तरफ़ों चार।
हर तरह से रक्षा होगी, फलें फूले गुलज़ार।

तरक़्क़ी की शर्त है, तबदीली की शर्त नहीं।

औलाद के वक़्त से (या जब लड़का 24 साला हो जावे) दौलतमंद होगा। इज़्ज़त व मान का सरोवर (चश्मा) होगा। नर औलाद कम अज़ कम तादाद में 6 होगी। अँगूठा दूध में डाल कर चूसना या अँगूठे का मुँह में रखना तमाम गृहस्ती ता'ल्लुक़ में मुबारिक होगा। घर में कुत्ता दो-रंगा (स्याह-सफ़ेद) मुबारिक होगा।

अकेला गुरु जगत बाबा जो होवे, बाप रवि से वो कहलाता है।
रवि गुरु जब इकट्ठे हों बैठे, बाप बेटा हर दो मिल जाता है।
क़िस्मत हर दो एक ही होवे, मिले दोनों चंदर ही बन जाता है।
घर 6वें 7वें वो हैं राशि फल के, इकट्ठों से ऋण पितृ हो जाता है।
दुनिया की रूह का रवि होये मालिक, तो मालिक गुरु जगत हो जाता है।
दोनों इकट्ठे हों साँस रुहानी, जहाँ दोनों त्रैलोकी हो जाता है।
गुरु बाप बनता तो सूरज हो लड़का, भाग मुश्तरका दोनों का हो जाता है।
बने एक राशि तो दूजा ग्रहफल, लिखत वाँ बिधाता बदल जाता है।
तरफ़ पहली बैठा या बालिग़*A जो होवे, असर उसका प्रबल ही हो जाता है।
अकेल अकेले हों बेशक वो मन्दे, असर नेक दोनों का हो जाता है।
दुश्मन ग्रहों या घर मन्दे मारे, या टकराते बाहम वो टेवे में हों।
फल दोनों का हो कभी भी न मंदा, बैठे ख़्वाह बेशक वो कहीं ही हों।
ज्ञान अक़्ल या हवा रोशनी तो, राजा योगी भी होते हैं।
फल दोनों का हो उत्तम अपना, दुखिया मामूँ को करते हैं।

*A-उम्र की बजाय बलिहाज़ असूल बालिग़ टेवा।

रवि गुरु होते हैं विष्णु ब्रह्मा, तो भाग उदय उसका कहलाता है।
दोनों अगर हों कहीं कभी न मिलते, जनम मंदा उसका ही हो जाता है।
इंसाफ बज़ुर्गी उम्र के मालिक, दुश्मन से घबराते हैं।
सात साल की महादशा में, वो केतु को मरवाते हैं।
चंदर को जब दोनों देखें, ख़ुश्क कुएँ भर आते हैं।
माता हो उनकी बेशक अन्धी*B, पिस्तान हरे हो जाते हैं।
शनि अगर दोनों को देखे, इक दम ही सो जाते हैं।
शेर गरजता, सोना दमकता, दोनों ही जल जाते हैं।
बिल्मुक़ाबिल हों कभी बैठे, वज़ीर मातहती होते हैं।
राजा इनका हो मालिक राशी, जिसमें कि वो बैठते हैं।
हाथ की रेखा जनम हो कुण्डली, या मिलते कभी दो न हों।
मिटे सूरज रेखा व क़िस्मत, फल मन्दे दोनों के हों।

ख़ाना नम्बर 1
रवि गुरु घर पहले बैठे, तख़्त सुनहरी का हाकिम हो।
उम्र लम्बी और सुख गृहस्ती, मिट्टी का ख़्वाह माधो हो।

B-चंदर नष्ट, बर्बाद या रद्दी।

खाना नम्बर दोनों मिल कर घर दूजे में, उपदेश गुरु का सुनाते हैं।
2 महल मकान सब आला उसके, शेर गरजते होते हैं।
3 घर तीजा त्रैलोकी गिनते, सोना माया कुल बढ़ती है।
माया लालच का पुतला जो होवे, कुल ग़ारत ही होती है।
4 घर चौथे माता के होवें, दूध पहाड़ से बहता हो।
शनि अगर घर 10वें बैठे, भस्म दोनों को करता हो।
5 दोनों मिले जब 5वें बैठें, सोना घर औलाद के है।
रवि राजा घर अपने बैठा, गुरु मेहमान वज़ीर भी है।
माया आवेगी *पर-स्वार्थ* से, शत्रु भागते बल से हैं।
नाव, जहाज़ हवा से चलते, पंखे साँस औलाद के हैं।
रुके कभी न हवा, रोशनी, बैठे वहाँ ख़्वाह पापी हों।
बुध अगर आ निकले इस घर, रवि गुरु भी क़ैदी* हों।
घर इसका गऊ-घाट ही होगा, बाकी पाँच ही बचते हों।
धर्म दौलत की कमी न कोई, बाल बच्चे सब बढ़ते हों।

* बाप-बेटा दोनों की क़िस्मत सोई हुई होगी।

बाक़ी ख़ाना

घर 6, सात या 10 हो 11, रवि गुरु नहीं मिलते हैं।
फल दोनों का अपनों अपना, तरफ़ बुढ़ापा गिनते हैं।
घर 9–12 शुरु आख़ीरी, कुल उन्नति भी लेते हैं।
घर 8वें वो मौत हटावें, जागती क़िस्मत करते हैं।

बाप बेटे का एक ही बिस्तरे पर सोना हर दो की क़िस्मत के लिए मुबारिक होगा, अगर अलैहदा–अलैहदा ज़िन्दगी बसर करने का मौका या ज़रूरत होवे, तो बाप के बिस्तरे से पीठ तले बिछाया जाने वाला कपड़ा (दरी वग़ैरह) बेटे को अपने पास रखना और ख़ास कर रात को अपनी पीठ तले बिछाना निहायत मुबारिक होगा। बाप की अदम मौजूदगी या किसी भी और नामुमकिन हालत में ऐसे कपड़े की बजाय बृहस्पत की चीज़ें रात को पीठ तले रखना मुबारिक होंगी।

तालीम 24 साल, तीर्थ 20 साल, चंदर का असर ½ होगा। चाँदी की थाली, अच्छे घरों मौनसून, मन्दे में कसीफ़ (गन्दी) हवा। दोनों का मुश्तरका उत्तम फल होगा। पिता-माता, बड़ का दरख़्त।

ठण्डी हवा (ख़ुशी की), पुराना चावल, बुढ़ापा।

अक़्ल घटे पर धन बढ़े, सफ़र भी उम्दा हो।
विरासत, काश्त सब फलें, ग़ैबी मदद भी हो।

पहले घरों 1 ता 6 में बैठे अपना नेक फल मगर बाद के घरों 7 ता 12 अपने से पहले बैठे हुए दोस्तों को पूरी मदद देंगे, ख़्वाह दृष्टि का ता'ल्लुक़ हो या न हो। उत्तम लक्ष्मी होगी। **दोनों मुश्तरका को अगर देखें:-**

शुक्कर, मंगल
या सनीचर, शुक्कर
या सनीचर, मंगल
} असर उम्दा और फल नेक होवे।
ख़्वाह दोनों टोले बिलमुक़ाबिल ही क्यों न हों।

दोनों को देखे:-

सूरज- ताजिर, अहल-ए-क़लम, ठोस माल हाज़िर से दूसरों को भी तारता जावे।

शुक्कर- शादी के दिन से ज़वाल शुरु कर देगा।

मंगल- धन, परिवार और ज्ञान सब ही उम्दा हों।

बुध- दुश्मन की बजाय अब मदद देगा, अगर सनीचर उम्दा हो तो नेक असर वर्ना फोकी उम्मीद और नास्तिक होगा।

ख़ास फ़र्क़

नम्बर 2 का बुध पिता पर भारी और 4 का बुध माता पर मंदा मगर धन दौलत के लिये उम्दा होगा। बाक़ी सब घरों में बृहस्पत की हालत पिघले हुए सोने की तरह होगी, या बुध और पापी ग्रहों के ता'ल्लुक़ में बृहस्पत हर शक्ल में बदला जा सकेगा।

सनीचर- सब के लिये लोहे को पारस का काम देगा।

जब दोनों जुदा जुदा और एक दूसरे के सामने या अपने से 7वें हो, तो जब कभी भी सनीचर या दुश्मन ग्रह की मुत'ल्लक़ा चीज़ मकान–सनीचर, शादी–शुक्कर वग़ैरह का वक़्त आवे, चंदर बृहस्पत माता पिता ख़त्म होंगे। जो पहले घर का हो वो बाद में, जो बाद के घरों का हो वो पहले ख़त्म होगा। दोनों ग्रहों को चलता रखने की ख़ातिर केतु (आसन) ज़मीन में अस्थापन करें, या केतु की चीज़ें तै–मकान में या इसके गले में डालें।

ख़ाना नम्बर 1 28 साला उम्र से पहले शादी, मकान (नया बनाना) या पैदायश नर औलाद से मंदा असर, वाल्दैन की उम्र अमूमन कम होगी, जबकि नम्बर 7 ख़ाली हो। मिट्टी में मंगल की चीज़ों के दबाने से मदद होगी।

2: बड़ के दरख़्त का साया, बालाई आमदन, माता का सुख सागर व जद्दी जायदाद की बृद्धि होगी। अब राहु

बुध का ता'ल्लुक़ मंदा होगा, यानि बड़ पर तिलियर का ता'ल्लुक़ कम होगा। अगर होगा, तो दूध बोतल में बन्द होगा, जिस का ज़ायका न होगा, फिर भी होगा तो बिच्छू या भिड़ की ज़हर होगा, जिस के लिये साली का ता'ल्लुक़ नेक न होगा।

ख़ाना नम्बर 3 ख़ुद तरे भाईयों को धन से तारे, मगर तोते की आवाज़ या ता'ल्लुक़ हर तरह से मंदा होगा।

4: बड़ के तने ही सतून की तरह अपना क़बीला मददगार बना लेवे, नाव जहाज़ का काम देवे। जनम से ही धन का चश्मा निकल पड़े और पूरी शान्ति होवे।

5: अब दोनों की जगह सूरज नम्बर 5 का उत्तम फल होगा। ताजिर और अहल-ए-क़लम हो तो दूसरों को भी फ़ायदा देवे।

6: बुध व केतु का जैसा भी फल होवे इन दोनों के उत्तम फल में शामिल होगा। रफ़ा-ए-आम या काश्त की ज़मीन का कुआँ, सब उम्दा असर को पाताल में ले जावे।

7: बचपन मंदा, 24 साला उम्र से वाल्दैन दुखिया। शादी

और लड़की की पैदायश के दिन से धन दौलत का ज़वाल मगर दलाली फ़ायदामंद ब्योपार हो।

ख़ाना नम्बर 8 गो उम्र लम्बी मगर धन की ख़ातिर भाईयों को मारे या मरवाये। धन उम्दा वही होगा जिसमें श्रेष्टपन हो। माता घर से सनीचर या मंगल की चीज़ें बाइस-ए तबाही होंगी।

9: दूध से पले हुए दरख़्त की तरह नेक क़िस्मत वाल्दैन का पूरा और लम्बा सुख सागर बशर्ते कि लड़की क पैसा या धान न खावे।

10: माता-पिता की सोने चाँदी की ईंटें भी अध्यारे के पत्थर होंगे। पिता की शानदार डाढ़ी और माता की सच्ची मुहब्बत और घोड़ी की लम्बी दुम की शान बेटे को झाग के बुलबुले का भी काम न देगी। दूसरों का निगरान होगा या ख़ुद-साख़्ता मर्द होगा।

11: दूसरों को तारे मगर ख़ुद अपनी क़िस्मत के लिये ख़ाना

नम्बर 3 के ग्रह ही होंगे। अगर 3 ख़ाली हो तो 11 सोया हुआ। अब नम्बर 5 का कोई असर न होगा।

ख़ाना नम्बर 12 मिसल राजा मगर त्यागी (राजा जनक)। लड़की की पैदाइश या शादी के दिन से ज़वाल होवे। मकानों में मकड़ी के जाले, सोने चाँदी के थालों में ख़ुराक की जगह गन्दे फूल और चाँदी धन की जगह सफ़ेद क़लई होगी। अब चाँदी का ख़ाली बर्तन तै-मकान में दबाना मुबारिक होगा।

बृहस्पत चंदर

सोने चाँदी के तख़्त के मालिक वाले पिता के टेवे में ख़ाना नम्बर 1 में होंगे, काल माया वाले बाप वाले के टेवे में ख़ाना नं० 1 में नहीं होंगे।

सुख 4 साल, दौलत 2 साल, आमदन 60 साल, मुहब्बत 20 साल। आलू।

बृहस्पत का मद्धम और शुक्कर का अच्छा व इश्क़ में कामयाब।

मसनूई सनीचर (केतु सुभाओ) बीमारी दुख से बचाओ, मगर कल्लर की ज़मीन का हाल। शुक्कर का फल उम्दा होगा। वक़्त जनम दुख होवे। शुक्कर पोशीदा और बृहस्पत का ज़ाहिरा होगा। कामदेव की ज़्यादा रग़बत से दोनों का फल रद्दी करेगी।

ख़ाना नम्बर 1 काग़ रेखा के मंदे हाल वाले साधु की तरह की क़िस्मत होगी। गृहस्त बर्बाद, जंगल में इज़्ज़त होगी। बाप और औरत दोनों में से एक रह जाने पर नेक असर का होगा।

2: औलाद का तक़ाज़ा, सोने की जगह मिट्टी मगर क़ीमती होगी, या

बाक़ी 2 कुत्ता का } सोने (बृहस्पत) के कामों से ख़ाक मगर मिट्टी (शुक्कर) के काम से सोना मिले।

ख़ाना नम्बर 3 ख़ुशहाल भागवान होवे, औरत मर्द का काम देगी।, ऐसा धन भाईयों को तारे।

4: हर औरत एक बच्चा बतौर नमूना देवे, और चल बसे। घर घर के टुकड़े की तरह औलाद का हाल होवे।

5: इल्म और औलाद की मार्फ़त बरकत पावे।

6: नर औलाद न हो या न रहे, अगर रहे तो मन्द क़िस्मत कर देवे।

7: बृहस्पत नं० 7 का हाल – धन की कमी की वजह से पेट के लिये औलाद की क़ुर्बानी तक दे जावे, या ख़ुद सोने से मिट्टी बना लावे। अगर बुध या (लड़की) का साथ या नेक ता'ल्लुक़ रहे तो धन दौलत गुम होने पर भी तंग न होने देगा। मुतबन्ना सुख पावे, मगर ख़ुद बेआराम ही होवे। इश्क़ में शमा का परवाना होने की आदत वजह ज़वाल होवे।

8: धन दौलत उम्दा (असर बृहस्पत नं० 2) मगर शुक्कर

का वही फल जो नं॰ 8 का है।

9: शुक्कर नं॰ 9, बृहस्पत नं॰ 9 का जुदा-जुदा मगर फिर भी उम्दा।

10: आता है याद मुझ को गुज़रा हुआ ज़माना, दूसरों की मौत से ख़ुद मरे।

11: सोने की जगह ज़र्द पाण्डू होगा।

12: ब्योपार सट्टा मंदा। बाक़ी गृहस्ती व रूहानी उम्दा असर होगा।

बीमारी 31 साल (बद), औलाद 8 साल, नुक़्सान 5 साल (बद)।

दोनों का मुश्तरका उत्तम फल होगा।

जुज़्वी सोना, नेक आँकस अगर बद तो ढाल। आलसी निर्धन, गज़ा-गुर्ज़ (हथियार)। 1-सरदार हुक्मरान 2 से 5 तक वालिये तख़्त वर्ना ख़ुदा परस्त। 5 से ज़्यादा ब्रह्मज्ञानी। हर दम मदद-ए-मर्दां, मदद-ए-ख़ुदा। दोनों को जब देखे :-

सनीचर- मुआविन उम्र और धन दौलत उम्दा।

मंगल-बद-सब कुछ मंदा, रिश्तेदार तबाह, मौतें।

ख़ाना नम्बर 1: दोनों का जुदा-जुदा नं०1 का असर।

2: गृहस्ती साथी इसकी आवाज़ पर सिर कटा देवें और पसीने की जगह अपना ख़ून बहावें, दिमाग़ी लियाक़त से धनाड हो।

3: पूजा पाठ में लासानी, बज़ुर्गों के धन की पूरी

ख़ाना नम्बर	
	हिफ़ाज़त करेगा और क़ायम रखेगा, मगर अपना और धन मिलाने की शर्त न होगी।
4:	मर्दों की तादाद में कमी न होगी, मगर उनके लिये धन की शर्त न होगी।
5:	औलाद की पैदाइश के साथ ही धन का ठंडा शानदार चश्मा बह निकलेगा, ख़ूब रौनक़ होगी, 28 साला उम्र तक बढ़ता जायेगा। दान से हर दम बढ़ेगा, मगर दान लेने से सोने को कोढ़ हो जायेगा।
6:	ख़ुद ही बड़ा भाई होगा। बाप पर कोई मंदा असर न होगा। मगर केतु, बुध दोनों का फल दबा हुआ होगा। बुध का धन दौलत के लिये बुध नं॰ 2 का फल होगा, और बुध बृहस्पत की दुश्मनी न होगी।
7:	माक़ूल आमदन फिर भी क़र्ज़ाई। गृहस्त रेखा सीधी।
8:	दोनों का जुदा-जुदा नं॰ 8 का असर। मगर कुण्डली वाले के अपने ही ख़ून वालों से मुत'ल्लक़ा होगा।

9: गृहस्त, परिवार और धन दौलत सब उम्दा।

10: ख़ाना नं० 4 के ग्रहों से फ़ैसला होगा। अगर नं० 4 ख़ाली हो तो सोने की जगह मुलम्मा होगा। साधु होगा वर्ना दुनिया की चोरी से मालामाल होगा।

11: बाप और भाई की उम्र तक शाहाना हालत, बाद में शहद के ख़ाली बर्तनों पर बेशुमार मक्खियाँ बैठी हुई की तरह की क़िस्मत का हाल होगा।

12: हर तरह से उत्तम और बढ़े परिवार होगा, जिसे आर्शीबाद देगा तार देगा।

दौलत ख़राब 17 साल, दुश्मन 40 साल,
सुख 4 साल, वालिद दुखी 29 साल।

मुश्तरका दुश्मनाना, बुध का ख़राब फल होगा।

फ़क़ीर की गोदड़ी। दोनों में कौन प्रबल है का फ़ैसला आवाज़ से होगा।

बृहस्पत के बग़ैर ग्रह बाहम मिलाओ या दोस्ती नहीं कर सकते, और बुध के बग़ैर उन में झुकने झुकाने की ताक़त न होगी, दोनों ही रद्दी होने पर सब ग्रहों में ये दोनों ताक़तें न होंगी।

अगर सनीचर उम्दा तो धन दौलत की उम्मीद होगी, वर्ना फोका भरोसा और तबाहकुन ख़्याल होगा। कम-गो माता-पिता दोनों के ता'ल्लुक़ में यतीम होगा। दूसरों का निगरान होगा। दोनों ग्रह बिलमुक़ाबिल होने पर अपना ही बेड़ी-डोब मल्लाह होगा। दर्जा दृष्टि

अगर:-

100 फीसदी हो निहायत ख़राबी
50 " " ख़राब असर
25 " " मामूली ख़राब असर
} अगर बृहस्पत कुण्डली के पहले घरों में हो तो,

बृहस्पत का 34 साला उम्र तक उत्तम फल होगा, 35 से बुध का बुरा असर शुरु होगा और 51 तक रहेगा। लेकिन अगर बुध पहले घरों में हो तो 34 साल तक बुध का अच्छा और बृहस्पत का मंदा होगा। 35 से बुध का असर निकम्मा और बृहस्पत का अच्छा होगा, जो 50 तक रहेगा।

बृहस्पत क़ायम और
बुध ऊँच घर का
} राजयोग बज़रिया काग़ज़ी कारोबार छापाख़ाना या अज़ पब्लिक नेक असर। ईमानदारी का धन साथ देगा।

दोनों को
चंदर देखे
} सफ़र का बुरा नतीजा रहा करे। मन मन्दिर दरवेश क़लन्दर का हाल होगा।

बृहस्पत के साथ या बृहस्पत की दृष्टि में बुध हो, तो बृहस्पत का नाश होगा। 34 साला उम्र से बर्बाद

होगा। अपना ही बेड़ी-डोब मल्लाह होगा। मगर सब्ज़ रंग अशिया का ता'ल्लुक़ मंदा। दस्ती हुनर बर्बाद और बे-मायनी होंगे। लेकिन जब बुध की दृष्टि में बृहस्पत हो, तो बुध का नाश होगा। मगर ब्योपार व सब्ज़ रंग दस्ती हुनर फ़ायदामंद होंगे, और अपनी ही अक़्ल से फ़ज़्ल-ए-इलाही होगा।

मुश्तरका हालत में बुध फ़ौरन ही बृहस्पत को अपने दायरा में बाँध लेगा। अब बृहस्पत या तो सनीचर का साँप, शुक्कर या सूरज की किरणें हो कर उस से रिहा होगा, यानि बृहस्पत अपनी चाल के हिसाब से (बमूजब बर्षफल) सनीचर या सूरज बैठा होने वाले घरों में आ जावे, या सनीचर या सूरज में से कोई भी बृहस्पत बैठा होने वाले घर में आ निकले पर या सनीचर ख़ाना नं० 5 में आ जावे या सूरज ख़ाना नं० 2-9-12 में आ जावे।

ऐसी हालत में सूरज या चंदर या सनीचर क़िस्मत का फ़ैसला करने वाले होंगे (जो भी नेक होवे) लेकिन ख़ाना नम्बर 2-4 में बुध दुश्मनी की बजाय मदद देगा। अकेले चंदर या बृहस्पत को बुध दबा लेगा, मगर दोनों मुश्तरका से ख़ुद दब जायेगा। दोनों को इकट्ठा चलाने के लिये बुध की सब्ज़ रंग अशिया (सोना व सब्ज़ काग़ज़) बृहस्पत पीपल का पौदा लगाना मुबारिक होगा।

बृहस्पत सोने में रेत, शेख़ चिल्ली की कहानियाँ। ज़र-ओ-माल का नुक़्सान, नंगों के मेहमान...... भूके सोये। औलाद व औरत के बिघन। ऐसी हालत में राहु-केतु का उपाओ मददगार होगा।

दोनों की सनीचर और सूरज को मदद:-

बृहस्पत हो ख़ाना नं०1 ता 5 में - मदद देगा सनीचर को भी और सूरज को भी।

6 ता 11 " - सिर्फ़ सनीचर को।

बृहस्पत हो 12 में – सनीचर, सूरज दोनों को

बुध हो 1 ता 2 " " सनीचर को

3 ता 8 " " सूरज को

9 ता 12 " " सनीचर को

पोरियों पर चक्कर के निशानात फ़ैसला करेंगे।

बुध का ज़ाती असर नाक से फ़ैसला होगा।

ख़ाना नम्बर

1: राजा या हाकिम वर्ना ग़रीबी का मारा हुआ बेवक़ूफ़ साधु होवे। एक चक्कर का असर होगा।

2: 3 चक्कर: ब्रह्मज्ञानी होगा, धन उपदेश उम्दा होगा।

3: 7 चक्कर: साबिर–शाकिर, दिलावर, बहादुर, मगर शुक्कर रद्दी होगा।

4: 2 चक्कर: हुनरमन्द, राजयोग, कायराना काम बाइस–ए–तबाही, पाप भरी कारवाईयाँ बाइस–ए–ख़ुदकशी होंगी।

5: 5 चक्कर: ख़ुश्हाल, भागवान, बशर्ते कि कोई लड़का वीरवार

5: का हो और लड़की बुधवार की न हो। अगर हो तो धन दौलत (बृहस्पत-सोना) के लिए सोने की तार कान में, और मौतों के बचाओ से (बुध नं० 8) चाँदी की नाक में डालने से मदद होगी।

6: 6 चक्कर: इबादतगार वर्ना अय्याश।

7: 3 चक्कर: ब्रह्मज्ञानी। दूसरों की मुसीबत पर मुसीबत देखे मगर अक़्ल की कोई पेश न जावे। कभी शाह कभी मलंग, कभी ख़ुशहाल कभी तंग। *उक्खल पुत न जम्मदा, धी अन्धी अच्छी।* ख़ुद बुध लड़की का बुध नं० 7 मुबारिक होगा, मगर लड़के का मंदा होगा। ख़ुद औलाद से महरूम, मुतबन्ना रखे, और वो भी बेमायनी।

8: 8 चक्कर: हमेशा बिमारी।

9: 11 चक्कर: मनहूस और कम उम्र हो।

10: 10 चक्कर: ख़ुशहाल भागवान होवे।

11: 9 चक्कर : दौलतमंद हो।

12: 12 चक्कर : ख़ुद अपने लिये नेक-ताला, लम्बी उम्र, ख़ुशग़ुज़रान, मगर मामूली ब्योपारी होवे।

ग़म 14 साल, हानि 15 साल, दौलत 12 साल।

ऐसे टेवे की कुण्डली जुदा ही होती है।

दोनों का जुदा-जुदा फल होगा, सनीचर का ख़राब फल होगा। फ़क़ीर की झोली, श्री गणेशाय नमः, सब के पूजने की जगह। वो धन जो शादी के दिन से और आगे बढ़े। (ऊँच-नीच जनम कुण्डली के हिसाब से लेंगे)।

जब दोनों हर तरह से अकेले हों और उनमें किसी भी और का असर शामिल न हो रहा होः-

अलिफ़ः- दोनों में से कोई एक तख़्त का मालिक (ख़ाना नं० 1 में) और दूसरा राशीफल (बृहस्पत 6, 7 और सनीचर 3, 6, 9 में) का हो, तो धन रेखा होगी, बशर्ते कि दो में से कोई नीच घर का न हो (सनीचर नं० 1 में नीच होगा, बृहस्पत नं० 10 में नीच होगा) और तमाम मुख़ालिफ़त पर भी सोना ही सोना पैदा होगा, शर्त सिर्फ़ अपनी ही क़िस्मत पर शाकिर रहने की होगी।

बे:- ऐसी हालत में कोई भी नीच घर का हो, तो मुश्तरका बर्कत होगी। एक अन्धा दूसरा कोढ़ी फिर भी *हमाँ याराँ दोज़ख़ हमाँ याराँ बहिश्त* होगा।

जीम:- अगर बृहस्पत रद्दी हो और सनीचर उम्दा तो लोहे की तलवार तमाम मन्दी हवा को दुरुस्त कर लेगी, लेकिन अगर बृहस्पत उम्दा और सनीचर रद्दी हो, तो वो शख़्स दूसरों के लिये लोहे को पारस का काम देगा, मगर ख़ुद अपने लिये ज़ेहमत और मंदा।

दाल:- जब दोनों ही साथी हों और सूरज राजा (ख़ाना नं॰ 1) होवे:- (i) जब दोनों उम्दा हों, तो कोई बुरा फल न होगा, उत्तम नतीजा होगा। (ii) जब दोनों साथी मगर नीच या रद्दी घरों के तो सूरज सनीचर का झगड़ा होगा, जिस पर राजदरबार का मालिक और पाया हुआ धन और जिस्म का कोई न कोई अंग बर्बाद कर शांति होगी। लेकिन जब (iii) सनीचर उम्दा

बृहस्पत रद्दी और सूरज नं॰ 1 का राजा हो, तो ज़ेहमत–बीमारी से राज दरबार का धन बर्बाद, मगर कोई अंग ख़राब न होगा। (iv) सनीचर रद्दी और बृहस्पत उम्दा– अंग ख़राब होगा, मगर धन दौलत की बर्बादी की शर्त न होगी। उपाओ ऊपर की हालत सब में ख़ाना नम्बर 7 वाले ग्रह की मदद लेंगे।

सनीचर बृहस्पत के घर और 2–9–12 राशी में कभी बुरा फल न देगा। मगर **बृहस्पत गुरु**, सनीचर की राशी और घर नं॰ 10–11 में नीच या नाकारा होगा।

2) सनीचर के बुरे दौरा के वक़्त बृहस्पत फ़ैसला करेगा, और बृहस्पत के बुरे वक़्त में सनीचर क़िस्मत का फ़ैसला करेगा।

3) दोनों कोहसार और समंदर होंगे, यानि अगर सनीचर पहले घरों में होवे तो कोहसार पहले और हवा

इससे निकल कर चलेगी, लेकिन अगर बृहस्पत पहले घरों में और सनीचर बाद के घरों में- तो बृहस्पत की हवा सनीचर के पहाड़ से टकराकर क़ीमती बारिश देगी।

(4) दोनों मुश्तरका पर बुढ़ापे में तकलीफ़ होवे। क़िस्मत के शुरु होने का वक़्त उस ग्रह की उम्र का साल होगा, जो ग्रह कि उनको देखता या जगाता होवे। बुध 34 साल में-सूरज 22 साल में वग़ैरह। अगर कोई न जगावे, तो ख़ुद बृहस्पत यानि सोलह साला उम्र में क़िस्मत जागे।

दोनों मुश्तरका की हालत में क़िस्मत का फ़ैसला ख़ाना नं॰ 11 के ग्रह करेंगे, अगर नं॰ 11 ख़ाली हो-तो सनीचर का ज़ाती फ़ैसला प्रबल होगा। सनीचर के ख़ास ख़ास सालों में चारों तरफ़ चलने के सालों का भी ख़्याल रहे।

दोनों बिल्मुक़ाबिल और दृष्टि हो:

100 फ़ीसदी - मुश्तरका होने की हालत गिनी जावेगी।

50 फ़ीसदी – इल्म तिलस्मात और जादूगरी प्रबल होगी।

25 फ़ीसदी – योग अभ्यास का मालिक होगा।

सनीचर देखे बृहस्पत को तो सेहत हल्की, धन दौलत भी हल्का।

सनीचर के वक़्त 18–36 साला उम्र में पिता ख़त्म, जिस का सबूत उसके मकान में लोहे का ताला मंदभागी का अलार्म होगा।

शुक्कर दोनों को देखे– धन शादी से बढ़े।

मिट्टी का पहाड़ दिखलावा बहुत मगर फ़ायदा कम, अपने ख़ानदान और औरत के काम आवे (बाप बाबे की तरफ़ के रिश्तेदारों के)

केतु देखे दोनों को – औलाद पर बला–ए(हवा–ए)–बद के हमले होंगे। सीधी शारह–आम की हवा मंदी साबित होगी।

ख़ाना नम्बर 1 काग़ रेखा, मंदा मुफ़लिस साधु, एक सिदफ़ का असर होगा।

2: दो सिदफ़: आलिम, सेहत–अफ़ज़ा, ख़ुशगवार सरसब्ज़ पहाड़ की तरफ़ चंदर का उम्दा और उत्तम फल देंगे। बदनाम इश्क़ न होगा। अगर चंदर भी साथ हो या नं० 8 में से आ देखे, तो चंदर नष्ट नहीं लेंगे। दुनियावी तोहफ़ा होगा।

3: 3 सिदफ़: दौलतमंद, औसत दर्ज़ा ज़िन्दगी, सनीचर ख़ुद निर्धन मगर बुढ़ापे में आराम पावे। 18 साला उम्र में पिता मंदा होवे।

4: मशहूर ज़माना, 4 सिदफ़ का असर।

5: सधारण क़िस्मत, जैसी कि बाक़ी ग्रहों से फ़ैसला होवे। 5 सिदफ़ का असर, बड़ी इज़्ज़त व आबरू होगी।

6: 6 या ज़्यादा सिदफ़ का असर, जैसा कि आम हालत का फ़ैसला होवे। (i) अब अगर बृहस्पत क़ायम और सनीचर बरुये नं० 2 रद्दी या मंदा हो, तो औरत से रंजीदा होवे। (ii) सनीचर क़ायम मगर बृहस्पत अज़ दृष्टि नं०2

चुप हो – (यानि पापी राहु – केतु हों) तो औरत का सुख पूरा होवे। (iii) सनीचर क़ायम और बृहस्पत नष्ट – तो औरत का सुख हल्का होगा।

7: धन बर्बाद, जायदाद उम्दा। लड़की की पैदायश पर ज़वाल होवे। सनीचर के काम नया मकान वग़ैरह बर्कत देवें। ख़र्चने पर धन और भी बढ़े, और बर्कत देवे। भला लोग, भले काम, मगर बचपन में ही तकलीफ़ रहे।

दोनों नं॰ 7 और चंदर या शुक्कर या मंगल क़ायम: } बर्कत, बढ़ने वाली मच्छ रेखा होगी।

" **चंदर या शुक्कर या मंगल नीच या नष्ट:** } बर्कत घटने वाली, नीचे को मुँह किये हुये वाली मच्छ रेखा होगी जिसका बुरा असर चंदर या शुक्कर या मंगल (रद्दी हालत वाले) के दौरा से शुरु होगी, यानि जब वो भी नं॰ 1 में आ जावें।

दोनों नं० 7 और सूरज नं० 1 तो 9 साला उम्र में मिट्टी के तवे होंगे, जो 17 साला उम्र में चंदर नेक होगा।

मच्छ रेखा: ग़रीब को धन और धनवान को वालिये तख़्त बनावे। 9 भाई, 2 बहन। जनम कुण्डली नं०7 और चंदर कुण्डली नं० 7 में तो 9 भाई, 3 बहन, तीन पुश्त और तीनों ज़मानों का नेक असर देने वाली मच्छ रेखा होगी। शुक्कर (औरत), चंदर (माता), मंगल (भाई) का ता'ल्लुक़ लेंगे।

मच्छ रेखा का असर:- लोह लंगर सवाया, बढ़े परिवार। आदमी कीड़ों की तरह ख़ुद अपने अपने लिये मुँह दाना लेकर आ जावें। शुक्कर क़ायम से औरत ज़ात से बढ़े, और ख़ुद अपने ज़माना में, चंदर से माता की तरफ़ से बढ़े, और मंगल से ऊर्ध रेखा का साथ होगा। मंगल अव्वल तो ऊँच क़ायम नं० 6 ता 12 का होगा, वर्ना उल्टे मायनों का होगा। मंगल के वक़्त चंदर या शुक्कर का

कोई बुरा असर न होगा।

8: दरमियाना धन, उम्र लम्बी, अब ख़ाना नं० 8 मारग अस्थान न होगा।

9: मच्छ रेखा और ऊर्ध रेखा का पूरा जुदा – जुदा और उत्तम फल होगा, ख़ुद बढ़े, दूसरों को तारे। जायदादें और धन दौलत के लम्बे पैमाना का होगा। अब ख़ुद कमाई का हिस्सा कम होगा, दुष्ट भागवान होगा, अमीरों में अमीर होगा।

10: बाहर से बाईं मग़रिबी दीवार, लोहे की तवी, ख़ुद अपने लिए निहायत उत्तम और श्री गणेश जी की इज़्ज़त का मालिक होगा। मगर इसका धन न्यासरी माया होगी, जो दूसरों को तबाह करके छोड़ेगी। शहवत परस्ती से तंग हाल होगा, सनीचर का असर मंदा फल पैदा करेगा और बृहस्पत का ता'ल्लुक़ ज़र – ओ – जायदाद बढ़ाता जावेगा।

11: मुश्तरका या किसी भी तरह इकट्ठे नं० 11 – दूसरों के लिये इच्छ्याधारी साँप की तरह साया करे। लोहे को सोने की तरह पारस का काम देवे, ख़ुद अपनी क़िस्मत का फ़ैसला नं० 3 के ग्रहों से होगा और नं० 5 का कोई असर न होगा।

12: मच्छली नहावे जल में, चिराग़-ए-ख़ानदान, नेक भागवान, राहु-केतु भी नेक असर के, शनि और बृहस्पत दोनों का जुदा-जुदा नं० 12 का उत्तम असर होगा। माया पर पेशाब की धार मारे, ऊर्ध रेखा और मंगल के सालवार असर पर क़िस्मत की कमी-बेशी होगी।

मंगल बद 15 साल, फ़िज़ूल सफ़र 9 साल।

अलीची (फल)। सिर्फ़ सूरज का और उत्तम फल होगा।

चंदर सूरज का भिकारी होगा, और सूरज चंदर के साथ (मगर दुश्मन का घर न हो) या चंदर के घर नं० 4 में हो तो मोती दान करने की हिम्मत का मालिक होगा।

दिन के वक़्त के मुत'ल्लक़ा काम और रात को चंदर के मुत'ल्लक़ा काम नेक असर देंगे। मामूली काम चंदर या बाँईं साँस के वक़्त, और ज़रूरी और देर-पा काम, सूरज या दाँईं साँस चलते वक़्त मुबारिक होंगे। चंदर को सूरज देखे मगर सूरज नं० 1 का न हो-ख़ुश्क कुएँ ख़ुद-ब-ख़ुद पानी देने लग जायेंगे। ख़ालिस दूध होगा। जायदाद जद्दी ख़ूब रौनक़ पर होगी, और शाँति देगी, मुश्तरका हालत में सूरज का असर प्रबल होगा। औरतों से मुख़ालिफ़त मगर बुढ़ापा

उम्दा होगा। **दोनों बिल्मुक़ाबिल**–दिल की ताक़त में सूरज का नेक और उत्तम असर होगा।

दोनों मुश्तरका को मंगल बद या पापी ग्रथ्ह का ता'ल्लुक़ हो जावे– हर तरह से दिन और रात मंदा असर होवे। लाखों पती फिर भी दुखिया।

ख़ाना नम्बर 1 मिसल राजा हो, दूसरों से ख़राज लेवे, मगर मौत अचानक होवे।

2: औरतों से झगड़ा, हार और हानि होवे।

3: मतलब परस्त मगर ख़ुद उम्दा असर और क़िस्मत का।

4: राजा महाराजा, दुनिया का पूरा आराम, सीप में मोती और मोती दान करने की हैसियत का। सवारी का सुख बशर्ते कि नं० 10 ख़ाली हो। मौत अचानक, अगर नं० 10 में सनीचर हो तो मौत दिन के वक़्त दरिया नदी नाले या ज़मीन के नीचे से पानी या चलते पानी से होवे।

5: ज़िन्दगी भर आराम रहे।

6: दोनों का नं० 6 का जुदा-जुदा असर। अगर दोनों मुश्तरका के साथ राहु या केतु हों तो मात-पिता की मौत के साथ ख़ुद भी मौत पावे, बशर्ते कि ख़ाना नं० 2 ख़ाली हो। अब मंगल का उपाओ मददगार होगा।

7-8: जुदा-जुदा असर इन घरों में दोनों का लेंगें।

9: मातृ हिस्सा (चंदर की मदद) निहायत मुबारिक। तीर्थ यात्रा 20 साल और उत्तम फल का।

10: अपना-अपना और जुदा-जुदा असर होगा नं० 10 का।

11: उम्र सिर्फ़ 9 साल होवे।

12: दोनों का नं० 12 का जुदा-जुदा असर, मगर सूरज का प्रबल होगा।

नुक़्सान 17 साल, दौलत 5 साल, शुक्कर मंदा 25 साल।
शुक्कर का ख़राब, मगर सूरज का अपने लिये उत्तम फल होगा,
पिता मगर छोटी उम्र में गुज़र जावे।
लाल मिट्टी, गाचनी, काँसी का कटोरा, मसनूई
हवाई बृहस्पत। पैदायश औलाद के मालिक।

दोनों में से एक ही काम देगा, रूह ज़बरदस्त, बुत हल्का। बृहस्पत की ठोस चीज़ें सोना वग़ैरह से ता'ल्लुक़ न होगा। औरत का मंदा हाल और मंदी सेहत, तपदिक़ या दीगर लम्बी बीमारियाँ।

दोनों बिल्मुक़ाबिलः वाल्दैन बचपन में गुज़र जावें।
जिस घर में शुक्कर हो, उस घर की शुक्कर से मुत'ल्लक़ा चीज़ों का मंदा हाल, मगर सूरज पर बुरा असर न होगा।
सूरज के दौरे के अर्सा में (सूरज जब नं० 1 में आवे) शुक्कर का मंदा हाल मगर ख़ुद अपने लिए इक़बालमन्द।

ख़ाना नम्बर 1 औरत मरीज़, काग़ रेखा वाली, सूरज की भी ख़ुद

मिट्टी ख़राब करे, पराई आग से जेलख़ाना वग़ैरह, हमराहियों पर शुक्कर के पतंग का बुरा असर होगा, औरत की दिमाग़ी ख़राबियाँ, मालीख़ूलिआ तक।

2-3, 4-5, 6-8, 11-12 } दोनों का जुदा-जुदा हर एक ख़ाने का दिया हुआ असर होगा।

7: औरत से झगड़ालू, दोनों का ख़ाली बुध का असर होगा। बुज़ुर्गों पर काग़ रेखा मगर ख़ुद अपने लिये सूरज नं० 9 का असर। तीर्थ यात्रा 20 साल उत्तम फल देवे- औरत की उम्र तक। तै-मकान में (बुज़ुर्गी जद्दी), सुर्ख़ रंग (सूरज या मंगल का) दोनों ग्रहों की दुश्मनी का बुरा असर देगा।

10: राजदरबार से ठूठे *पड़ा ख़ैर* की तरह की क़िस्मत। टेवा अंधे ग्रहों का होगा, सनीचर हमेशा बुरा फल देगा। साँप को दूध पिलाना मुबारिक होगा। ख़ाना नं० 4 के ग्रह मददगार होंगे। नीच बृहस्पत का असर (ख़ाना नं० 10 बृहस्पत) होगा- वास्ते औलाद और पैदायश-ए-औलाद।

तलवार, ला'ल, लाल, बचपन की उम्र, अपनी औलाद और अपने ख़ून के हक़ीक़ी रिश्तेदार, ता'ल्लुक़दारों से मुत'ल्लक़ा। दोनों का और उत्तम फल होगा। सूरज काउत्तम प्रबल होगा। सूरज रोशनी है तो मंगल इसकी किरणें होंगी, या वो और उसका भाई दोनों बुलन्द होंगे। मंगल बद का ता'ल्लुक़ निहायत मंदा मौतें।

चहार गोशा मकान मुबारिक, 3- 11 गोशे मंगल बद का असर देगा।

किसी भी घर में हों, सूरज हमेशा ऊँच फल का होगा। निकलते सूरज की तरह बचपन से या जनम वक़्त से अच्छा, उम्दा, और उत्तम क़िस्मत का मालिक, दुश्मन पर हमेशा ग़ालिब। उम्र पूरी बल्कि सौ साला होवे। दिली साफ़ ताक़त, धर्म में धेले का खोट न होगा।

ख़ाना नं॰ 9 आली मर्तबा होगा।

ख़ाना	
नं॰ 10	अज़ीज़ों से ज़र-ओ-माल का झगड़ा।
दोनों नं. 10 सनीचर 11	और चंदर ख़ाना नं॰ 6 — भागवान।

बाक़ी घर: दोनों का अपना-अपना और जुदा-जुदा मगर सूरज का प्रबल उत्तम। चंदर (माता, धन का ख़ज़ाना वग़ैरह) ऐसे टेवे में रद्दी, मंदा या हल्का ही होगा, मगर कष्टी न होगा।

सरसब्ज़ पहाड़, लाल फिटकरी, शीशा सफ़ेद,
मसनूई नेक मंगल, औलाद की ज़िन्दगी का मालिक।

नेक केतु, दोनों का और उत्तम फल। सूरज का उत्तम प्रबल होगा। राज ता'ल्लुक़ और सरकारी मुलाज़मत वग़ैरह ज़रूर होगी और फ़ायदामंद।

सूरज रूह इन्सानी तो बुध बिधाता की क़लम होगा। सूरज बन्दर तो बुध लंगूर की दुम की तरह मददगार। उम्र लम्बी और पूरी मगर मौत अचानक।

दुश्मन (सूरज के) ग्रहों के घरों में झगड़ा पैदा होगा, मगर फ़ैसला हक़ में (अज़ राजदरबार)। ख़ुद सूरज की औसत आमदन 20 रुपये माहवार बशर्ते कि सूरज नीच न हो, वर्ना निस्फ़ ताक़त होगी। तालीम व क़लम हमेशा मददगार, लैम्प व तहरीर उत्तम फल देंगे। बुध की निस्फ़ उम्र 17 साला तक बुध का जुदा फल न होगा। 17 साला उम्र लड़की की 17 साल उम्र के बाद बुध सूरज

को मदद देगा। शुक्कर रद्दी 25 साल।

सूरज देखे बुध को:

100 फीसदी पर: बुध का जुदा असर ज़ाहिर न होगा। स्त्री घर ससुराल अमीर होंगे, और स्त्री की ताक़त उत्तम होगी।

50 फीसदी पर: स्त्री की क़िस्मत शीशे की तरह और भी चमके, मिट्टी दूर होवे।

25 " " : इल्म जोतिष उम्दा होवे।

बुध देखे सूरज को (कोई भी दर्जा दृष्टि हो) :

सेहत उम्दा, दस्ती दिमाग़ी कारोबार निहायत उम्दा, स्त्री पर नेक असर होवे, लेकिन अगर चंदर नष्ट हो तो दिमाग़ी सदमात होंगे।

दोनों मुश्तरका:- बचपन में तकलीफ़ होवे।

औरत की ज़ुबान का लफ़्ज़ पत्थर पर लकीर होगा, ख़ुद-साख़्ता अमीर होगा। सेहत उम्दा होगी, मगर ब्योपार मंदा होगा। बुध का असर 45 साला उम्र तक जुदा वास्ते ब्योपार कोई

काम न देगा। सूरज बुध मुश्तरका में सूरज कभी नीच फल का न होगा, बुध ख़ुद बेशक मारा जावे। यानि जिन घरों में सूरज नीच होगा, वहाँ बुध का असर मंदा होगा। जहाँ बुध का मंदा है, वहाँ सूरज पर धब्बा लगेगा, मगर बुध की अशिया हमेशा सूरज को मदद देंगी।

दोनों को देखे:

चंदर या बृहस्पत : मंदे नतीजे हों।

सनीचर: नेक फल, अब सूरज सनीचर का झगड़ा न होगा।

सूरज क़ायम और बुध 3-6 का } बज़रिया ख़ुद अपनी क़लम राजदरबार से बर्कत पावे। ईमानदारी का धन बर्कत देवे।

दोनों सनीचर को देखें:- झगड़े का फ़ैसला हक़ में न होगा।

ख़ाना नम्बर 1 चक्की जो जगह-ब-जगह हिलती फिरे। मानिन्द वज़ीर साहिब तदबीर, सरसब्ज़ पहाड़ की शान, इल्म रियाज़ी, योग अभ्यास का नेक फल। झगड़ा राज दरबार में अपने से बड़े के साथ, मगर फ़ैसला हक़ में होगा।

ख़ाना नम्बर 2 जिस्मानी दिमाग़ी उम्दा, माली हल्का, ख़्वाह सूरज नं॰8 और बुध नं॰ 2 ही हों, मगर ख़ाना नं॰ 1 का असर शामिल ही होगा।

3: निहायत उत्तम। राहु का अब कुण्डली में बुरा असर न होगा। आशिक़ तो होगा मगर बदनाम न होगा।

4, 5: अपना अपना और जुदा-जुदा असर लेंगे।

दोनों नं॰ 5 और सनीचर नं॰ 9 } औलाद पर कोई बुरा असर न होगा, और न ही बुज़ुर्गों पर मंदा असर होगा।

6: **बुध क़ायम और सूरज : मंदा अज़ दृष्टि नं॰ 2** } नेक नसीब होवे।

मगर सूरज बर्बाद : मनहूस मन्दभाग, ज़लील-ओ-ख़्वार।

सूरज क़ायम, बुध मंदा : नेक असर होवे।

दोनों क़ायम या नं॰ 2 ख़ाली औलाद का सुख, मगर अपनी उम्र कम होवे।

7: अगर शुक्कर क़ायम और नेक तो औरत अमीर ख़ानदान से वर्ना ससुराल मन्द हालत। ख़ुद वो आदमी सूरज की तरह उत्तम और

मुकम्मिल। केतु औलाद मंदा ख़ुद आमदन की नाली हज़ारों जंगल पहाड़ सेराब करे। चलते रहट की तरह आमदन जारी, फ़व्वारे का ताज़ा उठता पानी। राज दरबार से कोई ख़ास नफ़ा न हो। इल्म जोतिष मददगार रहे, ख़्वाह ख़ुद नफ़ा न पावे। बुध का फल 34 साला उम्र के बाद नेक होगा, अब केतु भी उत्तम होगा। *आर ढाँगा, पार ढाँगा .... चल्लीआँ* होगी।

8: बुध अब बहन की हालत मन्दी और ख़ाना नं॰ 2 के ग्रहों को बर्बाद करेगा। शीशे के बर्तन को गुड़ से भर कर श्मशान में दबाना मददगार होगा। दोनों का जुदा-जुदा फल होगा।

9: लसूड़े की गिटग का सा हाल होगा। 17-27 साला उम्र मंदा असर होगा, वास्ते राज दरबार तालीमी ता'ल्लुक़। 24 साला उम्र से दोनों का फल मुबारिक होगा, और जो 34 से तरक़्क़ी पर होगा। नर औलाद 34 साला उम्र से पहले क़ायम न होगी, न ही लड़की के नर औलाद 22 साला उम्र तक होगी।

ख़ासकर इसकी तीसरे नम्बर की लड़की 6 साला उम्र तक (सिवाय पहले और तीसरे साल) निहायत मुबारिक होगी, या इसकी हर एक नम्बर की लड़की और ऐसी लड़की की उम्र का हर नम्बर का साल वही फल देगा, जो बुध ख़ुद हर ख़ाने में देता है। मन्दी हालत में सूरज का या मंगल का उपाओ मददगार होगा, जो लड़की का जनमदिन इतवार या मंगल भी हो सकता है।

10: ख़ाना नं॰ 1-2 का ऊपर लिखा फल शामिल होगा। दौलतमन्द मगर बदनाम, नाहक़ तोहमत मिलती रहे।

11: जद्दी मकानों या ज़ाती मकान की ज़मीन।

12: अपना अपना फल।

ख़ाली बुध, दोनों का और ख़राब फल होगा। बवक़्त ग्रहण सूरज, सनीचर की चीज़ें (नारियल) चलते पानी में बहाना मुबारिक होगा।

कौआ, दो मुँह का साँप, मसनूई मंगल बद और नीच राहु का असर होगा। झगड़े फ़साद बाइस–ए–तबाही, असर का वक़्त बुढ़ापे से मुत'ल्लक़ा होगा।

मन्दी ऊर्ध रेखा होगी। दोनों के झगड़े में शुक्कर तबाह होगा। कीकर का दरख़्त बाइस–ए–तबाही। साँप बंदर का तमाशा होगा। ख़ाली बुध बेमायनी का असर होगा, जिसमें राहु की शरारत मौजूद होगी। जवानी में तकलीफ़ हो, सेहत की ख़राबियाँ और राज दरबार की कमाई बर्बाद, लेकिन जब दोनों मंगल के घर या मंगल भी दृष्टि से मिले तो सेहत उम्दा।

सूरज देखे सनीचर को:

शुक्कर उजड़े, औरत पर औरत मरती जावे, मगर

ख़ुद मज़बूत-तबा, उम्दा ताक़त, स्कूलों का आम इल्म के इलावा महकमाना इल्म, जादूगरी, इल्म मकानात होगा।

सनीचर देखे सूरज को: शुक्कर आबाद होगा, उत्तम फल का।

25 फीसदी पर: इल्म रियाज़ी मददगार होगा।

50 " " : इल्मे मकानात, सनीचर की चीज़ें " "

100 " " : (1) सनीचर होवे पहले घरों में:

सूरज का असर ख़राब करता जावे, मगर ज़ाती कमाई में चंदर, मंगल, बुध, बृहस्पत की मुत'ल्लक़ा चीज़ों का कोई बुरा फल न होगा।

सनीचर जब पहले घरों में हो तो सूरज पर स्याही डालेगा, ऐसी हालत में मकान रिहायशी की जनूबी जानिब पानी का बर्तन (मिट्टी का कोरा लेकर) दबावें जिसमें चावल और मीठा डाला जावे, अगर हो सके 40-43 दिन तक पानी क़ायम रखें यानि बर्तन को सूखने न देवें।

(2) **सूरज होवे पहले घरों में:** कोई बुरा असर न होगा, दोनों का अपना – अपना और दिया हुआ असर होगा।

ख़ाना नम्बर 1: काग़ रेखा व मच्छ रेखा (सनीचर नं॰ 1 देखें) मुश्तरका ऊँट (मंगल बद), 40 बोता (सनीचर), 45 (मंदे) होगा, मगर वो ब्रह्मज्ञानी होगा, मसनूई बुध – मंदा।

5: मज़बूत – तबा। अगर सनीचर का ज़ाती सुभाओ मंदा हो तो 9 साल (ख़ाना नं॰ 5 में आने के दिन से) मंदे, ख़ौफ़ – ओ – ख़दशा होगा।

6: सोने की जगह मिट्टी के तवे।

अगर बुध और चंदर क़ायम, तो औलाद की 18 साला उम्र से सब कुछ बहाल होवे।

अगर नं॰ 2 की दृष्टि से सूरज मंदा और सनीचर क़ायम तो औरत का सुख हल्का, अगर सूरज क़ायम और सनीचर मंदा तो औरत का सुख पूरा।

8: तकिया मुसाफिर: बाक़ी 6 वाले मकान जैसा हाल।

चौरस्ता में नीले फूल या नीले रंग काँच के मोती दबाना मददगार होंगे, बवक़्त कच्ची शाम।

9: दौलतमन्द, मगर मतलब परस्त।

दोनों नं॰ 9 और मंगल बद
या बुध नं॰ 3 का ता'ल्लुक़: } ख़ाना नं॰ 3-9 दोनों ही बर्बाद और मंदे होंगे।

10: दूसरों की मौत में ख़ुद नाहक़ आ मरे।

11: ख़ाना नं॰ 9 का ऊपर का असर - सिर्फ़ मन्दा हिस्सा।

बाक़ी घर: अपना अपना असर देंगे।

सुख 3 साल, औलाद 27 साल, मुसीबत 2 साल (बद), दोनों का उत्तम फल होगा।

मधुपान (दूध में शहद) श्रेष्ट धन

रेखा, दोनों मुश्तरका चंदर या मंगल दोनों में से किसी एक के पक्के घर (8-3-4) में हों तो मंगल-बद का तुख़्म भी बाक़ी न होगा।

दोनों मुश्तरका को देखे या वो देखें:-

सूरज : राज योग, साहिब-ए-हुकूमत।

बृहस्पत: सबसे उत्तम लक्ष्मी, मुआविन उम्र का पूरा नेक फल होगा।

शुक्कर: औलाद के बिघन, अपना धन बरतने से पहले ही चल बसे।

बुध : ब्योपारी, अक़्ल का धनी, मगर धन की शर्त नहीं है।

सनीचर : ज़हरीले जानवरों और दरिंदों से ख़तरा

मौत होवे। अहमक़ ज़िद्दी मंदभाग लेकिन जब सनीचर नं० 10-11 का न हो, भतीजे, भानजे खा जावें मदद कोई न देवें।

ख़ाना नम्बर 1: अपना अपना फल।

2: श्रेष्ट धन रेखा।

3: अक़्लमंद, साहिबे तदबीर, इज़्ज़त, तरक़्क़ी और मरातब का मालिक साहिब-ए-इक़बाल और आराम पावे।

4: धन रेखा का निकास, नेक असर बशर्ते कि बुध और सनीचर का ता'ल्लुक़ (10-4) से न हो जावे।

7: धन, दौलत, परिवार का धनाड, मगर मौत हादसा से होगी।

9: ख़ुद दुष्ट भागवान, मगर औलाद उत्तम धनाड।

10: धन की शर्त नहीं मगर मौत हादसा से होगी।

11: वहमी, लालची। सनीचर से धन का फ़ैसला होगा, जिसका ता'ल्लुक़ लालची बनाता है।

बाक़ी घर: अपना-अपना असर होगा।

लड़कियाँ 6 साल, बीमारी 15 साल, दौलत 22 साल।
दुनियावी ख़राब, रूहानी चंदर का उत्तम और प्रबल।
माँ धी, दरिया के पानी में रेत, टुणिया
तोता, हंस परिंदा, कुआँ व पौड़ियाँ मुश्तरका।

अगर बुध नेक होवे, तो चंदर भी नेक होगा, लेकिन जब बुध मंदा होवे, तो न सिर्फ़ चंदर मंदा होगा, बल्कि सनीचर भी औलाद के ता'ल्लुक़ में अपने ही बच्चे तक खा जाने वाला बुरा साँप होगा।

चंदर पहले घरों में हो, तो चंदर का असर प्रबल होगा। ग़ैबी हाल अच्छा, दुनियावी हालत में दोनों का ही मंदा होगा। दोनों जुदा-जुदा होने की हालत में दोनों में से कोई भी जब दूसरे के घर हर तरह से अकेला होवे तो पूरा नेक और उत्तम फल देगा। लेकिन जब दोनों मुश्तरका होकर दोनों में से किसी के घर इकट्ठे हों, तो नेकी की शर्त ज़रूरी न

होगी, सिवाय ख़ाना नं० 4 जहाँ कि ग़ैबी अच्छा, दुनियावी हाल दोनों का मंदा। दोनों मुश्तरका या दो में से किसी के साथ पापी ग्रह या दुश्मन ग्रह (ख़्वाह एक का दुश्मन, ख़्वाह दोनों का दुश्मन हो) या मंगल बद का ता'ल्लुक़ हो जावे, तो दोनों ही ग्रहों का ग़ैबी और दुनियावी फल मंदा होगा, दोनों के साथ बृहस्पत भी आ मिले, तो बुध मारा जावेगा।

अगर बुध पहले घरों में हो, तो बुध का असर प्रबल होगा, या दोनों बुध के घरों में इकट्ठे हो जावें, तो मंदे नतीजे होंगे।

दोनों ही ऊपर की मिलावटों से अगर मंदे हो जावें, तो चंदर (माता), बुध (बेटी) जुदा-जुदा रहें, या बुध के दस्ती हुनरमंदी वग़ैरह के काम बंद करें। दोनों मुश्तरका मंदे सनीचर का काम देंगे, बल्कि चंदर नष्ट लेंगे। ग़ल्बा-इश्क़ बाइस-ए-तबाही होगा।

जब दोनों दो में से किसी के घर इकट्ठे हों- मगर जब दोनों मुश्तरका मगर दोनों के घरों से बाहर किसी और जगह इकट्ठे हों और दृष्टि ख़ाली, गोया माँ बेटी अकेली ही जोड़ी तो दोनों इक़बालमन्द होंगे। धन दौलत उम्दा मगर दिली ताक़त कमज़ोर होगी।

दोनों को देखे:

मंगल बद: मामूँ तरफ़ मंदा हाल, मगर अपनी उम्र लम्बी और उम्दा।

बृहस्पत, सूरज या सनीचर: नेक असर होगा।

दोनों बिलमुक़ाबिल हों और दृष्टि हो:

100	फ़ीसदी	... निहायत ख़राब असर		पौड़ियों के
50	"	... ख़राब	"	सिलसिले
25	"	... मामूली ख़राब	"	कुआँ

मगर धन बर्बाद न होगा, जब तक चंदर प्रबल रहे या कुँआ खुला व आबाद रहे। दिल बकरी का होगा,

जो ख़ुदकशी तक का सबब हो सकता है।

4: फ़र्ज़ी वहम और दूसरों की मुसीबत ख़ुद अपने ऊपर लेकर ख़ुदकशी तक का मूजब होवे, वजह ग़ल्बा – इश्क़ होगा, मगर ग़रीबी वजह मौत न होगी।

6: बज़ाज़ी के कामों से मिसल राजा होगा। अक़्ल क़ायम, हमदर्द, मातृ हिस्सा का असर नेक। ख़ुद अपनी नज़र कम, ख़ूनी होगा। यकतरफ़ तबीयत वाला, मगर दूसरों की मुसीबत पर मुसीबत देखता चला जावे। अक़्ल की कोई पेश न जायेगी, ख़्वाह लाखोंपती हो।

6 बाक़ी रहने वाले मकान की क़िस्मत (तकिया मुसाफ़िर) होगी, मगर माता पिता का सुख सागर लम्बा व नेक होगा। बुध नं० 12 का हाल ख़्याल में रहे।

चाँदी का गिलास, कौल, कटोरा।

7: वही असर जो ऊपर 6 का है, मगर अब माता न होगी, अगर होगी अंधी होगी। तबीयत बदलने वाला होगा।

ख़ुद दिमाग़ी सदमात होंगे, मगर अक़्ल अंदरूनी का साथ होगा, और हुनर – पेशा बर्बाद होगा।

10: निहायत बुरी और मनहूस ज़िन्दगी, ख़तरा मौत होगा।

11: समन्दर में सीप में मोती बनाने वाली बारिश हर रोज़ नहीं होती, लेकिन जब होगी मोती बना कर ही जायेगी। गुलगुले की बारिश हर रोज़ न होगी, लेकिन जब होगी, शादी के दिन होगी या लड़की की शादी के दिन से मुबारिक – दर – मुबारिक फल पैदा होंगे।

बाक़ी घर: अपना अपना दिया हुआ हाल और असर लेंगे।

राज दरबार[काली स्याही] 12 साल, दौलत अज़ सनीचर 42 साल, पानी की बाऊली। दोनों का और ख़राब फल होगा, चंदर ग्रहण के वक़्त सनीचर की चीज़ें चलते पानी में बहाना मुबारिक होगा।

उल्टा कुल्हाड़ा, मसनूई नीच असर केतु होगा। विसर्ग, कछुआ। दो रंगी सनीचर की चीज़ें। पाँच कल्याणी स्याह भैंस (या सारी स्याह माथा सफ़ेद)।

5 कल्याणी लाल रंग भूरी भैंस, औलाद (केतु) की बजाय बाप दादा, भाई बन्दों पर हमला करेगी, मंदे असर होंगे-जब तक वहाँ सूरज प्रबल वाला मौजूद न होवे।

दूध में ज़हर होगी, चंदर धन सनीचर ख़ज़ानची होगा। मंदी मोटर लारी या सामान सवारी (हादसे करने वाला) आँखों की बिमारियाँ या टेढ़ापन होगा, स्याह मुँह माया। (बदनामी का सबब पैदा करने

वाला धन)। आँख (डेले चंदर, नज़र सनीचर) से फ़ैसला होगा कि दोनों में प्रबल कौन है। चाँदी का पैसा स्याह व खोटा लोहे का टुकड़ा होगा। ख़ूनी कुआँ या मीठे पानी में ज़हर मिली होगी। सनीचर के काम दुख का सबब होंगे। ख़ुद अपनी कमाई अपने काम न आवे। किसी दूसरे के साथ से, जो हम-उम्र हो या दूसरी उम्र का साथी (बहिसाब उम्र) हो, धन पैदा होगा जो स्त्री, भाई-बन्दों के हाथ लगता हुआ फिर भी स्याह मुँह माया साबित होवे। जब कभी चंदर के दुश्मन ग्रहों का दौरा हो (चंदर के दुश्मन नं० 1 में हो जावें) चोरी और धन हानि होगी। ऐसा धन स्त्री, स्त्री ख़ानदान, ससुराल या दूसरे यार-दोस्तों के काम बहुत आवे।

सनीचर चंदर को देखे: चंदर का असर बर्बाद।

चंदर देखे सनीचर कोःसनीचर का मंदा, मगर चंदर उम्दा। जब दोनों ग्रह मुश्तरका दीवार वाले घरों में हों और कुँए की दीवार फाड़ कर मकान या तैख़ाना वग़ैरह बना कर दोनों को मिला लिया जावे, तो दूध में ज़हर मिला ली होगी। चंदर नष्ट, औलाद बर्बाद, ख़ुद अधरंग, दौलत ख़त्म, सब मंदे नतीजे हों।

2ः उम्दा असर होवे। स्याह घोड़ा। कुँआ लगाना मुबारिक होगा, रफ़ा-ए-आम भी मुबारिक।

3ः चोरी का घर है, संदूक़ची होगी, मगर धन से ख़ाली। नक़द माल नदारद, जायदाद बेशुमार। सनीचर क़ाबिले उपाओ, राशीफल का होगा। (केतु का उपाओ)। लेकिन अगर केतु रद्दी हो, तो लाल फिटकड़ी ज़मीन में दबाना मुबारिक होगा।

4ः पहाड़ पानी में बह निकलेगा। मौत पानी से रात को होगी, अगर सूरज का साथ (बमूजब नं॰ 1-10 वग़ैरह)

न हो। अगर सूरज की मदद मिलती हो तो मुबारिक होगा।
मगर मौत दिन के वक़्त होगी पानी से। दबा हुआ
धन होगा, जो लावल्द होने या इसकी मौत के बाद
दूसरों के काम आयेगा। औरत की कबूतरबाज़ी
बाइस–ए–तबाही। साँप को दूध पिलाना मुबारिक होगा।
पितृ रेखा का उत्तम असर होगा। सनीचर मददगार साया करने
वाला साँप होगा, ख़ुद उसके लिए मगर दूसरों
के लिए ख़ूनी साँप होगा। अपनी बेवक़ूफ़ी से मोतिया
नज़र बर्बाद करावे, चोट से ख़राब नज़र न होगी।
मौत परदेस में होगी। बाक़ी 4 वाला
मकान का हाल, मानिन्द गधा।

ख़ाना नम्बर 5
औलाद पर ख़राबी (सिर्फ़ धन दौलत) होगी। मुसीबत
में दुख का यम, सनीचर के आतिशख़ेज़ पहाड़ का धुआँ
धार ज़माना खड़ा कर देगा, जो चंदर के समंदर के
पानी में ग़रक होकर ग़ोता देने का सबब होगा।

ख़ाना नम्बर 6 दुनिया के 3 कुत्ते बाइस-ए-ख़राबी होंगे। भैण के घर भाई, नानके घर दोहता, ससुराल के घर जवाई कुत्ता होगा। चंदर सनीचर दोंनों की मिट्टी बर्बाद और ख़राब होगी। माता व जायदाद जद्दी तो मुब्तदी हालत व बर्बाद, मगर ख़ुद आमदन व मकान आबाद होंगे।

7: आँखों की बीमारियाँ अँधापन तक, स्त्रियों के झगड़े ज़िन्दगी तबाह करें। 42 साला उम्र में माता पिता में से सिर्फ़ एक होगा। मौत हथियार से होगी मगर गृहस्त और मातृभूमि में।

8: बुढ़ापे में नज़र का तक़ाज़ा होगा।

9: धन दौलत निहायत उत्तम मगर चंदर का मंदा असर मिला हुआ होगा।

10-11: पानी व माया के कुएँ भी ख़ुश्क हो जावें, ज़हर बढ़ती जावे। तारे वाला टट्टू घोड़ा।

12: माया पर पेशाब की धार मारने वाला होगा, औरत का सुख हल्का।

बाक़ी घर: अपना अपना असर होगा।

आराम 4 साल, बीमारी 15 साल, दौलत 12 वर्ना 27 साल, दुनियावी दोनों का ख़राब। बातनी चंदर का उत्तम और प्रबल होगा।

ख़ुसरा गाय (न बैल न गाय) शुक्कर के घर (मर्द का ससुराल) माता के घर (मामूँ) दोनों बर्बाद करे। नूह सास का झगड़ा, माता न होगी, अगर होगी उसकी नज़र न होगी। शादी के दिन से दोनों ग्रहों का मंदा असर शुरु होगा।

शुक्कर देखे चंदर को : औरतों की मुख़ालिफ़त।

चंदर देखे शुक्कर को : फ़क़ीर साहिब-ए-कमाल होगा।

दोनों मुश्तरका : मामूली जिन्दगी बसर करने वाला हो।

दोनों मुश्तरका को मंगल बद देखे: स्त्रियाँ (शुक्कर चंदर) तबाह होंगी।

बुध की मदद या उपाओ दोनों का नेक असर पैदा करेगा। दही से पानी राख ही निकालेगी।

दोनों अपने अपने पक्के घरों में जुदा-जुदा हों, तो कामदेव से दूर होगा।

ख़ाना नम्बर 1 शुक्कर औरत की सेहत मंदी, कमज़ोरी, दीवानगी वग़ैरह।

2: दवाईयों के काम से फ़ायदा, हकीम होने की शर्त न होगी। बृहस्पत का नेक फल अब शामिल नहीं होगा। इश्क़ दुनियावी (औरत की बदफ़े'ली, इश्क़ वग़ैरह) बाइस-ए-तबाही।

4: शरीफ़-उल-नजफ़ माँ बाप दोनों की तरफ़ से, ख़ालिस और ख़ुद भला लोग होगा। फ़क़ीर साहिब ए कमाल वर्ना नशेबाज़ों का सरदार, जब दृष्टि ख़ाली। कामदेव से दूर होगा।

दोनों नं॰ 4 और सनीचर नं॰ 10 माँ का नेक असर शामिल होगा।
" " " सूरज नं॰ 10 बाप का " " "
" " " सूरज नं॰ 5 शर्मीला लड़कियों जैसा मगर बुद्धू न होगा।

7: धन का बढ़ना बन्द होगा। आबिद, सख़ी परहेज़गार होगा।

अगर धन का पूरा और नेक फ़ायदा लेवे, तो उम्दा असर वर्ना वही धन पाँचों ऐब शुरु करवा कर बर्बादी करे। बाक़ी 7 वाला हाथी का मकान।

8: बदचलनी की बीमारियाँ, ख़ुदसाख़्ता बेवक़ूफ़ियाँ वजह होंगी। बूढ़ी माताओं और गऊ सेवा या गऊ दान मुबारिक होंगे, वास्ते सेहत और धन दौलत।

बाक़ी घर: अपना-अपना असर लेंगे।

आग का डर 17 साल, तीर्थ 20 साल, सुख 7 साल, बीमारी 9 साल। दोनों का और उत्तम फल होगा।

कलाई रेखा, मिट्टी का तनूर, मीठा अनार, गेरू।

धन दौलत, जिसके साथ परिवार भी हो।

शुक्कर मंगल – साथी, इकट्ठे, या बदले घर बाहम हों।
दो की जगह अब चंदर होगा, ज़ाहिरा बेशक दोनों हों।

दोनों को बृहस्पत देखे: निहायत उत्तम लक्ष्मी होगी।

" " पापी या मंगल बद: हर तरह मंदा, मौत बुरी तक असर हो।

ख़ाना नं० 2 ससुराल ख़ानदान से मीठी खाँड की तरह का उम्दा असर व दौलत का फ़ायदा हो, ससुराल भी ख़ुद अमीर होंगे, मगर लावल्द न होंगे।

3: ऐसा धन भाई बहनों को तारे, मगर ख़ुद ज़नाकार अय्याश होगा।

4: माता के भाई बंद (नर आदमी) ख़ुद तबाह और इसे तबाह

करें, ज़ाहिरा पानी में डूबते जावें। मंगल बद उड़ता होगा।

7: हरदम बढ़े परिवार और दौलत का भारी भंडार होगा। औलाद दर औलाद और साहिबे औलाद पड़ोते पड़पोते बहुत होंगे, इसका धन अपने ही ख़ून से पैदाशुदों को तारे, मार्फ़त अपनी औरत या भाई बंद के बाद (भूआ, बहन, फुफी नहीं)

8: *ऐसे जम्मे चंदरभान, चूल्हे आग न मंजे बाण।*

ख़ुद आसूदा हाल, मगर हर एक का निन्दक और बदख़ूई करने वाला, हमला रोकने की हिम्मत का भी साथ होगा।

10: मामूली सी मिट्टी की डली पर लम्बा झगड़ा कर लेने वाला होगा, या मिट्टी के लिये खाँड भी बर्बाद कर लेगा, औरत के लिये भाईयों को मरवा देगा।

ख़ाना नं॰ 2 का अब ख़ास ता'ल्लुक़ होगा।

बाक़ी घर: अपना अपना असर होगा।

राज ता'ल्लुक़ 22 साल, औरत का सुख 37 साल, दौलत 36 साल, दुश्मन 40 साल। दोनों का और उत्तम फल होगा।

तराज़ू, रेतली मिट्टी। मसनूई सूरज का असर होगा जो सिर्फ़ सेहत और रिज़क़ का मालिक होगा, हुकूमत के साथ की शर्त न होगी। ज़नाहकार भी हो सकता है। शुक्कर अगर केतु का जिस्म है, तो बुध उसकी टेढ़ी दुम होगी, जब कभी मंगल का ता'ल्लुक़ (किसी तरह भी) हो जावे, बुध शेर को भी दाँत दिखवादेगा, और शेर की तरह गाय पर हमला कर देगा। दोनों का मुश्तरका असर (शुक्कर-बुध) औरत पर नेक होगा, ख़्वाह किसी भी घर हों (सिवाय ख़ाना नं० 4, जहाँ कि दोनों ही का फल रद्दी होगा)। ब्योपार में नफ़ा और सूरज ग्रहण में मदद होगी। **शुक्कर बुध जब दो हों इकट्ठे, शनि भी उम्दा होता है, अन्न दौलत**

की कमी न कोई, घी मिट्टी से निकलता है। चाँद ग्रहण के वक़्त भी चंदर की सब चीज़ों का नेक फल साथ होगा, सिवाय सौतेली माता के, जो साथ न देगी। दोनों मुश्तरका होने पर जब तक सूरज का साथ का ता'ल्लुक़ न होवे, बुध का निहायत उत्तम और ऊँच फल साथ होगा। लेकिन जब सूरज का ता'ल्लुक़ हो जावे, शुक्कर का नेक असर होगा, वो अमीर ख़ानदान से होगी और सूरज की तरह उत्तम।

दोनों को सनीचर का साथ भी मुबारिक होगा, जायदाद उम्दा होगी। सब हालतों में ईमानदारी का धन साथ देगा।

दोनों जुदा जुदा होवें तों :-

(i) जब दृष्टि वाले घरों में हों (100 फ़ीसदी – 50 – ख़्वाह 25) और **(अलिफ़)** बुध कुण्डली के पहले घरों में हो, तो दोनों मुश्तरका असर में

कुत्ते की नेक नीयत (ऊँच केतु) का फल शामिल होगा। **(बे)** जब शुक्कर कुण्डली के पहले घरों में हो, तो दोनों के मुश्तरका असर में गुर्बा – मसकीन, आजिज़ बिल्ली (सौ चूहे खाकर बिल्ली हज करे – ऊँच राहु) की नीयत भरी होगी। दृष्टि वाले घरों में मुश्तरका होने पर शुक्कर का असर प्रबल होगा।

(ii) जब दोनों ग्रह अपने से सातवें घरों में हों, तो आम असूल से ज़रा फ़र्क़ होगा, और दोनों का फल ख़राब होगा। सफ़ेद रंग गाय मंदी हालत का सबूत होगा।

शुक्कर हो ख़ाना नं० में	बुध हो ख़ाना नं० में	
3	9	दोनों घरों व दोनों ग्रहों का फल मंदा होगा।
9	3	
6	12	दोनों ग्रहों का फल बर्बाद होगा।
12	6	दोनों का ऊँच होगा, केतु का उत्तम ज़ाहिर होगा।
8	2	दोनों का रद्दी नं० 8 का मुर्दा बुध अब
2	8	

शुक्कर को जो बृहस्पत के घर है भी मुआफ़ न करेगा।

ऊपर के घरों में अगर दोनों मुश्तरका हों तो नेक और मसनूई सूरज का फल होगा।

(iii) दोनों दृष्टि के घरों से बाहर हों, तो बुध अपना फल और अपने बैठा होने वाले घर का तमाम असर शुक्कर वाले घर और शुक्कर में मिला देगा, बशर्ते कि बुध के साथ शुक्कर के दुश्मन ग्रह न बैठे हों। जब ये दोनों ग्रह किसी तरह भी न मिल सकते हों, तो दोनों बर्बाद। न फूल उम्दा न फल अच्छा। बाद के घरों में बुध के मंदे फल को शुक्कर रोक देगा, मगर कुण्डली के पहले घरों के मंदे बुध का फल शुक्कर रोक नहीं सकता।

ख़ाना नम्बर 1 क़िस्मत में सूरज मसनूई का नेक असर शामिल होगा, मगर अल्प-आयु, मवेशियों के सुख से महरूम होगा।

2: ज़ानी वर्ना हर दो का उत्तम अपना अपना फल।

3: सिर की श्रेष्ट रेखा का उत्तम फल, जो चंदर के बुरे असर से बचायेगा, यानि जब चंदर भी रद्दी हो। गो सौतेली माता का कोई फ़ायदा न होगा, मगर चंदर की सब चीज़ों का फल नेक होगा, बेशक चंदर ग्रहण हो।

4: मामूँ खानदान और ससुराल का मंदा हाल होगा। ख़ुद भी चाल चलन का शक्की होगा, लेकिन अगर चंदर क़ायम हो तो कोई बुरा असर न होगा।

माता के भाई – बंद और बहन वग़ैरह कारोबार में ख़राबी का सबब होंगे, मगर लड़की वाला मामूँ मुबारिक होगा।

5: इश्क़ ज़ुबानी, हमराहियों को बर्बाद करावे, शुक्कर का पतंग होगा, मगर औलाद पर कोई बुरा असर न होगा।

6: सिर की श्रेष्ट रेखा ऊपर ख़ाना नं० 3 वाला असर होगा, मगर औलाद के बिघन व दीगर तक़ाज़े। राजयोग

जब सूरज का ता'ल्लुक़ भी हो जावे, यानि नं॰ 2 में सूरज शामिल हो। तो किताबों का काम, छापाख़ाना, दिमाग़ी तहरीरी काम, राज दरबार और अहले क़लम से बस्यार मुनाफ़ा हो, औरतों से मुख़ालिफ़त हो, अगर सनीचर नं॰ 2 में हो, तो जायदाद बढ़ती जावे। हर दो हालत में ईमानदारी का धन साथ देगा।

7: उत्तम फल, फूल-फल दोनों उम्दा की शानदार गुलज़ार हो, और घर-बार, गृहस्ती सुख सब शानदार हो। अगर राहु या केतु का ता'ल्लुक़ हो जावे तो, मंदा फल होगा, औलाद के बिघन वग़ैरह, शादी और औलाद दोनों मंदे होंगे। कँसी का कटोरा मददगार होगा।

8: *रब्ब बनाई जोड़ी, एक अँधा दूसरा कोढ़ी।*

शुक्कर ख़ुद अक़्ल के ख़िलाफ़ कारवाईयाँ करने वाला, और बुध रद्दी से मामूँ व बहन बर्बाद।

9: बुध के वक़्त से (लड़की की पैदायश या ख़ुद उम्र 17 साल)

बाप दादा की सब उम्मीदों पर पानी फेर देगा।

दोनों ग्रह जुदा-जुदा मंगल बद का पूरा असर देंगे।

10: साहिब-ए-अक़्ल, सेहत उम्दा।

11: अज़ीज़ों से जुदाई, अपना अपना फल।

12: दोनों रद्दी। हड़काई बकरी और कुत्ता अब औरत गाय का पेट फाड़ डालेंगे, गृहस्त रद्दी। खाँड में रेता होगा, या शीशा पिसकर धोका देगा कि खाँड पड़ी है, मगर मुँह उसे खाकर तंग होगा। सेहत के मालिक होंगे, लड़की की पैदायश से गृहस्त मंदा होगा। औरत की सेहत भी ख़राब ही होगी, मगर ख़ुद अपनी उम्र पूरी, बल्कि 100 साला तक होवे।

दौलत 12 साल, दोनों का और बहुत उत्तम फल
होगा। जब ये दोनों मुश्तरका होंगे, मंगल केतु भी
मुश्तरका होंगे। काली मिर्च व घी जो मंगल बद को हटावे।
स्याह काला मनूर, घर में ठाकुर मौजूद।

मसनूई केतु (ऊँच हालत) जो ऐश का मालिक होगा।

सनीचर के साथ या सनीचर की राशी नं॰ 10-11 में शुक्कर काली कपिला गाय होगी, जो सनीचर के तमाम बुरे असर से बचा लेगी। दोनों मुश्तरका में बुध का नेक फल ख़ुद-ब-ख़ुद शमिल हो जायेगा। इसकी कमाई नज़दीक़ी रिश्तेदार और मकान खा जायेंगे। मकान के ऊपर बिजली के बुरे असर से बचाने वाली लोहे की सलाख़ होगी, गर ये चीज़ें न हों तो धन की जगह जली राख होगी।

दोनों मुश्तरका देखें बृहस्पत को: क़िस्मत के दूसरे साथी आ मिलने पर क़िस्मत जागेगी।

दोनों को बुध देखे: ज़ुबान का चस्का बर्बाद करे।

दोनों को सूरज देखे: सनीचर का पुरज़ोर बुरा असर। मौत पुरदर्द होगी।

शुक्कर सनीचर मुश्तरका में सनीचर से मुराद उसका अपना बाप होगा।

अब बुध न ही बोलेगा, न ही मंदा फल देगा, ख़्वाह नं॰ 6 में हो।

ख़ाना नम्बर 1: काग़ रेखा, और ख़ुद ज़ानी अय्याश।

दोनों नं॰ 1, मंगल नं॰4
सूरज नं॰2 चंदर नं॰ 12: } दलिद्री, आलसी, निर्धन, दुखिया।

दोनों नं॰ 1 में राहु या केतु,
सूरज नं॰ 7 : } हर तरह से मंदा हाल। जिस्म में जलती आग की तरह का दुख खड़ा रहे।

तपदिक़ वग़ैरह, मिट्टी ख़राब और सेहत बर्बाद, दुखों का पुतला होवे।

3: ज़िन्दगी और कमाई दूसरों के लिये होगी।

4: अपना अपना

दोनों नं॰ 4 और सूरज नं॰ 10 : निहायत पुरदर्द मौत होवे।

7: निहायत क़रीबी रिश्तेदार कारोबार में शामिल होकर

या वैसे ही इसका धन खा पी जायेंगे।

दोनों नं॰7, चंदर नं॰ 1
सूरज नं॰ 4 :
नामर्द वर्ना बुज़दिल होगा।

9: नेक फल, अब शुक्कर मंगल बद का असर न देगा।

कंजरी गृहस्ती घर में आबाद हो गई होगी।

दोनों नं॰ 9
बृहस्पत नं॰ 5 या नं॰ 6
या मुश्तरका या बिल्मुक़ाबिल:
जायदाद की जायदादों वाला।
स्त्री सुख पूरा होगा।

10: दोनों नं.10
और सूरज नं॰ 4 :
सनीचर का बुरा असर न होगा, बल्कि जायदाद बनेगी। मौत भी पुरदर्द न होगी, बल्कि लम्बी उम्र होगी, नक़द रुपया बेशक कम ही होवे।

दोनों का अपना अपना उत्तम।

बेशुमार गृहस्ती साथी और इसकी लड़की – लड़कों के रिश्तेदार इसकी कमाई से परवरिश पायेंगे।

धन दौलत सबके लिये बहुत होगा और बढ़ेगा। मकानात बहुत बनेंगे या बना देगा।

11: उत्तम फल गृहस्ती सुख और ज़्यादा तादाद मैम्बरान ख़ानदान, ज़रायत खेती (शुक्कर के काम) से पूरा नफ़ा और फ़ायदा।

दोनों नं. 12
बुध नं. 6 : } ज़ानी होगा।

आग का डर 17 साल, फोकी इज़्ज़त 11 साल, वालिद 12 साल, लड़के 24 साल। मंगल का अच्छा, बुध का ख़राब फल होगा। अनार का फूल। कंठी वाला राये तोता, मसनूई सनीचर

(राहु सुभाओ) मौत बीमारी का मालिक, और हर लानत का मंगल बद। आतिशी शीशा (शीशा बुध में आग मंगल)। लड़की के लाल चमकीले कपड़े (लाल मगर चमकीले न हों तो मंगल नेक होगा। *सुब्भर*, जो शादी के वक़्त होता है, मंगल नेक है) बुध की निस्फ़ उम्र (17 साला) तक बुध का जुदा असर न होगा, मगर ख़ुफ़िया बुरा असर होता रहेगा।

जैसा बृहस्पत टेवे में होवे, वैसा ही दोनों मुश्तरका का होगा, मगर शुक्कर स्त्री की दिमाग़ी ताक़त उत्तम होगी, सरसब्ज़ पहाड़ का उम्दा फल देगी। औरत की ज़ुबान का सिर्फ़ हर्फ़ पत्थर पर लकीर होगा,

या गुरु से सुनकर आने के बाद बोलती मालूम होगी।

ख़ाना नम्बर 1 मज़बूत जिस्म, औरत ख़ानदान को तारे।

2: ससुराल धन दौलत पावें, अमीर हो जावें, और धन दौलत देवें।

3: धन दौलत के बहुत रंज-ओ-ग़म देखे, धन चला जावे, हर खेल में 3 काणे दिखलावे। अगर बड़ा भाई साथ हो और मदद पर, तो ख़ुशगुज़रान हो। माता-पिता का सुख सागर लम्बा और उम्दा हो, और क़ुदरती मदद मिले।

4: अपनी ज़ात पर बुरा असर न होगा, दूसरों के लिये वो ख़ुद नहीं।

6: अब मंगल बुध की दुश्मनी न होगी, अपना अपना फल और नेक मायनों का मिला हुआ।

7: ***मंगल सातवें सब कुछ उम्दा, धन दौलत परिवार सब।***
सबका सब ही रद्दी होगा, बुध मिले मंगल से जब।

मंगल का शेर शुक्कर की गाय पर भी हमला कर देगा, गृहस्त बर्बाद। ज़हर के वाक़्यात, ज़ुबान ख़ुद की मेहरबानी सबकी होगी।

8: बुध के तीर को मंगल बद का मुँह मामूँ ख़ानदान और आगे औलाद इनकी भी तबाह करे। उम्र 7–14–21–28 तक माता ख़ानदान को ले मरे। मामूँ वही बचे जो घर से बाहर और वो भी साधु सिर पर राख डाले, अगर घर में रहता हो, तो मुर्दे से बदतर हालत होवे। मुलाज़मत में मौक़ूफ़ी झगड़े वग़ैरह – जो कहो, सच।

11: शराब का इस्तेमाल आँख का टेढ़ापन देगा, या सनीचर मकान और बृहस्पत गुरु, पिता, धन–दौलत, सोना मंदे हाल देंगे, जिसका उपाओ गंगा जल सुबह सवेरे इस्तेमाल करना मुबारिक होगा, या चंदर या बृहस्पत की चीज़ों का साथ नेक होगा। अब चंदर या बृहस्पत का इलाज मददगार होगा।

बाक़ी घर : अपना अपना असर।

बीमारी 5–15 साल, दौलत 24 साल, तकलीफ़ 10 साल। दोनों ग्रहों की बुनियाद अच्छी व मंदी राहु पर होगी या दोनों का उत्तम फल होगा, जब राहु उत्तम हो।

मसनूई राहु (ऊँच) झगड़े फसाद में फ़तह का मालिक, नारियल–छुआरा, बुढ़ापे में क़िस्मत की शान, दयालु शिवजी व विष्णु जी होंगे। बुध का ता'ल्लुक़ होवे, तो राहु बुरी नीयत का होगा, या काग़ रेखा पूरी होगी, जो धन व परिवार दोनों ही उजाड़े।

मुश्तरका बैठे: कमान होगी, दिलावर, बहादुर, सेहत उम्दा, मगर बीमारी जब कभी हो मौत का ही डर देवे, मगर उम्र लम्बी होगी। सनीचर का फल दो गुणा होगा, या दूसरे भाइयों की क़िस्मत भी उसे ही मिली होगी। साँप और शेर की मुश्तरका तबीयत। आजिज़ मुआफ़–दूसरा तलवार के घाट। घर दौलतमंदी की वजह से डाका

के क़ाबिल या डाका के वाक़्यात हों।

औसत आमदन 18 रुपये माहवार होगी।

दोनों को देखे बृहस्पत जब बृहस्पत नं 2 का न हो } माक़ूल आमदन फिर भी क़र्ज़ाई, ख़ासकर बाप की तमाम जद्दी चीज़ों के ख़त्म हो जाने तक इन दोनों ग्रहों का फल मदद न देगा।

लोगों को स्त्राप देने वाला बृहस्पत होगा, मगर ख़ुद अपने लिये मुआविन उम्र, हरदम मददे मर्दां।

मगर जब बृहस्पत नं० 2 का हो } अब गुरु भी चोरों का सरग़ना होगा, धन दौलत अब शाहाना होगा।

दृष्टि में मगर चूल्हा } दोनों जुदा-जुदा—अगर मंगल देखे सनीचर को तो मंगल ख़ुद सिफ़र बल्कि औलाद से महरूम तक होगा, मगर सनीचर दोगुना। अगर सनीचर देखे मंगल को तो दोनों प्रबल दो डाकू बलवान।

दोनों जुदा-जुदा मगर दृष्टि का ता'ल्लुक़ न हो, तो दोनों का

अपना अपना असर क़ायम जो भी होवे। साथ व साथी ग्रह होने से दोनों मुश्तरका होते हैं।

ख़ाना नम्बर 1 : काग़ रेखा। जिस दिन ऐसा शख़्स राज दरबार में काम शुरु करे, दोनों ग्रहों का नेक फल होगा (बज़रिया मंगल)। मंदे वक़्त तक काग़ रेखा (जब बुध मंदा होवे टेवे में) सब कुछ उड़ावे मगर उम्र हार न देवे, औरत की इश्क़बाज़ी से ख़राबी रही। स्याह आँख औरत मर्द का सब धन दौलत ख़ुद अपने (औरत के) ख़ानदान को पहुँचाती जावे, मगर भूरी आँख वाली मर्द ख़ानदान को पालती जावे, हर दो हालत में ससुराल ख़ानदान मालामाल हो जावे।

2: ससुराल से दौलत मिले ख़ुद अमीर होंगे, लावल्द न होंगे, इनके धन के दरिया की लहर मुबारिक होगी (बज़रिया शुक्कर) जिस दिन शादी हो या ससुराल का ता'ल्लुक़ पैदा हो जावे, बृहस्पत भी उत्तम फल का होगा।

3: अपने ही भाई बन्द मुख़ालिफ़त करें, ज़हर के वाक़्यात हों, गृहस्त बर्बाद, धन कम, जायदाद ज़्यादा, ख़ुद बहादुर दिलावर होगा। लड़की की शादी हो या लड़की ऋतुवान होवे, बज़रिया बुध दोनों ग्रहों का नेक असर होगा।

4: खेती की ज़मीन आवे या घोड़ी बछेरी देवे, बज़रिया चंदर दोनों का फल उत्तम होवे, वर्ना दोनों का जुदा-जुदा ख़ाना नम्बर 10 का फल होगा, जो कि चंदर मंगल नं० 10 में लिखा है।

5: जब ऐसे शख़्स के हाँ औलाद पैदा होवे तो क़िस्मत जागे (बज़रिया सूरज)।

6: जब छिपकली जिस्म पर चढ़ जावे पाँव की तरफ़ से या कुत्ती घर में या घर के सामने के घर या मैदान में बच्चे देवे (बज़रिया केतु) क़िस्मत जागेगी, नेकी फ़रामोश होगा।

7: अपने रिश्तेदारों और अपनी औलाद को तारने वाला धन

होगा। दौलतमंद, औलाद, स्त्री और दुनिया का सुख पूरा (बज़रिया शुक्कर) स्त्री से स्त्री ता'ल्लुक़ या भोग हो क़िस्मत जागेगी।

8: अब दोनों ग्रह मारग अस्थान के होंगे। 3 कोना मकान वाला हाल, मौतें, मातम, तमाम बदियाँ– अब सिर्फ़ शमशान के कुएँ का पानी मुबारिक होगा, वर्ना सब बर्बाद। बाक़ी सिफ़र वाला मकान, मुर्दा घाट।

9: अगर बुध का ता'ल्लुक़ हो जावे, सबसे मंदी काग़ रेखा, वर्ना जनम से ही सबसे उत्तम हालत। शाही जंगी धन, व शाही परवरिश व हुकूमत का साथ होगा, जो 60 साल उम्दा रहे और आगे बढ़े। असल क़िस्मत का दिन वो होगा, जब इसके गृहस्त में बुज़ुर्गों से मुत'ल्लक़ा बतौर दान–यग एक लम्बा चौड़ा अडम्बर होवे, मानिन्द मेला (बज़रिया बृहस्पत)।

10: इसके मकान में दिन के वक़्त (रात को नहीं)

10: साँप ज़ाहिर हो और वो मारा न जाये, क्योंकि ये सिर्फ़ क़िस्मत के जागने की ख़बर देने आता है, डंग नहीं मारा करता – (बज़रिया सनीचर)। इसके गृहस्ती साथी बाहम रगड़ा झगड़ा करें, तो बेशक, मगर क़ुदरत की तरफ़ से कोई मौत या हादसा क़ाबिल ए मातम न होगा। जंगली चीते का हाल होगा। अगर कोई दुश्मन ग्रह ख़ाना नं॰ 3 या 4 से आ छेड़े, तो ख़ाना नं॰ 3 या 4 वाला ग्रह ख़ुद ही मारा जायेगा, जिस पर ये दोनों ग्रह मंगल और सनीचर और भी ख़ूँख़्वार हो जायेंगे। चार गोशा मकान का मुबारिक फल होगा।

दोनो नं॰ 10 और चंदर नं॰ 4 } पानी की बजाये दूध से पले हुये दरख़्त की तरह उत्तम क़िस्मत का मालिक होगा। राज दरबार से ख़ास नफ़ा पावे, और ज़रूर मुलाज़मत वग़ैरह के ज़रिये सरकारी ता'ल्लुक़ का होवे।

दोनों नं॰ 10 और पापी अच्छे घरों के या जब पापी रद्दी न हों: } मालदार, अय्यालदार, पोते पड़पोते वाला, लेकिन

जब पापी रद्दी हों, मंगल और बुध दोनों ग्रह कुण्डली में राहु की उम्र के बाद (42 साल के बाद) नेक असर देंगे।

11: क़िस्मत का असल दिन बाप की तमाम चीज़ों के एवज़ में जब अपनी ख़ुद-साख़्ता तमाम चीज़ें बना लेवे होगा। बज़रिया बृहस्पत माक़ूल आमदन, फिर भी क़र्ज़ाई। चोरों को फंसाने वाला, धर्मात्मा साधु की तरह बृहस्पत दोनों ग्रहों के फल को बर्बाद करता जायेगा।

12: अपना अपना फल होगा।

दौलत 45 साल, तकलीफ़ 10 साल, लड़के 24 साल, दुश्मन 42 साल। उत्तम फल होगा।

गाँव, एक साँप दूसरे उड़ना या उड़ने वाला। परिन्दों में बाज़ की ताक़त और चील की नज़र का मालिक, और साँपों में परों वाला ज़हरीला नाग होगा, मगर कुण्डली वाले के लिए मुबारिक। वाल्दैन का सुख सागर लम्बा और नेक, ख़ुद वो शख़्स हमदर्द होगा।

ख़ाना नं० 2 हमदर्द, उम्दा क़िस्मत। वाल्दैन नेक और उन की बाहमी नेक मुआफ़िक़त होगी, और सुख सागर लम्बा होगा।

4: दोनों ग्रह दूसरों के लिये ख़ूनी साँप होंगे, और चंदर का फल रद्दी होगा, बुध का फल बर्बाद न होगा, ख़्वाह ख़ुद चंदर भी किसी तरह शामिल हो जावे।

7: शराबी, कबाबी, नेकी-फ़रामोश, मगर धनाड और सुखिया हो।

9: बुध के वक़्त तक काग़ रेखा, बादअज़ाँ सनीचर का ख़ाना नं॰ 9 का असर नेक और उत्तम होगा।

11: गाँव का रईस और आराम पाने वाला होवे। अगर सनीचर का सुभाओ (राहु – केतु के आगे पीछे होने के हिसाब से) नेक होवे, या दृष्टि नं॰ 3 का कोई मंदा असर सनीचर के लिए न रहा हो, 45 साला दौलत होगी, वर्ना सनीचर का फ़ैसला क़िस्मत का फ़ैसला करेगा।

बाक़ी घर: अपना अपना असर लेंगे।

(अलिफ़) किसी घर में दो से ज़्यादा ग्रह इकट्ठे बैठे हों, तो जिस घर को वो देख रहे हों, अगर वो घर ख़ाली ही होवे, तो इनका असर इनके बैठा होने वाले घर तक ही महदूद होगा, लेकिन अगर इनकी नज़र के सामने के घर में कोई ग्रह (एक से ज़्यादा) बैठा होवे और वो होवे उनका दोस्त तो वो देखा जाने वाला ग्रह कभी बर्बाद न होगा, बल्कि देखने वाले ग्रहों का असर अपने बैठा होने वाले घर की चीज़ों पर डाल देगा। (ii) लेकिन अगर वो उनका दुश्मन हो, तो ख़ुद ही बर्बाद होगा, मगर अपने बैठा होने वाले घर की चीज़ों को बर्बाद न होने देगा।

(बे) तीसरे घर का असर कभी पहले घर में नहीं दे सकता, सिवाय बुध की ख़ास नाली के वक़्त। अगर बुध तीसरे घर का असर पहले घर में ले आवे

तो पहले घर और पहले घर के ग्रहों का असर गला सड़ा ही लेंगे, ख़्वाह सब वो मिलने मिलाने वाले ग्रह बाहम या बुध और शुक्कर के दोस्त हों या दुश्मन।

इसी बुध की नाली से पहले घर के ग्रहों का असर तीसरे घर में भी आ सकता है (1, 3, 5, 7 वग़ैरह) लेकिन अब तीसरे घर में इकट्ठा होने वाले ग्रहों का असर मंदा ही न लेंगे, सबकी मिलावट से जैसा हो, लेंगे। *"तीसरा रल्या तो घर गल्या"* यानि तीसरे से आने वाले पहले को बर्बाद किया मगर *पहला रल्या तो तीसरा गल्या* न होगा।

सनीचर मुंसिफ़ और राहु व केतु पाप, तीनों को एक ही नाम से पापी ग्रह याद किया जाता है। राहु केतु भी सनीचर का सुभाओ रखते हैं, मगर सनीचर की ताक़त नहीं रखते, इल्लत(शरारत) होते हैं, मालूल (नतीजा शरारत) नहीं होते। हलक़ के कौए में दाईं तरफ़ राहु, बाईं तरफ़ केतु और दरमियान में सनीचर गिनते हैं, तालू ख़ाना नं० 8 बग़ैर ग्रहों के ख़ाली जगह होगी।

पापी ग्रहों का सुभाओः-

(i) मुक़ाबला पर अकेला ग्रह हो (दुश्मन) तो वो उस दुश्मन ग्रह ही की ताक़त को ज़ायल करते हैं।

(ii) मुक़ाबला पर जिस क़दर या जितने दुश्मन ग्रह बढ़ते जावेंगे, उसी क़दर और उतनी ही पाप करवाने या करने की हिम्मत पापी ग्रहों में बढ़ती जायेगी।

(iii) जब मुक़ाबला पर दुश्मन ग्रह किसी अकेले पापी ग्रह

के सामने इसका दोस्त साथ लेकर आ बैठे, तो पापी ग्रह की ताक़त न सिर्फ़ दोगुनी या ज़्यादा होगी बल्कि वो आम हालत की बजाये ख़ूब ज़ोर का पाप करेगा-और करवायेगा, साथ ही अपने दोस्त को तो ख़ूब और बुरी तरह से मार देगा।

(iv) दो केतु मुश्तरका (एक असल केतु, दूसरा मसनूई केतु ख़्वाह ऊँच मसनूई, ख़्वाह नीच मसनूई) दोगुना मंगल नेक की ताक़त को भी बर्बाद कर देंगे।

(v) उम्र के दूसरे दौरा में मंदर्जा ज़ैल सालों पर शुरु होते हुये ख़ाना नं० 9 पर ख़ास-ख़ास असर रखते हैं।

सनीचर-60, राहु-42, केतु-48 साला उम्र पर शुरु।

(vi) पापी ग्रहों से कोई भी एक जब अपने दूसरे पापी भाईयों से मिलेगा, तो नेक फल देगा।

(vii) राहु केतु दोनों से जो पहले घरों में हो वो अपना फल बाद वाले में डाल कर उसे नेक कर देगा, *सपुर्दम बतो माये ख़्वेशरा ..... बेशरा।* ख़ाना नं० 2-11-5 में राहु या केतु में से जो भी कोई होगा, उसका मंदा फल होगा, और दूसरे पर कोई असर न होगा।

(viii) जब पापी मंदे असर के हों, तो बृहस्पत भी मंदी हैसियत का गुरु होगा, और इनके ता'ल्लुक़ की वजह से उस के असर के सामने दीवारें खड़ी गिनी जायेंगी।

(ix) ख़ाना नं० 8 पापी ग्रहों की मुश्तरका बैठक है, मगर राहु-केतु की मुश्तरका बैठक ख़ाना नम्बर 2 है, जो मसनूई शुक्कर है, और शुक्कर की राशी भी है।

(x) सनीचर जब राहु केतु के ता'ल्लुक़ से नेक असर का हो, और राहु या केतु के साथ ही बैठा हो, मकानात बनेंगे, अगर उल्ट हो, तो बने बनाये बिकवा देगा–या गिरवा देगा।

राहु होवे				तो केतु होगा			
ख़ाना	केतु से ता'ल्लुक़	सूरज से	चंदर से	ख़ाना	राहु से	सूरज से	चंदर से
1	दोस्त	नेक	नेक	7	दोस्त	मद्धम	प्रबल
2	बराबर का	निस्फ़	नेक	8	बराबर का	निस्फ़	उम्र नेक सुख निस्फ़
3	ऊँच	नेक	नेक	9	ऊँच	नेक	नेक
4	दोस्त	नेक	निस्फ़	10	दोस्त	मद्धम	निस्फ़
5	बराबर का	नेक	नेक	11	बराबर का	निस्फ़	निस्फ़
6	ऊँच	नेक	नेक	12	ऊँच	नेक	मद्धम
7	दोस्त	निस्फ़	प्रबल	1	दोस्त	नेक	नेक
8	बराबर का	नेक	उम्र नेक सुख निस्फ़	2	बराबर का	निस्फ़	नेक
9	नीच	ग्रहण	ग्रहण	3	नीच	निस्फ़	निस्फ़
10	दोस्त	मद्धम	निस्फ़	4	दोस्त	नेक	निस्फ़
11	बराबर का	नेक	निस्फ़	5	बराबर का	नेक	नेक
12	नीच	ग्रहण	निस्फ़	6	नीच	निस्फ़	ग्रहण

राहु के ग्रहण की मियाद $\frac{\text{दो दौरे}}{\text{दो साल}}$ केतु की $\frac{\text{एक दौरा}}{\text{एक साल}}$ मुश्तरका दोनों की तीन साल (45 साला उम्र तक) होगी।

(i) ये ग्रह दीवार बनकर दूसरे का असर गुम करते हैं, मगर चलने वाली दीवारें है, अगर हलक़ के कौए में सनीचर के दायें बायें रहे, तो गऊ ग्रास में भी कौए के साथ गाँ और कुत्ता हिस्सादार होगे।

(ii) ये दोनों ग्रह हमेशा ही बुध के ख़ाली ढाँचे में पकड़े रहते हैं, यानि जैसा बुध हो- और जहाँ वो हो, ये भी वैसे ही और वहाँ भी ज़रूर होंगे, और सूरज या चंदर की रोशनी या गर्मी-सर्दी से ख़ुद-ब-ख़ुद ज़ाहिर हो जायेंगे, या अगर पता लेना हो कि राहु कैसा है, तो चंदर का उपाओ करें, और केतु के लिये सूरज का उपाओ करें-ख़ुद-ब-ख़ुद ही इन दोनों का दिली पाप पकड़ा जायेगा।

(iii) सूरज को राहु ग्रहण लगाता है, और चंदर

को केतु- यानि जब सूरज राहु इकट्ठे हों नम्बर 9-12
सूरज ग्रहण " चंदर केतु " " " 6 -
चंदर ग्रहण।

राहु या सूरज ग्रहण का मंदा ज़माना 2 साल
केतु या चंदर " " " " 1 "
कुल 3 साल होगा।

ऐसे वक़्त में शुक्कर बुध मुश्तरका या अकेले अकेले की चीज़ों से दान, कल्याण माना है।

(iv) केतु व राहु को सनीचर के साँप की दुम और सिर भी माना है। इल्म जोतिष में ये एक दूसरे से सातवें होंगे, मगर लाल किताब में ये शर्त नहीं है।

ये एक ही घर में इकट्ठे भी हो जाते हैं। हाथ का अंगूठा, जिस्मानी हिस्सा राहु केतु मुश्तरका है।

(v) रंग बिरंग चीज़ हो और लाल रंग का साथ हो तो बुध होगा, और तमाम बातें असर मियाद असर वग़ैरह सब बुध की लेंगे।

सूरज सनीचर	मुश्तरका	नीच राहु
मंगल सनीचर	"	ऊँच "
सूरज बुध	"	नेक केतु
शुक्कर सनीचर	"	ऊँच केतु
चंदर सनीचर	"	नीच केतु

} मसनूई शुक्कर जिसमें राहु के झगड़े फसाद और केतु के ऐश-ओ-इशरत शामिल हैं।

} दुनियावी सुख बजुज़ औलाद

(vi) अपनी अपनी मुक़र्ररा राशी या पक्के घर से बाहर जब दोनों मुश्तरका - तो दोनों का फल रद्दी होगा।

(vii) राहु चाबी, केतु कुत्ता या सब ग्रहों को चलाने वाले हैं, लेकिन राहु केतु को बृहस्पत चलायेगा जो बुध के दायरा में पकड़े हुये हैं।

नुक़्सान 5 साल, पिता दुखी– 10½ साल,
औलाद 21 साल, उम्र 90 साल। सालम चने स्याह।
दोनों का दुश्मनाना और ख़राब फल होगा।

बृहस्पत गिना पवन तो, राहु धुँआ हुआ।
दोनों के चलने फिरने को, आकाश बन गया।
बृहस्पत का प्रण है ये, टेढ़ा कभी न होगा।
है गज ने क़सम पाई, सीधा न वो चलेगा।
घर से चले थे एक से, अब बारह[12] हो गया।
तकिया फ़क़ीर साधु का, धुँआधार हो गया।
चलते सुबह से दोनों थे, तब शाम हो गया।
गुरु लगा समाधि में, सुनसान हो गया।
धुँआ हटे न साधु जागे, दोनों अपनी लय में है।
दुनिया के सब बन्दे साथी, इन दोनों की शरण में है।
झगड़ा बढ़ा तवील, तो सूरज भी आ गया।
चंदर बना है घोड़े तो, बुध पहिये हो गया।

शुक्कर बना जो मिट्टी था, अब लक्ष्मी हुआ।
मंगल ने शेरी छोड़ी थी, अब चीता हो गया।
लेटा पड़ा जो साँप था, अब भैरों हो गया।
केतु के आते आते ही, सब ख़्वाब हो गया।
हाथी ने सिर टटोला तो, टुकड़े हैं पाये दो।
केतु जो गुरु के नीचे था, इसके भी रंग दो।
बृहस्पत ने आँख खोली तो, देखे जहान दो।
राजा फ़क़ीर होते भी, क़िस्मत दो रंगी हो।

केतु के उपाओ से राहु का मंदा असर दूर होगा, अगर केतु लड़का भी मंदा और नालायक़ हो तो माता की मार्फ़त चंदर का उपाओ मदद देगा।

जौ (अनाज) के दाने दूध में धोकर पास रखने के बाद हर रोज़ दरिया में बहाते जाना 40-43 दिन मुबारिक होगा, या केतु के रंग

के नग की अंगूठी को गाय के जूठे पानी से धोकर 40-43 दिन तक मुबारिक फल होगा। समाधि खुलते ही मंगल की चीज़ों का दान भी ज़रूरी होगा, वर्ना वही धुँध होगी।

ख़ाना नं० 1: उंगली पर सीधे ख़त तादाद में एक हो- फ़य्याज़ व सख़ी।

2: अब राहु चुप होगा-गुरु का उपदेश सुनेगा। ग़रीबों का मददगार, नेकी के काम बहुत करेगा। दायें अंगूठे पर यही ख़त यानि ख़ाना नं० 2 में मर्द की तरफ़ से औलाद और बाँए अंगूठे पर यानि ख़ाना नं० 8 में औरत की तरफ़ की औलाद होगी। अब बुध जितने घर दूर होगा उतनी लड़कियाँ होंगी, बाक़ी लड़के।

3: राहु की पूरी उम्र के बाद नेक असर होगा। सात खड़े ख़त, आँख की होशियारी ज़्यादा हो, बहादुर होगा।

4: चार खड़े ख़त – उत्तम चंदर का पूरा फ़ायदा हो।

5: 5 " " – हाकिम या सरदार हो।

6: पिता और ससुराल दोनों में से एक ही होगा, अगर दोनों ही ज़िन्दा हों तो एक को दमा ज़रूर होगा।

छह खड़े ख़त : जवानी में ख़ूब आराम पावे।

8: आठ " " : ज़िन्दगी ख़ानापूरी का नाम हो।

12: तीन ख़त: अक़्लमंद, हुनर और पेशा दस्तकारी से ऐसा नफ़ा न हो।

बाक़ी घर : अपना अपना असर।

अगर कुण्डली में राहु पहले घरों में या पहले हो तो बृहस्पत दुनियावी असर का होगा, अगर बृहस्पत पहले घरों में या पहले हो तो बृहस्पत ग़ैबी ताक़त का भी मालिक होगा।

दोनों मुश्तरका या दोनों ही जुदा-जुदा, मगर दोनों ही रद्दी हों (दुश्मनों से दबाये) तो बुध होगा,

और बुध का ज़ाती सुभाओ फ़ैसला करेगा।

(बे) जब तक सूरज, चंदर, मंगल क़ायम और राहु ऊँच घर का हो – बृहस्पत दोनों जहाँ का मालिक होगा।

औलाद रद्दी 21 साल। ऐसे टेवे में मंगल ख़ुद राहु को दबाता होगा, वर्ना इसकी उम्र का हर घड़ीख़तरा होगा, सूरज ग्रहण होगा। बवक़्त सूरज ग्रहण राहु की चीज़ों (सूरज के दुश्मन ग्रहों) को दरिया (चलते पानी) में बहाना मुबारिक होगा।

सूरज जब राहु को देखे तो राहु के आतिशी माद्दा की लहर और भी गर्म होकर अगले घरों पर भी बुरा असर करेंगी, मसलन सूरज होवे 2 में, और राहु नं॰ 6 में, अब राहु 6 से 12 पर भी असर देगा, और 6 के साथ लगते ख़ाने नं॰ 7 पर भी असर देगा, (7 से आगे क्योंकि दृष्टि चलती नहीं इस लिए वहाँ तक ही महदूद रह गया)।

मंदे असर का उपाओः ताँबे का पैसा आग में जलावें, जले हुए पैसे को घर से बाहर ले जाते वक़्त बाल बच्चों को सामने आने से बचावें, वर्ना

उन पर बुरा असर गिना है।

जब राहु देखे सूरज को या साथ ही होवे तो सूरज ग्रहण होगा। दान कल्याण माना है।

राहु आग, चोरी, बुख़ार का भी मालिक है, इसलिये बवक़्त चोरी, जौ को किसी जगह बोझ के नीचे बंद करें, और बवक़्त बुख़ार जौ के साथ गुड़ मिलाकर दान करें, या जौ और मीठा दान करें, अगर कामयाब न हो-जौ को दूध में धोकर या गऊ पेशाब में धोकर (जब केतु भी मंदा हो) दरिया में बहा देवें।

अगर दोनों के साथ चंदर भी शामिल होता होवे तो जिस घर में राहु चंदर से मिल रहा है, राहु का असर वहाँ तक ही महदूद रहेगा, और उसी घर को ही बर्बाद करेगा।

ख़ाना नम्बर 5: राहु के वक़्त तक ख़ाना औलाद बर्बाद और

21 साला उम्र तक की औलाद तबाह।

दोनों नं 5 और चंदर नं॰ 4 } राहु के वक़्त तक निर्धन, सिर्फ़ आई चलाई होवे, ससुराल भी मंदे और मामूँ घर भी वीरान।

9: सूरज ग्रहण होगा।

10–11: उम्र सिर्फ़ 22 साल तक होगी – जब ख़ाना नं॰ 8 में उम्र को रद्दी करने वाले ग्रह हों, और साथ ही सूरज राहु मुश्तरका बैठे हों (i) **ख़ाना नं॰ 10 में** और सनीचर मय स्त्री ग्रह बैठे हों ख़ाना नं॰ 2 में– या

(ii) **ख़ाना नं॰ 11 में** : सूरज राहु हों और सनीचर ख़ुद उम्र को रद्दी मंदा या नष्ट बर्बाद करने वाले घरों में हो–या वो ख़ुद ही मंदा हो रहा हो, मगर नर ग्रह की मदद साथ/साथी न हो – वर्ना उम्र लम्बी होगी।

12: सूरज ग्रहण होगा।

बाक़ी घर: अपना–अपना फल होगा।

पानी का ख़ौफ़ निस्फ़ उम्र। बवक़्त चंदर ग्रहण राहु की चीज़ों (चंदर के दुश्मन ग्रहों की चीज़ें) को चलते पानी में बहाना मुबारिक होगा।

मुश्तरका होने पर चंदर का असर मद्धम और भोंचाल (राहु का) चंदर बैठा होने वाले घर तक ही महदूद होगा। ख़ुद राहु भी तेंदुए से पकड़ा हुआ होगा, यानि ससुराल भी बर्बाद होंगे। (सिर्फ़ माली हालत में) दरिया का पानी भी दो टुकड़ों में होगा। फ़र्ज़ी वहम, चिन्ता लगी रहे, या फ़र्ज़ी वहम से दीवाना होवे। दोनों मुश्तरका कुण्डली के पहले घरों में (1 से 6 तक) जिस ख़ाना नम्बर में होवें, उतने साल उम्र तक माता पर बोझ बल्कि उसकी उम्र तक बर्बाद करे, और राहु की मौत। (अचानक गोली लगने की तरह, प्लेग हादसा, बच्चा पैदा होने पर *छिले* में ही)। फ़ौरन जाँ-बहक़ हो। चंदर की जानदार चीज़ों पर मंदा असर होगा।

(बे) अगर बाद के घरों में (7 ता 12) मुश्तरका हों, तो माता व चंदर की जानदार चीज़ों की उम्र पर कोई बुरा असर न होगा, अगर कभी बुरा असर होवे तो माता व मौलूद (बच्चा ख़ुद कुण्डली वाला) दोनों पर ही इकट्ठा होगा, वो भी चंदर की उम्र (24 साला) तक जिस घर में इकट्ठे हों, वहाँ तो इस घर की चीज़ों का राहु व चंदर दोनों का ही बुरा असर होगा। राहु के मंदे असर को केतु ही हटा सकता है, अगर वो भी मंदा होवे तो बुध क़ायम करें, अगर वो भी मंदा होवे तो मंगल की मदद लेवें, अगर वो भी न होवे तो बृहस्पत की मदद और उपाओ कारआमद होगा,वर्ना ख़ुद चंदर का उपाओ या आख़ीर पर सनीचर काम देगा।

ख़ाना नम्बर 9: निस्फ़ चाँद ग्रहण होगा।

बाक़ी घर: अपना अपना फल होगा।

ख़ाली बुध मंदा, दुश्मनाना और ख़राब फल होगा।

पागल शुक्कर होगा, जिसमें कि बुध की मदद न होगी, या शुक्कर की जगह सिर्फ़ बुध ख़ाली फूल ही होगा – और मंदा, औरत और लक्ष्मी दोनों बर्बाद, मगर फोकी इज़्ज़त बरक़रार रहे, अगर ख़ुद शुक्कर के घर ही राहु आ जावे, तो ख़ाना शुक्कर व बुध दोनों ही बर्बाद होंगे, बल्कि ख़ुद उम्र भी 24 तक ख़त्म लेंगे, क्योंकि अब नम्बर 1 में केतु भी मंदा होगा, जो माता व माता घर बर्बाद कर रहा होगा, और चंदर नष्ट हो रहा होगा। दोनों का मुश्तरका असर गुदा(टट्टी की जगह) के इर्द गिर्द हिस्सा में ज़ाहिर होगा। अब चंदर शुक्कर दोनों का मुश्तरका उपाओ यानि दूध में मक्खन का उपाओ या नारियल का दान मुबारिक होगा।

ख़ाना नम्बर 1: औरत की दिमाग़ी ख़राबियाँ होंगी, सेहत मंदी।

12: गो अब शुक्कर ऊँच फिर भी इसकी सेहत मंदी

मगर लक्ष्मी ख़ुद मर्द की तो ज़रूर बर्बाद होगी, जिसके लिये राहु का नीला फूल मिट्टी में बवक़्त शाम दबाते जाने से मदद होगी।

बाक़ी घर : अपना अपना फल होगा।

जब शुक्कर अपने किसी दुश्मन के घर बैठा हो, और राहु भी मुश्तरका दीवार या किसी ढंग पर उसे देख सके, या जुनूबी दरवाज़ा वाले मकान का साथ होवे, शुक्कर का फल हर तरह से रद्दी होगा, उस घर का जिसमें कि वो बैठा हो सेहत भी मंदी। दायाँ हिस्सा जिस्म औरत पर चाँदी (छल्ला वग़ैरह क़ायम करें।)

नुक़्सान 5 साल, रोटी व चूल्हा।

राहु नदारद, मंगल का उत्तम।

हाथी मय महावत इकट्ठे, अब राहु शरारत नहीं कर सकता, लेकिन अगर जुदा-जुदा होवें तो बाग़ी हाथी होगा। या दोनों अगर ऐसे घरों में हों, जहाँ कि राहु या मंगल दोनों में से कोई एक मंदा या नीच होवे, तो गंदा हाथी होवे, जो अपनी ही फ़ौज को मारे। लेकिन अगर ऐसे घरों में हों, जहाँ कि राहु ख़ुद ऊँच हो (3, 6) तो राजा का हाथी या वो शख़्स ख़ुद मानिन्द राजा होगा।

जब मंगल देखे राहु को- तो राहु का बुरा असर न होगा।

जब राहु देखे मंगल को- तो बाज़ुओं की तकलीफ़, या पेट और ख़ून की सख़्त ख़राबियाँ

जिस्म के दायें हिस्सा पर ज़ाहिर होंगी, अब चंदर का उपाओ मददगार होगा। राहु चूल्हा होता है, मंगल रोटी-पानी, अगर रोटी खाने और रोटी पकाने की जगह एक हो तो-राहु का असर गुम ही रहेगा।

दोनों का उत्तम-ख़ुद अपने लिये।

राहु हाथी का जिस्म और बुध उसका सूँड है, जब मुश्तरका हों, और कुण्डली के पहले घरों में हों (1 ता 6) मुबारिक और उत्तम फल देंगे, लेकिन अगर जुदा-जुदा हों, या दोनों मुश्तरका कुण्डली के बाद के घरों में (7 ता 12)*A में हों तो, दोनों का फल मंदा होगा, मौत गूँजती होगी, क्योंकि अब केतु भी पीछे से अपना असर दे रहा होगा। दोनों में प्रबल कौन है का जवाब, गुफ़्तार के फ़ैसला पर होगा।

दोनों मुश्तरका टटीहरी (परिन्दा) होंगे, अब परिन्दों ख़ासकर टटीहरी के मारने से दोनों ही क़ाबिल-ए-इलाज न रहेंगे-बज़रिया शिकार।

*A सिवाय ख़ाना नम्बर 11 जिस पर ख़ाना नम्बर 5 के केतु का कोई असर न होगा।

दोनों मुश्तरका या दृष्टि से मिलें } बुध के मददगार, ऊँच घर की राशी या इसके दोस्त ग्रह की राशी में हों, तो बाज़ होंगे।

राहु के दोस्त सनीचर	केतु	बाक़ी घरों में
ख़ाना नम्बर 10-11	6	टटीहरी की
बुध के दोस्त सूरज	शुक्कर	हैसियत के
ख़ाना नम्बर 5	2-7	होंगे।

मगर बाज़ से शिकार खेल कर परिन्दों का मारना ख़ास कर छोटे-छोटे परिन्दों को मरवाने से दोनों की ताक़त ख़त्म होगी। जब दोनों किसी ऐसे घर या ऐसी हालत में बैठे हों, जहाँ कि दोनों में से किसी एक का भी फल कुण्डली वाले के लिये किसी पहलू में भी मंदा होवे-तो अब दोनों का

फल उसके अपने लिये मुबारिक व उत्तम होगा, मगर उसकी बुध या राहु की जानदार चीज़ों का मंदा असर करेंगे, यानि लड़की बहन वग़ैरह बेवा व ससुराल तबाह या मंदे हाल होंगे।

राहु – ज़ुबान का तेन्दुआ या आँखों का टेढ़ा पन या एक छोटी दूसरी क़ायम भी हो जाता है, जबकि राहु ख़ुद या दोनों राहु बुध मुश्तरका बृहस्पत की राशी 9–12 या 11 में हों या दोनों का ता'ल्लुक़ इन घरों में आ शामिल होवे, या टकराओ वग़ैरह आ जावे।

ख़ाना नम्बर 1: औलाद के बिघन होंगे।

2: बहन गो अमीर दौलतमंद होगी मगर जल्द बेवा होगी, 1 ऐज़न सात दिन, माह, साल के अन्दर अन्दर बेवा होगी, जिसका उपाओ मग़रबी दीवार से चूल्हा या बवक़्त शादी आग का बन्द करना।

बाक़ी घर : अपना अपना फल।

हानि 15 साल, हमेशा शक्की।

सनीचर मौत का यम तो राहु इसकी सवारी का हाथी होगा। इच्छ्याधारी, ख़वज़ाना का मालिक मददगार साँप होगा।

दोनों मुश्तरका – जिस्म पर पद्म का निशान भी होगा। मामूली छोटा सा स्याह निशान ख़्वाल अकेला राहु, बड़ा मगर दरम्याना पद्म और बहुत ही बड़ा स्याह निशान लसन या ग्रहण होगा।

पद्म जिस्म पर पोशीदा होवे, या कुण्डली में दोनों मुश्तरका को कोई ग्रह न देखता होवे और हो भी जिस्म पर दाईं तरफ़, यानि ख़ाना नं० 1 ता 6 में दोनों मुश्तरका हों, तो निहायत मुबारिक होगा।

पद्म तादाद में 1 से 4 तक या दोनों ख़ाना नं० 1 ता 4 में हों – तो राजा होगा, साहिब-ए-इक़बाल

पद्म हों 5 से 8 अदद तक - यानि दोनों 5 ता 8 ख़ाना नं॰ में - महाराजा। तादाद पद्म 9 ता 12 या ख़ाने नं॰ 9 ता 12 में - योगी होगा।

राहु देखे सनीचर को: लोहे से ताँबा होवे, सूरज का काम देवे।

सनीचर देखे राहु को: हसद से तबाह होवे, राहु बरख़िलाफ़ चले।

किसी तरह भी मिलते हों, मौत गूँजे। रेखा का यकायक टूटने से निशानी हो जायेगी, कि कोई अचानक आफ़त आ रही है, जानवर कुत्ता केतु, बिल्ली राहु, बुलन्द आवाज़ रोवें या जानवर रोने या मंडलाने लगें, और ख़ासकर जब बुध नं॰ 12 का हो, और 6-12 के ता'ल्लुक़ से तीनों मिल रहे हों।

ज़ुबान, तालू स्याह होवें, औलाद मरे। औरत दुखिया, ख़ानदान को बदनाम करने वाला और ख़ुद भी मौत-दर-मौत देखकर आख़ीर पर बुरी मौत मरे। 32 दाँत वाले से बुरी आवाज़ के पक्के असर में बढ़ कर होवे, काली और स्याह गहरी आँख मारचश्मा भी मनहूस दर्जा में अव्वल होगा, जो ख़ुद भी बर्बाद और साथियों को भी तबाह देखे या करे।

बृहस्पत और चंदर दोनों में से किसी का भी फल रद्दी न होगा, मगर औरत का सुख हल्का होगा, ख़ासकर ख़ाना नं॰ 12 में।

ख़ाना नं॰ 12 में चूंकि बृहस्पत चुप होता है, राहु के साथ और चंदर भी नं॰ 12 में हल्का होता है - इसलिए मर्दों व स्त्रियों (शुक्कर व चंदर की मुत'ल्लक़ा) का सुख तो ज़रूर हल्का होगा, मगर दोनों ग्रहों (चंदर व बृहस्पत) के दूसरों असरों पर कोई ख़राब असर न होगा, जानों पर बुरा असर न होगा, सिर्फ़ बाहमी सुख हल्का गिनते हैं।

राहु चंदर सनीचर: लक्ष्मी व स्त्रियों (औरत व माता) का का सुख हल्का होगा, ख़ासकर ख़ाना नं॰ 12 में।

राहु सूरज शुक्कर: औरत की सेहत रद्दी। दिमाग़ी कमज़ोरी, दीवानगी

वग़ैरह, ख़ासकर ख़ाना नं० 1 में।

राहु सूरज चंदर: चंदर बर्बाद। धन व माता दोनों मंदे। रात दिन दोनों वक़्त दुखिया, अक़्ल मदद न देवे। धन दुख खड़े करता जावे।

ख़ाना नम्बर 5 में } अब सूरज की ख़ुद अपनी तो मदद होगी, मगर चंदर की चीज़ें और ख़ाना नं० 5 की मुत'ल्लक़ा चीज़ें औलाद वग़ैरह तबाह ज़रूर होंगी, मगर बीज नष्ट न होगा, चंदर फिर भी मुआफ़ करवा देगा, या नस्ल बढ़ा देगा-बज़रिया बुध का उपाओ या दुर्गा पूजन मदद देगा।

राहु सूरज बुध: शादियाँ एक से ज़्यादा। गृहस्ती सुख बर्बाद। (औलाद मंदी)। बुध या बहन बर्बाद होवे, बशर्ते कि शुक्कर किसी और ग्रह का साथी ग्रह न होवे, वर्ना

तादाद शादी दो न होगी, मगर बाक़ी वही मंदा हाल।

राहु शुक्कर केतुः मकान के गोशे वालों मकानों में शादी लड़की की न होगी, शादी तक जब केतु पहले घरों में हों। लेकिन जब बाद के घरों में – लड़कों की शादी न होगी।

राहु बुध शुक्करः– शादी कई बार और औरतें कई एक, मगर फिर भी गृहस्ती सुख मंदा, ख़ासकर ख़ाना नं॰ 7 में। शादी और औलाद का ख़ासकर मंदा हाल और गड़बड़ होवे।

राहु बुध बृहस्पतः– ख़ुद ज़ाती ख़र्चा में कंजूस मगर निर्धन न होगा, ख़ासकर ख़ाना नं॰ 12 में तो सिर्फ़ माया का राखा होगा, कैफ़ियत में मूसल की तरह का हाल होगा।

राहु बुध चंदरः- अब वालिद डूब मरे, मगर चंदर पर बुरा असर न होगा।

राहु बृहस्पत सनीचरः- मर्दों का सुख हल्का होगा, ख़ास कर ख़ाना नं० 12 में।

राहु मंगल शुक्कर बुधः- शादी में मर्दों औरतों की मुख़ालिफ़त, नाजायज़ और फ़ालतू ख़र्चा से धन का नुक़्सान वग़ैरह।

राहु बृहस्पत बुध चंदर :- चारों ग्रहों का राहु की उम्र 42 साला उम्र तक रद्दी फल, उस घर की चीज़ों का जिसमें वो बैठे हों।

राहु मंगल सनीचर बुधः- जिस घर में बैठे हों अब उसका

मंदा हाल न होगा, लेकिन अगर मुश्तरका दीवार वाले घर में सूरज भी बैठा हो, तो तादाद मैम्बरान पर तो कोई असर बुरा न होगा, मगर राहु की बुरी तासीर, चोरी, धन हानि ज़रूर होगी। कोई भाई तो लावल्द, कोई पूरी मच्छ रेखा का मालिक साहिब-ए-इक़बाल होगा, मगर लड़कियाँ दुखिया मरीज़ ही होंगी। मदद देवे-तो चाँदी की दहलीज़, और जनूबी दरवाज़ा बर्बाद करे।

दुश्मन 40 साल, जब बिल्मुक़ाबिल, मुश्तरका
तो नेक होगा। लीमू, ज़र्द लीमू मंदिर में।

गुरु पूजा अस्थान पर। मामूँ मरें तो बेशक, हमसाये मारे जावें तो सच, (बुध के नं० 6 के फल) मगर बृहस्पत का ज़ाती फल मंदा न होगा, और ख़ुद केतु (औलाद) ऊँच असर का होगा। पोरियों पर संख का असर अब प्रबल होगा, जब दोनों में से किसी एक का फल किसी तरह भी मंदा होवे, तो दोनों का कुण्डली वाले के लिए उत्तम और मुबारिक होगा, मगर केतु व बृहस्पत की जानदार चीज़ों का फल मंदा होगा।

ख़ाना नं० 1: एक संख, हमेशा आराम पावे।

2: लम्बा चेहरा चौड़ी पेशानी, हमदर्द बुलंद मतर्बा होगा।

3: चौड़ा चेहरा व तंग पेशानी (जब नं० 8 में दुश्मन ग्रह हों) ख़ुदग़र्ज़ मंदभाग होगा, नं० 8 में दोस्त

हों तो हुक्मरान आसूदा हाल होगा।

4: तादाद संख 4- तालीम वाला होवे।

6: ख़ाना नं० 2 की दृष्टि के ग्रहों के ता'ल्लुक़ से अगर :-

(i) केतु नीच मंदा मगर बृहस्पत क़ायम - पहली औलाद का सुख न हो। (ii) केतु क़ायम बृहस्पत मंदा - दूसरों का ग़ुलाम। (iii) दृष्टि ख़ाली या दोनों साथी - ख़ुशग़ुज़रान होवे।

7 : तपस्वी मगर मुफ़लिस, तादाद संख 5

8 : दलिद्री " " , " " 2

12 : तादाद संख 6 या ज़्यादा, बड़ा ही अमीर हो।

बाक़ी घर: अपना अपना असर।

बवक़्त ग्रहण सूरज, सूरज के दुश्मन ग्रहों की चीज़ें, केतु की चीज़ों का चलते पानी में बहाना मुबारिक होगा। सूरज का फल मद्धम होगा।

केतु ख़ुद बर्बाद होगा, राज दरबार की कमाई को ग्रहण से स्याह कर देगा, ख़ुद केतु(लड़के) की औरत भी *मिर्ज़ा हल्का, सारंगी भारी* की हालत होगी, या कुत्ता सूरज की तरफ़ मुँह करके रोएगा या कुत्ते को मौत के यम नज़र आएँगे। बहरहाल औलाद का फल मंदा होगा, या औलाद की औलाद पोते बसद मुश्किल हाज़िर होंगे। ख़ुद कुण्डली वाले की उम्र पर कोई मंदा असर न होगा, अगर होगा, तो सिर्फ़ बादल का साया होगा, मगर सूरज ग्रहण न होगा, पर मद्धम तो ज़रूर होगा।

लड़कियाँ 6 साल (नर ग्रह–बृहस्पत, सूरज, मंगल)। ऐसे टेवे में ऊँच या उम्दा और क़ायम होगा, वर्ना वो नाक़ाबिल गृहस्त होगा।

चाँद ग्रहण होगा, सिर्फ़ उन बातों पर जो राहु चंदर मुश्तरका में लिखी हैं। अगर चंदर ख़ुद नीच हो या पाताल के ख़ाना नम्बर 6 में हो या बुध की मार से मर रहा हो, तो माता और बेटे दोनों के लिए मौत तक का ग्रहण होगा, जिसका इलाज केतु की दोरंगी मगर लाल रंग अशिया का साथ मददगार होगा, या बवक़्त चंदर ग्रहण, चलते पानी में केतु की (चंदर के दुश्मन ग्रहों) चीज़ें बहाना मुबारिक होगा।

दोनों बिल्मुक़ाबिल या दृष्टि में, दोनों का मंदा फल, ख़ासकर जब एक तो हो ख़ाना नम्बर 3 में, और दूसरा होवे ख़ाना नम्बर 11 में।

दुश्मन 40 साल, नेक घरों में नेक व बद घरों में बुरा असर होगा।

ख़ाना नम्बर 1 : औलाद के बिघन लावल्दी तक } दोनों नं०1 और मंगल नं०4 औलाद और दूसरों की मौतें ख़राब करें।

6: दोनों का मंदा हाल। *कुत्ते को घी हज़म न होगा* का हाल होगा, औरत बाँझ होगी।

12: औरत बहादुरी में सूअरनी होगी, 12 बच्चे, वो भी सूअर की तरह उम्दा सेहत और बहादुर व सुखिया होंगे।

बाक़ी घर: अपना अपना असर।

फोका ऐश 3 साल, लड़के 24 साल,

एक असल केतु दूसरा मसनूई केतु (शुक्कर-सनीचर मुश्तरका)।

जब ये मुश्तरका होंगे, शुक्कर सनीचर भी मुश्तरका होंगे।

इकट्ठे या बाहम दृष्टि में हों, तो मंगल दोगुना नेक होगा, लेकिन केतु और मंगल सिर्फ़ दोनों दृष्टि या मुक़ाबला पर शेर की कुत्ते की लड़ाई होगी।

ख़ाना नं॰ 2: हुक्मरान आसूदा, दोनों का जुदा-जुदा और उत्तम फल होगा।

9 : 28 साला उम्र से हालात तबदीली पर होंगे, ख़ाना नम्बर 3-5 के ग्रह मुंसिफ़ होंगे, मकान की बुनियाद (देखो नीचे दिया असर ख़ाना नं॰ 10) दुरुस्त होने पर नेक असर होगा। चंदर मींह का पानी मददगार होगा, केतु भी अब उम्दा असर का होगा।

10 : 28 साला उम्र के बाद हालात रद्दी होंगे, मंगल बद होगा, औलाद तबाह या नदारद होगी। 45 साला उम्र

तक मंदा रहेगा।

केतु घर 10वें का शक्की, कुत्ता, लड़का मंदे।
मंगल भी ख़्वाह 10वें होवे, फिर भी दोनों मंदे।
अब उपाओ केतु होगा, या चंदर का पानी।
महल मकानाँ नीचे देवे, दूध शहद वो प्राणी।

बारिश का पानी, या शहद ख़ालिस चाँदी के बर्तन में मकान की बुनियाद में दबावे।

11: दोनों नं० 11 में हों, तो मंगल नं० 10 का फल देंगे– बशर्ते कि चौकी मौजूद हो।

बाक़ी घर : अपना अपना फल लेंगे।

दुश्मन 37–40 साल। केतु कुत्ता, बुध दुम।

दोनों दुश्मन, हड़काये कुत्ते की दुम ने उसे पागल किया। दोनों का फल मंदा।

बुध जब केतु के साथ हो तो बुध घर का मगर केतु नीच होगा, मौत नहीं तो अय्याम–ए–गर्दिश ज़रूर होगा, बिर्री जानवर जिससे हाथी भी डर कर भागता है। मंगल का उपाओ मददगार होगा।

दोनों बिल्मुक़ाबिल या दृष्टि में: दोनों का मंदा फल, ख़ासकर जैसा एक हो, ख़ाना नम्बर 3 में और दूसरा 11 में।

ख़ाना नम्बर 6
केतु की चीज़ों पे केतु मंदा, पर मंदा न दूसरों पर।
बुध भी गर वाँ साथी हो, ख़ुद मंदा बुरा दूसरों पर।

बाक़ी घर : अपना अपना असर।

निस्फ़ उम्र पर सनीचर का फ़ैसला, लड़के 24 साल। दोनों का उत्तम फल।

जब तक सिर्फ़ दोनों इकट्ठे मुबारिक, जब कोई भी तीसरा ग्रह मिला, तीनों ही का फल मंदा होगा, दोनों मुश्तरका इस्तक़लाल होगा।

ख़ाना नं॰ 6: ऊर्ध रेखा पीठ में, उम्र 70 साल होगी।

9: निहायत मुबारिक, भारी क़बीला, धन दौलत शाहाना, शान की उम्र और लम्बा अर्सा सुख सागर का होगा। पुश्त-दर-पुश्त मुबारिक होगा, पूरी सदी तक नेक होगा।

बाक़ी घर: अपना अपना असर लेंगे।

लाखों–पती फिर भी दुखिया, अक़्ल मदद न देवे। न दिन चैन, न रात आराम, दुर्गा पूजन और बुध का उपाओ मददगार होगा, केतु का फल मंदा ही होगा।

ख़ाना नं० 5 : सूरज की तो अब मदद होगी, चंदर और केतु दोनों बर्बाद, औलाद तबाह, मगर नस्ल बंद न होगी, बुध का अपना फल मदद देगा, ख़ाना नम्बर 5 को बर्बादी से रोक लेगा।

केतु शुक्कर बुधः– तीनों का ही फल मंदा ख़ासकर ख़ाना नं० 7 में।

शादी, औरत, औलाद वग़ैरह में सख़्त गड़बड़ होवे।

केतु मंगल बृहस्पतः– केतु व मंगल का अपना अपना फल होगा।

भाई लंगड़ा व निर्धन } फिर भी 45 साला उमर तक मददगार, बाद में बेमायनी, ख़ुद ऐसा शख़्स 45 साला उम्र तक क़िस्मत के मैदान में हल्का ही रहे।

सनीचर के पत्थर को ज़र्द रंग बृहस्पत के फूलों से बतौर उपाओ मुअत्तर करें।

केतु मंगल सनीचरः- हर जगह मंगल बद और हिरण की तरह डरपोक होगा। कच्चा-पक्का मकान और उसमें नीम का दरख़्त या मकान - मकान उसमें नीम का दरख़्त व कुत्ता मौजूद हो।

केतु सूरज बृहस्पतः- सूरज का फल निहायत मंदा होगा। सूरज बृहस्पत को अगर केतु देखे तो दर्जा दृष्टि की ज़्यादती मंदे असर की ज़्यादती होगी यानि 100 फ़ीसदी पर 100 फ़ीसदी मंदा।

केतु सूरज शुक्करः- शुक्कर पर ख़राबी होगी, दिमाग़ी तकलीफ़ें औरत की ख़ासकर जब ख़ाना नं० 1 में हों, जब तक वो औरत

कुण्डली वाले के जद्दी मकान में रहे।

केतु सूरज बुध:- भतीजे भानजे खा पी कर डकार मार जाने वाले होंगे, या उनकी कोई मदद की उम्मीद न होगी।

केतु सूरज बुध चंदर:- वालिद बर्बाद या डूब ही मरे, हर एक का जुदा-जुदा फल।

केतु मंगल शुक्कर बुध:- शादी में मर्दों व औरतों की मुख़ालिफ़त और फ़ालतू व नाजायज़ ख़र्चा से धन बर्बाद होवे।

अगर क़ायम तो इक़बालमन्द।

बृहस्पत सूरज बुधः- अगर क़ायम तो राजयोग।

बृहस्पत चंदर सनीचरः- बृहस्पत व सनीचर दोनों का उम्दा व दोस्ताना, लोहे को पारस का काम देवे, दोस्ती से लाखों तर जावें, सिवाये ख़ाना नं० 9 जहाँ कि ख़राब असर होगा, या चंदर का ख़राब असर मिला हुआ होगा।

बृहस्पत शुक्कर बुधः- शादी में रुकावट व दीगर फ़ितूर होंगे।

बृहस्पत सनीचर शुक्करः- हर हालत में उत्तम फल। ख़ासकर ख़ाना नं० 9 में उम्दा होवे, दों साँप होंगे (और केतु सुभाओ)।

बुनियाद पर मच्छ रेखा होगी, मगर ख़ुद ज़ानी अय्याश और ज़ुबान के चस्का से बर्बाद होवे।

सूरज बुध सनीचर :- दोनों ग्रहों यानि सूरज और सनीचर का अपना अपना फल होगा।

सूरज की उम्दा हालत वाले घरों में तिजारत, दिमाग़ी काम व ब्योपार का फ़ायदा और सनीचर के अच्छे फल वाले घरों में जायदाद बढ़े या मिले।

सूरज बुध बृहस्पत :- सूरज और बृहस्पत दोनों का उम्दा फल होगा।

सूरज बृहस्पत सनीचरः- हर जगह क़द्र व मंज़िलत ख़ासकर जब ख़ाना नं॰ 6 में हों।

शादी के दिन से क़िस्मत जागेगी। औरत भी हर तरह से रंग सुभाओ और नसीबा में नेक होगी।

सूरज सनीचर शुक्कर:– मकान का सुर्ख़ फ़र्श मुबारिक न होगा। मर्द की औरत या औरत का मर्द बर्बाद हो, गृहस्त मंदा होवे। मिट्टी के कूज़े में लाल पत्थर के टुकड़े दूध से भरकर इस घर की मुत'ल्लक़ा जगह में दबावें, जहाँ कि वो बैठे हों।

चंदर सनीचर बुध:– मामूँ ख़ानदान का हाल मंदा ख़ास कर जब ख़ाना नं० 4 में, लेकिन बवजह ग़रीबी मौत न होगी, ख़ूनी होगा।

चंदर शुक्कर सूरज:– रात दिन मुसीबत में मुसीबत। कभी

तो अमीरी के समंदर की ठाठों के ख़ज़ाने होंगे, और कभी ग़रीबी में रेत के ज़र्रा की चमक भी न होगी।

चंदर शुक्कर बुधः-

दिमाग़ी सदमात होंगे। 33 साला उम्र तक शादी का कोई मतलब न होगा, अगर 34 से पहले शादी हो जावे, तो भाई बन्द बर्बाद होंगे। नर औलाद पैदा या क़ायम न होगी, बल्कि औरत भी अंधी हो जायेगी। खेती बर्बाद, और पेशा बदनाम करेगा, और 34 साला उम्र तक (औरत की उम्र) इस्तक़ात-हम्ल वग़ैरह बहुत हों। मर्द 48 से पहले और औरत (औरत की) 34 साला उम्र से पहले औलाद का सुख न पायेगी। राज दरबार व ब्योपार भी मंदा होगा। बुध का उपाओ तोता, दुर्गा पाठ, या स्याह मछलियों को सूरज

निकलने से पहले सफ़ेद आटे की ख़ुराक (या अपनी ख़ुराक का 1/10 हिस्सा) देना मुबारिक होगा, मगर हर हफ़्ते में सिर्फ़ एक दफ़ा, शुक्कर की रात और सनीचर की सुबह वाले दिन। उम्र 85 साल होगी।

चंदर शुक्कर सनीचरः-

मददे मर्दां मददे ख़ुदा।
धन दौलत उम्दा।

इसका धन औलाद के हाथ लगे। मौत परदेस में हो, वर्ना धन मानिन्द मिट्टी का पहाड़, ज़ाहिरदारी उम्दा, अन्दर से ख़ाली ढोल जो ससुराल ख़ानदान के बजाने के काम आवे।

चंदर शुक्कर बृहस्पतः-

कभी शाह,
कभी मलंग।

कभी ख़ुशहाल, कभी तंग। गन्दा इश्क़ और मंदी मुहब्बत कबूतरबाज़ी (औरत) से बर्बाद होवे और किसी को भी इससे फ़ायदा न होवे, जब होवे नुक़्सान होवे।

तीनों मुश्तरका और मंगल क़ायम } दरियादिल और हवा, और समंदर की लहरें भी मददगार।

अगर मंगल नष्ट तो शुक्कर का फल होगा।

शुक्कर बुध मंगलः- शादी और औलाद में गड़बड़, अल्प आयु भी होगा।

शुक्कर बुध सनीचरः- गऊ ग्रास। दुनिया के तीनों सुखों का मालिक होगा।

मंगल बुध सूरजः- शरारत का माक़ूल जवाब दे सकेगा।

दिली ताक़त ज़्यादा होगी - बरते ख़्वाह भली तरफ़ या बुरी।

मंगल बुध चंदरः- धन दौलत और सेहत उम्दा ख़ास

कर ख़ाना नम्बर 1-4-5 में, मगर सनीचर का ता'ल्लुक़ या

ख़ाना नम्बर 10-11 में मंदा असर होगा। मृगशाला बुरे असर से बचायेगी।

मंगल बुध सनीचरः- दो साँप हों गे (राहु सुभाओ)।

मंगल बुध चंदर का ऊपर दिया असर होगा। मृगशाला बुरे असर से बचायेगी।

मंगल चंदर सनीचरः- दिखावे का धन दौलत जो आख़ीर पर भी भाई बन्दों ताये चचे के काम आवे। बुढ़ापे में नज़र का धोका होवे। सनीचर के घर नम्बर 11 में राज दरबार से फ़ायदा हो, मंगल या चंदर के घर 3-4-8 में हर तरह से हानि। धन दौलत बर्बाद और मौत खड़ी रहे।

मंगल बृहस्पत / मंगल शुक्कर	देखते हों - सनीचर को (मुआविन धन)
" सनीचर / मंगल चंदर	" " - बृहस्पत को (मुआविन उम्र, ग़ैबी मदद)

मुआविन उम्र होगी। फाँसी लटकाए के पाँव तले मदद के लिये तख़्ता ख़ुद-ब-ख़ुद आ जाएगा, क़ब्र से वापसी तक होगी। सबसे मदद और आल-औलाद की पूरी मदद ख़ुद-ब-ख़ुद होती रहे। वाल्दैन का साया व सुख सागर बहुत लम्बा व मीठा हो।

मंगल शुक्कर सनीचर:-

दोगुना नेक मंगल।
दो नेक केतु।

मंगल शुक्कर बृहस्पत:-

अगर मंगल बढ़ कर बृहस्पत की मदद करे, तो बृहस्पत बढ़े और शुक्कर का नेक फल होवे, अगर मंगल भाई शुक्कर की तरफ़ भारी होकर मदद करे, तो शुक्कर बढ़े, जो औलाद से महरूम करे-मगर ऐश-ओ-इशरत व इश्क़ ख़ूब दिखावे।

मंगल चंदर बृहस्पत:-

पीपल नीम और बड़
तीनों का मुश्तरका

दरख़्त होगा, जो हर तरह से तीनो ग्रहों का उत्तम फल देगा।

मंगल चंदर सनीचर:- तीनों रंग में रंग बिरंगा अगर साँप भी तो चितकबरा। बीमारी का घर और फुलबहरी का मारा हुआ होवे।

मंगल सनीचर बृहस्पत:- स्राप देने वाला साधु होगा। आदमियों की कमी और क़र्ज़ाई हो, जो इसके सामने रहे, बर्बाद हो। चोरों को फंसाने वाला साधु हो। बीमारियाँ व ख़्वाहिशात बद का पुतला हो।

मंगल सनीचर सूरज:- धन दौलत उम्दा। मगर जब सनीचर के ता'ल्लुक़ में हो ख़ाना नं० 11 तो दुनिया को झूटा बनावे, मगर ख़ुद झूटा न होवे या अपना झूट न माने।

सारी उम्र चोर राहज़न फिर भी मुसीबत पर मुसीबत रहे।

मंगल सनीचर के साथ कोई तीसरा ग्रह

तीसरा साथी ग्रह मन्दा और स्त्राप ही देने वाला होगा।

दिल रेखा के आख़ीर पर मसल्लस △, ग़ुस्सा वाला। राज से ताअल्लुक़ व ख़ुश–गुज़रान होवे, ख़्वास कर नम्बर 2 में।

चंदर बृहस्पत बुध सनीचरः– खोटी सोहबत, खोटे काम– अच्छी सोहबत भला हो नाम।

मंगल सनीचर सूरज बुधः– फटा पतंग, चारों ग्रहों का मंदा फल।

मंगल चंदर शुक्कर बुधः– चारों का मंदा फल। लड़की की शादी से नेक फल शुरु होगा।

मंगल चंदर सूरज बृहस्पतः– बृहस्पत नं॰ 2, नेक गुरु प्रणाम की जगह, उम्दा क़िस्मत हो।

अगर चारों ग्रह नष्ट या बर्बाद हों, तो एक अकेला ही लाखों से मुक़ाबला करने की हिम्मत का मालिक होगा। अगर चारों क़ायम तो सब को ही लूट खसूट कर ख़ुद धनाड होगा।

चंदर शुक्कर बुध सनीचरः- बदफ़े'ल, बद किरदार, माँ औरत में फ़र्क़ न जाने।

चंदर शुक्कर बुध सूरजः- भला लोग भले काम। माँ बाप दोनों की तरफ़ से ख़ालिस ख़ून और दोनों का ताबयदार।

सूरज
मंगल
शुक्कर बृहस्पत मय 3 पापी
केतु

सूरज
शुक्कर बृहस्पत चंदर सनीचर राहु
केतु मंगल

धन्ने भगत की गऊआँ राम चरावे। गो मिट्टी का माधो मगर क़िस्मत का धनी हो, बृहस्पत की उत्तम हालत का फल और गृहस्ती सुख व ज़रुरियात सब क़ायम हों, हुक्मरान साहिब-ए-औलाद हो। कोई पाँच ग्रह जिनमें न स्त्री व पापी मिले हों सिवाये बुध के।

शुक्कर, बृहस्पत, सनीचर, सूरज, बुध पाँचों ही एक से ख़ाना नम्बर 6 तक किसी भी घरों में इकट्ठे या अकेले अकेले क़ायम या एक से एक उम्दा हालत कह्लोवे।

गो राहु या केतु में से एक बाहर रह जाया करता है, मगर वो भी दृष्टि के हिसाब से अपने से बाद वाले में अपना फल मिलाकर ख़ुद सिफ़र हो जाता है।

ख़ाना नं॰ 2 : हुक्मरान होवे।

3: मिसल राजा साहिब-ए-इक़बाल हो।

8: हुक्मरान साहिब-ए-इक़बाल, मगर ख़ुद अपने आप को बढ़ावे।

9: हुक्मरान। साथियों को बढ़ाकर ख़ुद भी बढ़ता जावे।

जनम कुण्डली जो ख़्वाह बमूजब इल्म जोतिष बना कर लगन को ख़ाना नम्बर एक देकर बाक़ी ख़ाने पूरे किये हों, और ख़्वाह इल्म सामुद्रिक से बनाई हुई हो, मुकम्मिल करने के बाद आगे दी हुई फ़ेहरिस्त के मुताबिक़ अमल – दरआमद करें।

सालाना	हालात	के लिये दिया हुआ बर्षफल				
माहवारी	हालात	"	सूरज को	चलावें		बर्ष की कुण्डली को घुमावें।
रोज़ाना	"	"	मंगल	"		
घंटों	"	"	बृहस्पत	"		
मिनटों	"	"	सनीचर	"		
सैकिंडों	"	"	बुध	"		
डिग्री	"	"	चंदर	"		
हफ़्तों	"	"	शुक्कर	"		सालाना कुण्डली का घुमावें
रातों	"	"	राहु	"		
दिनों	"	"	केतु	"		

एक साल के अन्दर के हालात के लिये ऊपर के हिसाब से लिये हुये बर्षफल की कुण्डली के जिस ख़ाने में सूरज बैठा होवे, उस ख़ाना को उम्र के महीने का हिन्दसा नम्बर देकर तमाम कुण्डली मुकम्मिल कर लें। महीने का शुरु जनम वक़्त से लेंगे, मसलन 31 की पैदायश हो, तो 30 दूसरे महीने की तक पूरा महीना होगा। एक साला उम्र के बच्चे के लिए भी यही असूल होगा। मसलनः-

जनम वक़्त 11-5-98 मंगलवार 5:43 बजे शाम

जनम कुण्डली (लगन से हर ग्रह)

सनीचर 2
चंदर राहु 3
बृहस्पत 12
11
1
4
10
7
5
6 मंगल
सूरज बुध
9 केतु
8 शुक्कर

11-5-41 शाम 5:43 बजे के बाद - 44वाँ जारी

लगन से हर ग्रह (सालाना कुण्डली)

बमूजब फ़ेहरिस्त बर्ष फल बदला गया

2 3 केतु 1 सूरज बुध 12 11 बृहस्पत
4 10 सनीचर 7
चंदर राहु 5 6 9 मंगल 8 शुक्कर

बमूजब फ़ेहरिस्त बर्ष फल बदला गया

11-9-41 शाम 5:43 बजे के बाद 5वाँ महीना शुरु।

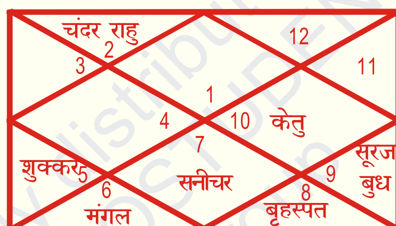
सूरज बैठा होने वाले घर को ख़ाना नं० 5 दिया गया, बर्ष फल की कुण्डली को। **माहवारी कुण्डली**

मंगल 2 सनीचर 3 शुक्कर 12 11
बृहस्पत 4 1 10 चंदर राहु 7
सूरज बुध 5 6 केतु 9 8

5वें महीने का 17वाँ दिन, पहले दिन से 12वें दिन तक एक से 12)

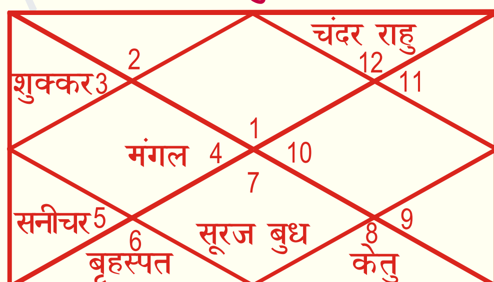
माहवारी कुण्डली में जिस जगह मंगल बैठा है, उस घर को एक से गिन कर 17वें नम्बर यानि नम्बर 6 दिया गया मंगल को।

दिन कुण्डली



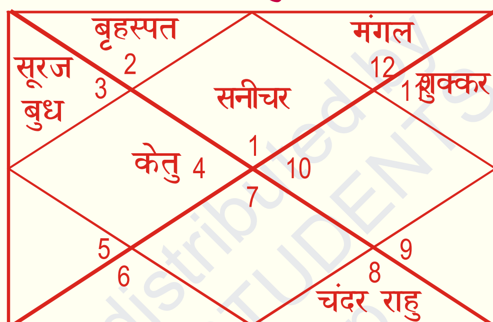
5वें महीने का 23वाँ घंटा, रोज़ाना कुण्डली में बृहस्पत वाले घर को एक गिनकर 23वां नम्बर बृहस्पत को।

घंटा कुण्डली



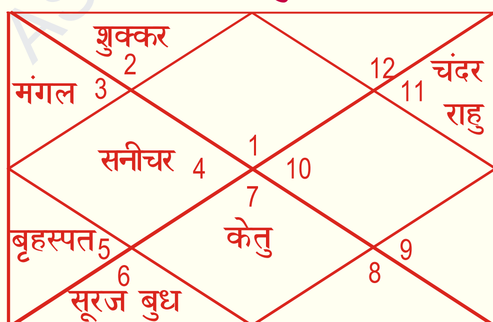
घन्टों वाली कुण्डली से 25वाँ मिनट सनीचर को चलाया गया।

मिनट कुण्डली



28वाँ सैकिन्ड-मिनटों वाली कुण्डली से अब बुध को चलाया गया।

सैकिंड कुण्डली



1	नाबालिग़	7	4	9	10	11	3	2	5	6
2	बालिग़	1	1	1	2	2	2	3	3	3
3	12	8	11	6	12	10	7	3	4	9
4	11	4	10	12	2	7	6	8	11	5
5	10	12	8	11	7	6	10	2	5	3
6	9	6	2	7	5	12	1	11	8	10
7	8	7	6	5	11	2	9	10	1	4
8	7	11	5	10	6	9	2	1	3	8
9	6	2	7	3	9	5	11	4	10	1
10	5	5	3	8	10	1	4	12	9	11
11	4	3	9	2	1	4	8	5	12	6
12	3	10	12	1	4	8	3	9	6	7
13	2	9	1	4	8	3	12	6	7	2
14	1	1	4	9	3	11	5	7	2	12
15	उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़	नाबालिग़
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5	10	12
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2	10	1
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1	10	8
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4	11	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9	11	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3	11	10
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10	12	11
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12	12	3
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7	12	2

15	14	13	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1
	उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़	नाबालिग़
	19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2	4	5
	20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11	4	6
	21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6	4	12
	22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8	5	1
	23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5	5	7
	24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1	5	9
	25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9	6	10
	26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10	6	11
	27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3	6	3

	उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़	नाबालिग़
	28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12	7	2
	29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5	7	5
	30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7	7	6
	31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2	8	12
	32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8	8	1
	33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11	8	8
	34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6	9	7
	35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1	9	4
	36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4	9	9
15	14	13	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1

1	बालिग़	1	1	1	2	2	2	3	3	3
2	12	8	9	7	10	5	2	6	11	4
3	11	4	11	5	7	3	10	12	6	8
4	10	2	10	3	5	12	6	9	7	11
5	9	11	12	6	2	10	7	8	1	3
6	8	5	7	11	12	2	4	10	8	1
7	7	7	2	10	6	8	3	1	12	9
8	6	12	5	2	8	6	1	4	9	7
9	5	9	6	8	11	1	12	3	4	10
10	4	6	8	12	1	4	9	2	3	5
11	3	10	3	1	4	9	8	11	5	6
12	2	3	1	4	9	7	11	5	10	2
13	1	1	4	9	3	11	5	7	2	12
14	उम्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45
15										

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1	10
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3	10
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12	10
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5	11
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9	11
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10	12
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2	12
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8	12

बालिग़	4	4	4	5	5	5	6	6	6
12	12	7	3	6	1	4	3	11	5
11	2	12	1	9	4	11	5	7	10
10	4	6	11	1	2	3	9	5	3
9	6	8	4	3	9	1	8	9	7
8	10	1	7	8	3	5	7	10	11
7	1	10	9	4	11	7	4	2	12
6	9	4	8	11	5	10	2	12	6
5	3	9	10	5	7	2	12	3	8
4	8	11	5	7	10	12	6	8	2
3	11	5	6	2	12	9	10	6	1
2	5	3	2	12	6	8	11	1	4
1	7	2	12	10	8	6	1	4	9
उम्र	55	56	57	58	59	60	61	62	63

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10	7
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4	7
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2	8
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12	8
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6	8
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8	9
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1	9
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9	9

बालिग	1	1	1	2	2	2	3	3	3
12	3	9	11	4	5	8	10	12	6
11	9	5	12	10	7	3	8	6	2
10	5	10	4	7	6	12	1	9	3
9	2	7	5	11	12	10	3	1	8
8	8	11	7	12	10	2	6	3	4
7	7	1	2	5	8	6	12	10	9
6	11	12	6	8	2	1	4	7	10
5	12	6	8	2	1	7	9	4	11
4	6	8	3	1	4	9	2	11	5
3	10	3	1	6	9	4	11	5	7
2	4	2	10	9	3	11	5	8	1
1	1	4	9	3	11	5	7	2	12
उम्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81

बालिग	10	10	10	11	11	11	12	12	12	1
12	1	7	2	7	5	10	11	2	12	2
11	11	4	1	9	10	11	6	5	7	3
10	8	2	11	4	9	6	5	8	2	4
9	6	9	4	5	7	2	12	3	10	5
8	9	1	5	11	2	5	7	12	8	6
7	4	11	3	8	11	12	2	7	3	7
6	3	5	9	2	12	8	10	6	1	8
5	5	3	10	12	6	3	8	1	4	9
4	7	10	12	6	3	7	1	4	9	10
3	2	12	8	10	8	1	4	9	6	11
2	12	6	7	3	1	4	9	10	11	12
1	10	8	6	1	4	9	3	11	5	13
उम्र	82	83	84	85	86	87	88	89	90	14
										15

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1	4
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6	4
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3	5
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9	5
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8	5
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11	6
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5	6
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7	6

48 और 50 पर तबदीली (ख़ाना नम्बर 5 तीसरे घर पर दोबारा आता है।)

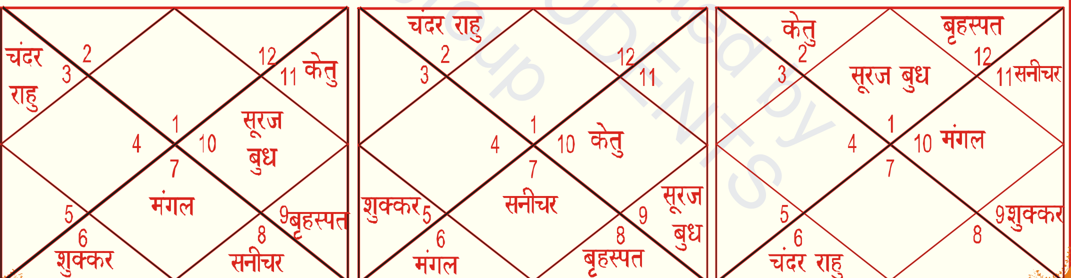
उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	9	11	4	7
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2	7
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10	7
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6	8
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12	8
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1	9
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3	9

सदी पर निस्फ़ और ग्रह चाली (चंदर) की उम्र का निस्फ़।

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8	1
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9	1
111	9	4	1	2	5	8	12	10	6	7	3	11	1
112	3	10	8	9	11	7	4	1	2	12	6	5	2
113	11	3	9	4	1	6	2	7	10	5	8	12	2
114	5	11	3	1	4	10	6	8	12	9	7	2	2
115	7	5	11	3	9	4	1	12	8	10	2	6	3
116	2	7	5	11	3	9	10	6	4	8	12	1	3
117	12	2	4	5	2	1	8	9	3	11	10	7	3

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बालिग़
118	10	12	2	7	8	11	9	3	1	6	5	4	9
119	8	6	12	10	7	5	11	2	9	4	1	3	9
120	4	8	7	12	2	3	5	4	11	1	9	10	9

सैकिन्डों वाली कुण्डली से 53 डिग्री पर, अब चंदर को चलाया गया। } 44वें साल की कुण्डली को रातों के हाल के लिये राहु को चलाया गया, यानि उसे ख़ाना नम्बर 2 या अपने हैडक्वार्टर में कर दिया } राहु की तरह अब केतु को ख़ाना नम्बर 2 में दोनों के लिये



	11											
	7						6					
अचानक चोट	3		4		1		10		7		4	
		10						1				
मुश्तरका दीवार	2	12	3	1	4	2	5	3	6	4	7	5
धोका	10	4	11	5	12	6	1	6	2	7	3	9
बुनियादी	9	5	10	6	11	7	12	8	1	6	2	10
टकराव	8	6	9	7	10	8	11	9	12	9	1	11
आम हालत	7	7	8	8	9	9	10	10	11	11	12	12
बाहम मदद	5	9	6	10	7	11	8	12	9	1	10	2
दृष्टि	A	B	A	B	A	B	A	B	A	B	A	B
ख़ाना	1		2		3		4		5		6	

A= देख सकता है - ख़ाना को

B= देखा जा सकता है - ख़ाना नम्बर से।

अचानक चोट	1-5-9		10		7		4-8-12		10		10	
	10	6	2				11	9				
मुश्तरका दीवार	8	4	9	7	10	8	1	7	12	10	1	11
धोका	4	10	5	11	6	12	7	1	8	2	9	3
बुनियादी	3	11	4	12	5	1	6	2	7	3	8	4
टकराव	2	12	3	1	4	2	5	3	6	4	7	5
आम हालत	1	1	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6
बाहम मदद	11	3	12	4	1	5	2	6	3	7	4	8
दृष्टि	A	B	A	B	A	B	A	B	A	B	A	B
ख़ाना	7		8		9		10		11		12	

ख़ाना नम्बर 2-8 व 2-9 व 2-10, 11-8, 3-8 3-5 मुश्तरका गिने जाते हैं।

नर ग्रह बोलते जुफ़्त के घर में, स्त्री बोलते ताक़ में हैं।

बुध है बोलता 3, 6 में तो, पापी नहीं बोलते 2 में हैं।

ख़ास ख़ास घर कहाँ खड़े होंगे ?

मन्दर्जा ज़ैल ग्रह टेवे में ख़्वाह किसी भी घर में इकट्ठे हो जावें, तो उनके सामने दिये हुए ख़ाना नम्बर का असर पैदा हो जायेगा।

ग्रह	ख़ाना नंबर	ग्रह	ख़ाना नंबर
सूरज मंगल	1	सूरज बृहस्पत	5
शुक्कर बृहस्पत	2	बुध केतु	6
बुध मंगल	3	शुक्कर बुध	7
मंगल शुक्कर	4	मंगल सनीचर चंदर	8

हर ग्रह के दरमियानी ग्रह

	शुरु	दरमियान	आख़िरी हिस्सा
बृहस्पत	केतु	बृहस्पत	सूरज
सूरज	सूरज	चंदर	मंगल
चंदर	बृहस्पत	सूरज	चंदर
शुक्कर	मंगल	शुक्कर	बुध
मंगल	मंगल	सनीचर	शुक्कर
बुध	चंदर	मंगल	बृहस्पत
सनीचर	राहु	बुध	सनीचर
राहु	मंगल	केतु	राहु
केतु	सनीचर	राहु	केतु

पहले घरों में	दरमियान में	आख़िरी घर बाद में	सनीचर का सुभाओ
राहु	सनीचर	केतु	ख़राब
केतु	सनीचर	राहु	नेक
राहु	केतु	सनीचर	ख़राब
केतु	राहु	सनीचर	नेक
सनीचर	राहु	केतु	ख़राब
सनीचर	केतु	राहु	नेक
राहु – केतु	–	सनीचर	सनीचर का अपना ख़राब
सनीचर	–	राहु – केतु	सनीचर का अपना नेक
राहु	–	सनीचर – केतु	ख़राब
सनीचर – केतु	–	राहु	नेक
सनीचर – राहु	–	केतु	ख़राब
केतु	–	सनीचर – राहु	नेक

मन्दे सुभाओ का सनीचर जिस घर में बैठा हो, उस घर की मुत'ल्लक़ा चीज़ों पर बुरा असर देगा, ख़्वाह ख़ुद गुरुद्वारा में ही (नं० 2) बैठा होवे।

बृहस्पत	मानिन्द राख	मंगल	शेर के दाँत
सूरज	" पारा	बुध	ज़ाती सुभाओ
चंदर }	दही में पानी	सनीचर	क़लई
		राहु	हाथी का सूँड
शुक्कर }	" " "	केतु	कुत्ते की दुम

	ख़ाना नम्बर	ताक़त	ताक़त नम्बर
बृहस्पत	4	$\frac{6}{9}$	24
सूरज	3	$\frac{9}{9}$	27
चंदर	6	$\frac{8}{9}$	48
शुक्कर	5	$\frac{7}{9}$	35
मंगल	5	$\frac{5}{9}$	25
बुध	3	$\frac{4}{9}$	12
सनीचर	12	$\frac{3}{9}$	36
राहु	2	$\frac{2}{9}$	4
केतु	8	$\frac{1}{9}$	8
मीज़ान	तक़्सीम किया	9 पर	$\frac{219}{9}$ = $24\frac{3}{9}$

कसर का हिन्दसा $\frac{3}{9}$ है, जो सनीचर की ताक़त है, अब बुध का सनीचर का ही सुभाओ होगा। अब सनीचर का ज़ाती सुभाओ ख़राब है (राहु केतु के दौर बौर से) या सनीचर दोगुना मन्दा होगा, जब बुध का ज़माना होगा। अगर बाक़ी सिफ़र हो तो ख़ाना नं० 5 के ग्रह जैसा – वर्ना सूरज के सुभाओ का होगा, और राहु केतु भी सिफ़र होंगे।

सूरज, चंदर, केतु, मंगल, बुध, सनीचर, राहु

ख़ाना नम्बर 8 के ग्रह।

ख़ाना नम्बर 9 के ग्रह – बृहस्पत, शुक्कर।

ग्रह	आम अर्सा	कुल उम्र	महादशा	वक़्त असर
बृहस्पत	6 साल	16	16	दरमियान
सूरज	2 "	22	6	शुरु
चंदर	1	24	10	आख़ीर पर
शुक्कर	3	25	20	दरमियान
मंगल	6	28	7	शुरु
बुध	2	34	17	यकसाँ
सनीचर	6	36	19	"
राहु	6	42	18	आख़ीर पर
केतु	3	48	7	
मंगल बद	3	15	4	
मंगल नेक	3	13	3	

क़ायम या उम्दा ग्रह	माहवार आमदन	ग्रह	आमदन औसत
बृहस्पत	11/- रुपये	मंगल सनीचर	18/- रुपये
सूरज	10/-	बृहस्पत सनीचर	21/8/-
चंदर	9/-	बृहस्पत चंदर	21/-
शुक्कर	6/-	सूरज चंदर	20/-
मंगल	7/8/-	सूरज बुध	13/-
बुध	3/-	मंगल चंदर	16/8/-
सनीचर	10/8/-	शुक्कर बुध	9/-
राहु	8/-	राहु केतु और शुक्कर सनीचर बही काग़ज़ी हिसाब वसूली नदारद।	
केतु	5/-		

बुध सनीचर –जायदाद देवें।

	ग्रह	बराबर ताक़त	दोस्त	दुश्मन
1	बृहस्पत	सनीचर, राहु, केतु	सूरज, चंदर, मंगल	शुक्कर बुध
2	सूरज	बुध नदारद	बृहस्पत, चंदर, मंगल	शुक्कर, सनीचर। राहु ग्रहण, केतु मद्धम करे।
3	चंदर	शुक्कर, सनीचर, मंगल, बृहस्पत	सनीचर, बुध, राहु	मद्धम करे, केतु ग्रहण करे।
4	शुक्कर	मंगल, बृहस्पत	सनीचर, बुध, केतु	सूरज, चंदर, राहु
5	मंगल	राहु नदारद, सनीचर, शुक्कर	सूरज, चंदर, बृहस्पत	बुध, केतु
6	बुध	सनीचर, केतु, मंगल, बृहस्पत	सूरज, शुक्कर, राहु	चंदर
7	सनीचर	केतु, बृहस्पत	बुध, शुक्कर, राहु	चंदर, सूरज, मंगल
8	राहु	बृहस्पत। चंदर मद्धम होवे।	बुध, सनीचर, केतु	शुक्कर, सूरज, मंगल
9	केतु	बृहस्पत, सनीचर, बुध। सूरज मद्धम होवे।	शुक्कर, राहु	चंदर, मंगल

बृहस्पत जब नं॰ 9 में हो, तो ख़ाली ख़ाना नं॰ 12 का मालिक राहु होगा, लेकिन अगर बृहस्पत नम्बर 9-12 में न हो, तो ख़ाना नम्बर 12 ख़ाली का मालिक बुध (बृहस्पत राहु मुश्तरका मसनूई बुध होगा।) इसी तरह ही जब बुध होवे ख़ाना नं॰ 3 में - ख़ाली ख़ाना नं॰ 6 ख़ाली का मालिक केतु होगा, और जब बुध ख़ाना नं॰ 3-6 में न हो तो ख़ाली ख़ाना नं॰ 6 का मालिक बुध या केतु में से जो भी इस कुण्डली में उम्दा होवे लेंगे। ख़ाली ख़ाना नम्बर 9 का मालिक बृहस्पत और नं॰ 6 ख़ाली का मालिक बुध होगा। बाक़ी ख़ाली ख़ानों के लिए उस ख़ाली राशी नम्बर का मालिक ग्रह (घर का) लेवें।

2) बग़ैर जगाये सोया हुआ ग्रह अगर ख़ुद-ब-ख़ुद जाग उठे, यानि अपना फल देना शुरु कर दे, तो ऐसे जागे हुए ग्रह की आम उम्र (मसलन शुक्कर 3, मंगल 6, केतु 3 वग़ैरह) के आख़िरी साल यानि शुक्कर 2 शादी

के ता'ल्लुक़ में शादी के तीसरे साल हर एक ग्रह का मंदा फल ज़रूर होगा, ख़्वाह वो ग्रह जागे हुए ग्रह के दोस्त हो या दुश्मन। हर अपने बैठा होने वाले घर का फल (अच्छा या बुरा) न देगा, जब तक कि इस घर की मुत'ल्लक़ा तरफ़ या जगह में इस ग्रह की मुत'ल्लक़ा चीज़ न हो।

साथ लाया माल	–	1 – 7 – 4 – 10
वाल्दैनी हाल बचपन	–	9 – 11 – 12
औलाद व बुढ़ापा	–	2 – 3 – 5 – 6
बीमारी, दुख	–	8
100 फीसदी	–	1 – 7 – 4 – 10 साथ लाये ख़जाने।
50 फीसदी	–	3 – 11 – 5 – 9 दूसरों से पावे।
25 फीसदी	–	2 – 6 – 12 रिश्तेदारों से पावे।

चेहरा पर ग्रह

बृहस्पत	नाक, माथा	**बद मंगल**	होंट नीचे का
सूरज	दायाँ डेला	**बुध**	दाँत, नाक का अगला सिरा
चंदर	बायाँ डेला	**सनीचर**	बाल, भौआँ
शुक्कर	रुख़्सारा	**राहु**	ठोडी
नेक मंगल	होंट ऊपर का	**केतु**	कान

किस ग्रह का	कौन ग्रह क़ुर्बानी का बकरा होगा
बृहस्पत	केतु
सूरज	सनीचर के वक़्त शुक्कर बर्बाद
चंदर	दोस्त ग्रह को
शुक्कर	चंदर
मंगल	केतु
बुध	शुक्कर
सनीचर	अपने एजेंटों को
राहु }	ख़ुद अपना आप ही
केतु }	निभायेंगे

बृहस्पत-वीरवार	सूरज निकलने के बाद दिन का पहला हिस्सा।
सूरज- इतवार	दिन के पहले हिस्सा के बाद मगर दोपहर से पहले।
चंदर - सोमवार	चाँदनी रात।
शुक्कर- शुक्करवार	अंधेरी व चानण की दरमियानी अमावस की रात।
मंगल दोनों- मंगलवार	पूरी दोपहर 11 ता 1 बजे तक।
बुध- बुधवार	दोपहर के बाद मगर शाम अंधेरे से पहले 4-5 बजे।
सनीचर- सनीचरवार	काली रात। घनघोर बादल का दिन।
राहु -वीरवार की पक्की शाम	पूरी शाम मगर रात से पहले।
केतु-इतवार की सुबह सादिक़	सुबह सादिक़ मगर सूरज निकलने से पहले।
जन्म वक़्त ग्रह **जन्म दिन का ग्रह** }	ऐसा मिलाव राशीफल का होगा।



टेवे के मुताबिक़ (जब ख़ाना नम्बर एक देकर बमूजब लाल किताब दुरुस्त हो चुका हो) एक फोटो की शक्ल पर 12 दिये हुए ख़ानों में तमाम ग्रह दिये हुए ख़ानों में लिखकर दिमाग़ी ख़ानों के असर के मुताबिक़ टेवा दुरुस्त करें।

बृहस्पत = सूरज शुक्कर – ख़ाली हवाई बृहस्पत।

सूरज = बुध शुक्कर।

चंदर = सूरज बृहस्पत।

शुक्कर = राहु केतु – हवाई ख़्याली शुक्कर।

मंगल = सूरज बुध – मंगल नेक

सूरज सनीचर – " बद

" " – नीच राहु

बुध = राहु बृहस्पत।

सनीचर = शुक्कर बृहस्पत (केतु सुभाओ)

सनीचर = मंगल बुध (राहु मंदा सुभाओ)

राहु = मंगल सनीचर (ऊँच राहु)

केतु = शुक्कर सनीचर (ऊँच केतु)

= चंदर सनीचर (नीच केतु)

		ऋण		उम्र साल	महादशा
फ़क़ीर कुत्ते का पाप	केतु	दरगाही	बदचलनी	48	7
ससुराल का "	राहु	अनजमे का	दग़ा फ़रेब	42	18
जानवरों का "	सनीचर	ज़ालिमाना ऋण	जीव हत्या	36	19
धी - बहन का "	बुध	बहन का	ज़ुबानी धोका	34	17
हक़ीक़ी रिश्तेदार"	मंगल	भाई का	मित्र मार	28	7
कुटुम्भी पाप	शुक्कर	स्त्री	पेट मार	25	20
ख़ुद ज़ाती "	सूरज	ज़ाती ऋण	आक़िबत ख़राब	22	6
माता का "	चंदर	मातृ	नियत बद	24	10
पिता का "	बृहस्पत	पितृ ऋण	श्राप	16	16

जिस ग्रह की जड़ में उसका दुश्मन जब फल बर्बाद कर रहा हो और ख़ुद भी वो ग्रह मंदा हो रहा हो, तो पितृ ऋण होगा।

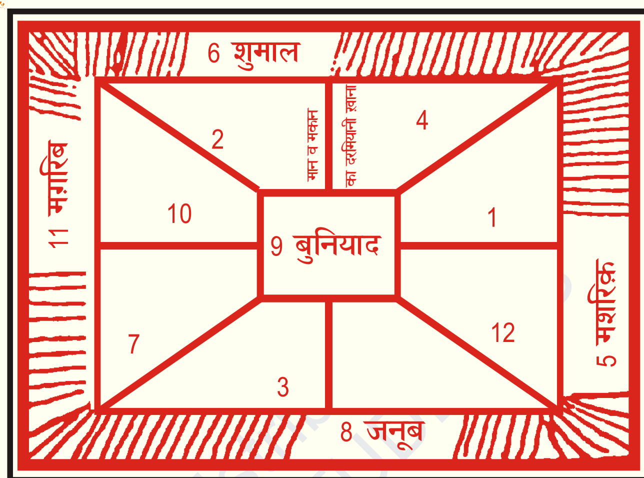
सूरज का असर शुरु होगा : 9 महीने, साल का फ़र्क़।

अमूमन जनम दिन से ग्रहचाल शुरु होगी, या जिस ख़ाना नम्बर में कुण्डली के सूरज हो उसी महीना नम्बर देसी से। बैसाख पहला, जेठ दूसरा असर शुरु होगा।

ख़ाना नम्बर 9 बुनियाद होगी, अगर सूरज ख़ाना नम्बर 9 से ख़ाना नं॰ 10-11-12 की तरफ़ बैठा हो, तो 9 और 12 के दरमियानी घरों के ग्रहों की मियाद जनम दिन से तफ़रीक़ करें (जहाँ सूरज हो)। असर जनम वक़्त से पहले ही शुरु होगा। अगर ख़ाना नं॰ 9 से पहली तरफ़ 8-7-6 ता 1 की तरफ़ हो, तो 9 तक और बैठा होने वाले घर के दरमियानी ग्रहों की मियाद जमा करें - जनम वक़्त में, या इतना अर्सा जनम वक़्त के बाद असर शुरु होगा। मियाद गिनते वक़्त सूरज

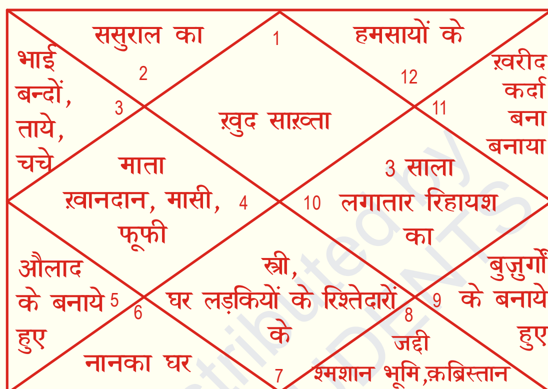
की ख़ुद अपनी मियाद नहीं गिनते, मगर ख़ाना नं० 9 के ग्रह की मियाद शमिल कर लेंगे।

उम्र के सालों को 12 पर तक़्सीम करने पर जो हिन्दसा आवे (यानि $\frac{\text{48 साला उमर}}{12}=4$) $\frac{\text{पहले}}{\text{बाद}}$ दिन असर शुरु होगा, 7 तारीख़ जनम तो 11वें दिन असर शुरु।

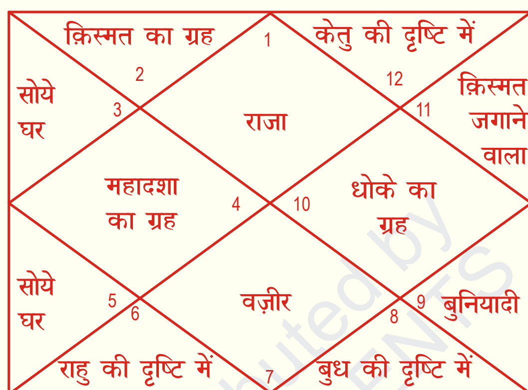


लाल किताब के मुताबिक़ जब ख़ाना नंबर एक लगन को देकर कुण्डली तैयार हो जावे तो मकान कुण्डली में तमाम ग्रहों को नक़्ल कर लें। अब मकान कुण्डली में तमाम तरफ़ें शुमाल, जनूब, मशरिक़, मग़रिब वग़ैरह मुक़र्रर हैं। फ़र्ज़न जनम कुण्डली में सूरज ख़ाना नं० 9 में हो तो मकान कुण्डली में सूरज कुण्डली के वस्त या मरकज़ में लिखा जाएगा, जिसकी दुरुस्ती के लिए इस के जद्दी मकान के मरकज़ में खुला सेहन या सूरज

इंसान की जनम कुण्डली के हर ख़ाने का मकानों से ता'ल्लुक़



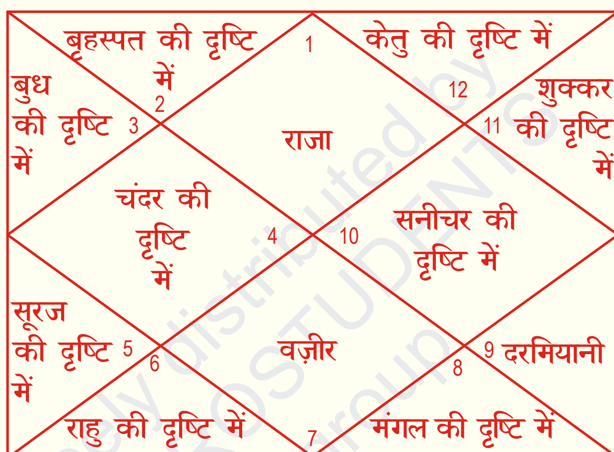
की रोशनी पड़ती होगी। जनम कुण्डली में शुक्कर नं॰ 5 का हो, तो मकान कुण्डली में शुक्कर मशरिक़ की दीवार होगी, जो कच्ची मिट्टी की होगी, या गाय ता'ल्लुक़ मशरिक़ी दीवार के साथ होगा वग़ैरह वग़ैरह सब ग्रहों की चीज़ों होंगी। बचाव सिर्फ़ ये है, कि टेवे में मंदे ग्रह की चीज़ मकान में इस ख़ाना नम्बर (बमूजब मकान कुण्डली) क़ायम न होने देवें, जिसमें कि वो जनम कुण्डली में है।



धोके का ग्रह अपने धोके के साल में जब ख़ाना नम्बर 10 में ही आ जावे, तो पूरा धोका देगा - यानि दोगुना नेक या दोगुना मंदा होगा।

(ii) क़िस्मत का ग्रह ख़ाना नं० 2 का होगा, मगर क़िस्मत साथ लाने का घर बन्द मुट्ठी के ख़ानों की तरतीब से लिया हुआ घर होगा।

उम्र का फ़ैसला सनीचर–बृहस्पत मुश्तरका वाले टेवे के लिए कुण्डली के ख़ाना नम्बर 11 के ग्रह करेंगे।



ऐसे टेवे में दृष्टि व उपाओ वग़ैरह आम टेवे से फ़र्क़पर होंगे, यानि ख़ास–ख़ास ख़ानों में ख़ास–ख़ास ग्रहों की मुक़र्ररा दृष्टि होगी–जिनकी रू से फ़ैसला होगा।

सूरज – जहाँ कि ख़ुद टेवे वाले की अपनी कुण्डली में हो।

बृहस्पत – बाबा

चंदर – माता

शुक्कर – स्त्री

मंगल – भाई बड़ा

बुध – बहन

सनीचर – हमउम्र मगर रिश्ते में फ़र्क़

राहु – ससुराल

केतु – औलाद, लड़का

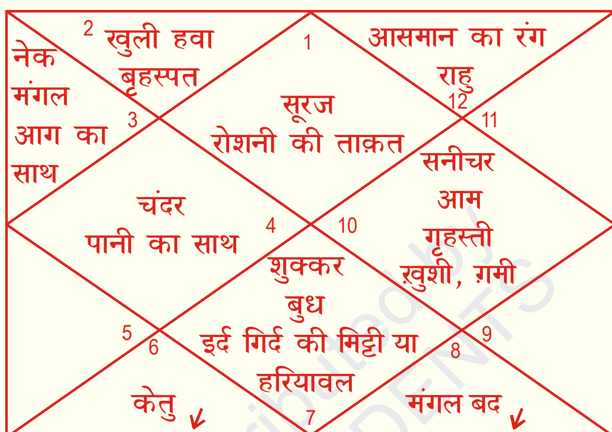
जहाँ कि बाबे की कुण्डली में बृहस्पत लिखा हो, उसी घर में टेवे वाले की कुण्डली में बृहस्पत लिखें। इसी तरह सब रिश्तेदार जो रिश्तेदार न होवें, उन रिश्तेदारों के मुत'ल्लक़ा ग्रह टेवे वाले के अपने ही टेवे के बदस्तूर लेवें।

मुश्तरका असर सात पुश्त तक का होगा, 3 ऊपर, 3 नीचे, दरमियान में सूरज (ख़ुद टेवे वाला)।

एक महीना में जो दिन जितनी दफ़ा आवे, उसी ख़ाना नम्बर में लो। मसलन एक महीना में सोमवार 4 दफ़ा हो, तो चंदर नम्बर 4 का होगा।

लीप के साल में राहु केतु अपने-अपने घर के यानि राहु नं० 6, केतु नं० 12 का होगा, बाक़ी साल राहु नं० 12 केतु नं० 6।

जब कोई ग्रहचाल काम न देवे, और तमाम तरफ़ से मायूसी होवे, तो बुनियादी रुकावट देखने के लिए ये कुण्डली काम देगी, मगर अमूमन नहीं।



आवाज़ या शोर शराबा वालिद या दुश्मन का साथ

ग्रह ताक़त के लिये सूरज $\frac{9}{9}$, बृहस्पत $\frac{6}{9}$ वग़ैरह (बुध के हाल वाली) होगी।

और मकान कुण्डली के कोनों के हिसाब से जनम कुण्डली का ख़ाना मुक़र्रर होगा।

सिर्फ़ उस वक़्त बरतेंगे जब किसी ऐसी जगह जा पहुँचें, जहाँ कि तमाम दुनियावी किताबें, घंटे घड़ियाँ वग़ैरह किसी चीज़ की भी मदद न मिलती हो।

ख़ाना नम्बर	का	ग्रह होगा		जो ग्रह इन
3	"	"	परसू	घरों में होवे
11	"	"	परसा	वही रिश्तेदार
1-5-9	"	"	परस राम	इस हैसियत का होगा।

ख़र्च बचतः-

आमदन देखेंगे अज़ ख़ाना नम्बर 11
ख़र्च " " " " 12

बचत	अज़	बुज़ुर्गी	देखेंगे	अज़	ख़ाना	नम्बर	9
"	"	ज़ाती कमाई	"	"	"	"	2
"	"	औलाद	"	"	"	"	5
साहुकारा	लेन	देन	"	"	"	"	6

चंदर धन, सनीचर ख़ज़ानची, दोनों की हालत जेब की हालत बतायेगी। सनीचर और मंगल जायदाद के मालिक हैं, चंदर बृहस्पत सोना चाँदी की दौलत के मालिक हैं।

शुक्कर क़ायम या शुक्कर के दोस्त मददगार तो औरत की उम्र लम्बी।

बुध क़ायम या बुध के दोस्त इसके मददगार मर्द की उम्र लम्बी।

तादाद शादी :– शुक्कर क़ायम या अपने दोस्तों से मदद लेवे – तो औरत एक ही क़ायम, अगर रद्दी तो तादाद औरत ज़्यादा।

चंदर नं॰ 1, सनीचर नं॰ 7 सूरज नं॰ 4, शुक्कर नं॰ 5	नामर्द होगा।
शुक्कर नं॰ 2 या नं॰ 6 का हर तरह से ख़ाली अज़ दृष्टि नं॰ 8 या नं॰ 2	औरत बाँझ होगी।
शुक्कर केतु नं॰ 1 और बुध नष्ट या शुक्कर बृहस्पत नं॰ 7 और चंदर और मंगल नष्ट	लावल्द होगा।
या सूरज नं॰ 12 या मंगल और बुध साथी हों या दोनों बाहम एक दूसरे के दोस्तों के घरों या राशियों में हो	लावल्द न होगा।
शुक्कर केतु नं॰ 1 और मंगल नं॰ 4 या शुक्कर मंगल बुध नं॰ 3 या पापी में से कोई नं॰ 5, नं॰ 9 मंगल नं॰ 4 या राहु या बुध नं॰ 5, 9 शुक्कर बुध मय राहु या केतु नं॰ 7	औलाद के बिघन ज़रूर होंगे।

मंगल नं० 6 या केतु नं० 8 में हो - औलाद में देरी हो।

सूरज नं० 6, सनीचर नं० 12 - औरत पर औरत मरे।

सूरज नं० 6, मंगल नं० 10-11 - लड़के पर लड़का मरता जावे।

बुध, सूरज, शुक्कर, बृहस्पत, सनीचर
क़ायम, नेक घरों में, या
हर एक का या तमाम उम्दा
} साहिब-ए-औलाद

औलाद का सुख 1-3-5 के घरों की हालत से ज़ाहिर होगा।

3-5-11 में बुध हो तो लड़कियाँ ज़रूर क़ायम होंगी,

3-5-11 (शुक्कर के दोस्त ग्रह / सनीचर-केतु) लड़के ज़रूर क़ायम होंगे।

बमूजब बर्षफल

वक़्त औलाद :-

जब मंगल या शुक्कर या केतु बुध में से कोई तख़्त का मालिक या नं० 1 में आ जावे, या सनीचर भी शामिल हो जावे, या चंदर या नर ग्रह नं० 5 में आ जावें।

पहले घरो	दरमियान में	आख़ीर या बाद के घरों में	क्या असर होगा	
बृहस्पत	–	बुध	बुध के वक़्त से वालिद दुखिया होगा	लड़कियाँ ज़रूर क़ायम
बुध	–	बृहस्पत	या बर्बाद होवे।	
मंगल	बृहस्पत	बुध		
मंगल	बुध	बृहस्पत	नर औलाद क़ायम रहे।	
बृहस्पत	मंगल	बुध		
बृहस्पत	बुध	मंगल	मादा औलाद क़ायम।	
बुध	बृहस्पत	मंगल		
मंगल बृहस्पत	–	बुध	औलाद दोनों क़िस्म और सब सुखिया।	
मंगल बुध	–	बृहस्पत	लड़की क़ायम, वालिद दुखिया।	
बृहस्पत	–	मंगल बुध	– –	
बुध	–	मंगल बृहस्पत	औलाद व वालिद दोनों दुखिया।	
मंगल	–	बुध बृहस्पत	औलाद क़ायम मगर वालिद दुखिया।	

केतु के दौरे या तख़्त की मालकियत के ज़माने में लड़की की पैदायश से क़िस्मत का असर मन्दा मगर इस वक़्त की पैदायश का लड़का एक नायाब क़िस्मत का मालिक होगा। इसी तरह ही बुध के ज़माने की लड़की वग़ैरह सब ग्रहों से बुध व केतु का ता'ल्लुक़ होगा।

शुक्कर या बुध या दोनों से जितने घर दूर पर

बृहस्पत हो- (दरमियानी घरों की तादाद)

लड़के :- शुक्कर के दोस्त ग्रह (सनीचर, केतु, बुध) मगर शुक्कर नहीं,
3-5-11 में हो जावें

बुध या बुध के दोस्त (सूरज, शुक्कर, राहु)
3-5-11 में लड़कियाँ

} जब बमूजब बर्षफल औलाद का वक़्त हो

बृहस्पत	क़ायम	तो सब	औलाद	क़ायम
केतु	"	"	लड़के	"
राहु	"	"	लड़कियाँ	"
चंदर	नं० 6	तो	सब लड़कियाँ	हों।
केतु	नं० 4	"	" लड़के	"

चंदर केतु इकट्ठे- लड़के लड़कियाँ मसावी।

सनीचर जब राहु केतु के ता'ल्लुक़ वाले हिसाब से ज़ाती सुभाओ का नेक असर का साबित हो रहा हो या राहु/केतु के साथ ही बैठा होवे, तो मकानात बनेंगे, जब राहु केतु के साथ तो हो, मगर सुभाओ के पैमाना से बुरे असर का साबित होवे तो बने बनाये बिकवा देगा, या गिरवा देगा। (मंदा असर) होगा।

(तूल जमा अर्ज़ ज़रब 3) मनफ़ी एक तक़्सीम आठ

बाक़ी	बाक़ी
1– राजा, सूरज नं० 1	6– तकिया, सूरज सनीचर नं० 6
2– कुत्ता, बृहस्पत शुक्कर नं० 2	7– हाथी, चंदर शुक्कर नं० 7
3– शेर, मंगल नं० 3	8– सिफ़र, चील मंगल सनीचर नं० 8
4– गधा, चंदर सनीचर नं० 4	
5– गऊ घाट, सूरज नं० 8 बृहस्पत नं० 5	

8, 18, 13, तीन,

बिच्चों चुक्क भुजा बल हीन।

पाँच कोण का मंदिर रचे,

कह बिसकर्मा कैसे बसे।

8 – सनीचर नं० 8। मातम व बीमारी आम होगी।

18 – बृहस्पत का फल रद्दी।

13 – 3 – मंगल बद, भाई बन्दों की मौतों से तबाह।

बिच्चों चुक्क – ख़ानदानी नस्ल लावल्दी की तरफ़ जावे।

भुजा बल हीन – शादी वाला रंडवा या रंडी (बेवा) होवे।

पाँच कोण – औलाद बर्बाद होवे।

दरवाज़ा मशरिक़, मग़रिब और शुमालन दर्जा बदर्जा कम नेक होगा, दकन का मनहूस – जिस पर लोहे की मेख़ें (दहलीज़) या चाँदी (वास्ते क़र्ज़ा व औलाद) मुबारक होंगी। जनम कुण्डली और मकान कुण्डली जब तक एक ही जैसी हों – जनम कुण्डली का फल प्रबल होगा, वर्ना मकान कुण्डली प्रबल होगी। मन्दे ग्रह की चीज़ को मकान में क़ायम न होने देवें।

कोई ग्रह ख़ुद भी मंदा हो और आगे तख़्त की मालकियत से भी दुश्मन आ जावे, तो महादशा में होगा, क़ायम या दुरुस्त ग्रह कभी महादशा में नहीं हो सकते। सारी उम्र में ज़्यादा से ज़्यादा दो मंदी महादशायें होंगी, ज़्यादा से ज़्यादा मन्दा महादशा का अर्सा सारी उम्र में 39 साल होगा। लगातार दो महादशाओं का दरमियानी (हर दो का) साल गिनती में गिना जायेगा, मगर असर में इस ग्रह का ज़ाती असर या ख़ाली असर का होगा।

	महादशा	ज़ाती असर का साल	ग्रह जो सो जाएंगे
बृहस्पत	16	10वाँ	सनीचर 6, राहु 6, केतु 3 साल
सूरज	6	ताक़	मंगल बद - 6 साल
चंदर	10	जुफ़्त	बृहस्पत 2, मंगल 6, सनीचर 2।
शुक्कर	20	11वाँ	बृहस्पत 6 मंगल 6, बुध 2, सनीचर 6
मंगल	7	चौथा	शुक्कर 1, सनीचर 6, राहु सिफ़र।
बुध	17	5वाँ	बृहस्पत 6, मंगल 6, सनीचर 5, केतु सिफ़र।
सनीचर	19	6वाँ	बृहस्पत 16, केतु 3
राहु	18	7वाँ	बृहस्पत 8, सूरज सिफ़र चंदर 1, शुक्कर 3, मंगल 6
केतु	7	तीसरा	बृहस्पत 6, सूरज बुध सनीचर सिफ़र

सिवाय पापी ग्रहों के बाक़ी सब बदस्तूर जारी।

" मंगल बद " " " " "

बुध, शुक्कर, सूरज, राहु, केतु।

सूरज, चंदर, राहु, केतु।

" " बृहस्पत, केतु, बुध। राहु नदारद।

" " शुक्कर, राहु। केतु नदारद।

" " मंगल-बुध, शुक्कर, राहु।

सनीचर, बुध, केतु। सूरज नदारद।

चंदर, शुक्कर, मंगल, राहु। सूरज नदारद। बुध नदारद।

क़िस्मत	1	7	14	21	28	35	42	49	56	63	70	120
उम्र	70	63	56	49	42	35	28	21	14	7	1	120

कुण्डली के ख़ानों में मकान व सेहन का ता'ल्लुक़

अगर घर होवे ख़ाना नम्बर	तो सेहन होगा ख़ाना नम्बर	कौन सेहन का मुंसिफ़ ग्रह होगा
1	7	मंगल
2	8	चंदर (उम्र)
3	11	सूरज बृहस्पत
4	10	चंदर
5	9	बृहस्पत
6	12	केतु
7	1	शुक्कर
8	2	मंगल बद
9	5	सूरज
10	4	सनीचर
11	3	बुध
12	6	राहु

ग़ैबी हालत	क़िस्म ग्रह	नम्बर ग्रह	नाम ग्रह	रंग	उपाओ वास्ते औलाद व दीगर वजूहात	उपाओ आम की चीज़ें
ब्रह्मा	नर ग्रह	1	बृहस्पत	ज़र्द	हरि पूजन	दाल-चना, सोना
विष्णु	"	2	सूरज	गन्दुमी	कथा हरिबन्स	गन्दुम, सुर्ख़-ताँबा
शिवजी	स्त्री ग्रह	3	चंदर	दूध का	अराध्य पूजन	चावल, दूध, चाँदी
लक्ष्मी	"	4	शुक्कर	दही का	लोगों की पालना	घी, दही, काफ़ूर, मोती सफ़ेद, रेत
हनुमान	नर ग्रह	5	मंगल	सुर्ख़	गायत्री पाठ	दाल मसूर-लाल।
दुर्गा जी	मुख़न्नस	6	बुध	सब्ज़	दुर्गा "	मूंग सालम, ज़मुर्रद।
भैरों वली	"	7	सनीचर	स्याह	राजा की उपासना	माश सालम, लोहा।
सरस्वती	"	8	राहु	नीला	कन्या दान	सरसों, नीलम
गऊ माता	"	9	केतु	चितकबरा	दान कपिला गाय	तिल

हर एक उपाओ की मियाद कम अज़ कम 40 दिन और ज़्यादा से ज़्यादा 43 दिन होगी, जो अपनी निस्फ़ और चौथाई हिस्सा मियाद में भी अपना असर ज़ाहिर कर देगा।

ख़ानदानी उपाओ पितृ ऋण, मातृ ऋण वग़ैरह या कुल मुत'ल्लक़ीन की मदद के लिये उपाओ की मियाद होगी तो वही 40 या 43 मगर हर रोज़ लगातार की बजाये हफ़्तावार लगातार होगी, यानि हर आठवें दिन जो 40-43 हफ़्ते होंगे। उपाओ के वक़्त ख़्वाह आख़िरी दिन 39वें-40वें ही भूल जावें, या बन्द कर बैठें तो सब किया कराया निष्फल होगा, और नये सिरे से फिर दोबारा शुरु करके पूरी मियाद तक करने के बाद फल देगा। अगर किसी वजह से उपाओ बंद ही करना दरकार हो, मगर पहला असर भी क़ायम रखना मंज़ूर हो, तो चावल दूध से धोकर अपने पास रखते जावें।

सेहत बीमारीः– सेहत बीमारी ख़ाना नं॰ 3–5 के ग्रहों से ज़ाहिर होगी।

उम्र कितनी होगी

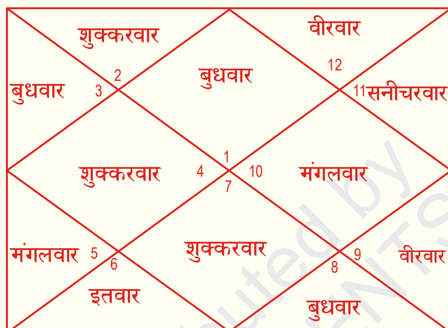
उम्र होगी साल	ग्रह चाल होगी
12 दिन	चंदर नं॰ 5, सूरज नं॰ 10, चंदर केतु नं॰ 6
12 माह	सूरज सनीचर मुश्तरका बृहस्पत के घरों में, जब नर ग्रह साथ या साथी मदद पर न हो।
9 साल	सूरज चंदर मुश्तरका नं॰ 11
10 "	चंदर केतु नं॰ 1
12 "	चंदर नं॰ 5, सूरज नं॰ 11, जब नर ग्रह साथ या साथी या मदद पर न हो।
15 "	चंदर राहु नं॰ 1
20 "	बृहस्पत राहु नं॰ 2 या बुध बृहस्पत नं॰ 6
22 "	सूरज राहु ख़ाना नम्बर 10 या 11 में, जब ख़ाना

उम्र साल	ग्रहचाल होगी
22 जारी मगर नर ग्रह साथ या साथी या मदद पर न हो। वर्ना उम्र लम्बी होगी।	नम्बर 8 में उम्र को रद्दी करने वाले ग्रह हों और साथ ही सूरज राहु मुश्तरका बैठे हों। (i) ख़ाना नम्बर 10 में और सनीचर मय स्त्री ग्रह बैठे हों ख़ाना नम्बर 2 में या (ii) ख़ाना नम्बर 11 में सूरज राहु हों और सनीचर ख़ुद उम्र को रद्दी, मन्दा या नष्ट बर्बाद करने वाले घरों में हो–या वो ख़ुद ही मन्दा हो रहा हो।
25 साल	चंदर–राहु नं० 6 या मंगल बद (मंगल बुध नं० 6 या मय शुक्कर और केतु दोनों नष्ट)
30 "	बुध बृहस्पत नं० 2 या बृहस्पत राहु नं० 3
35 "	चंदर बुध राहु मुश्तरका।
40 "	बृहस्पत राहु नं० 9 या नं० 12
45 "	बुध केतु नं० 12 या बृहस्पत राहु नं० 6
50 "	चंदर राहु नं० 5, बशर्ते कि दोनों हर तरह से

उम्र साल	ग्रह चाल होगी
50 जारी	अकेले और दृष्टि से ख़ाली या नं॰ 2 या नं॰ 7 में मन्दे ग्रह।
70 साल	बृहस्पत केतु नं॰ 9 या सनीचर केतु नं॰ 6 या चंदर सनीचर नं॰ 7।
75 "	चंदर राहु नं॰ 9 या चंदर नं॰ 9
80 "	चंदर बृहस्पत नं॰ 4 या चंदर नम्बर 3 - 6
85 "	चंदर नं॰ 7
90 "	चंदर क़ायम ख़ाना नम्बर 1 - 8 - 10 - 11
95 "	चंदर नं॰ 2 या नं॰ 4

1 90 चंदर या मंगल
2 शुक्कर या चंदर या नर ग्रह -96
3 चंदर या बुध =80
4 85/96 चंदर या नर ग्रह
5 चंदर या सूरज =100
6 चंदर =80 या केतु या बुध
7 96/85 चंदर या शुक्कर
8 90 चंदर या मंगल
9 75 चंदर या बृहस्पत
10 90 चंदर या सनीचर
11 90 चंदर सनीचर
12 90 चंदर राहु बृहस्पत

जब चंदर होवे ख़ाना नं॰ 1 में तो मौत का दिन होगा।



जब ख़ाना नम्बर 12 ख़ाली हो, तो चंदर बैठा होने वाले घर के दिन मौत होगी।

ग्रह की उम्र

बृहस्पत	बुध या केतु	सनीचर या मंगल या राहु	शुक्कर व चंदर
75 साल	80 साल	90 साल	85[A] साल

सूरज पूरी उम्र 100 साल तक।

A – अगर नर ग्रह की मदद हो, तो 96 साल तक।

ख़ाना नम्बरों की उम्र

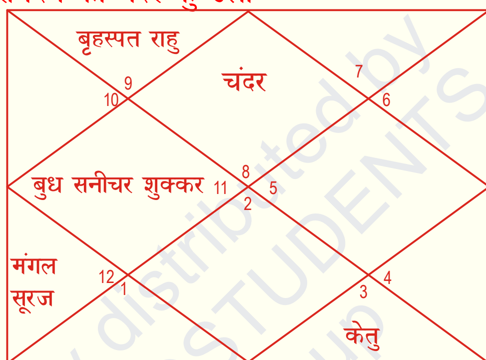
ख़ाने की उम्र	100	75	90	85	औलाद	80	85	मौत	बुढ़ापा	90	धर्म मन्दिर	90
ख़ाना नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

अगर चंदर राहु मुश्तरका होकर किसी भी राशी में हों, तो हर ख़ाना नम्बर में चंदर की दी हुई उम्र के सालों की तादाद निस्फ़ हो जायेगी, मुत'ल्लक़ा मगर ख़ुद उसके अपने ख़ून के रिश्तेदारों के लिये बशर्ते कि ये दोनों मुश्तरका हर तरह से अकेले दृष्टि से ख़ाली हों, अगर कुण्डली के पहले घरों में हों, तो मौत न होवे, मगर क़रीब-उल-मर्ग ज़रूर होगा-बवक़्त चंदर या राहु।

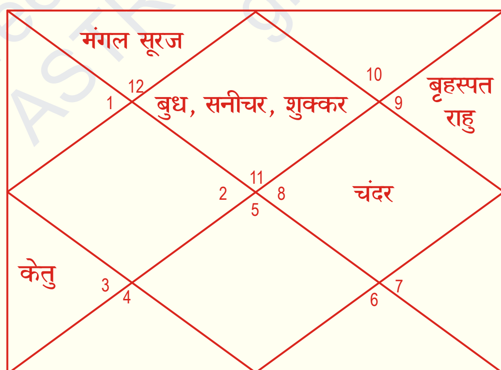
लम्बी उम्रः- (i)चंदर क़ायम और केतु बृहस्पत नं० 12 चंदर बृहस्पत नं० 5 या चंदर और नर ग्रह क़ायम। (ii) मंगल 1-2-7 और सूरज नं० 4 चंदर बृहस्पत नं० 12 उम्र 120 साल।

अल्प आयुः- ख़ाना नम्बर 9 में बुध बृहस्पत शुक्कर या बृहस्पत के बहुत से दुश्मन या चंदर राहु $\frac{\text{ख़ाना नं० 7}}{\text{नं० 8}}$ में या शुक्कर, मंगल, बुध नं० 7 में। उम्र 88= 64 तक।

2 चेत सम्म्त सन् 1992 सनीचरवार बमुक़ाम लाहौर छावनी ख़ास 5 बजे सुबह मुताबिक़ $14\frac{3}{36}$ हो, तो उस दिन की चंदर कुण्डली

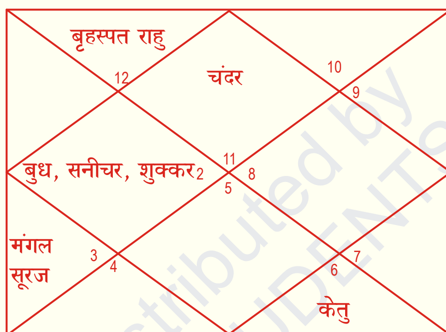


जन्म कुण्डली (कुम्भ लगन)

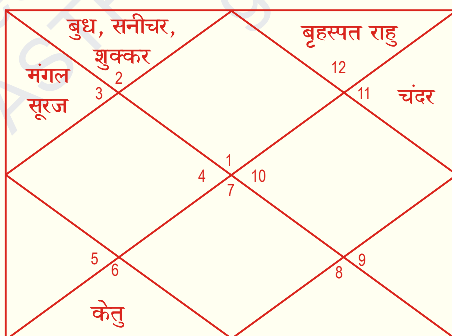


अब लाल किताब के लिये पैदायश के दिन वाली चंदर कुण्डली

में चंदर को जनम लगन की राशी का हिन्दसा, यानि हिन्दसा नम्बर 11 दिया, तो वही चंदर कुण्डली हस्ब ज़ैल होगी।



या हिन्दसा नम्बर एक को अपनी ऊपर की जगह किया, तो लाल किताब के मुताबिक़ चंदर कुण्डली होगी:



अब ऊपर की चंदर कुण्डली से इस शख़्स की औरत का

हाल उसी तरह ही देख लें, जिस तरह कि जनम कुण्डली से मर्द का हाल देखते हैं। बर्ष फल भी उसी हिसाब और ढंग पर होगा, जिस तरह कि जनम-कुण्डली और मर्द का है- फ़र्क़ सिर्फ़ ये है, कि शादी से पहले ऊपर की चंदर-कुण्डली अचानक और सहवन असर दिया करेगी, मगर शादी के दिन या औरत आने पर पूरा पूरा फल देगी, जो औरत का मुफ़स्सिल हाल होगा, और इसी शख़्स को राशीफल बनकर मदद देगी।

इल्म जोतिष के मुताबिक़ बनाई हुई जनम कुण्डली के लगन के ख़ाना नम्बर को एक का हिन्दसा देकर जब कुण्डली बन चुकी, तो मालूम हो जायेगा, कि लगन से हर ग्रह कौन-कौन से घर है, इस तरह बैठे हुये ग्रहों के मुताबिक़ फलादेश देखें, और दिये हुये लगन को तीन दफा हिला कर जाँच कर लें, जहाँ दुरुस्त मालूम होवे, वही पक्का लगन रख लेवें। मसलनः-



मकान कुण्डली बनाई और हर एक ग्रह की मुत'ल्लक़ा

चीज़ों से पड़ताल की, या उसके ख़ून के रिश्तेदारों हर एक से मुत’ल्लक़ा का हाल देखा, तो मालूम हुआ, कि वो दिये हुये टेवे के मुताबिक़ दुरुस्त नहीं है। फिर बृहस्पत को ख़ाना नम्बर 2 या ख़ाना नम्बर 12 दे कर देखा, तो नम्बर 12 में बृहस्पत रख कर बाक़ी सब ग्रहों का फल मिलाया गया, अब तमाम हालात आम उम्र और सालवार वग़ैरह देख लें, सही जवाब होगा।

(ii) ऊपर के ढंग से तो फ़र्क़ सिर्फ़ उस हालत का दुरुस्त होगा, जबकि जनम वक़्त में मामूली फ़र्क़ लिखा गया हो। लेकिन हो सकता है, कि किसी की पैदायश हो तो दरअसल सुबह सवेरे की, मगर ग़लती से लिखी जावे शाम पक्की की, ऐसी हालत में दिये हुये

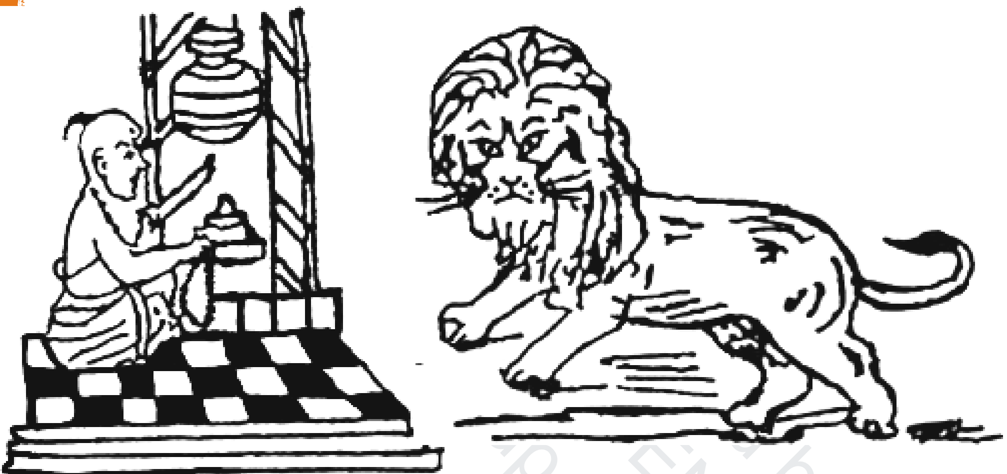
पैदायश के दिन की चंदर कुण्डली बना लें, और चंदरमा बैठा होने वाले घर को ख़ाना नम्बर एक देकर या चंदर को ख़ाना नम्बर एक में करके बाक़ी घरों के ग्रह बातरतीब लिख लें, और देखें कि, हाथ रेखा के असूलों पर कुण्डली बनाने के ढंग से नर ग्रह कहाँ कहाँ मालूम हो रहे हैं, जिस घर कोई एक नर ग्रह भी पूरे तौर पर तसल्ली का मालूम होवे, उसे उस घर में करके बाक़ी सब ग्रहों को बतदरीज लिख देवें। अब लगन सारणी के मुताबिक़ देख लें, कि जनम वक़्त दरअसल क्या हुआ। साथ ही इस तरह पर दुरुस्त किये हुये टेवे का फलादेश बोल कर देख लें, कि आया कापी में लिखा हुआ मिल गया। ग्रह स्पष्टी के लिये

हर ख़्वानावार असर के लिये ऊपर दी हुई चीज़ों, बैठा होने वाले घर की आम मुत'ल्लक़ा चीज़ों व ग्रह मज़कूर की आम चीज़ों का ता'ल्लुक़ भी बोल कर देख लेवें। जब पूरी तसल्ली हो जावे कि मकान कुण्डली के मुताबिक़ भी अब वो टेवा दुरुस्त हो गया है, तो फिर आगे फलादेश देखना शुरु करें।

आशीर्बाद



श्री ब्रह्मा जी महाराज



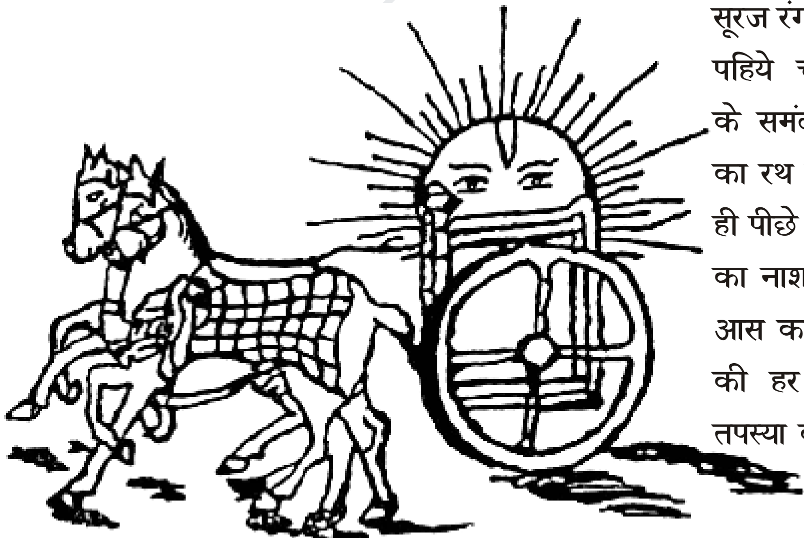
अगर बृहस्पत के ज़र्द रंग ज़माने के शेर ने इन्सानी गुरु के चरणों में सोने (नींद) से दुनिया को सोना(धात) बख़्शा, तो केसर ने दुनिया की मौत सिखलाई।

(केसर की ख़ुराक से ख़ुशी की हद में मदहोशी होती है।)



विष्णु भगवान

सूरज



सूरज रंग गन्दमी, बुध के गोल पहिये चंदर माँ की गोलाई के समंदरी घोड़ों वाला सूरज का रथ न खड़ा हुआ, और न ही पीछे हटा। किरणों से अंधेरे का नाश और कुल ब्रह्मंड की आस का मालिक हुआ। सूरज की हर रोज़ आ जाने की तपस्या की हद मालूम न हुई।

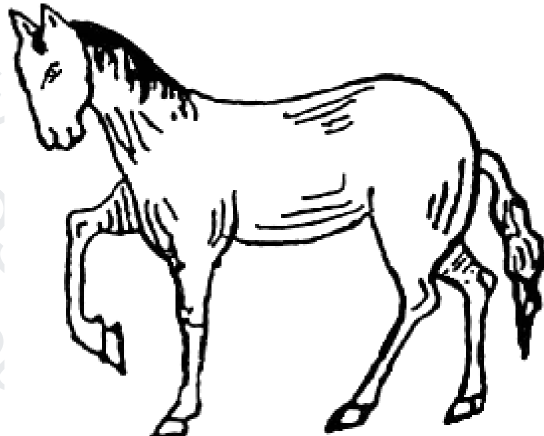
चंदर

शिव जी महाराज



भोले भण्डारी

चंदर का सफ़ेद रंग (दूध) समंदरी व हवाई घोड़ा अपनी ताक़त की ज़्यादती के सबब मैदान-ए-जंग (ख़ाना नम्बर 3) मालिक की मौत ख़ाना नं॰ 8 और ख़ुराक ख़ाना नम्बर 4 में कंकर आने पर दुनिया में तीन दफ़ा जागा। इसी लिए नौ ग्रह व बारह[12] राशी की नौ निधि बारह[12] सिद्धी का मालिक हुआ। (इन्सान की पैदायश नौ महीने, घोड़े की पैदायश बारह[12] महीने)



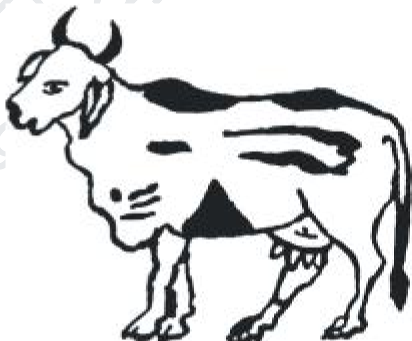
चंदर हमेशा राशीफल का होता है।



श्री लक्ष्मी जी

शुक्कर सफ़ेद रंग (दही का) दुनिया की मिट्टी, ज़माने की लक्ष्मी गऊ माता।मर्द की औरत ने किसी को नीच न किया। इस लिये हर एक ने पसंद किया और नीच किया।





मंगल नेक



मंगल नेक सुर्ख़ रंग नेक होने पर जिस्म में ख़ून, रूह की तरह जंगल में मंगल किया और बद से हर तरह भागा।



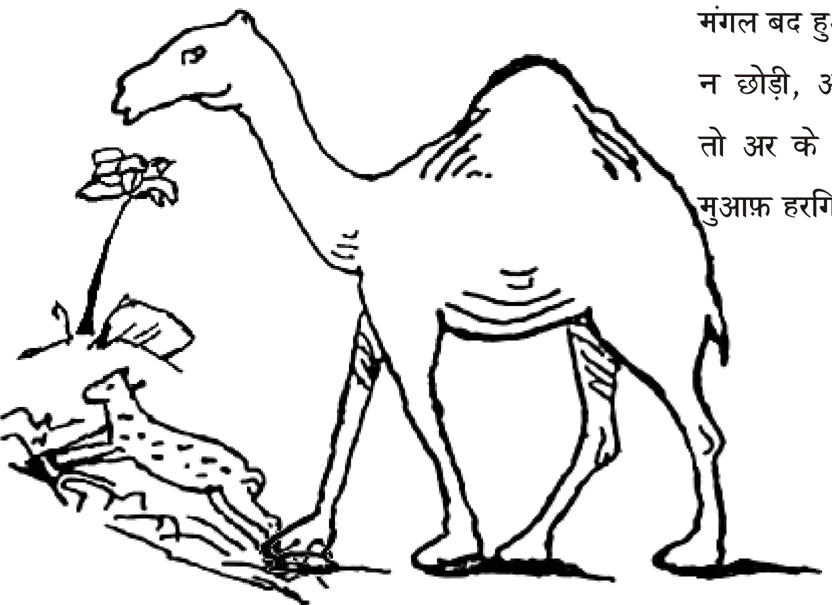


मंगल बद



मौत का नाम नामी यम

शिव जी महाराज

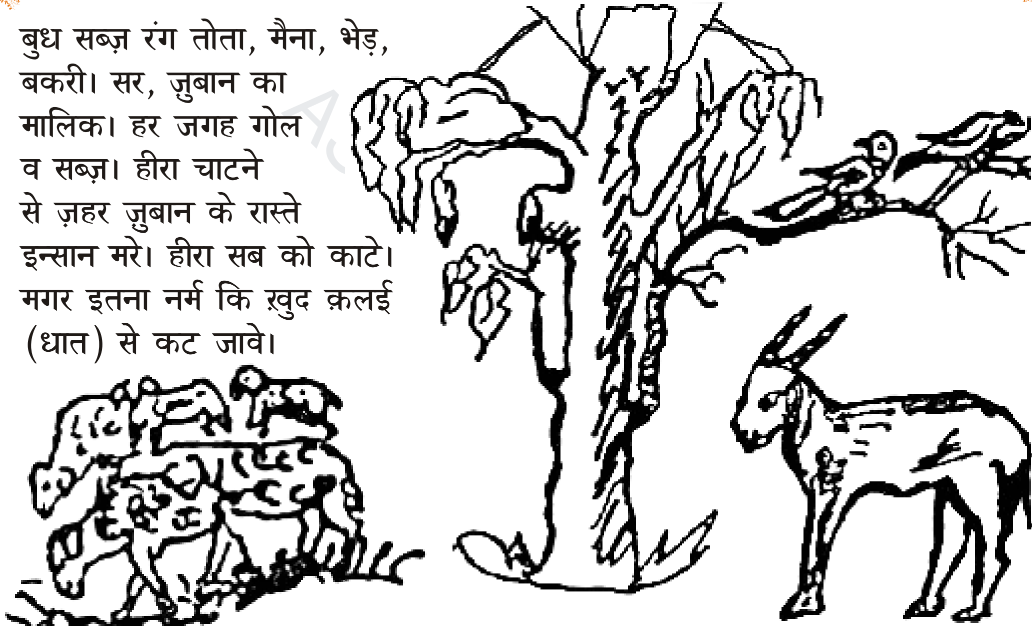


मंगल बद हुआ, तो कोई बदी न छोड़ी, और हर एक को तो अर के घाट उतारे मगर मुआफ़ हरगिज़ न किया।

श्री दुर्गा जी



बुध सब्ज़ रंग तोता, मैना, भेड़, बकरी। सर, ज़ुबान का मालिक। हर जगह गोल व सब्ज़। हीरा चाटने से ज़हर ज़ुबान के रास्ते इन्सान मरे। हीरा सब को काटे। मगर इतना नर्म कि ख़ुद क़लई (धात) से कट जावे।





भैरों वली



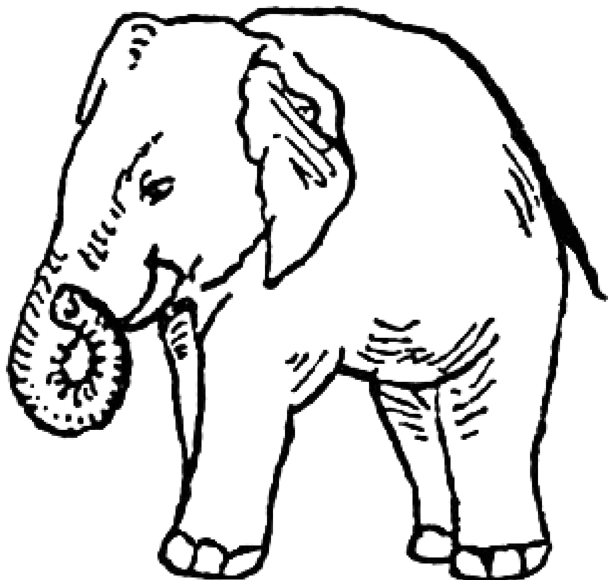
सनीचर स्याह साँप, मौत का यम। ख़ुद उड़े दूसरों को उड़ावे। इच्छ्याधारी तो सब को तारे, काला रंग सब पर चढ़ेमगर काले रंग पर कोई न चढ़े।नेश(डंग) से गणेश होवे। मछली के अंडे मगरमच्छ का पेट। क़बीला बढ़े, उल्ट तो मरे।



सरस्वती जी

राहु– आसमान की चोटी व समंदर की तै दोनों नीले रंग मिला देने वाला मस्त हाथी। ज़िन्दा (नीच) क़ीमत एक लाख, मुर्दा (ऊँच) क़ीमत सवा लाख। जिसका कोई रंग न हो, या जो हर एक रंग में बदल सके।

नक़्शा में नीला रंग होगा।





कुल तारक

गऊ माता का बच्चा

केतु – गोली की जगह आ कर मरने वाला। सूअर, दुनिया की आवाज़ दरगाह में पहुँचाने वाला दरवेश। कुत्ता, मौत के यम की आमद पहले बता देवे। हर रंग में रंग बिरंग। लाल रंग न होगा।



उर्दू, फ़ारसी व पंजाबी भाषा के कठिन शब्दों के सरलार्थ

यह शब्दावली

मेरे परम मित्र

दिल्ली निवासी

श्री अनिल भारद्वाज जी

को समर्पित है।

नोट : यह अध्याय मूल पुस्तक का हिस्सा नहीं है।

उर्दू, फ़ारसी के कठिन शब्दों के सरलार्थ

अध्यारा – आधा हिस्सा	आमद – आना
अय्याम – ए – गर्दिश – कालचक्र	आबिद – भक्त
अय्यारी – चालाकी /मक्कारी	आदिल – न्यायशील
अय्यालदार – परिवार वाला	आक़िबत – भविष्य
अबरू – भौंह	आक़िल – बुद्धिमान
अब्र – बादल	आतिफ़त – कृपा, दया
अक्स – परछाई	आतिश – ख़ेज़ – ज्वालामुखी
अमूमन – अक्सर	आतिशी मादा – लावा
अमल – दरआमद – अनुसरण	आजिज़ – विनम्र
अशिया – चीज़ें	आजिज़ी – विनम्रता
अहमक़ – मूर्ख	आलिम – विद्वान
अहद – ज़माना, युग	आहज़ारी – चीख़ – पुकार
अहवाल – हवाले (Refrences)	टाहली – शीशम
अहल – ए – क़लम – लेखक	आरायश – सजावट
आँकस – अंकुश	आशीर्बाद – आशीर्वाद
आफ़ताब – सूरज	आसूदा – ख़ुशहाल
आई – चलाई – गुज़ारा, निर्वाह	आज़ार – दुखी

आग़ाज़ – आरम्भ	इबादतगार – पूजा – पाठी
आज़ुर्दा – दुखी, नाराज़	इशारतन – संकेतों में
आल – औलाद – संतान, वंश	इस्म – संज्ञा
आलम – दुनिया	इस्क़ात हम्ल – गर्भपात
आली मर्तबा – उच्च पदवी	इस्तक़लाल – दृढ़ता, मज़बूती
अस्थापन – स्थापन	इक़बालमन्द – प्रतापवान
अस्थान – स्थान	इत्तफ़ाक़ – एकता
असाढ़ – आषाढ़	इन्तेहा – अन्त
असूज – आसूज	इल्म – ज्ञान
अदम मौजूदगी – अनुपस्थिति	इल्म क्याफ़ा – शक्ल – सूरत से
अदल – न्याय	संबंधित ज्ञान
अज़ – से (from)	इल्म मकानात – मकानों संबंधित
अक़ीदा – विश्वास	ज्ञान
अज़दहा – अजगर	इल्म रियाज़ी – गणित का ज्ञान
अव्वल – प्रथम	इल्म तिलिस्मात – जादूगरी का ज्ञान
अज़ल – मृत्यु	इल्लत – शरारत
अनजम्मा – अजन्मा	ईजाद – आविष्कार
अर्ज़ – प्रार्थना	उक्खल – मंदबुद्धि
अरज़ – चौड़ाई	उपाओ – उपाय
इबादत – भक्ति	ऊर्ध – ऊर्धव

एहतलाम – स्वपन दोष	**कसर** – एक से कम की संख्या
एतक़ाद – निश्चय/विश्वास	**कुर्राह हवाई** – हवा का गोला
ऐश – ओ – इशरत – ऐश्वर्य	**कुशादा** – चौड़ा
ऐवज़ – बदले में	**कुनबा परवर** – परिवार पालने
ऐज़न – ऊपर लिखित	वाला
कंसी – काँसी	**कैफ़ियत** – स्थिति
कीमियागर – रासायनकार	**कत्तक** – कार्तिक
कीली – हत्था, हैंडिल	**कलजुग** – कलयुग
काँ – कौआ	**कल्लर** – बंजर
कातिब – लिपिक(Calligrapher)	**क्याफ़ा** – इंसान का चेहरा – मोहरा
काफ़ूर – कर्पूर	**क़िस्सा कोताह** – संक्षेप में
कामधेन – कामधेनु	**क़िल्लत** – कमी
काफ़िर – बेदीन, नास्तिक	**क़ाबिल – ए – ऐतबार** – विश्वासयोग्य
कारकुन – नौकर, सेवक	**क़ाबिल – ए – मातम** – दु:ख के
कारआमद – उपयुक्त	योग्य
कैफ़ियत – हालत	**क़लई** – एक धातु
काश्त – खेती	**क़रीब – उल – मर्ग** – मरणासन्न
कोठा/कोठे – मकान	**क़ौस – ओ – क़ज़ाह** – इंद्रधनुष
कोहसार – पहाड़ी इलाक़ा	**क़द क़दामत** – क़द क़ाठ
कसीफ़ – गंदा	**क़ज़ाक़** – डाक

क़ुव्वत – शक्ति	ख़्वाहिश – इच्छा
खौंसड़े – जूते	ख़्वाहिश – ए – बद – बुरी इच्छा
खूह – कुआँ	ख़्वाहिशात – इच्छायें
ख़राज – कर/टैक्स	ख़्वाह – चाहे
ख़ाविन्द – पति	ख़्वार – बदनाम
ख़ालू – मौसा	ख़्वैश – ओ – अक़ारिब- भाई – बन्धु
ख़ौफ़ – ओ – ख़दशा – भय और	गर्दिश – चक्कर
आशंका	गाँ – गाय
ख़स्सी – नपुंसक	गाचनी – मुल्तानी मिट्टी
ख़स्लत – स्वभाव	गोशा – हिस्सा
ख़ुश – गुज़रान – सुखद निर्वाह	गोआई – बोलने की शक्ति
ख़ुद रौ – अपने आप	गुफ़त/गुफ़्तार – बातचीत
ख़ुद साख़्ता – स्वयं बनाया हुआ	गुमटे – फुन्सियाँ
ख़ुदा परस्त – भगवान को मानने	गुरबा – मसकीन – भोली बिल्ली
वाला	गुर्ग – भेड़िया
ख़ुदग़र्ज़ – स्वार्थी	गन्दुम – गेहूँ
ख़ुलास्तन – विवरण सहित	गिटक/गिटग – गुठली
ख़त – लकीर	गिल्ट – एक धातु
ख़तूत – लकीरें	ग्रहमण्ड – ग्रहमण्डल
ख़ल्क़ – समस्त मानव जाति	ग़ालिब – हावी

ग़रब – पश्चिम	जाविदानी – स्थाई
ग़ैरमुबारिक – अशुभ	जानिब – तरफ़
ग़ार – गढ़ा/गुफा	जंग – ओ – जदल – युद्ध
ग़ारत – तबाही	जद्दी – पैत्रिक
ग़ैबी – ईश्वरीय	जराह – सर्जन
ग़नीम – लुटेरा	जुफ़्त – जोड़ा
ग़ल्बा – प्रबलता	जुज़ – हिस्सा
घंडी – कंठ	जुज़्वी – मामूली
चक्क घुमाराँ – कुम्हार का चक्का	जेठ – ज्येष्ठ
चहार – चार	जनूब – दक्षिण
चिकड़ी – तालाब की मिट्टी	ज़रुरियात – आवश्यकताएँ
चरी – हरी ज्वार	ज़मुर्रद – पन्ना
चौकाठ – चौगाठ	ज़ाती – निजी
चानण – चाँदनी	ज़न मुरीद – पत्नीभक्त
चेत्र/चेत – चैत्र	ज़नाह – व्यभिचारी
चलो – चली – निरंतरता	ज़ानी – व्यभिचारी
छिला/छिले – प्रस्व के बाद के	ज़हालत – निरक्षरता
40 दिन	ज़ेहमत – मुसीबत
छत्ताँ – छत पर/छतें	ज़ेर – ए – साया – शरणागत
जाँ – बहक़ – जान गंवाना	ज़ेरबार – अधीन

ज़र – धन	**टटरी** – गंजापन
ज़र – सीम – सोना – चाँदी	**टलदा** – टलता
ज़र – ओ – माल – धन – दौलत	**टिपड़ा** – जन्म कुण्डली
ज़रब – गुणा	**डेक** – नीम जैसा एक वृक्ष
ज़र्द – पीला	**डेला** – आँख की पुतली
ज़वाल – पतन	**डली** – छोटा टुकड़ा
ज़रायत – कृषि	**तफ़रीक़** – घटाव (Subtract)
ज़ायल – व्यर्थ जाने वाला	**तक़्सीम** – भाग
ज़ाहिरा – प्रत्यक्ष	**तंज़ीम** – संस्था
ज़ाहिरदारी – दिखावा	**तंग दस्त** – ग़रीब/कंगाल
ज़लील – नीच	**तबाहकुन** – विनाशकारी
ज़लील – ओ – ख़्वार – घटिया	**तमहीद** – भूमिका
और बदनाम	**तकिया मुसाफ़िर** – मुसाफ़िरख़ाना
झोला – शरीर हिलने की पालसी	**तहरीर** – लिखाई
नामक बीमारी	**तहरीरी** – लिखित
झूट – झूठ	**तपदिक़** – तपैदिक़
झूटा – झूठा	**तरतीब** – क्रम
टुणिया तोता – छोटे आकार का	**तरजीह** – प्राथमिकता
सफ़ेद तोता	**ता'ल्लुक़** – संबंध
टटीहरी – एक पक्षी	**ताबयदार** – अधीन

ताकी – खिड़की	**तड़ागी** – छोटे बच्चों की कमर
तामील – अमल करना	पर बाँधने वाला काला धागा
ताजिर – व्यापारी	**तख़्त हज़ारी** – राज सिंहासन
तासीर – परिणाम	**तनूर** – तंदूर
तादाद – संख्या	**तूल** – लंबाई
ताक़ – वो संख्या जो दो से	**तिलियर** – एक छोटा परिन्दा
विभाजित न हो सके	**तिलिस्म** – जादू
तोहमत – आरोप	**तिलिस्मी** – जादूई
तालीम – शिक्षा	**तिजारत** – व्यापार
तसानीफ़ – लिखित रचनायें	**तिलस्मित** – जादूगरी
तदबीर – युक्ति	**दफ़निया** – गड़ा हुआ धन
तक़ब्बुर – घमंडी	**दकन** – दक्षिण
तवील – विस्तृत	**दलिद्दर** – दरिद्र
तक़दीर – भाग्य	**दहाना** – छेद
तवेला – अस्तबल	**दीवानख़ाना** – बैठक
तवेला ख़राँ – गधों का अस्तबल	**दीवानगी** – पागलपन
तुंद – तेज़ धार	**दीगर** – अन्य
तुख़्म – बीज	**दीगर – गूँ** – तहस – नहस
तेग़ – तलवार	**दरकार** – वाँछित
तनासुब – परस्पर, संबंधित होना	**दरपनाह** – शरणागत

दरगाही – ईश्वरीय

दादका – दादे के ख़ानदान से संबंधित

दोइम – द्वितीय

दोहती – बेटी का पुत्री

दोहता – बेटी का पुत्र

दोज़ख़ – नर्क

दुश्मनाना – शत्रुतापूर्ण

देर – पा – स्थाई

दिलावर – बहादुर

दिलदादा – इच्छुक

धी – बेटी

धोका – धोखा

धुन्नी – नाभि

धनाड – धनाड्य

न्यासरी – जो किसी के काम न आवे

नफ़ा – लाभ

नक़्क़ारा – नगाड़ा

न्होराता – आधा अंधा

नीज़ – इसके अतिरिक्त, Further

नायाब – दुर्लभ

नाहक़ – अकारण

नाक़ाबिल – अयोग्य

नच्छत्तर – नक्षत्र

नुत्फ़ा – वीर्य

नेक नसीब – सौभाग्यवान

नेक – तालाह – भद्र

नेकी – फ़रामोश – नेकी भुला देने वाला

नेकोई / निकोई – नेकी

नूँह – पुत्रवधु

नानका – ननिहाल

निमाणी – दीन

निस्फ़ – आधा

निगहबान – रक्षक

नागबल – नागपाश

नागहानी – अकस्मात

पंघूड़ा – हिंडोला

पद्म – कमल

परिन्दा – पक्षी	**पैवंदी** – कलमी
परिवार – कुटुम्भ / दायरा	**पत्तण** – किनारा
पीराना साल – वयोवृद्ध	**पलाह** – पलाश / ढाक का वृक्ष
परहेज़गार – सदाचारी	**पिस्तान** – स्त्री के वक्ष – स्थल
परलै / परलौ – प्रलय	**फोका / फोकी** – ख़ाली
पाण्डू – चिकनी मिट्टी	**फूफी** – शादीशुदा बुआ
पाँच कल्याणी – सफ़ेद माथे वाली	**फलाही** – जंडी / शम्मी का वृक्ष
पौड़ियाँ – सीढ़ियाँ	**फिंसी** – फुन्सी
पोह – पौष	**फ़य्याज़** – दरियादिल
पोशीदा – गुप्त	**फ़ारिग़ उलबाल** – धन की चिन्ता
पुरदर्द – दर्दनाक	से मुक्त
पुरज़ोर – ज़ोरदार	**फ़र्ज़ी** – नकली
पुश्त-ए-पा – पाँव के ऊपर का	**फ़र्ज़न** – मान लो (Suppose)
हिस्सा	**फ़तेह** – विजय
पुड़पुड़ी – कनपटी	**फ़तूर** – शरारत
पुत्त – पुत्र	**फ़ेहरिस्त** – सूची
पैरोकार – अनुयाई	**फ़ैसलाकुन** – निर्णायक
पेरी – उंगली की गाँठों के मध्य	**फ़ज़्ल-ए-इलाही** – भगवान की
का हिस्सा	कृपा
पेशानी – माथा	**फ़िक्र-ओ-ग़म** – चिंता व दु:ख

बर्ष – वर्ष

बरुए – के हवाले से

ब्योपार – व्यापार

ब्योपारी – व्यापारी

बृख – वृष

बृस्चक – वृश्चिक

बमुक़ाम – के स्थान पर

बमूजब – के अनुसार

बहिश्त – स्वर्ग

बदियाँ – बुराईयाँ

बहबूदा – भलाई

बहर – ए – फ़ना – संसार

बहैसियत – बतौर हैसियत

बीनाई – नज़र

बरख़िलाफ़ – विरुद्ध

बरेती – बारीक़ रेत

बा – इक़बाल – प्रभावशाली

बाइस – कारण

बाइस – ए – मौत – मौत का कारण

बाइस – ए – तबाही – तबाही का कारण

बाइस – ए – ख़राबी – ख़राबी का कारण

बाइस – ए – ख़ुदकशी – आत्महत्या का कारण

बाइस – ए – नुक़्सान – हानि का कारण

बाबा – दादा

बाकमाल – कमाल का

बाह – काम

बाहम – परस्पर / आपस में

बशर – इंसान

बारौनक – चहल – पहल युक्त

बादअज़ाँ – कई बार

बातनी – अप्रत्यक्ष

बोदी – चोटी

बोता – ऊँट का बच्चा

बाआमदन – कमाई वाला

बाओ – बगूला – चक्रवात

प्रालभ्त – प्रारब्ध	**बैरूनी** – बाहरी
बालाई आमदन – रिश्वत/ऊपर	**बेबहरा** – वंचित
की कमाई	**बेमायनी** – व्यर्थ
बस्यार – अधिक	**बेमुहार** – अनियंत्रित
बसद – अधिक	**बैसाख** – वैशाख
बद – बुरा/बुरी	**बेवा** – विध्वा
बद दयानती – बेईमानी	**बेआबाद** – निर्जन
बदफ़ेअल – बदचलन	**बजुज़** – सिवाय
बदकिरदार – बदचरित्र	**बख़्शीश** – क्षमा/दान
बदी – बुराई	**बला–ए–बद** – बुरी आफ़त
बदस्तूर – क़ायदे के अनुसार	**ब्रह्मंड** – ब्रह्मॉंड
बदख़ोई – निन्दा	**ब्रह्मशनास** – ईश्वर को जानने वाला
बवक़्त – समय पर	**बिघन** – विघ्न
बज़रिया – के द्वारा	**बिखड़े** – अलग हुए
बज़ाज़ी – कपड़े का व्यापार	**बिक्रमाजीत** – विक्रमादित्य
बुज़ – बकरी	**बिल्मुक़ाबिल** – आमने–सामने
बुलन्द इक़बाल – उच्च प्रभाव	**बिला** – बिना/बग़ैर
वाला	**बिलतरतीब** – क्रमानुसार
बुलन्द मर्तबा – ऊँच पद वाला	**भाख्या** – वचन
बतदरीज – क्रमश:	**भादों** – भाद्रपद

भौंचाल – भूकंप	**मीज़ान** – जोड़
भोडी – सींग रहित	**मरकज़** – केंद्र
भौआँ – भवें	**मरातब** – पदवियाँ
भाओ – भाव	**माया** – धन
भनोईये – बहनोई	**माखन माझा** – भैंस के दूध का
भटूर – जली हुई मिट्टी	मक्खन
भूआ – बुआ	**मार्फ़त** – द्वारा
भिच्छिआ – भिक्षा	**मशरिक़** – पूर्व
भिड़ – ततैया	**मानिन्द** – जैसे
मय – सहित	**मालिख़ौलिया** – मानसिक रोगी
मंज़िलत – आदर, सम्मान	**मारचश्मा** – साँप जैसी आँख वाला
मंदर्जा ज़ैल – निम्नलिखित	**माश सालम** – साबुत उड़द
ममनून – शुक्रगुज़ार	**माज़ी** – भूतकाल
मलिक – उल – मलूक़ – कई देशों	**माक़ूल** – अनुकूल
का राजा	**मातम** – शोक
महरूम – वंचित	**मातहत** – अधीन
महदूद – सीमित	**मातहती** – अधीनगी
महक़माना – विभागीय	**मौक़ूफ़ी** – नौकरी से निलंबन आदि
महवर – केंद्र	**मौलूद** – नवजात
मींह – वर्षा	**माड़ा** – बुरा

माल – ओ – ज़र – धन – दौलत	**मुस्तक़बिल** – भविष्य
मालूल – शरारत का परिणाम	**मुक़र्ररी** – निश्चित
मसकीन – भोला भाला	**मुवाफ़िक़त** – बराबरी
मसावी – बराबर	**मुर्ग़ – आबी** – जल मुर्गी
मसनूई – कृत्रिम	**मुत’ल्लक़ीन** – संबंधी
मसलन – उदाहरणत:	**मुत’ल्लक़ा** – संबंधित
मसल्लस – त्रिकोण	**मुतफ़र्क़ा** – अलग, पृथक
मग़रूर – घमंडी	**मुतबन्ना** – दत्तक – पुत्र
मज़बूत तबा – हृष्ट – पुष्ट	**मुश्तरका** – साँझी
मज़कूर – वर्णन में	**मुतसद्दी** – अहलकार, Deputy
मज़कूरा – वर्णन अधीन	**मुतक़ब्बर** – घमंडी
मग़रिब – पश्चिम	**मुंसिफ़ मिजाज़** – इन्साफ़ पसन्द
मवेशी – पशु	**मुख़ालिफ़त** – विरोध
मर्ज़ – बीमारी	**मुख़न्नस** – ख़ुसरा / हिजड़ा
मुफ़लिस – निर्धन	**मुख़्तसरन** – संक्षेप में
मुफ़स्सल – विवरण	**मुआविन** – सहायक
मुबारिक – शुभ	**मुअत्तर** – सुगंधित
मुबतदी – सहायक	**मुलम्मा** – कृत्रिम चमक
मुरब्बा – चौरस	**मुलाहिज़ा** – निरीक्षण
मुसतस्ना – विलक्षण	**मुलाज़िमत** – नौकरी

मर्तबा – पदवी	**रंज ओ ग़म** – अफ़सोस और दु:ख
मिन्नतकश – अहसानमंद	**रंजीदा** – दुखी
मेख – मेष	**रब्ब** – ईश्वर
मेंडक – मेंढक	**रहनुमा** – मार्गदर्शक
मेख़/मेखा – कील/कीलें	**रद्दी** – निकम्मा
मजमूआ – संग्रह	**राहज़न** – लुटेरा
मनफ़ी – घटाव	**रश्क़** – ईर्ष्या
मनी बीरज – वीर्य	**रग़बत** – इच्छा, रुचि
मनसबी – उच्च पद से संबंधित	**रतूबत** – नमी, सीलन
मनसूख़ – स्थगित	**रियाया/रय्यत** – प्रजा
मनतक़ी – तर्कसंगत	**रियाज़ी** – गणित
मनूर – काला पत्थर	**रिज़्क़** – आजीविका
मूजब – कारण	**रुख़्सारा** – कपोल
मग्घर – मार्गशीष	**रूह बुत** – आत्मा – शरीरक
मिस्ल – के समान	**रूहानी** – आत्मिक
यक – एक	**रूस्याह** – निर्लज
यकसाँ – एक समान	**लम्हा** – पल
यकतरफ़ – एक तरफ़	**लीमू** – नींबू
यग – यज्ञ	**ला'ल** – एक क़ीमती पत्थर
रफ़ा-ए-आम – लोक कल्याण	**लाहासिल** – बेनतीजा

लासानी – विलक्षण	**शुमाल** – उत्तर
लावल्द – संतान हीन	**शुतर** – ऊँट
लोह – **लंगर** – भोजन व्यवस्था	**शख़्स** – व्यक्ति
लालड़ी – रत्ती, घुँघची	**शिफ़ा** – अरोग्यता
लसन – लहसुन जैसानिशान	**शिकस्त** – हार
वक़्त आइंदा – भविष्यकाल	**सिफ़्त** – ख़ूबी
वालिये तख़्त – सत्ता का मालिक	**सिफ़र** – शून्य
वजूहात – कारण	**सिफ़ात** – ख़ूबियाँ
वजूद – अस्तित्व	**सिंघासन** – सिंहासन
वली – मालिक	**सिदफ़** – सीपी
वाँ – वहाँ	**स्याह** – काला
वाक़्यात – घटनायें	**स्याह बख़्त** – मंदभाग
वालिद – पिता	**स्याही** – कालिख
वाल्दैन – माता – पिता	**संख** – शंख
वस्त – केंद्र	**संखिया** – Arsenic
शहवत – काम वासना	**सबब** – कारण
शरीफ़ – उल – नजफ़ – नेक	**सब्ज़** – हरा
माता – पिता की संतान	**सब्ज़क़दमा** – मनहूस
शाहाना – राजसी	**सब्ज़े** – वनस्पति
शारह – **आम** – आम रास्ता	**सम्मत** – सम्वत

सहवन – अकस्मात

सीप – सीपी

सरसब्ज़ – हरा – भरा

सरसाम – सन्निपात नामक मस्तिष्क का रोग

सरग़ना – मुखिया

साकिन – निवासी

साहिब – ए – इक़बाल – प्रतापी

साहिब – ए – इल्म – शिक्षावान

साहिब – ए – कमाल – कमाल का

साहिब – ए – हुकूमत – सत्तावान

साहिब – ए – तसानीफ़ – ग्रंथों का रचयिता

साहिब – ए – तदबीर – कर्मयोगी

साहिब – ए – अक़्ल – बुद्धिमान

साहिब – ए – औलाद – संतानवान

सादिर – जारी करना

सावन – श्रावन

सोइम – तृतीय

सोहबत – संगत

सदमात – सदमे

सुबह सादिक़ – ऊषा काल

सुब्भर – शादी के वक़्त दुल्हन को पहनाया जाने वाला एक वस्त्र

सुभाओ – स्वभाव

सुर्ख़ – लाल

सुलहकुल – समझौता – पसंद

सत्जुग – सतियुग

सतून – स्तम्भ

सेहत अफ़्ज़ा – स्वस्थ

सेहन – आँगन

सेराब – पानी से भरा हुआ

सैलानी – यात्री

सजदा – प्रणाम

सख़ी – दानवीर

सख़ी सरवर – दानी दयालु

सूई – प्रसूता

सग – कुत्ता

स्त्राप – अभिशाप

हर्फ़ – शब्द

हमराही – साथी

हमसाया – पड़ोसी

हमउम्र – समान उम्र का

हमवज़न – वज़न के बराबर

हमचू – समान, भांति

हमअसर – समान प्रभाव

हाकिम – शासक

हस्ब हैसियत – हैसियत अनुसार

हस्ब ज़ैल – निम्नलिखित

हसद – ईर्ष्या

हक़ीक़ी – असली

हवा – ए – बद – बुरी हवा

हुक्मरान – शासक

हुकूमत – शासन

हुमा – एक पंछी जिसके बारे में कहा जाता है कि इसकी छाया मात्र पड़ जाने से ही कोई भी मनुष्य सम्राट बन जाता है।

हजूम – भीड़

हड़काया – पागल

हल्फ़ – शपथ

हिक़मत – चिकित्सा

हिन्दसा – अंक

हमारे पण्डित जी

लाल किताब ज्योतिष के रचयिता पंडित रूप चंद जोशी जी का जन्म 18 जनवरी, 1898 को जालंधर (पंजाब) के फ़रवाला गांव में हुआ। इन के पिता का नाम था पं० ज्योति राम जोशी जो पंजाब रैवेन्यू विभाग के लिए काम करते थे व खेती की ज़मीन के भी मालिक थे। बचपन में ही पं० रूप चंद की माता का देहांत हो गया। घर में सब से बड़ा भाई होने की वजह से परिवार को संभालने का काम उन पर आ पड़ा। पं० रूप चंद जी का बचपन काफ़ी कठिनाई में गुज़रा। उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था। उन की उर्दू की लिखाई बहुत ही सुन्दर थी और उर्दू भाषा पर भी अच्छा अधिकार था। शिक्षा उर्दू, फ़ारसी व अंग्रेज़ी में हुई।

उस समय के पंजाब में हिंदी भाषा ज़्यादातर हिंदू औरतें ही पढ़ा करती थीं, पुरुष प्रायः उर्दू व अंग्रेज़ी ज़्यादा, और हिंदी कम पढ़ते थे, इस की वजह थी सरकारी काम काज का उर्दू व अंग्रेज़ी मे होना। उर्दू हर कोई पढ़ता लिखता था, यह आम आदमी की भाषा थी। यही वजह है कि लाल किताब उर्दू में लिखी गई ताकि आम आदमी इसे पढ़ सके। क्यों कि ज़्यादा पढ़े लिखे लोग फ़ारसी भी जानते थे, इस लिए कहीं कहीं फ़ारसी के शब्द भी लाल किताब में इस्तेमाल किए गए।

पं० रूप चंद जी ने चौथी व आठवीं कक्षा में वज़ीफ़े की परीक्षाएं पास कीं जो उन दिनों में बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। इस के लगभग सत्तर साल बाद भी पं० जी ने मुझे इसके बारे में बहुत गर्व से बताया। पं० जी

ने अच्छे अंकों से मैट्रिक की परीक्षा पास की। इस के बाद वे कुछ दिन एक स्कूल मे भी पढ़ाते रहे व बाद में अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा ज्ञान होने की वजह से उन्हें भारत की डिफ़ैंस एकाऊंट्स सर्विस में सरकारी नौकरी मिल गई जिस के कारण वे लाहौर, धर्मशाला, बम्बई, मद्रास, अंबाला छावनी, शिमला व अन्य कई स्थानों मे रहे व गज़ेटिड पदवी तक पहुंच कर रिटायर हुए।

पं० जी की बचपन से ही प्रखर बुद्धि थी, इस के अतिरिक्त उन में कुछ ऐसी विशेषता थी कि बचपन में वे मवेशियों के माथे को देख कर उन के मालिकों के बारे में कई बातें बतला देते थे। पर इस अन्तर्ज्ञान को उन्हों ने कभी गम्भीरता से नहीं लिया। मैट्रिक परीक्षा पास कर लेने के बाद उन्हें ख़ुद–ब–ख़ुद ही हस्त रेखा का ज्ञान हो गया। किसी की हथेली को देख कर वे पिछली बातें तो बहुत सही कह देते थे पर भविष्य के बारे मे उन्हें कोई ख़ास सफ़लता नहीं मिल पा रही थी। उन्हों ने सोचा कि इस विषय पर कुछ पढ़ना चाहिए। क्योंकि वे इस की तह में जाना चाहते थे इस लिए पहले खगोल (एस्ट्रानोमी) पढ़ने का इरादा किया व इस विषय पर कुछ किताबें पढ़नी शुरु कीं। अब तक पं० रूप चंद जी सरकारी नौकरी मे आ चुके थे व उन के दो बच्चे भी हो चुके थे। उन की तब्दीली उन दिनों धर्मशाला, ज़िला कांगड़ा मे हुई थी।

"क्या हुआ था, क्या भी होगा, शौक दिल में आ गया
इल्म ज्योतिष हस्त रेखा, हाल सब फ़रमा गया"

पं० जी अपने गांव फ़रवाला में अपनी पहली सालाना छुट्टियां बिताने के लिए गए थे। पहली ही रात उन्हें स्वप्न में एक अदृश्य शक्ति यानि ग़ैबी ताक़त जिस का चेहरा पं० जी कभी नहीं देख पाए, प्रकट हुई। यह था तो कोई पुरुष। {पंडित जी जब भी कोई कुंडली देखते, वे लाल

किताब में से फलादेश पढ़ कर बोलते थे चाहे वो एक ही पंक्ति हो। आम तौर पर वे ग्रह के शुरु में लिखी हुई पद्य के अंश पढ़ते व उसी के अर्थ की ही व्याख्या करते व अक्सर कहते कि वो कह गया है या वो लिखवा गया है। इस ग़ैबी ताक़त ने उन्हें बताया कि उन्हें एक नए तरीके का ज्योतिष शुरु करने के लिए चुना गया है व वे इस ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं हो पाएंगे। रात भर स्वप्न में उन की शिक्षा चलती व सुबह पं० जी मन्त्र मुग्ध या अर्धचेतन अवस्था में नोटबुक में सभी कुछ लिखते जैसे कि कोई उन्हें हाथ पकड़ कर लिखवा रहा हो। उन दिनों उन्हें हुक्का पीने का शौक था। हुक्का पीते जाना व लिखते जाना। (कुछ वर्षों बाद उन्हों ने हुक्का पीना छोड़ दिया।) जहां कहीं कोई बात भूल जाती, तभी उन की पुत्री या पुत्र पंडित सोम दत्त (जो उस समय दो तीन साल के थे) बोल कर उन्हें लिखवा देते।

पंडित जी इस अचानक आई हुई तबदीली के लिए बिल्कुल तैय्यार नहीं थे पर उन के पास इस के इलावा और कोई रास्ता भी नहीं था। जब बच्चों ने भी लाल किताब के पाठ उन्हें बताने शुरु कर दिए तो वे काफ़ी चिन्तित हुए व सोचते रहे कि एक तो इस ताक़त ने मेरा जीना दूभर कर दिया है व अब मेरे बच्चों पर भी काबू पा लिया है। धीरे धीरे पं० जी इसे उस की रज़ा समझ कर इस नए इल्म के प्रवर्तक बन गए।

इस शिक्षा के मिलते ही पंडित जी ने अपना आजीवन यज्ञ शुरु कर दिया। सुबह दफ़्तर जाने से पूर्व एक दो घंटे वे जन्म कुंडलियां देखते व रविवार को तो उन के यहां जैसे मेला ही लग जाता। वो किसी से कोई फ़ीस न लेते और यदि कोई कुछ देने की कोशिश भी करता तो उसे दोबारा वहां न आने को कह देते। पंडित रूप चंद जी अपने असूलों के

बहुत पक्के थे। चाहे कोई डिप्टी कमिश्नर हो या चपरासी, सभी को अपनी बारी की इंतज़ार करनी पड़ती थी। पंडित जी इस ज्ञान को बांटना भी चाहते थे, इसी लिए उन्हों ने लाल किताब के नाम से पांच किताबें लिखीं। ये किताबें बिना कोई लाभ बनाए, लागत पर बेची गईं व पं० जी जिसे इस के योग्य समझते, उसे किताबें मुफ़्त में भी दे देते।

उस समय भारत आज़ाद देश नहीं था, कोई सरकारी मुलाज़िम अंग्रेज़ी सरकार की इजाज़त के बिना कुछ भी प्रकाशित नहीं कर सकता था। इसी लिए पंडित जी ने अपने एक रिश्ते के भाई पंडित गिरधारी लाल शर्मा, जो इन के बहुत घनिष्ट थे, उन के नाम से यह किताबें प्रकाशित करवाईं, लेखक का नाम नहीं लिखा।

मेरी उन के साथ आख़िरी मुलाकात में उन्हों ने बताया कि उन्हें अंग्रेज़ सरकार से अनुमति तो मिल जाती क्योंकि अंग्रेज़ अफ़सर भी उन से अपने बारे में अक्सर पूछते रहते थे व उन की बहुत इज़्ज़त करते थे। पर पंडित जी अपनी प्रसिद्धि क़तई नहीं चाहते थे इसी वजह से उन्हों ने हमेशा मीडिया को इन्टर्व्यू देने से इन्कार किया व कभी किसी को अपनी फ़ोटो नहीं खींचने दी। (जीवन के अंतिम दिनों में पास के गांव रुड़का कलां के स्व० सरदार सोहन सिंह, व अंबाला के श्री अशोक भाटिया को ख़ुद कह कर अपनी फ़ोटो खिंचवाई), वे कहा करते थे जिस किसी की क़िस्मत में मेरे से फ़ायदा उठाना लिखा है वो यहां ख़ुद ही पहुंच जाएगा। उस का मेरी दलहीज़ के अंदर आने का सबब ख़ुद–ब–ख़ुद बन जाता है।

गत वर्षों में, पंडित जी के देहावसान (दिसम्बर 24, 1982) के बाद कुछ लोगों ने यह बात उड़ा दी कि लाल किताब फ़ारस या अरब से आई और उस का पं० जी ने अनुवाद कर दिया। अगर ऐसा है तो कहां हैं

वो मूल अरबी/फ़ारसी भाषा की पुस्तकें? उन देशों में किसी न किसी के पास तो वे ज़रूर होंगी। एक प्रतिष्ठित सज्जन, जिन की लाल किताब पर लिखी हुई कई किताबें छपी हैं, और विशेषत: एक किताब तो बहुत पठनीय है, उन्हों ने लिखा है कि लाल किताब पद्धति सदियों से हिमाचल व काश्मीर की घाटी में प्रचलित थी और किसी ने इस को अपने शब्दों में एक रजिस्टर में लिख कर किसी अंग्रेज़ को दिया जिस ने वह पुस्तक पंडित जी को पढ़ने के लिए दे दी व पं० रूप चंद जी ने इसे छपवा दिया। यह बिल्कुल उनकी कल्पना है। मेरा उन महानुभाव से एक ही सवाल है – अगर यह सत्य है कि यह प्रणाली काश्मीर और हिमाचल में प्रचलित थी तो आज हिमाचल व काश्मीर समाप्त तो हो नहीं गए। इतने हज़ारों लाखों लोगों मे से कोई एक तो होगा जिस के पास पं० रूप चंद जी से पहले का लाल किताब का कुछ न कुछ ज्ञान हो। किस गुफ़ा में छिपे बैठे हैं वो लाल किताब के ज्योतिषी?

बहुत लोगों को पंडित रूप चंद जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं उन में से एक हूं। मैं पहली बार उन्हें 1966 में मिला। उस समय पंडित जी कहीं बाहिर से आए थे। लंबे क़द के, पैन्ट कोट पहने हुए चुस्त दुरुस्त लग रहे थे। मुझे और मेरे बड़े भाई श्री सतीश भाटिया को बहुत प्यार से मिले। उन से वो पहले कई दफ़ा मिल चुके थे व उन में कुछ ऐसा देखा था कि हमेशा ही उन पर मेहरबान रहे। बाद में उन्हों ने हमेशा मुझ पर भी सदैव अपनी कृपा दृष्टि बनाई रखी। मुझे वहां पास बैठने की हमेशा इजाज़त दी वरना वे स्पष्ट वक्ता होने के कारण लोगों को कह देते थे कि तुम्हारा काम हो गया है अब जगह ख़ाली करो।

हमारे पिता जी की पत्री देखते ही बोले इन्हें अपने चाचा के साथ ही मिल कर व्यापार करना चाहिए। इसी में इन का भला है। उन्हें कहो

कि अलग से काम करने की सोचें भी नहीं। पिता जी शुरु से अपने चाचा जी के साथ मिल कर काम करते थे पर उन दिनों अलग होने की सोच रहे थे। यह बात तो उस समय हमें भी मालूम नहीं थी कि वे अलग होने की सोच रहे थे। बहुत हैरानगी हुई कि 25–30 सैकिंड में उन्हों ने यह बोल दिया। और भी कुछ ऐसी बातें कहीं जो आज भी सही उतर रही हैं।

लेकिन मुझे एक बात बहुत अजीब लगी कि हर बार हर ग्रह के लिए वो लाल किताब (1952) खोलते व उस में से कुछ पन्क्तियां पढ़ते व फिर उन की व्याख्या करते। मैने यह सोचा कि सुनने में तो आया था कि लाल किताब इन्हीं की लिखी हुई है लेकिन ये किताब बार बार क्यों खोलते हैं। बरसों बाद जब उन से यह सवाल पूछने की हिम्मत हुई तो वे हंस पड़े व बोलने लगे कि एक तो इस तरह फलादेश देखने में कोई गलती नहीं होती व दूसरा, लाल किताब बार बार पढ़ने से अपना भेद ख़ुद ही खोलती है, यही तो किताब में लिखा गया है। पं0 जी अपने जीवन के अन्त तक, किताब खोल कर ही कुंडली विश्लेषण करते थे।

हर बार उन के पास जाने पर मैने आश्चर्यजनक विश्लेषण देखे। हमारे एक रिश्तेदार का जन्म समय मालूम नहीं था सिर्फ़ उन की तस्वीर हमारे पास थी। उसी पर से पं0 जी ने उन के घर का नक्शा बना दिया। आंखों की बनावट व गहराई देख कर शनि व कानों की बनावट से केतु की जगह कुंडली में स्थिर कर दी। एक एक कर के बाकी ग्रह भी लगा दिए। घर की खिड़किओं, दरवाज़ों, छत तक की ख़ासियतें बता दीं। घर का बिल्कुल सही नक्शा बना दिया। एक इन्सान जो सामने भी नहीं था, सिर्फ़ उस की एक फ़ोटो मात्र से इतना कुछ बता देना एक बहुत अचम्भे की बात है। जब वहां बैठे लोगों ने आश्चर्य चकित हो कर पूछा कि आप ने यह सब कैसे कर लिया है तो पं0 जी ने मज़ाक में कहा कि मै ने भूत पाल

रखे हैं मुझे उन से सारी जानकारी मिल जाती है। पर फिर उन्हों ने कहा कि यह लाल किताब के इल्म का कमाल है वरना मैं क्या चीज़ हूं। कितनी दरवेश तबीयत के थे पन्डित रूप चंद जी।

हमारे परिवार के एक मित्र थे शर्मा जी (नाम बदल दिया है।) उनका लड़का दस साल पहले घर से भाग गया था। बहुत खोज की गई पर कुछ पता न चल सका। एक दिन उन के साथ लाल किताब का ज़िक्र हो गया व उन्हें पंडित रूप चन्द जी के बारे में बताया। यह सज्जन तभी रविवार के दिन फ़रवाला पहुंचे व पं० जी से मिले। पंडित जी ने पत्रिका देखते ही सिर्फ़ एक सवाल पूछा कि

"क्या घर में कोई पागल है?"

इनकी पत्नी अपना मानसिक संतुलन खो बैठी थीं बेटे की वजह से।

"क्या तुम ने अपना कारोबार बदला था तक़रीबन 10-11 साल पहले?"

उन्हों ने सरकारी नौकरी से ऊपर की कमाई बनाई थी, उसे छोड़ कर व्यापार करना शुरु किया था।

अगला सवाल था:

"तो फिर घर से कौन ग़ायब हो गया?"

पुष्टि हो जाने पर उन्हें बताया कि आप का पुत्र जीवित है, कोई ख़ास तरह की मिठाई चलते पानी मे बहाने की सलाह दी तथा कहा कि ३० दिन के बाद मुझे रिपोर्ट देना कि उस की कोई ख़बर या चिट्ठी मिली है या नहीं? यह सारी बात तीन मिनट से कम समय में ख़त्म हो गई। उपाय उसी दिन कर दिया गया। तीन सप्ताह बाद सुबह के समय उन के बेटे ने दरवाज़ा खटखटा दिया, उस ने बताया कि पिछले दो सप्ताह से उस के

दिल में बहुत बेचैनी हो रही थी कि वह घर वापिस जाए। शर्मा जी पंडित जी से मिलने अपने बेटे को साथ ले कर गए। वहां पहुंच कर उन्हों ने पंडित जी को एक बढ़िया कश्मीरी शाल भेंट करने की ग़लती कर दी। पंडित जी बरस पड़े :

"क्या मै ने तुम्हें इस लिए कहा था कि एक महीनें बाद आना? लाओ माचिस ताकि मैं इस शाल को तीली लगा दूं (जला दूं) मेरे लिए यह लेना कफ़न लेने के बराबर होगा। सुन, तेरा बेटा आ गया है तो जा ख़ुशियां मना और ऊपर वाले का शुक्रिया कर। मै ने इस में क्या किया है? सिर्फ़ मेरी किस्मत में इस बात का यश लेना लिखा था वरना तेरे बेटे को तो घर देर सबेर आना ही जाना था। भला मैं कौन होता हूं उसे घर पहुंचाने वाला।"

उन्हों ने मेरे विवाह से पूर्व ही मुझे बता दिया था कि जब भी मेरे बच्चे होंगे उन का बृहस्पति आठवें घर का ही होगा। पहले बेटी हुई। उस की जन्म कुंडली पंडित जी ने ही बनाई। उस का गुरु 8 वें घर का है। फिर पुत्र का जन्म हुआ उस की कुंडली भी मैने उन से ही बनवाई। आप का अनुमान सही है – उस का गुरु भी 8 वें घर का है।

सभी लोग जो पंडित जी को मिले हैं या पास बैठे हैं ऐसी आश्चर्यजनक बातें उन्हें हर बार देखने को मिलती थीं। बाद के वर्षों मे, इतने साधारण से दिखने वाले पंडित रूप चंद जी को शायद कोई अनपढ़ बुज़ुर्ग या साधारण किसान समझने की गलती कर सकता था। लेकिन उन की आंखों मे एक गज़ब की चमक थी। ठेठ पंजाबी, ख़ालिस उर्दू, व बढ़िया अंग्रेज़ी बोलने वाले, हाज़िर जवाब, मज़ाकिया लेकिन बहुत जल्दी गर्म व शीघ्र ही नरम हो जाने वाले थे पं० जी। यदि कोई उन का समय व्यर्थ करने की कोशिश करता या जब वे कुंडली को प्रमाणित करने के लिए

कोई व्यक्तिगत सवाल पूछ लेते और उस का उन्हें खुली तरह से जवाब न दिया जाता तो वे नाराज़ हो जाते।

उनकी कचहरी में कोई भी समस्या प्राईवेट नहीं थी। सब बातें पब्लिक के सामने खोली जाती थीं। कोई उपाय छुपाया नहीं जाता था। मज़ा तब आता था जब कोई नया नया अंग्रेज़ी सीखा हुआ या कमज़ोर अंग्रेज़ी जानने वाला उन्हें प्रभावित करने के लिए उन से गुलाबी अंग्रेज़ी मे बात करता तो उस की मुसीबत पंडित जी के हाथों आ जाती, वे उसकी अंग्रेज़ी के अध्यापक की तरह ग्रामर की क्लास ले लेते। कौतूहलवश एक बार उन्हों ने मुझ से पूछ लिया कि अमेरिका व इंग्लैंड की अंग्रेज़ी में क्या फ़र्क है। सौभाग्य से मुझे एक कोर्स लेना पड़ा था, जिस का उद्देश्य ब्रिटिश प्रणाली के पढ़े हुए विद्यार्थियों की अंग्रेज़ी का अमेरिकीकरण था। उस दिन इज़्ज़त बची ही नहीं बल्कि बढ़ भी गई। उन्हें यह अंतर बहुत रोचक लगे।

पंडित जी की सादगी और उनके पक्के असूलों का एक ओर उदहारण देखें, पंडित जी कभी किसी को अपने पांव छूने की इजाजत नहीं देते थे। एक बार की बात है कि मैं अमेरिका से जब भारत वापिस आया तो अपने बड़े भाई साहिब के साथ पंडित जी के दर्शन करने फरवाला गया। उनकी बैठक सजी हुई थी, बहुत से लोग अपनी अपनी समस्याएं लेकर पंडित जी के दरबार में हाज़िर थे, तब ही एक सज्जन ने उठ कर पंडित जी के पांव छू लिये, पंडित जी तो आग बबूला हो उठे और उसे नसीहत दी कि आइन्दा वो ऐसी हिमाकत न करे। पंडित जी के ग़ुस्से से तो में वाक़िफ़ था, लेकिन तभी एक ऐसी घटना घटी कि जो उस समय मेरे लिये किसी आश्चर्य से कम न थी, पंडित जी अपने स्थान से उठे और उस व्यक्ति के पांव छू लिये, उस सज्जन क हाल देखने लायक था उसके

बाद पंडित जी ने उपस्थित समूह को संबोधित करते हुये चेतावनी दी कि वो आइन्दा कोई भी मेरे पांव छूने की कोशिश न करे, अगर छूना ही है तो वे अपने मां–बाप और बुज़ुर्गों के पांव छुयें–ऐसे थे हमारे पंडित जी। मैं जब आजकल के नौसीखिया तथाकथित ज्योतिषियों को बड़े चाव से अपने पांव को हाथ लगवाते हुये देखता हूं, तो मुझे उनकी बुद्धि पर तरस आता है।

पिछले दिनों पंडित सोम दत्त जी ने एक बहुत रोचक बात पंडित रूप चंद जी के बारे में सुनाई जो मैं आप तक लाना चाहता हूं। एक दिन पास के गांव का एक आदमी बहुत हांफ़ता हुआ पंडित जी के पास बाद दोपहर आया। वह बहुत घबराया हुआ था व लगभग रोने को था। पंडित जी के पूछने पर उस ने बताया कि किसी ने दुश्मनी की वजह से पुलिस को उस की झूटी शिकायत कर दी है और पुलिस उसे ढूंढ रही है। आप को तो मालूम ही है कि अब मेरी क्या दुर्गति होने वाली है, कृपया मुझे बचाईए। पंडित जी ने उसी समय उस की कुंडली बनाई व कहने लगे कि चार किलो दाल चलते पानी में बहा दो। उस आदमी ने कहा पंडित जी मैं तो भागता हुआ यहां आ गया हूं मेरे जेब में तो इस समय सिर्फ़ आठ आने हैं। चार किलो दाल कहां से ले पाऊंगा। पंडित जी ने कुछ सोचा व उस से कहा जा चार आने की मिर्चें जला कर चलते पानी में बहा दे। तुझे कुछ नहीं होगा और आराम से घर जा। उस आदमी ने वही किया व डरता डरता घर पहुंचा। वहां पुलिस उस का इंतज़ार कर रही थी। थानेदार ने गुस्से में पूछा ओए तुझे हम दो घंटे से ढूंढ रहे हैं, कहां छुपा हुआ था? उस आदमी ने कहा जी मै तो फ़राले (फ़रवाले) पंडित जी के पास चला गया था, आप से बचने का तरीका पूछने। थानेदार ने पूछा तो पंडित जी ने क्या कहा है। वह आदमी बोला कि पंडित जी ने कहा है कि मैं बेकसूर हूं। उन्होंने मेरे से एक उपाय करवा दिया है और मुझे निश्चिंत हो कर घर

जाने को कहा है। अब आगे आप की मर्ज़ी है। थानेदार ने कहा जब पंडित जी ने कह ही दिया है कि तू बेक़सूर है तो उन की बात गलत थोड़ी ही हो सकती है? उपाय भी तूने कर ही लिया है तो हम कौन होते हैं तुझे गिरफ़्तार करने वाले। वह आदमी वापिस उल्टे पांव दौड़ता हुआ पंडित जी के पास फिर आ गया। पंडित जी ने पूछा अब क्या तकलीफ़ है तुझे, पुलिस तो तुझे हाथ नहीं लगा सकती थी, अब क्या हुआ। उस ने कहा कि महाराज मैं तो आप को बताने आया था कि थानेदार ने क्या कहा है।

पांच सात साल पहले मैं टोरांटो, कैनेडा में पं० सोम दत्त जी से मिलने गया व उन के घर में ही ठहरा था। तभी एक बुज़ुर्ग लगभग 80 वर्ष के होंगे उन्हें मिलने आए व उन के दरवाज़े की दलहीज़ को बार बार प्रणाम करते हुए अंदर आए। पता चला कि वे पंजाब के भूतपूर्व मंत्री थे व कैनेडा अपनी बेटी से मिलने आये थे। मेरा परिचय पंडित जी ने उन से करवाया व चाय के दौरान उन्हों ने बताया कि वे हमेशा जब भी कभी फ़रवाला की तरफ़ से गुज़रते तो पंडित जी के घर की दिशा में हाथ जोड़ कर प्रणाम किए बिना नहीं जाते थे। दरअसल उन की एक ही बेटी थी जिस का वे रिश्ता किसी इन्जीनियर से करना चाहते थे। लड़के का टेवा मिलवाने के लिए पंडित जी के पास लाए। उस इलाके के सभी लोगो पंडित जी की अनुमति के बिना कोई रिश्ता नहीं करते थे। इस वजह से लोग टेवे के अवगुण छिपाने के लिए कहीं और से लगन बदल कर दूसरा टेवा बनवा लाते थे या फिर गलत समय व तारीख़ देते थे। पंडित जी को मालूम हो गया कि क्या चालबाज़ी हो रही है इस लिए उन्हों ने कहा कि लड़के और लड़की की untouched photo ले कर आया करो। वे फ़ोटो से मिलान कर लेते थे। यह मन्त्री जी अपनी बेटी के लिए उस लड़के की फ़ोटो ले कर पं० जी के पास पहुंचे और बताने लगे कि लड़का बहुत सुन्दर व

होनहार है और बहुत अच्छे परिवार से है, इत्यादि। हम कल ही सगाई करना चाहते हैं अगर आप की इजाज़त हो तो। पंडित जी ने फ़ोटो देखी व पुष्टि के लिए दो तीन सवाल पूछे। फिर उन्होंने कहा कि अगर आप मेरी बात मानते ही हो तो इस सप्ताह रिश्ते का नाम भी मत लो। अगले सप्ताह रिश्ता कर लेना लेकिन इस सप्ताह बिल्कुल न तो कुछ कहो और न ही कुछ करो। बेदिली से मन्त्री जी मान गए। तीन दिन बाद उस लड़के की बिजली के झटके से मृत्यु हो गई। मंत्री जी कहने लगे कि अगर लड़की का रिश्ता हो जाता या उस के बारे में बात भी बाहिर निकल जाती तो बहुत मुश्किल हो जाती लड़की की कहीं और शादी करनी। सभी कहते कि न जाने कौन सा दोष है उस में। उन की ज़िन्दग़ी में सब कुछ यह लड़की ही थी जिसे पंडित जी ने बाल बाल बचा लिया। मेरे लिए तो वे भगवान का रूप थे।

पचास के दशक में रिटायर होने के बाद पंडित जी वापिस फ़रवाला आ गए। अब तो हर समय जनता, मंत्री, सरकारी अफ़सर व व्यापारी, इन सब की लाईन लगी रहती थी। पंडित जी सूर्य डूब जाने के बाद कुंडली नहीं देखते थे। उन्होंने अपने घर से अलग अपनी बैठक बना रखी थी जिस में वो लोगों से मिलते थे। घर तो अब उन के पुत्र ने बेच दिया है लेकिन यह बैठक आज भी जोशी परिवार ने रखी हुई है, व उन के अनुसार वहां आज भी पंडित जी का बोर्ड लगा हुआ है – रूप चंद जोशी, रिटायर्ड एकाऊंट्स आफ़िसर, डिफ़ैन्स एकाऊंट्स। विलेज फ़रवाला, वाया बिलगा, ज़िला जालंधर। इन के इकलौते पुत्र पंडित सोम दत्त अब कैनेडा में अपने दो बेटों के साथ रहते हैं, पं० सोम दत्त का एक पुत्र इक़बाल चंद पंचकूला में रहता है।

जैसा कि पहले ज़िक्र किया है, कुछ ग्रह ऐसे होते हैं जो ग्रह फल के कहलाते हैं जिन का उपाय आम आदमी की ताक़त से बाहिर है। पंडित जी को कई सिद्धियां अपने आप कुदरत की तरफ़ से मिली हुई थीं

जिस से वे ग्रह फल का उपाय भी कर लेते थे। वे अपने एक विशेष पैन से, जिसे वे लाल कलम कहते थे, हुक्म लिख देते थे, जो ज़रूर पूरा हो जाता था। इस के ज़रिए उन्हों ने तरक्की के हुक्म दिए, बदलियां करवाईं व रुकवाईं, नौकरियां दिलवाई, मन चाहे कालेजों में दाख़िले के हुक्म निकाले व मुकद्दमों के फ़ैसले तक करवा दिए।, इत्यादि। यहां तक कि उन्होंने अपनी ज़िंदगी में कई फ़ांसी के हुक्म रद्द करवा दिए। फ़ौज में जाने वालों को वे सुरक्षा के तौर पर एक विशेष सिक्का दिया करते थे जो उन की रक्षा करता था। फ़ौजियों में यह बात फैली हुई थी कि फ़रवाले वाले पंडित जी से सिक्का ईशू करवा लो फिर कोई डर नहीं। अपने दोस्तों में वे रूप लाल के नाम से जाने जाते थे।

पंडित रूप चंद जी प्रत्येक कुंडली बहुत सावधानी व ज़िम्मेदारी के साथ देखते थे। वे अक्सर पूरे परिवार की कुंडली देखना पसंद करते थे ताकि अगर किसी प्रकार का पैतृक ऋण हो तो उस का इलाज किया जा सके। उन्हों ने कभी किसी के घर जा कर कुंडली नहीं देखी। राजा महाराजा तक मिलने उनके घर पहुंचते थे। किसी से कुछ लेते नहीं थे, इस लिए वे अपनी शर्तों से रहते थे।

उनके पुत्र पंडित सोम दत्त ने मुझे बताया कि मै शिकायत किया करता था कि आप ने ज़िंदगी में क्या कमाया है, जब से होश संभाला है घर में भीड़ ही देखी है, इस का क्या लाभ हुआ है आप को? पंडित जी बोले किसी दिन देखना कि मैने क्या कमाया है इस से। हुआ यूं कि पंडित रूप चंद जी 70 के दशक में एक बार बहुत बीमार हो गए व उन्हें आल इंडिया इन्स्टीच्यूट आफ़ मेडिकल साईन्सिज़, देहली में ले जाया गया। जैसे ही वे वहां पहुंचे, सभी वरिष्ठ डाक्टरों की भीड़ लग गई। लोग यह न समझ पाए कि ऐसा कौन सा वी० आई० पी० आ गया है। उस समय

पंडित जी ने अपने पुत्र से कहा कि यह है मेरी ज़िन्दग़ी की कमाई। देख ये डाक्टर किस तरह मेरे लिए भाग दौड़ कर रहे हैं और मेरी सेवा में लगे हैं। देखने वाले हैरान हैं कि कौन है यह देहाती जिस का इतना मान हो रहा है। मैं तुझे यही दिखाने यहां लाया हूं। वरना ठीक तो मैं लुधियाने के अस्पताल में भी हो जाता।

कई बार वे कुछ ख़रीदने के लिए या किसी और काम से साइकिल पर फ़िलौर जाते (जो पास का बड़ा शहर है)। फ़िलौर में पंजाब पुलिस का सब से बड़ा ट्रेनिंग सैन्टर है व अक्सर बड़े ओहदे के पुलिस पदाधिकारी यहां ट्रेनिंग के लिए आते हैं। पंडित जी को पहचान कर उन्हें अपनी कार या जीप से उतर कर पूरे आदर सहित प्रणाम करते व बार बार आग्रह करते कि आप को वापिस फ़रवाला छोड़ आते हैं, कहां इतनी दूर साइकिल चलाते हुए वापिस जाओगे। लेकिन वे कभी भी इस के लिए राज़ी नहीं हुए। वे किसी का अहसान नहीं लेना चाहते थे। उन के अनुसार यह उन के इल्म का दुरुपयोग करना था। बड़े से बड़े पदाधिकारी उन का कोई भी कार्य करने के लिए उन के आदेश का इंतज़ार करते थे लेकिन पंडित जी ने ऐसा आदेश कभी उन्हें दिया ही नहीं। हां एक बार पंजाब के एक मंत्री अड़ गए कि मुझे आप कोई मौका ज़रूर दें, उस समय पंडित जी ने उन्हें गांव तक पक्की सड़क बनवाने के लिए कहा। पक्की सड़क बिल्कुल पंडित जी के घर के दरवाज़े तक आती है व उन की सारी गली भी पक्की कर दी गई थी ताकि आने जाने वालों को कोई मुश्किल न हो।

मैं पंडित जी से आख़िरी बार उन के देहान्त से दो सप्ताह पहले मिला। जब मैं वहां से चलने लगा तो मैने कहा कि पंडित जी हूं तो मैं आप से बहुत छोटा, लेकिन मेरी प्रार्थना है कि प्रभु आप की सेहत बनाए रखे,

आप से अगले साल फिर भेंट करुंगा। वे बोले बस भई अब यह नरक चौरासी कटने वाला है और मै जाने की तैय्यारी में हूं, और तू मुझे रुकने को कह रहा है। देख कितनी मुश्किल कटी है मेरी ज़िन्दग़ी। लोगों ने दिन को चैन नहीं लेने दिया और इन ग़ैबी ताकतों ने रातों को मुझे सोने नहीं दिया। बस मुझे तो दुनिया में इसी काम के लिए भेजा था। परिवार को भी तंगी में रखा व ख़ुद भी पब्लिक के सामने दिन भर। नहीं, अब पंडित जी के साथ तेरी यह आख़िरी मुलाकात है। तब मैने उन से यह पूछा कि उन के पास लाल किताब कहां से आई। तब पंडित जी ने मुझे कहा कि कुर्सी खींच ले व बैठ जा। हम ने पांच छः घंटे बात की व खाना भी इकट्ठे ही खाया। उन्हों ने कहा कि लाल किताब के ज़रिए दो पिछली और दो अगली पीढ़ियों का हाल तो बख़ूबी बताया जा सकता है। उन्हें पिछले जन्म व आने वाले जन्म के बारे में भी पता चल जाता था लेकिन वे उस के बारे में कभी कभार ही बोलते थे क्योंकि उन के अनुसार उस से कोई फ़ायदा नहीं होने वाला। वे भविष्य के बारे में भी बहुत ज़्यादा नहीं कहते थे, उन का मानना था कि उस से क्या फ़ायदा। जो आज तुम्हारे साथ हो रहा है और आगे के लिए जो मुश्किल दिखाई दे रही है, उसे संभालने की कोशिश करो और अपना बचाव करो।

कुछ लोगों ने स्वप्न द्वारा दिए गए ज्ञान के बारे में सवाल उठाए हैं। लेकिन इस तरह का कुदरती करिश्मा कोई अनहोनी बात नहीं। अमेरिका में ऐड्गर केसी (Edgar Cayce) भी तो ऐसे ही स्वप्न में सीखे थे लोगों को बीमारियों से निजाद पाने की शक्ति। क्योंकि वो अमेरिका मे थे, उन के पास लोग थे जिन्हों ने हर केस को नोट किया व उन की पूरी लाइब्रेरी बनी है विर्जिनिया बीच, विर्जिनिया में। हमारे यहां ऐसी कोई प्रथा नहीं है। पंडित जी की लिखी अनमोल पांडुलिपियां जोशी परिवार के पास हैं, यह मालूम नहीं कि उसे बाकी लोग कब देख पाएंगे।

पंडित जी लिखने का बहुत शौक था। व लिखते भी वे बढ़िया से बढ़िया पैन से। उन के पास दर्जनों मांट ब्लां, कार्टिए, पार्कर, शेफ़र इत्यादि के पैन थे जो उन्हों ने ख़ुद मुझे दिखाए। वे उन की निबों को स्लेट पर रगड़ कर मोटा उर्दू लिखने के लिए तैयार करते थे। बढ़िया काग़ज़ पर लिखते व ख़ुद जिल्दसाज़ी भी करते थे। शायद पैन ही उन की एक कमज़ोरी थी जो मैं ने ढूंढ ली थी। मेरे उपहार में दिए हुए पैन वे हमेशा स्वीकार कर लेते थे। काफ़ी समय तक पंडित जी को फ़ोटोग्राफ़ी का शौक भी रहा। उन के पास लैंड कैमेरा था जिस में बड़ी प्लेट वाले नैगेटिव इस्तेमाल होते हैं।;

दिसंबर 24, 1982 का दिन था। पंडित जी अपनी चारपाई पर बैठे थे। सामने गली में से एक लड़का तीन चार बार गुज़र कर गया। आख़िर पंडित रूप चंद जी ने उसे रोक कर पूछा उस से – क्यों काका तू कौन है और बार बार चक्कर क्यों काट रहा है। अगर टेवा दिखाना है तो अंदर आजा। अब तुझे क्या मना करना। पूछ क्या पूछना है।उस ने कहा मेरी नौकरी नहीं लग रही, इन्टर्व्यू तो दे आया हूं लेकिन पता नहीं चल रहा। पंडित जी ने उस का टेवा देख कर कहा जिस घर में तू रात को सोया था, उसके पीछे लगने वाले घर में जो कोई बूढ़ा आदमी रहता है, उस के मरते ही तेरी नौकरी लग जाएगी। और वो बूढ़ा तो बस गया ही समझ। पंडित जी के दोनों पोते इकबाल व राकेश जो उस समय उन के पास बैठे थे, उन्हों ने कहा बाबा जी आप यह क्या कह रहे हैं। यह तो हमारे पीछे वाले पड़ोसियों का दोहता है जो शहर से यहां आया है, यह तो आप ने अपनी तरफ़ हीइशारा कर दिया है। पंडित जी बोले कि मौत का कोई इलाज नहीं और मुझे मौत का दिन सीधा सीधा बताने का हुक्म नहीं है,

मगर इस लड़के के ग्रह ऐसा बोल गए हैं। जो होता है होने दो। राकेश ने पूछा कि कोई उपाय हो जो हम आप के लिए कर सकें। पंडित जी ने टाल मटोल कर दी व कोई उपाय नहीं बताया। उसी रात वे चिर निद्रा में सो गए। अगली सुबह उस लड़के को उस के पिता का तार आ गया कि उसे नौकरी मिल गई है।

पंडित रुप चंद जी आज तक के हुए महानतम ज्योतिषिओं में से एक थे। लाल किताब ही उन की कर्म भूमि थी व वही उन के जीवन का दर्शन शास्त्र था। कर्म योगी ऐसे कि सिवाए लाल किताब के उन्हें न अपनी चिंता थी न परिवार की। किसी दूसरे की समस्या को सुलझाना वे अपना परम नैतिक कर्त्तव्य समझते थे। उन का अपना तो यह हाल था कि *धन्ने भगत दी गाईयां राम चरावे।* इस में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी यदि उन्हें भृगु, आर्यभट्ट, पराशर, अगस्त्य, कृष्णामूर्ति जैसे ज्योतिर्सम्राटों की श्रेणी मे गिना जाए।

मेरा व सभी लाल किताब प्रेमियों की तरफ़ से उस महापुरुष को शत शत प्रणाम।

राजिंदर भाटिया